Gutka Prem Ras Madira (Hindi)

प्रकाशकीय

आनंदकंद श्री कृष्णचंद्र को भी क्रीतदास बना लेने वाला उन्हीं का परमांतरंग प्रेम तत्व है तथा यही अन्तिम तत्व है, उसी को लक्ष्य बनाकर प्रेम रस मदिरा ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें 1008 पद हैं जिनमें श्री कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन, वेद शास्त्र, पुराणादि सम्मत एवं अनेक महापुरुषों की वाणियों के मतानुसार किया गया है। सगुण-साकार ब्रह्म की सरस लीलाओं का रस वैलक्षण्य विशेषरूपेण श्री कृष्णावतार में ही हुआ है। अतः इन सरस पदों का आधार उसी अवतार की लीलाएँ हैं।

प्रेम रस मदिरा भक्ति रस साहित्य में अद्वितीय है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में कहीं भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा सकाम भक्ति को किंचित् भी स्थान नहीं दिया गया है।

भक्ति सम्बन्धी शास्त्रीय सिद्धान्तों को अत्यधिक सरल और सरस रूप में प्रस्तुत किया गया है जो सर्वसाधारण के लिये भी बोध गम्य है इसके अतिरिक्त श्री राधाकृष्ण की दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

माधुर्य इन चार भावों की लीलाओं का विशद निरूपण है जो वेद, शास्त्र पुराणादि सम्मत है।

इसके द्वारा भगवदचरणानुरागियों साहित्यिकों एवं संगीत प्रेमियों आदि सभी ने अपने–अपने दृष्टिकोण एवं अपनी–अपनी रुचि के अनुसार अपना कर अपनी–अपनी जिज्ञासा एवं पिपासा शान्त की। रसिकों ने इसे अपनी भाव संवृद्धि सम्बन्धी साधना का अवलम्ब बनाया, साहित्यिकों ने इसमें साहित्यिक समृद्धि को देखा और इसके भाषा सौष्ठव एवं अलंकारों में अपनी तृप्ति पायी। संगीत मर्मज्ञों ने अनेक राग रागिनियों में इसके पदों को बाँधकर रसास्वादन किया एवं कराया।

प्रेम रस मदिरा से ओत प्रोत 'प्रेम रस मदिरा' का आज के इस युग में विशेष महत्व है जिससे कलियुग की विभीषिका का सरलता से सामना किया जा सकता है। यह ऐसी मदिरा है जो बेसुध कर देती है। इसके पान करने के पश्चात् युगल दर्शन, युगल प्रेम, युगल सेवा बस यही कामना शेष रह जाती है समस्त सांसारिक कामनायें समाप्त हो जाती हैं।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधा गोविन्द समिति

आठवां संस्करण :

गुरु पूर्णिमा, 15 जुलाई 2011

प्राक्कथन

प्रेम-रस-रसिक पाठक समुदाय-

वैसे तो ग्रन्थ के नाम से ग्रन्थ के विषय का आशय स्पष्ट है तथापि शिष्टाचार के नाते कुछ लिखना अनिवार्य सा है।

समस्त वेदों, शास्त्रों, पुराणों आदि के द्वारा यह निर्विवाद सिद्ध सिद्धान्त है कि प्रत्येक जीव का चरम लक्ष्य आनन्द प्राप्ति ही है और वह आनन्द या रस, स्वयं रसिक शिरोमणि परमब्रह्म श्रीकृष्ण ही हैं; यथा **''रसो वै सः'' ''आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्''**, आदि।

किन्तु उन आनन्द स्वरूप, आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र को भी क्रीतदास बना लेने वाला उन्हीं का परमांतरंग प्रेम तत्व है तथा यही अन्तिम तत्व है। उसी प्रेमरस को लक्ष्य बनाकर यह **'प्रेम-रस-मदिरा'** ग्रन्थ लिखा गया है। किन्तु इसमें, मुझे कितनी सफलता प्राप्त हुई है, इसका निर्णय पाठक स्वयं करें।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम-रस-मदिरा के 1008 पदों को 21 माधुरियों में विभक्त किया गया है, जो इस प्रकार है **1. सद्गुरु-माधुरी, 2. आरती-माधुरी, 3. सिद्धान्त माधुरी, 4. दैन्य-माधुरी, 5. धाम-माधुरी,**

6. प्रेम–माधुरी, 7. श्री कृष्ण–बाल लीला–माधुरी, 8. श्री राधा–बाल लीला–माधुरी, 9. श्रीकृष्ण– माधुरी, 10. श्रीराधा–माधुरी, 11. युगल–माधुरी, 12. लीला–माधुरी, 13. महासखी–माधुरी, 14. निकुंज–माधुरी, 15. मिलन–माधुरी, 16. मान–माधुरी 17. मुरली–माधुरी, 18. होरी–माधुरी, 19. विरह–माधुरी 20. रसिया–माधुरी 21. प्रकीर्ण–माधुरी।

प्रत्येक माधुरी के नाम से उसके पदों का विषय स्पष्ट हो जाता है। यह समस्त माधुरियाँ प्रेम–रस की–मधुरिमा से ओत–प्रोत हैं। इनमें श्रीराधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन, वेद–शास्त्र–पुराणादि–सम्मत एवं अनेक महापुरुषों की वाणियों के मतानुसार, किया गया है। सगुण–साकार–ब्रह्म की सरस लीलाओं का रस वैलक्षण्य विशेषरूपेण श्रीकृष्णावतार में ही हुआ है। अतः इन सरस पदों का आधार उसी अवतार की लीलाएँ हैं। हाँ, प्रसंगवश भगवान् के समस्त अभिन्न–अवतारों की ओर स्थान स्थान पर संकेत किया गया है। यद्यपि यह लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्यामसुन्दर की लीलाओं के रस–सागर का एक बिन्दु मात्र है फिर भी यदि जिज्ञासुओं की कुछ तृप्ति इसके द्वारा हो सकी तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा। यदि किसी महानुभाव को कुछ भी सन्तोष या लाभ न प्राप्त हो तो वे इसे 'स्वान्तः सुखाय' ही समझ कर सन्तोष कर लेंगे।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

— जगद्गुरु कृपालु

पंचम जगद्गुरु

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज का जन्म सन् 1922 ई. में शरत्पूर्णिमा की शुभ रात्रि में भारत के उत्तर प्रदेश प्रांत के प्रतापगढ़ जिले के मनगढ़ ग्राम में सर्वोच्च ब्राह्मण कुल में हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मनगढ़ एवं कुन्डा में सम्पन्न हुई। पश्चात् आपने इंदौर, चित्रकूट एवं वाराणसी में व्याकरण, साहित्य तथा आयुर्वेद का अध्ययन किया। 16 वर्ष की अल्पायु में ही चित्रकूट में शरभंग आश्रम के समीपस्थ बीहड़ वनों में एवं वृन्दावन में वंशीवट के निकट जंगलों में वास किया।

सन् 1955 में आपने चित्रकूट में एक विराट दार्शनिक सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें काशी आदि स्थानों के अनेक विद्वान् एवं समस्त जगद्गुरु भी सम्मिलित हुए। सन् 1956 में ऐसा ही एक विराट संत सम्मेलन आपने कानपुर में आयोजित किया। आपके समस्त वेद शास्त्रों के अद्वितीय, असाधारण ज्ञान से वहाँ उपस्थित काशी के मूर्धन्य विद्वान् स्तम्भित रह गये। उस समय आपके सम्बन्ध में काशी के प्रख्यात पंडित, शास्त्रार्थ महाविद्यालय (काशी) के संस्थापक, शास्त्रार्थ महारथी, भारत के सर्वमान्य एवं

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अग्रगण्य दार्शनिक, काशी विद्वत्परिषत् के प्रधानमंत्री आचार्य श्री राज नारायण जी शुक्ल 'षट्शास्त्री' ने सार्वजनिक रूप से जो घोषणा की थी, उसका अंश इस प्रकार है— (कानपुर 19-10-56)

"काशी के पंडित आसानी से किसी को समस्त शास्त्रों का विद्वान् नहीं स्वीकार करते। हम लोग तो पहले शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारते हैं। हम उसे हर प्रकार से कसौटी पर कसते हैं और तब उसे शास्त्रज्ञ स्वीकार करते हैं। हम आज इस मंच से इस विशाल विद्वन्मंडल को यह बताना चाहते हैं कि हमने संताग्रगण्य श्री कृपालु जी महाराज एवं उनकी भगवत्दत्त प्रतिभा को पहचाना है और हम आपको सलाह देना चाहते हैं कि आप भी इनको पहचानें और इनसे लाभ उठायें।

आप लोगों के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि ऐसे दिव्य वाङ्मय को उपस्थित करने वाले एक संत आपके बीच में आये हैं। काशी समस्त विश्व का गुरुकुल है। हम उसी काशी के निवासी यहाँ बैठे हुए हैं। कल श्री कृपालु जी के अलौकिक वक्तव्य को सुनकर हम सब नत-मस्तक हो गये। हम चाहते हैं कि लोग श्री कृपालु जी महाराज को समझें और इनके सम्पर्क में आकर उनके सरल, सरस, अनुभूत एवं विलक्षण उपदेशों

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

को सुनें तथा अपने जीवन में उसे क्रियात्मक रूप से उतारकर अपना कल्याण करें।''

इसके पश्चात् आपको काशी विद्वत्परिषत् (भारत के लगभग 500 शीर्षस्थ शास्त्रज्ञ, वेदज्ञ विद्वानों की सभा है) ने काशी आने का निमंत्रण दिया।

श्री कृपालु जी के कठिन संस्कृत में दिये गये विलक्षण प्रवचन को सुनकर एवं भक्तिरस से ओत-प्रोत अलौकिक व्यक्तित्व को देखकर सभी विद्वान् मंत्रमुग्ध हो गये। तब सबने एकमत होकर आपको ''**जगद्गुरूत्तम**'' की उपाधि से विभूषित किया। उन्होंने स्वीकार किया कि श्री कृपालु जी जगद्गुरुओं में भी सर्वोत्तम हैं।

....धन्यो मान्य जगद्गुरूत्तम पदैः सोऽयं समभ्यर्च्यते।

यह ऐतिहासिक घटना 14 जनवरी सन् 1957 को हुई। उस समय श्री कृपालु जी महाराज की आयु मात्र 34 वर्ष की थी। जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज विश्व के पाँचवें मूल जगद्गुरु हैं। उनके पूर्व केवल चार महापुरुषों को ही जगद्गुरु की मूल उपाधि प्रदान की गई थी- जगद्गुरु श्री शंकराचार्य, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य एवं जगद्गुरु श्री माध्वाचार्य।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पूर्ववर्ती आचार्यों के दार्शनिक सिद्धान्तों को सत्य सिद्ध करते हुए अपना समन्वयवादी दार्शनिक सिद्धान्त प्रस्तुत करने वाले जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज को काशी विद्वत्परिषत् ने '**निखिलदर्शन समन्वयाचार्य**' की उपाधि से भी विभूषित किया, तथा उन्हें '**भक्तियोग रसावतार**' की उपाधि दी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	माधुरी	पद संख्या	पृष्ठ-संख्या
1.	सद्गुरु-माधुरी	6	1-3
2.	आरती-माधुरी	3	4-8
3.	सिद्धान्त-माधुरी	143	9-68
4.	दैन्य-माधुरी	105	69-115
5.	धाम-माधुरी	5	116-118
6.	प्रेम-माधुरी	7	119-122
7.	श्री कृष्ण-बाललीला-माधुरी	97	123-171
8.	श्री राधा-बाललीला-माधुरी	23	172-183
9.	श्री कृष्ण-माधुरी	54	184-207
10.	श्री राधा-माधुरी	57	208-232
11.	युगल-माधुरी	23	233-242
12.	लीला-माधुरी	24	243-256

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्रम सं.	माधुरी	पद संख्या	पृष्ठ-संख्या
13.	महासखी–माधुरी	8	257–260
14.	निकुंज–माधुरी	29	261–275
15.	मिलन–माधुरी	70	276–306
16.	मान–माधुरी	59	307–334
17.	मुरली–माधुरी	9	335–338
18.	होरी–माधुरी	30	339–353
19.	विरह–माधुरी	214	354–446
20.	रसिया–माधुरी	22	447–466
21.	प्रकीर्ण–माधुरी	22	467–486

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अकारादि-क्रम से पदों की
ध्रुव-पंक्ति की अनुक्रमणिका

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

अ

अँखियाँ झर-झर लागीं बरसन	354
अँखियाँ, श्याम-प्रेम-रस माती	354
अँखियाँ, सखि! या रूप लुभानी	355
अगति के गति तुम दीनदयाल!	69
अचंभो इक देख्यो ब्रज माहिँ	9
अचंभो वीर! अहीर निहार	185
अजिर महँ विहर ब्रह्म साकार	130
अटको दृग, लखि नटखट पट को	447
अनजान मूढ़ मन मान रे	9
अनुपम रूप नीलमणि को री	184
अनूपम, जोरी श्यामा श्याम	233
अनोखी, पिय प्यारी की बात	233
अनोखी, वीणा वारी नारि	243
अनोखो जायो जशुदा लाल	184

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति | *पृष्ठ-संख्या*

अनोखो लख्यौं जगत व्यवहार	10
अनोखो हरि तुम्हरो खिलवार	10
अपनापन रखना, मेरे घनश्याम	467
अपनी ओर टुक हेरो री, किशोरी राधे	69
अब रही न काहू काम की	355
अमोलक रतन मिलत बिनु मोल	11
अरि देखो आली, लाली को फुलन	261
अरी ओ, घूंघट वारी नारि	146
अरी ओ, दधि की बेचनिहार	145
अरी ओ, मनहारिनि मनिहार	245
अरी वो, माला बेचनिहार!	243
अरी ओ ललिते! सुनु इक बात	325
अरी वो, लीला गोदनिहार	244
अरी कोउ, उर उरझी सुरझावे	356
अरी! कोउ विरहिनि बाट बतावे	356
अरी तोय कहा भयो! ‘कछु नाहिं’	357
अरी मैं, मरी हरी बिनु हाय	357
अरी मोरे, ललना सों कौन लरी	137

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
अरी सखि!, किरिकिरि आँखि परी	276
अरी सखि! क्यों मो पै रिसियाय	336
अरी सखि!, पिय सँग नींद गई	358
अरी सखि!, प्राण कंठ चलि आय	358
अरी सखि!, प्रीति न करियो कोय	358
अरी सखि!, मति तोरी भरमाई	359
अरी सखि! मन मेरो कहुँ जात	359
अरी सखि! सिगरो जग बौराई	360
अरे ओ, छलिया नंदकुमार	146
अरे ओ, निलज निपट बटमार	147
अरे ओ, मुरली वारे कान्ह!	147
अरे मन! अबहुँ बात ले मान	11
अरे मन! अवसर बीत्यो जात	11
अरे मन! अस तृष्णा बलवान	12
अरे मन! इहै सार संसार	12
अरे मन! उभय रूप जग जान	13
अरे मन! काहे करत गुमान	13
अरे मन! चार दिना की बात	14

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
अरे मन! तू निज स्वारथ साध	**14**
अरे मन! तू मेरो मत मान	**14**
अरे मन! मनमोहन मन लाय	**15**
अरे मन! मूरख निपट गँवार	**15**
अरे मन!, मोहन सों बचि रहियो	**360**
अरे मन! यह ऐसो जग जान	**16**
अरे मन! यह जग एक सराय	**16**
अरे मन! यह जीवन दिन चार	**17**
अरे मन! यह संसार असार	**17**
अरे मन! सुन इक अटपट बात	**17**
अरे मन! सुन उपनिषद विचार	**18**
अरे मन! सुन गुरु-तत्त्व-विचार	**1**
अरे मन! सुन सूधी-सी बात	**18**
अरे मन! हरि, हरिजन नहिं दोय	**19**
अरे मन! हौं मानत हौं हार	**19**
अरे मन! स्वारथ को संसार	**19**
अलबेलो हमारो यार	**467**
अलि! मुरली के बड़ भाग रे	**335**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

अलिन सँग सोहति भानुलली 208
अली मोरि, मुरली कौन लई ? 335
अली! यह मुरली बुरी बलाय 336
अली! यह, मुरली बैर परी 336
अलि! लखु आजु लली सिंगार 208
अवध के राम बने ब्रज श्याम 20
अशरण-शरण शरण तव आयो 70
अस भानुलली मुसकान रे 209
अस जसुमति के भये लाल रे 123
अस रस महँ, मोहिं सद्गुरु बोरी 1
अहो पिय! जब तुम्हरी बनि जैहौं 71
अहो प्राणेश्वर! प्राणाधार 361
अहो मम, प्रियतम सुंदर श्याम 312
अहो हरि! अब तो सह्यो न जाय 71
अहो हरि! अब न विरह सहि जात 361
अहो हरि! अब हौं गयों अघाय 71
अहो हरि! ओहू दिन कब ऐहैं 72
अहो हरि! कब ते द्वार खड़ो 72

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

अहो हरि! कब लौं रहिहौं दूरी	73
अहो हरि! कहौं कौन पै जाय	73
अहो हरि! तुम मम साहूकार	74
अहो हरि! देहु मोहिँ विरहाग	74
अहो हरि! बेर भई रिरियात	74
अहो हरि! सोचहु पाछिल बात	75
अहो हरि! हरो विषम भव भीर	75
अहो हरि! हौं पातक अवतार	76

आ

आज सखि, गिरी शीश पै गाज	276
आजा आजा रे, आज खेलन होरी	339
आजु दोउ, झूलन महँ झगरे	261
आजु निकुंज-मंजु बिच पिउ को	447
आजु मन! देखहुँ शक्ति तिहार	20
आजु रस, बरसत कुंजन माहिं	262
आजु लखि, ललिहिं गई बलिहार	262
आजु लखु, मंजु निकुंज-बहार	263
आजु सखि! ह्वै गये नैना चार	277

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
आजु हरि दैहौं जो तोहिं भाय	76
आजु हरि! हौं माँगति इक दान	148
आजु होरी री, अरी ओरी गोरी	339
आजु हौं करिहौं हरि! झगड़ो	77
आजु हौं दैहौं विधि सों दान	148
आजु हौं लरिहौं तो सन माय	148
आय नहिं, माधव माधव आय	362
आय री, दृग बरसावन सावन	362
आयो ब्रज, रस बेचन-वारो	449
आरती आरति-हारी की	4
आरती प्रीतम प्यारी की	5
आरती भानुदुलारी की	7

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इ

इक आई मालिनि स्वामिनी!	245
इक देखी छवि मनभावनी	209
इकली जनि जइयो कहुँ गोरी	277
इंदुलेखा सखियन गल हार	257

ध्रुव-पंक्ति | *पृष्ठ-संख्या*

उ

उठे हरि नैनन नींद भरे 134
उरहनो सुनि सुनि खीझीं माय 149

ऊ

ऊधो! ऐसेहिं कहियो कान्ह 362
ऊधो! कहा कहौं तिन काहिं 363
ऊधो! कहि दीजो उन जाय 363
ऊधो! कहि दीजो बलभ्रात 364
ऊधो! कहि दीजो यह तात 364
ऊधो! कहि दीजो संदेश 364
ऊधो! कहियो उन घनश्याम 365
ऊधो! कहियो उन चितचोर 365
ऊधो! कहियो उन नँदलाल 366
ऊधो! कहियो उन भगवान 366
ऊधो! कहियो कृपानिधान 366
ऊधो! कहियो नंदकुमार 367
ऊधो! कहियो श्यामलगात 368
ऊधो! कहियो श्याम सुजान 367

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
ऊधो! कहियो हरि समुझाय	368
ऊधो! कहु कब ते अज्ञान	368
ऊधो! कह्यो इहै बलभाय	369
ऊधो! जनि कहियो कछु कान्ह	369
ऊधो! जाय कह्यो तुम वाय	370
ऊधो! तजु अद्वैत विचार	370
ऊधो! तुम अज्ञान निधान	371
ऊधो! तुम आये सोइ देस	371
ऊधो! तुम दोउन इकसार	372
ऊधो! तुम नहिं जानत ज्ञान	372
ऊधो! तुमहिं ज्ञान को ज्ञान	372
ऊधो! तुमहिं शब्द को ज्ञान	373
ऊधो! दोष न कछु उन आय	373
ऊधो! धनि तव ज्ञान प्रचार	374
ऊधो! धनि तव ज्ञान विचार	374
ऊधो! धन्य तुम्हारो ज्ञान	374
ऊधो! धन्य हमारो भाग	375
ऊधो! बलिहारी येहि ज्ञान	375

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

ऊधो! भली करी तुम आये 376
ऊधो! माधो की गति न्यारी 376
ऊधो! मैया सों कहियो जाय 377
ऊधो! यह कहियो संदेश 377
ऊधो! यह रहस्य की बात 378
ऊधो! यह वेदांत विचार 378
ऊधो! इहै ज्ञान को सार 378
ऊधो! वे सब जानन हार 379
ऊधो! सरस प्रेम रस पाये 379
ऊधो! सुनु चारिहुँ श्रुति सार 380
ऊधो! सुनु सूधो सो ज्ञान 380
ऊधो! हम अबला ब्रजनार 380
ऊधो! हम जानति सब बात 381
ऊधो! हम पूछति इक बात 381
ऊधो! हम भोरी ब्रजनार 382
ऊधो! हम मतिमंद गमार 382
ऊधो! हमरे आँखि न कान 382
ऊधो! हम सूधी ब्रज-बाम 383
ऊधो! हरि सों कहियो जाय 383

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

ऊधो! हैं माधो करतार 384
ऊधो! हैं माधो ठगहार 384
ऊधो! ह्वै गये प्रेम अधीर 384

ऐ

ऐसो प्रेम बढ्यो ब्रजवासिन 449

ओ

ओझाई करि ओझा गये हार 385
ओ मन! मूरख अब चेत रे 21
ओरे तोरे मन कपट खटाई री 468

क

कछू सखि, कै गयो मो पै आज 278
कपाटनि, को नटखट खटकाय 246
कबहुँ जनि, कारेन कोउ पतियाय 385
कबहुँ सखि हमहुँ देखिहौं श्याम 77
कबै कहि मैया! मोहिं बुलाय 128
कबै हरि बनिहौं ब्रज को मोर 77
कबै हरि हौ पैहौं ब्रजवास 21

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

करत हरि, होरी महँ हुरदंग	340
करन गइ! कालि यमुन असनान	278
करन लागे मोहन अब चोरी	469
करहु जनि, कारेन की कछु बात	386
करहु बुधजन मन माहिं विचार	22
करिय पिय मोहिँ भँवरा ब्रज माहिं	78
करिय मोहिँ कुंज कदंबनि डार	78
करी का, ना जाने वाने	386
करु गुन आगरि-गुन-गान रे	210
करेगो को कारे ते ब्याहु	150
करो जनि मन! मनमानी काम	22
करौं का राधा तत्व बखान	211
कहत प्रभु! छोटे मुहँ बड़ि बात	79
कहत हम खरी खरी कछु बात	22
कहत हरि, सुनु सब ब्रज बनितान	387
कहति का, ललिता बात बनाय?	310
कहहु सखि, प्रथम-मिलन की बात	279
कहहु सखि! वा दिन की कछु बात	280
कहाँ लौं कहिये हरि उपकार	79

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

कहाँ हरि! गई कृपा की बानि	79
कहाँ हरि! सोये हमरिहिं बार	80
कहा सखि! कबहुँ न अइहैं श्याम	387
कहुँ देखे आली, ललित त्रिभंगी लाल	185
कहुँ देखे जशुदा लाल रे	186
कहूँ का छवि सखि! गोरे ग्वाल	210
कहूँ का, वा दिन की सखि! बात	279
कहूँ मैं, कासों मन की बात	280
कहो पिय!, किन तोहिं रसिक बनायो	388
कहो हरि! कहाँ रह्यो तव न्याय	81
कहो हरि! हम तुम ते कछु थोर?	80
कहौं का, तुम सों नंदकुमार	81
कहौं हरि कहा? कौन मुहँ लाय	82
काँकरि मोरि मारी गागरी	280
कान्ह कछु कै गयो टोना री	281
कान्ह की जादूभरी मुसकान	186
कान्ह की बात रही अब कान	388
कान्ह की सुन करतूतहिं मात	150
कान्ह के गुन नूतन सुन माय	151

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

कान्ह को पकर्‌यो हलधर कान	151
कान्ह! टुक सुन लो करि के कान	82
कान्ह तुम माँगत कैसो दान	152
कान्ह! तुम नहिं मो कहँ पहिचान	82
कान्ह बिनु, कैसे राखूँ प्रान	388
कान्ह मम, जागो जीवन प्रान	141
कान्ह यह कौन तिहारी बान?	152
कान्ह सों कहति कहानी माय	153
कान्ह! हम सुने तुमहिं भगवान!	153
काम प्रेम ना, प्रेम काम ना	37
कामरी वारे पै, का मरी जात	281
कालि की, बात कहौं आली	282
किये इन नैनन बंटाढार	389
किशोरी जु कि, भोरेपन की बान	211
किशोरी जु कि, मधुर मधुर मुसकान	211
किशोरी जू के, रतनारे दोउ नैन	212
किशोरी तोरे, चरनन की बलि जाऊँ	212
किशोरी पद किंकर श्याम सुजान	389
किशोरी मोरी, अब न लगाओ बार	83

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

किशोरी मोरी, करहु कृपा की कोर	83
किशोरी मोरी, बिगरी देहु बनाय	84
किशोरी मोरी, सरस प्रेम-रस खान	213
किशोरी मोरी, सुनिय नेकु इक बात	84
किशोरी सँग, नाचत नवल किशोर	263
कीर्ति घर प्रकटीं कीर्ति कुमारि	172
कुंज बिच विहरत कुंज बिहारी	186
कुँवरि की किलकनि की बलि जाउँ	176
कुँवरि की चितवनि की बलिहार	213
कुँवरि की लरिकैयन की बानि	176
कुँवरि! जा खेलु लतान तरे	178
कुंवरि! तुम, मेरी जीवन-मूरि	334
कुँवरि! तू कितै गई डरपाय	390
कुँवरि! तू झूठेहिं दोष लगाय	315
कुँवरि नथ बेसर छवि छविदार	213
कुँवरि बिनु, अब तो रह्यो न जाय	320
कुँवरि बिनु, कुँवर न उर धर धीर	322
कुँवरि बिनु, कैसे राखूँ प्रान	319
कुँवरि बिनु, जनु उनमाद लखात	321

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
कुँवरि बिनु, पल छिन कल न परे	321
कुँवरि बिनु, प्रियतम करत विचार	325
कुँवरि बिनु, प्रियतम होत अधीर	322
कुँवरि बिनु, सूनो सब संसार	321
कुँवरि रहिं, कीरति सों विरुझाय	176
कुँवरि लखि लाजत सखि! शृंगार	214
कुँवरि! हौं, मानत हौं निज दोस	85
कोउ जनि, जाहु जमुन असनान	282
कोउ बेगि बुझाओ, हौं जरी	282
को कर, कारे ते यारी	154
को कह राधे सम गिरिधारी	23
कौन यह, विरह बनायो हाय	390
कौन हरि! हमरो तुम्हरो नात	85
क्यों पिय!, इतनो इतराय रे	391
क्यों बात बनावति नागरी	391
क्यों रहिहैं ब्रज ब्रजनार रे	154
क्रूर!, तू कत अक्रूर कहाय	392
क्रूर वह विधि या यह अक्रूर	392

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

ख

खंभ-मणि विहरत सुंदर श्याम	**131**
खरे हरि कुंज-लतान तरे	**187**
खाय अब माखन मोरि बलाय	**181**
खेलत श्याम संग श्यामा के	**264**

ग

गई डसि नागिनि अबहीं भोर	**283**
गई मैं, गिरिधर पर बलिहार	**283**
गई लखि, दीपावलि बलिहार	**246**
गई लखि, मधुर-मिलन बलिहार	**284**
गईं हम सब नटवर ते हारि	**155**
गई हिय, तीछी बीछी मार	**284**
गये कित, गोधन तजि गोपाल	**392**
गये कित, गोपन तजि गोपाल	**393**
गये कित, प्रियतम नंदकुमार	**393**
गये सब परमहंस बौराय	**23**
गये हम, इन नैनन ते हार	**394**
गयो ब्रज माहिँ ब्रह्म बौराय	**24**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

गयो लै, प्रान प्रान को प्रान	394
गयो सखि!, चतुरानन सठियाय	395
गयो हरि, मो पै जादू डार	284
गहो रे मन! श्याम चरण शरणाई	24
गागरी मोरि मारी काँकरी	285
गोद-हित झगरत सुंदर श्याम	138
ग्वाल सँग गो चारत गोपाल	155
ग्वाल सँग जेंवत बाल गुपाल	156
ग्वालिनी! अबहुँ बात ले मान	156

च

चंचल चलु, हटु तजु अंचल-पट	341
चपल चित! कत इत उत भटकात	25
चपल तोरि, चितवनि की बलि जाउँ	188
चंपकलता, सखिन-सिरमोर	257
चलत झुकि झूमि झूमि नँदलाल	187
चलत सखि, लटपटात नँदलाल	132
चलन चह, तनु तजि मथुरा प्रान	395
चलन लागे गिरत परत गोपाल	133

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
चलन लागे, लाल घुटुरुवनि चाल	131
चलन लागे, ठुमुकि ठुमुकि नँदलाल	132
चलीं दधि, बेचन ब्रज की बाम	285
चलीं ललि, आजु छलन नँदलाल	247
चली हौं दुलहिनि बनि ससुरार	25
चलु प्रेम नगर की गैल रे	25
चले बनि, मालिनि बनमाली	248
चलो अलि देखन भानुलली	173
चलो पिय, झूलें कुंज मझार	265
चलो मन! श्री वृंदावन धाम	116
चलो मन! गहवर कुंज लतान	26
चल्यो कित, लै प्रानन अक्रूर	395
चल्यो सखि, अस पिचकारिन रंग	341
चुरावति चित चितवनि नँदलाल	188

छ

छवि निधि रस निधि प्रेम-सुधा-निधि	450
छबीली छवि, अलि छलियाहुँ छली	214
छाँड़ि दे मन! अड़बंगी रीति	26

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

छाँड़ि ब्रज और चलहु कहुँ मात	156
छाँड़ु मन! जग मृगजल की आस	28
छाँड़ु मन! ठगिनी माया आस	27
छाँड़ु मन! सनक तनक सुनु बात	27
छिनहिँ छिन नैनन नीर भरे	396
छीनि लइ, इन नैनन मन चैन	396
छुवो जनि, कान्ह मान लो बात	248
छुवो जनि प्यारे!, मोहिं डर लागे	470
छुवो जनि, मनमोहन तन मोर	286
छैल भल, अटपट भेष बनायो	315
छोड़ि मोहिं, राधे कितै गई	318
छोरि सखि! लै गयो मम सिंदूर	397

COPYRIGHT

ज

RADHA GOVIND SAMITI

जग गोरखधंधा जान रे	28
जगत की बड़ी अनोखी बात	28
जयति जय, जयति जयति राधे	215
जयति जय, जय सद्गुरु महराज	2
'जयराम योगी!' 'जयराम माय!'	126

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
जहँ रहे रैन जाहिं वोहि घर री	327
जाउँ गुरु, चरण-कमल बलिहार	2
जाउँ बलि, जोरी-जुगल निहार	234
जाउँ ब्रजनारिन की बलिहार	29
जावो जी, न जल बिच आग लगावो	317
जानि लइ हरि तुम्हरी सब पोल	86
जारे जारे, जार जा, हरजाई	452
जियत न मरत न जिय तन भात	397
जीव जड़ दे जड़ता अब छोड़	29
जौहरी बन्यो सकल संसार	30
झ	
झुलावति, अलिन युगल-सरकार	265
ट	
टुक सुन ओ! ढोटा नंद के	157
ड	
डगर महँ झगरि लँगर कर रार	157
डारो डारो री, रंग बनवारी पै	341

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

ढ

ढाँपि मुख कामरि रूठे लाल 158

त

तजन को, जाय न सहज सुभाय 398
तजी क्यों, प्रियतम ब्रज बनितान 398
तजो रे मन! उन संतन को संग 30
तजो रे मन! छनभंगुर वैराग 31
तन यौवन धन दिन चार रे 31
तुंगविद्या सखियन सरताज 258
तुम जीवन-जीवन जीवनधन 286
तुमहिं तजि नहिं चहिये गोलोक 31
तुमहिं मम गति गिरिधर गोपाल 86
तू भाये, तेरी प्रीति न भाये पिय 470
तू भोरी भारी वारी-वारी जाय री 471
तू मन! मनमानी त्याग रे 32
तोरि दिय तृण सम जग को नात 32

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

द

दई अब, हारि गई सब दाउँ 287

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
दई! मोहिं, दई पीर बेपीर	399
दई! हौ, आजु ठगाय गई	287
दई! हौं, गई धार-हूँ धार	288
दई! हौ, लुटि गई बीच बजार	288
दधि को एकहुँ बूँद न देइहौं	258
दयामय! अपनी ओर निहारो	87
दयामय! अपनो विरद विचार	87
दयामय! अब तो दया करो	87
दयामय! दया चहौं नहिं न्याय	88
दयामय! मोहिं समान मोहिं जान	88
दरस कब दैहौ नंदकिशोर	89
दर्शन देना नंद दुलारे	89
दीन की सुन लो दीनानाथ	90
दीन के तुम ही दीनानाथ	90
दीनानाथ मोहिं काहे बिसारे	91
दृगन बिच हलकैं अलि अलकें	189
दृग-पट मुकुट लटक पे अटकि गयो	399
देखु सखि! अद्भुत कुंज विहार	266
देखु सखि!, आई ऋतु बरसात	400

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
देखु सखि! झूमत आवत श्याम	189
देखु सखि! झूलत श्यामा श्याम	266
देखु सखि! दोउ रस रंग भरे	267
देखु सखि! द्वै सावन सँग भाय	249
देखु सखि! नागर नंदकुमार	189
देखु सखि! पीतांबर फहरान	190
देखु सखि! बेसर-छवि छविदार	190
देखु सखि!, युगल नवल सरकार	234
देखु सखि! सावन मास बहार	267
देखु सखि! स्वामिनि को शृंगार	250
देखो देखो री, ग्वाल-बालन यारी	452
देखो देखो री, ठिठोरी होरी की	342
देहु सखि! तन मन प्रानन कान्ह	191
देहु हरि! यह झगड़ो निपटाय	33
द्वार इक योगी 'अलख' पुकार	125
द्वार पतित इक आयो री किशोरी राधे!	92

ध

धन-धन रसिकन-धन गोवर्धन	454

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
धन-धन रसिकन-धन वृन्दावन	455
धनि-धनि तिन ब्रज-गोप-वधूटिन	453
धन्य चोर सिरमोर, मोर प्रिय	400
धन्य प्रेम गोपीजन त्रिभुवन	119
धन्य सोइ जोइ स्वारथ पहिचान	33
धन्य सो मातु यशोमति भाम	129
धरु उन स्वामिनि को ध्यान रे	215
धरु नँदनंदन को ध्यान रे	191
धरु भानु नंदिनिहिं ध्यान रे	216
धरु मन मनमोहन ध्यान रे	192
धरो मन! गौर-चरन को ध्यान	33
धरो मन, भानुलली को ध्यान	216
धरो मन, युगल माधुरी ध्यान	235
धीर अब, कैसेहुँ नाहिं बँधात	402
धूसरि धूरि भरे हरि आवत	192
न	
नचत ता, थेइ थेइ नंदकुमार	250

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
न जावो, मथुरा! प्राणाधार	402
नटखट की लट घुँघराल रे	192
नथवारी तिहारी बलिहार	472
नंद के आँगन आनँदकंद	124
नंद के भये आजु आनंद	124
नंदघर निरतत नंदकुमार	135
नन्ददुलारे, राधा जू के प्यारे	473
नंद-महर-घर बजत बधाई	123
नन्दलाल प्यारे, यशुदा-दुलारे	474
न लेजा रे, मम प्रानन-प्रान	402
नवनि मुख मंडित सुंदर श्याम	132
नवनि हित झगरत दोउ सुखधाम	134
नवल लिलिहारिनि की बलिहार	251
नहिं आये प्रियतम हाय! रे	403
नाथ! अब बूड़त लेहु बचाय	92
नाथ! अब भटकत थकि गये पाम	93
नाथ! अब लाज तिहारी जात	93
नाथ! जनि अब मो कहँ बहकाय	94
नाथ! मम तुम ही सोँ सब नात	34

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
नाथ! मोहिं कीजै दासन दास	94
नाथ! यह कौन तिहारो न्याय	94
नाथ! यह माया कौन बलाय	95
नाथ सब अहइ तिहारेइ हाथ	34
नाथ! हौं गयो सबै विधि हार	95
नाथ! हौं तुमहिं सोचि पछितात	96
नाम बड़ दर्शन छोटे श्याम	96
ना री जाने कछु रीति रसवारी री	475
निज ब्रजधाम लेहु नँदरानी,	159
निठुर मोहिं, दै गयो विरह अपार	403
निरत कर आजु ब्रह्म साकार	160
निर्मोहिया सों नेहा लगाय	476
नेकु दे माखन ओ ब्रजनार	160
न्याय अब तुम ही करो ब्रजराज!	96

प

पकरि गयो चोरत माखनचोर	160
पकरि गयो माखन चोरत कान्ह	161

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव–पंक्ति *पृष्ठ–संख्या*

पड़ो सखि! नेम प्रेम झगड़ो	35
पतित इक देत चुनौती आय	97
पथिक तुम, इतनो कहियो जाय	404
पधारो, झूलन दोउ सरकार	268
पपिहरा, पापी मोहिं सताय	404
परीं सब बैर हमारे लाल	161
परी मैं, काल लाल के जाल	289
परी है होड़ आजु दोउ भाय	140
परी है होड़ नंद अरु माय	139
परो सखि, झूलन में झगरो	268
पालने झूलत बाल गोपाल	125
पालने झूलति भानुदुलार	174
पिय आवन कहि गये, आये ना	404
पियत थन सुरभिन नंदकुमार	140
पिय बिनु, कैसेहुँ जिय नहिं चैन	405
पिय बिनु, पिय सों तिय बतरात	324
पिय बिनु, मो कहँ कछु न सुहाय	405
पिय मोल अमोलक लीजिये	35
पिया बिनु, उठति हूक हिय हाय	324

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

पिया बिनु, प्यारिहिं विरह सताय	324
पिय बिनु, प्यारी गइ बौराय	406
पिया बिनु, प्यारी जिया अकुलात	323
पिया बिनु, प्यारी होति अधीर	323
पिया! मोहिं कब ह्वै हौ दुखदाई?	97
पिया! मोहिं प्रेम-दान जनि दीजै	98
पिरोवति राधा अँसुवन हार	406
पीर हरि! तुम बिनु कौन हरे?	98
पुनि शरत-पूर्णिमा आ गई	407
प्यारी तोरी, अरुण अधर-छवि न्यारी	217
प्यारी तोरी, लट लटकनि पर वारी	217
प्यारी तोरी, वेणी लटक अति प्यारी	218
प्रभु जी! भले बुरे हम तेरे	98
प्राणधन जीवन कुंज बिहारी	36
प्राण हित, पावस-ग्रीषम धायो	407
प्रान प्रान, कान्ह तान, नैन बान मारी	193
प्रीति की अति अटपट गति हाय	120
प्रीति की, अति अड़बंगी रीत	120
प्रीति की रीति न जाने कोय	121

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
प्रीति की रीति न सखि सब जान	36
प्रीति सखि काको कहत बताय	36
प्रीति सखि नागिनि सी बल खाय	121
प्रेम बिनु ज्ञानी निपट गंमार	122
प्रेम रस, बरसत कुंज मझार	268
प्रेम-रस-बोरी भानुदुलार	218
प्रेम रस रूप अगाधा राधा	219
ब	
बँसुरिया, सखि! या लेहु छिनाय	337
बड़ी सी दुलहिनि माँगत लाल	141
बड़ो कब ह्वैहें हमरो लाल	128
बताऊँ, तो कहँ सखि! का बात	309
बताओ राधे! जाऊँ काके द्वार?	99
बताओ सखि!, कैसे धरूँ मैं धीर	407
बताओ सखि! राधे गईं कौनी ओर	330
बनत तुम जानि जानि अनजान	99
बनत नहिं, भनत अनत यह बात	289
बनहुँ कब प्रेम सरोवर मीन	100

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
बनाई गुड़िया गुड़रा माय	179
बनायो, हरि नाइनि को भेष	251
बनायो, हरि योगिनि को भेष	252
बनी कस जोरी युगल-किशोर	235
बने अलि, लाली वनमाली	252
बने मनिहारिनि नंदकुमार	253
बरजो री, लँगर कर बरजोरी	342
बलभ्रात सतावै बिनु बात री	477
बलि जाउँ कपट चटसार की	408
बलि जाउँ निकुंज लतान की	269
बलि जाउँ निकुंज विहार की	269
बलि जाउँ प्रेम-रस-सार की	122
बलि जाउँ मनावन-मान की	317
बलि जाउँ, युगल सरकार की	236
बलि जाऊँ रसीले लाल की	193
बलि जाउँ लली वृषभान की	219
बलि जाउँ लली सुकुमार की	220
बलि जाउँ लाड़ली लाल की	236

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
बलि जाउँ सलोने श्याम की	130
बलि श्री गुरुदेव कृपाल की	2
बलिहारी है तिहारी बनवारी	457
बसे रे मेरे, नैनन दोउ सरकार	236
बसे रे मेरे, नैनन पिय! तेरे नैन	289
बात इक सुनो कान्ह! दै कान	100
बात सुनु साँची साँची माय	162
बार इक, आओ प्राणाधार	408
बार इक हेरहु हमरिहिँ ओर	101
बार कत करति हमारिहिं बार!	101
बेदरदी! क्यों इतनो इतरात	409
बेर भइ टेरत नंदकुमार	101
बैरी बसंत, सखी! पुनि आयो	410
ब्रजरस बरसि रह्यो ब्रज बीथिन	457
ब्रह्म तुम केहि बल पर इतरात	37

भ

भइँ कुँवरि भूप वृषभान के	172
भई री मैं तो, घायल नैनन बान	290

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

भजु राधे गोविन्द घनश्याम रे	479
भजो मन! निशि दिन नंदकुमार	38
भजो रे मन! निशिदिन नंदकिशोर	38
भटू! मैं, पटू लटू भइ आज	291
भये द्वै दिन के, कै ह्वै हाय	410
भये मोहन सों नैना चार	480
भयो को मो सम पतित बड़ो?	102
भयो सखि!, अब सो सुख सपनो	410
भला तुम कैसे हो भगवान	162
भाजो भाजो री, कान्ह पकड़ो, पकड़ो	343
भाजो भाजो री, कान्ह लखु होरी ते	343
भानुभूप-घर बजत बधाई	173
भोर भइ जागो नवल किशोर	142
भोर भइ जागो सुंदर श्याम	142
भ्रमर! तू, जनि गुन-गुन गुंजार	411
भ्रमर! तू, वृथा करत मनुहार	411

म

मधुर-धुनि, मुरली बजावत कान्ह	337

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
मन! इक दिन ऐसा आयेगा	39
मन! काहे करत गुमान रे	39
मन! क्यों नहिं हरि गुन गा रहा	40
मन! तू काहे हठ पकर्‌यो	40
मन भावन सावन आय रे	412
मनमोहन–छवि मन भा गई	291
मनमोहन सों मन लाग रे	102
मन मोहि लियो मनमोहना	291
मम स्वामिनि गुन की आगरी	220
मम स्वामिनि छवि अभिरामिनी	220
मम स्वामिनि राधा नामिनी	221
'माँग हम, स्वामिनि! इक वरदान	312
माई री मैं तो! आजु परी निधि पाई	40
मातु! अब तो सन करहुँ न बात	178
मातु टुक सुन ले याकी बात	163
मातु! यह कुँवरि न मानति बात	180
मातु सुनु खरी खरी अब बात	163
मातु! सुनु साँची साँची बात	163

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
माधव सँग, माधव आयो री	344
माधव!, अब न, तुमहिं पतियाउँ	412
माधो! गये देन भल ज्ञान	413
माधो! जाउँ तुमहिं बलिहार	413
माधो! तुम पूरे ठगहार	413
माधो! तुम मोहिं भले पठाये	414
माधो! धन्य धन्य ब्रजनार	414
माधो! पुरवहु मम अभिलास	415
माधो! भल पठयो संदेश	415
माधो! मानि लई हम हार	415
माधो! मोहिं पठयो वोहि देस	416
माधो! मोहिं लूटीं ब्रजनार	416
माधो! हम मानत आभार	417
मान मन! छांड़ु मान अपमान	41
मानिनी, डर हरि दूर खरे	307
मानिनिहिं, सनमुख जात डरे	308
मानिनी, कहु कछु तो का बात?	308
मानिनी! कासों सीखी मान	331

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

मानिनी! कौन तिहारी बान	329
मानिनी, छिन-छिन मान करे	307
मानिनी, तुम्हरे उर नहिं पीर	328
मानिनी, तू मानति नहिं बात	310
मानिनी, बात मान तजु मान	327
मानिनी, बात हमारी मान	309
मानिनी, भई बेर अब मान	328
मानिनी, मान की बान बुरी	329
मानिनी, मान मान अब मान	326
मानिनी, यह ऐसो संसार	311
माय! अस गुड़िया मोहिं बनाय	179
माय ते कुंवरि कहति तुतराय	182
माय! दे चंद्र खिलौनहिं लाय	175
माय मोहिँ भैया बहुत खिझाय	180
माय! मोहिं सखियन बहुत चिढ़ाय	183
माय ले, निज लालहिं समुझाय	164
माय री जोरी कौन बलाय	178
माय! सखि झूठेहिं दोष लगाय	164
माय! सखि पानिहिं आग लगाय	165

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
मिलत नहिं नर तनु बारम्बार	41
मुझ विरहिनि को विरह सतावे	417
मूढ़ मन! गूढ़ तत्व यह जान	42
मेरी प्रानन प्यारी जाग रे	174
मेरे नैनन तारे जाग रे	133
मेरे नैनों को नीलमणि भाय गयो रे	194
मेरो मन गौर चरन अनुराग्यो	42
मैं कैसी करूँ, मोहिं कछू ना भाये	418
मैया! तेरे, छैया ने जुलुम करी	165
मैया! तेरो, कैसो दैया छैया?	166
मैया मेरो, रँग गोरो करि दे री	143
मैया मैं तो पायो भल गुरु-ज्ञान	143
मैया मै तो, बड़ी सी दुल्हनियाँ लैहौं	144
मैया! मैं तो मोहिनि-रूप बनैहौं	166
मैया मोहिं, दै दे माखन रोटी	144
मैया! मोहिं भैया बहुत रुवाय	181
मैया री! मैं नहिं माटी खायो	145
मो पै कछु कै गयो नंदकुमार	292
मोरी तोरी लर, ओरी गोरी!	459

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

मो सम कौन अभागिनि मात?	418
मोहन! मोहिं न आँखि दिखायो	167
मोहिं तो भरोसो है तिहारो री	103
मोहिं मनमोहन मनभाय रे	43
मोहिं स्वामिनि! अपनी मान रे	221
मोहिं स्वामिनि! अब अपनाइये	103
मोहिं मोहि लियो निरमोहिया	292
मोहि लइ, मोहिं मोहन-मुसकान	293
मोहि लियो, मो मन मदन गोपाल	293
मोहिं लीनो मोल बिनु दाम री	480
य	
यमुन जल, विहरत नंदकुमार	254
यमुन तट, गई भरन घट आज	294
यमुन तट ठाढ़ीं भानु दुलार	215
यमुन तट ठाढ़ो सुंदर श्याम	194
यह कैसी लागि बलाय रे	294
यह छोरा है, सखी या छोरी है	344
यह जग सेमर का फूल रे	43

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
यह जोरी नीकी जान रे	43
यह माया ठगिनी जान रे	44
यह मौन काल ली, का लली ?	418
यह यारी है, हाय या बटमारी	294
यह होरी है, अरी या होरा है	345
यह होरी है, लली! या बरजोरी	345
या कारे ने, करे करतब कारे	346
या ब्रज की, रीति निराली है	459
युगल गल बँहियन की बलिहार	237
युगल छवि, देखि गई बलिहार	237
युगल रस, वृन्दावन बरसे	234
युगलवर, उरझनि की बलिहार	238
युगलवर, जल विच करत विहार	249
युगलवर, जेंवन की बलिहार	253
युगलवर, झूलनि की बलिहार	270
युगलवर, झूलेँ कुंज कुटीर	270
युगलवर, झूलें कुंज मझार	270
युगलवर, ठाढ़ो कुंज लतान	238

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

युगलवर, निरतत कुंज कुटीर 271
युगलवर, निरतत कुंज मझार 271
युगलवर, नैन नींद रहि छाय 239
युगलवर, भीजत कुंज मझार 272
युगलवर, रसिकन को सिरमोर 239
येहि जग की आशा छोड़ रे 44
येहि जग मृगजल ज्यों जान रे 45

र

रँग डारो न, कान्ह! दउँगी गारी 346
रँग डारो न, लँगर नइ सारी रे 347
रँग डारो री, वीर! मुरली वारो 347
रँगीली राधा रसिकन प्रान 222
रंगदेवी सखियन सरनाम 258
रटु निशिदिन राधे नाम रे 45
रटो रे मन! छिन छिन राधे नाम 45
रटो रे मन! छिन छिन श्यामा श्याम 46
रवति कहुँ, मुरली कुंज कुटीर 338
रसिक जन गये फोरि सिर हार 46

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

रसिक जन-धन गोवर्धन धाम	116
रसिकन की, गति रसिकन जाने	460
रसिकवर नागर नंदकुमार	194
रहत इन, नैनन नित बरसात	419
रही सखि!, बात तोर या मोर	419
रहु श्री बरसाने गाम रे	47
रहो रे मन गौर चरन लव लाई	47
राधे तोरे, अरुण चरण पर वारी	222
राधे मोहिं, चरण कमल रज कीजै	104
राधे सँग, श्याम खेलैं होरी	348
रास-रस रसिक रँगीली राधा	222
रुनुक झुन, धुन नूपुर नँदलाल	195
रूठे कान्ह मनावति माय	137
रेनु तनु मण्डित सुन्दर श्याम	136
रैन दिन झगरत नैनन प्रान	47
रैन-दिन तलफि रहे दोउ नैन	420
रैन-दिन, नैनन चैन परै न	420
रैन-दिन नैनन नीर ढरे	421
रैन-दिन विरहिनि तलफत जात	421

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

ल

लँगर मोते, डगर चलत कर रार	167
लखि आजु गई बलिहार रे	295
लखि रस–बरसानो बरसानो	460
लखि इन, नैनन नैनन कान्ह	295
लखी इन, नैनन मृदु–मुसकान	296
लखी जिन भानुलली मुसकान	223
लखी पिय, जा दिन मृदु मुसकाय	421
लखी मैं, नवनि ते अति मृदुताई	326
लखी मैं सखि! सुंदर श्यामल गात	196
लखी मैं सखि! सुंदर श्याम सुजान	296
लखी सखि! जब ते सुंदर–श्याम	422
लखु लालिहिं, लालहिं लाल रे	223
लखो जनि!, कान्ह की मुसकान	422
लखो री आली! लाली जु कि झुलन बहार	272
लखो रे मन, वृंदा विपिन–बहार	117
लख्यो पिय, कुंज–भवन भननात	330
लख्यों मैं इक अचरज ब्रजधाम	48

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति | *पृष्ठ-संख्या*

ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ-संख्या
लख्यो जग इक अचरज की बात	48
लख्यों इक अचरज कुंज मझार	273
लख्यों मैं इक अचरज संसार	49
लगति सखि अब ससुरारि पियारि	49
लगी री मोहिं, श्याम-दृगन की चोट	423
लगे नहिं सगे तोर भगवान	49
लतन में ठाढ़ीं भानुदुलार	224
लतन में ठाढ़ो सुंदर श्याम	196
लला! यह, भला कौन सों फाग	348
लली करु महल टहलिनी मोय	104
लली की अति मतवाली चाल	224
लली के अलसाने दोउ नैन	174
लली-दृग छवि लखि कवि भरमाये	225
लली बिनु, पल पल कलप लखात	320
लली बिनु, सब विपरीत लखात	319
लली-मुख उपमा देत लजाये	225
लली मुख लखि लाजत श्रृंगार	226
लली सँग खेलत बाल गुपाल	139
लली सँग खेलत हार्यो लाल	136

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
ललाी सी छैल छबीली नाहिं	**226**
लाग उर, हाय विरह की आग	**423**
लाड़लिहिं लीला ललित रसाल	**177**
लाल की अति मतवाली चाल	**177**
लाल के घूँघर वारे बाल	**197**
लाल को, जाल भली मैं जानी	**424**
लाल तुम नाहक गाल बजाय	**168**
लाल! तुम वृथहिं बजावत गाल	**105**
लाल भये, लाल-गुलालन लाल	**349**
लाल सँग, खेलिय हिल मिल फाग	**349**
लाल सम लालहिं निठुर कृपाल	**50**
लिय फाँसी गले महँ डार	**481**
लूटि मोहिं लै गयो नंदकुमार	**296**
लो स्वामिनी मोहिं अपनाय रे	**105**

व

व्याध इक, मारेहु हिरणिहिं बान	**290**
वारी-वारी छवि छैल-बिहारी की	**461**
वारी-वारी छवि, मोर-मुकुट-वारी	**462**

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

वारी-वारी छवि, वारी नथवारी की 462
वारी-वारी जाऊँ वारी बनवारी पै 463
वारी हौं, वारी छवि, पीतपट वारी पै 198
वियोगिनि, अँसुवन हार पिरोय 424
विरह दुख, कहि न जाय सहि जाय 425
विराजत ब्रह्म नंद के अंक 128
विशाखा सखि, सखियन सरदार 258
वीर! हौं, धरौं कौन विधि धीर 409
वैदवा अनारी, नारी धर भरमावे रे 478
वृंदावन, धूम मची होरी 350
वृन्दावन, रसिकन रजधानी 464
वृषभानु ललिहिं उर आनिये 227
वृषभानु लली गुन गाइये 227

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श

श्याम! अब तुमहिं मान लो हार 50
श्याम! अब बेगि बचावो जी 425
श्याम कत, एतिक भये कठोर 425
श्याम की मंद मंद मुसकान 198

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
श्याम के जादू भरे दौउ नैन	**198**
श्याम तन भले भये घनश्याम	**51**
श्याम तुम कैसे दीन दयाल	**105**
श्याम तुम कैसे हो घनश्याम?	**106**
श्याम तुम! रसिकन नाम लजायो	**273**
श्याम तोरी, मुरली ने जुलुम करी	**338**
श्याम बिनु, भई श्याम हौं वीर	**426**
श्याम मोहिं देहु प्रेम निष्काम	**106**
श्याम सखी अति सुघर नवेली	**254**
श्यामसुन्दर सों करिके प्यार	**482**
श्यामसुन्दर हमारो यार	**483**
श्याम है झूठो तुम्हरो नाम	**107**
श्याम हौं कब ब्रज बसिहौं जाय	**107**
श्याम हौं कब ह्वैहौं ब्रजधूरि	**107**
श्याम! हौं योगिनि भेष बनैहौं	**426**
श्यामा-श्याम धाम-वृंदावन	**313**
श्यामा श्याम शरण गहु रे मन!	**51**
श्री राधे जू को, अधाधुंध दरबार	**228**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति | *पृष्ठ-संख्या*

ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ-संख्या
श्री राधे जू को, ऐसो है दरबार	228
श्रीराधे! तोरे कौन बलाय लगी	427
श्री राधे रानी! अब की लेहु अपनाय	316
श्री राधे रानी! अब जनि करियो मान	333
श्री राधे रानी! केहि विधि तोहिं समुझाऊँ	333
श्री राधे रानी! जाके लगे सोइ जान	333
श्री राधे रानी, परूँ तिहारे पाय	332
श्री राधेरानी प्रेम तत्व की सार	51
श्री राधेरानी!, लागी बुरी बलाय	332
श्री राधे हमारी सरकार	484
श्री श्यामा जू को, ऐसो सरल सुभाय	228
श्री श्यामा जू को, श्याम पलोटत पाम	229

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

स

ध्रुव-पंक्ति	पृष्ठ-संख्या
सखन इक, पाती लिखी बनाय	427
सखि कालि लखी नँदलाल रे	129
सखिन तनु, बिनु प्रियतम पियरान	427
सखिन महँ, नामी चित्रा नाम	259

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

सखिन महँ ललिता परम प्रधान 259
सखी! पिय-मुसकनि मन भा-गई 297
सखि, पुनि वरषा ऋतु आ गई 428
सखि! हरि, 'छू-मंतर' सों करि गयो 297
सखि! अस रस मोहन मुसकान 199
सखि! इक, सपनो देख्यौं रात 298
सखि! इन अँखियन कछु न लखाय 428
सखि! इन अँखियन को समुझाय 429
सखि! इन कानन का न करी 429
सखि! इन नैनन कहा करूँ? 429
सखी कछु, प्रियतम बात सुनाय 256
सखी कोउ एक बात समुझाय 52
सखी कोउ, कोउ उपाय बतराय 430
सखी! कोउ, देउ वैद बुलवाय 430
सखी! क्यों, निज पिय पै इतराय 299
सखी तू, उनहिन ओर ढुरे 308
सखी! तू, काहे मोहिं छुपाय 299
सखी! तोय, योग, वियोग कि दोय? 431

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
सखी! तोय, काउ की दीठि लगी	**431**
सखी! दोउ, झूलत मृदु मुसकात	**274**
सखी! पिय, अतिशय सरल सुभाय	**432**
सखी मन मरम न जाने कोय	**53**
सखी! मैं, गिरिधर हाथ बिकानी	**300**
सखी! मैं परूँ तिहारे पाय	**331**
सखी! मैं, बिकी आजु बिनु दाम	**300**
सखी! मैं, भई अंध अनुहार	**432**
सखी! मैं, लुटि गइ कुंज मझार	**300**
सखी! मैं, सुनी कालि इक बात	**432**
सखी! मैं, ह्वै गई काउ कि आज	**301**
सखी मोय, दै जा दधि को दान	**168**
सखी! मोहिं, चन्द्रकिरन तड़पाय	**433**
सखी! मोहिं, डसि गयो श्याम-भुजंग	**301**
सखी! मोहिं, नैनन-सैन सिखाय	**302**
सखी मोहिं प्रीति रीति समुझाय	**53**
सखी! मोहिं, भयेउ विधाता बाम	**433**
सखी मोहिं समुझावहु यह बात	**53**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

सखी! मोहिं, होत न अस विश्वास	434
सखी यह कैसो है ब्रजधाम	54
सखी! यह, बड़ अचरज मोहिं आवत	434
सखी! ये, अँखियाँ गईं पथराय	435
सखी! ये, कानन बहुत बुरे	435
सखी! ये, कारे सब ठगहार	435
सखी! ये,दृग न दृगन सुख पाये	436
सखी! ये भ्रमर निकर भरमाये	274
सखी! ये सब के सब बौराये	229
सखी! शशि, किरन अगिनि तनु लायो	436
सखी सब, सुनहु बात इत आय	330
सखी! सब, ह्वै गये लालहिं लाल	350
सखी! सुनु, अस मम उर परतीति	437
सखी! सुनु, इक अनहोनी बात	314
सखी सुनु इक कौतुक की बात	54
सखी! सुनु, एक दिना की बात	302
सखी! सुनु, प्रथम मिलन की बात	303
सखी सुनु, प्रिया पियहिं इक बात	239

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

सखी सुनु प्रेम नेम दोउ भाय	55
सखी सुनु, इक रहस्य की बात	169
सखी! सुनु, वो मेरे मन भाय	303
सखी! सुनु, समय होत बलवान	437
सखी! हम, इन पाँचन ते हारे	437
सजीले छैल छबीले श्याम	199
सताये, शशि सिगरी निशि हाय	438
सदा सों सोई दुलहिनि जाग	55
संत गति मन बुधि नाहिं समात	56
संत जन बारह मास बसंत	52
सब झुकि झूमत सखि! लाल पै	200
सब झूठो जग व्यवहार रे	56
सबै सखि! चूमत मुख नँदलाल	200
सरस किशोरी, वयस कि थोरी	485
सरस-सुरति-रस सरस सो रति रस	464
सवतिया निँदिया मोहिं सताये	438
सहि जाय विरह नहिं हाय रे	439
साँवरो, जादूगर सरदार	303

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
साध यह पुरवहु राधे! मोर	230
सुदेवी सबै सखिन सिरमौर	260
सुनी इन, कानन जब ते तान	439
सुनी सखी! जा दिन ते मृदु बैन	440
सुनी सखि! जा दिन ते पिय बैन	440
सुनी सखि, है कोउ इक भगवान	440
सुनु मुरली वारे कान्ह रे	169
सुन लाख टका की बात रे	56
सुनु वंशीवारे साँवरे	108
सुने हम समदर्शी भगवान	57
सुनो मन इक अनहोनी बात	57
सुनो मन! एक अनोखी बात	58
सुनो मन एक काम की बात	58
सुनो मन! यह अनन्य की रीत	59
सुनहु मन! यह ऐसो संसार	59
सुनो मन! यह वेदन को सार	59
सुनो मन! यह स्वरूप संसार	60
सुनो मन! श्रुति सिद्धांत विचार	60

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
सुनो मन! सबै श्रुतिन को सार	61
सुनो मन! सुख दुख नहिं संसार	61
सुनो मम, प्रियतम नंदकुमार	312
सनो मम, स्वामिनि भानुदुलार	311
सुनो सब एक अनसुनी बात	61
सुनो सब जीव हमारी बात	62
सुनो हरि अधम उधारन हार	108
सुनो हरि! खरी खरी अब बात	62
सुनो हरि दीनन के रखवार	109
सुरति नहिं, बिसरति सुंदर-श्याम	441
सोच मन! श्याम मिलन की बात	63
सो, टोना सों कछु कै गयो	304

ह

हट खोलो न, घुँघट पट, ओ नटखट	350
हट लिपट न, निपट यमुन-तट पै	351
हम किंकर कुंज बिहारी के	200
हम चाकर उन ब्रज नारिनि के	63
हम चाकर कुंज विहारिणि के	230

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
हम चाकर प्रीतम प्यारी के	**240**
हम डरहूँ डर ते ना डरैं	**64**
हम देखे ढोटा नंद के	**304**
हम देखे श्यामलगात रे	**201**
हम भूखे ब्रज की गारी के	**64**
हमरी ओर टुक हेरो री किशोरी राधे	**109**
हमारी अलबेली सरकार	**230**
हमारी निधि, श्री, वृषभानु दुलार	**110**
हमारी राधे, अति भोरी सरकार	**110**
हमारी राधे, दीनन की रखवार	**111**
हमारी राधे, रसिकनि-जीवन-मूरि	**231**
हमारी राधे, निराधार आधार	**231**
हमारी श्यामा, रसिकन-मुकुट-मनी	**232**
हमारी सुधि लीजो भानुदुलार	**111**
हमारी, सुन लो नंदकिशोर	**112**
हमारी, सुन लो नंदकुमार	**112**
हमारी, स्वामिनि भानुदुलार	**232**
हमारी स्वामिनि राधे रानी	**112**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति *पृष्ठ-संख्या*

हमारे, बैर परीं ब्रज बाल	169
हमारे मन, बसे युगल सरकार	240
हमारे मन भाईं भानुलली	64
हमारे, मन भायो ब्रजधाम	65
हमारे माई, गौर श्याम दुइ आँखी	241
हमारो अलबेलो नँदलाल	201
हमारो ऐसो नंदकुमार	113
हमारो ऐसो मदन गोपाल	202
हमारो ऐसो सुंदर श्याम	202
हमारो ऐसो है रखवार	3
हमारो, कान्ह प्रान को प्रान	203
हमारो कौन बनेगो लाल?	135
हमारो छैल छबीलो श्याम	203
हमारो, जीवन-धन-घनश्याम	441
हमारो ठाकुर नंद कुमार	203
हमारो, ठाकुर युगल किशोर	241
हमारो, दृग-अंजन नँदलाल	204
हमारो, दोउ प्यारी प्यारो	242

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
हमारो धन, श्री बरसानो धाम	117
हमारो धन, राधे जू को नाम	113
हमारो पिय प्रानन प्यारो	204
हमारो प्रियतम नंदकिशोर	205
हमारो बाँको सुंदर श्याम	205
हमारो भोरो भारो कान्ह	138
हमारो माई, श्री बरसानो गाम	118
हमारो रसिक रँगीलो श्याम	206
हमारो राधावल्लभ प्रान	206
हमारो श्री वृंदावन चंद	206
हमारो सहज सनेही श्याम	442
हमारो साँचो मीत गोपाल	207
हमें तो अली लली सों काम	65
हमें तो, एक तिहारी आस	114
हमें तो एक श्याम सों काम	66
हमें तो मिल्यो रतन अनमोल	66
हमें तो श्याम नाम सों काम	114
हमें नहिं काहू सों कछु काम	66

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
हमें बस, एक श्याम सों काम	442
हरि कहँ लौं मन समझाउँ रे	115
हरि कै गयो बंटाढार रे	305
हरि! जनि, मो कहँ आँखि दिखायो	170
हरि बिनु बिगरी नाहिँ बने	67
हर्‌यो सखि, मो मन मोहन-लाल	305
हाय दइ! उठत करेजे हूक	305
हाय दई, यह कैसी भई री	443
हाय पिय, दैइहैं अस बिसराय	443
हाय! मैं, कैसी करूँ जिय जाय	318
हाय! मैं, धरूँ कौन विधि धीर	319
हाय मोरा, पिया बिनु जिया घबराये	443
हाय! मोहिं पल छिन विरह सतावत	444
हाय! मोहिं, पिय बिनु कछु न सुहाय	444
हाय यह, कैसी लागि बलाय	445
हाय! सखि, कैसै ह्वै गये श्याम	445
हाय सखी! दृगन मिलाय मन लै गयो	306
हाय! हिय, कैसो तव अक्रूर	446

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ध्रुव-पंक्ति	*पृष्ठ-संख्या*
हृदय तू कुलिश कठोर लखात	67
हृदय तू मोरि सिखावनि मान	68
होड़ है, आजु युगल सरकार	256
होति जग इक अनहोनी बात	68
हो रसिया! कस सुरति बिसारी	446
होरी आई री, अरी वो नथवारी	351
होरी खेलो न, श्याम सँग कोउ गोरी	352
होरी खेलो री, छैल सँग रँग घोरी	352
होरी में, हारे हरि हो री	353
हौं कहँ लौं हरि रिरियाउँ रे	115
हौं ह्वै गई प्रीतम प्यारी की	242

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सद्गुरु-माधुरी

1

अस रस महँ, मोहिं सद्गुरु बोरी।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष रस, सबै लगत मो फीको री।
कहँ लौं कह बैकुण्ठ-लोकहूँ, रुचि नहिं टुक सपनेहुँ मोरी।
इक भावत चंचल नँदनंदन, इक वृषभानुलली भोरी।
गिरिजा-अजा जलधिजा-दुर्लभ, पियत रास रस ब्रजखोरी।
कह 'कृपालु' अस सद्गुरु ऋण ते, उऋण न कोटि कल्प को री॥

2

अरे मन! सुन गुरु-तत्व-विचार।
'गुं रौतीति गुरुः, व्युत्पत्तिहिं, गुरु मेटत अँधियार।
यद्यपि गुरु-गोविन्द दोउ इक, कह वेदादि पुकार।
दोउन महँ कोउ मिलइ मिलइ तब, प्रेम-सुधा-रससार।
तदपि रहस्य सुनहु मन! गुरु बिन, मिलइ न नंदकुमार।
पै 'कृपालु' बिनु हरिहिं मिलइ गुरु, जय सद्गुरु सरकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

जयति जय, जय सद्‌गुरु महराज।
छके युगल रस रास सरस जनु, मूर्तिमान रसराज।
बिनु कारण करुणाकर जाकर अस स्वभाव भल भ्राज।
बरबस पतितन देत प्रेमरस, अस रसिकन सरताज।
डूबत आपु डुबावत जन कहँ, प्रेमसिंधु–ब्रजराज।
हौं 'कृपालु' गुरुचरण शरण गहि, भयो धन्य जग आज॥

4

जाउँ गुरु, चरण–कमल बलिहार।
जिन चरनन की शरण गहत मन, पावत युगल–विहार।
जिन चरनन को ध्यान धरत मन, मिटत जगत अँधियार।
जिन चरनन अनुकंपा जग मँह, रहत न रह संसार।
जिन चरनन–रज आँजि चराचर, दीखत नंदकुमार।
यदपि 'कृपालु' भेद नहिं हरि–गुरु, तदपि गुरुहिं आभार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

बलि श्री गुरुदेव कृपाल की।
जिनके दिव्य वचन सुनि छूटत, ग्रंथि अविद्या–जाल की।

जिनके वरद–हस्त के सन्मुख, चल न चाल कलिकाल की।
जिनके बनत बिगारि सकत नहिं, मायाशक्ति गुपाल की।
जिनके युगल–चरन परसत मन, पावत रति नंदलाल की।
लखत 'कृपालु' अनुग्रह गुरु के, लीला लाड़लि लाल की॥

6

हमारो ऐसो है रखवार।
जैसो है नहिं सकल विश्व महँ, कोउ समरथ सरकार।
तीनि लोक अनुचर रह जिन को, विधि हरि हर करतार।
सोउ अनुचर श्री महाविष्णु कहँ, जो कमला भरतार।
सोउ श्री महाविष्णु अनुचर जिन, तिन कह नंदकुमार।
सोउ 'कृपालु' अनुचर जिन सोइ गुरु, कह भागवत पुकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आरती-माधुरी

1

श्रीकृष्ण जी की आरती

आरती आरति-हारी की, कि वृन्दाविपिन बिहारी की।
बँधी सिर तिरछी सी पगड़ी,
जड़ी मणि-मुक्तन मुकुट लड़ी,
अड़ी अड़बंग मोर-पँखड़ी,
मुकुट की लटक, भृकुटि की मटक, लकुटि की अटक,
चटक केशर छवि न्यारी की।
नाक बिच भल बुलाक हलकै,
कान-कुण्डल झलमल झलकै,
दृगंचल चंचल रस छलकै,
अलक की हलक, पलक की छलक, कलक की झलक,
ललक देखन छवि प्यारी की।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

सुघर उपरैना उर राजै,
पीतपट अटपट छवि छाजै,
काछनी नट सी कटि भ्राजै,
नैनगति–मैन, सैन अति पैन, बैन रति दैन,
लैन मति ब्रज–नर–नारी की।
पाणि मणिमय–कंकण सोहै,
कनक–किंकिनी–धुनि मन मोहै,
अनूपम की उपमा को है,
नंद–आनंद, कन्द–आनंद, सच्चिदानंद,
'कृपालु' चंद–तनु कारी की॥

2

COPYRIGHT

युगल सरकार की आरती

RADHA GOVIND SAMITI

आरती प्रीतम प्यारी की, कि बनवारी नथवारी की।
दुहुँन सिर कनक–मुकुट झलकै,
दुहुँन श्रुति कुंडल भल हलकै,
दुहुँन दृग प्रेम–सुधा छलकै,

चसीले बैन, रसीले नैन, गँसीले सैन,
दुहुँन मैनन मनहारी की।

दुहुँनि दृग–चितवनि पर वारी,
दुहुँनि लट–लटकनि छवि न्यारी,
दुहुँनि भौं–मटकनि अति प्यारी,
रसन मुखपान, हँसन मुसकान, दशन–दमकान,
दुहुँनि बेसर छवि न्यारी की।

एक उर पीतांबर फहरै,
एक उर नीलांबर लहरै,
दुहुँन उर लर–मोतिन छहरै,
कंकनन खनक, किंकिनिन झनक, नूपुरन भनक,
दुहुँन रुनझुन धुन प्यारी की।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक सिर मोर–मुकुट राजै,
एक सिर चूनरि–छवि छाजै,
दुहुँन सिर तिरछे भल भ्राजै,
संग ब्रज–बाल, लाड़िली लाल, बाँह गल डाल,
'कृपालु' दुहुँन दृग चारी की॥

3

श्री वृषभानुदुलारी की आरती

आरती भानुदुलारी की, कि श्री बरसाने वारी की।
विराजै सिंहासन श्यामा,
दिव्य श्री वृन्दावन धामा,
ढुरावैं चँवर सुघर बामा,
पलोटैं पग पूरन कामा,
लली पग अंक, चापि निःशंक, श्याम जनु रंक,
पाइ निधि पारस प्यारी की।
गौर सिर कनक मुकुट राजै,
चंद्रिका चारु सुछवि छाजै,
कुटिल कुंतल अलि भल भ्राजै,
लखत जेहि शिखि कलाप लाजै,
माँग सिंदूर, मोतियन पूर, सजीवन मूर,
ब्रह्म गोवर्धनधारी की।
श्रवण बिच करणफूल झलकै,
नासिका बिच बेसर हलकै

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नयन बिच प्रेम–सुधा छलकै,
बंधु बल के लखि लखि ललकै,
चपलनथ चमक, दसन–दुति–दमक, सुमुखि–मुख–रमक,
मधुर मुसुकनि सुकुमारी की।
मोतियन लर उर मणि माला,
चिबुक झलकत इक तिल काला,
शंभु शुक दै सँग करताला,
लली गुन गावति ब्रजबाला,
कबहुँ मुख मुरनि, कबहुँ दृग दुरनि, कबहुँ दृग जुरनि,
कबहुँ सुधि भुरनि बिहारी की।
किनारिन जरिन नील सारी,
कंचुकी कुमकुम रँग वारी,
चुरी कर कंकन मनहारी,
छीन कटि किंकिनि छवि न्यारी,
पायलनि पगनि, मिहावरि लगनि, बीछुवनि नगनि,
'कृपालु' सुकीर्ति कुमारी की॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सिद्धान्त-माधुरी

1

अचंभो इक देख्यो ब्रज माहिँ।
श्रुतिन महावाक्यन अस्तुति सुनि, जो मुख बोलत नाहिँ।
सोई गोकुल गोकुल बछरनि की, बोलनि सोँ बतराहिँ।
जो स्वामिहुँ बनि शंभु समाधिहुँ, जावन महँ सकुचाहिँ।
सोइ निदरतहूँ ब्रजवनितनि घर, जावन महँ बलि जाहिँ।
लखि 'कृपालु' करतूति प्रीति येहि, ज्ञानीजन खिसियाहिँ।।

2

अनजान मूढ़ मन मान रे।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
येहि संसार असार जानि के, करु नँदनंदन ध्यान रे।
बड़े बड़े नामी ग्रामी जे, तिनहुँ भिखारी जान रे।
इनहिंन सुत, पति, बनितनि कारन, अगनित जनम नसान रे।
जब लौं रह तरु फल ये पक्षिन, चहकत करि गुनगान रे।
पै 'कृपालु' फल गिरत लेत सब, लंबी गगन उड़ान रे।।

3

अनोखो लख्यौं जगत व्यवहार।
जब लौं स्वारथ सिद्ध होत रह, तब लौं नात हजार।
जब ही स्वार्थ–हानि निज देखत, अरि–सम ताहि निहार।
निशि–दिन यह कौतुक जग देखत, तदपि न करत विचार।
संतन–सभा यदपि सिर झूमत, मन रह विषय मझार।
कहत 'कृपालु' भागवत गीता, उर–अभिमान अपार॥

4

अनोखो हरि तुम्हरो खिलवार।
सगुण स्वाँग धरि सदा सदा ते, ठग्यो सबै संसार।
जो लीला शिव, शुक, सनकादिक, मन बुधि अगम अपार।
सो नित करत पामरन सन्मुख, लै पुनि–पुनि अवतार।
निज स्वभाव वश तर्क करत जग, लखि तुम्हरो व्यवहार।
होत नाम अपराध सदा इमि, किमि हो जग निस्तार।
बिनु जाने विश्वास होत नहिं, गये संत पचि हार।
जेहि 'कृपालु' तुम कबहुँ जनावत, सोई जाननहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

अमोलक रतन मिलत बिनु मोल।
प्रेम–रतन याचत ज्ञानीजन, सुन लो कानहिं खोल।
श्याम प्रेम बिनु ब्रह्म–समाधिहुँ, मनहुँ निंब रस घोल।
तेहि बिनु कर्म, योग सब छूछो, लेहु तराजुहिं तोल।
स्वर्ग कर्म ते, सिद्धि योग ते, प्रेम बोल हरि बोल।
रतन 'कृपालु' अमोलक पायो, हमहुँ बजावत ढोल॥

6

अरे मन! अबहुँ बात ले मान।
हौं यह भलीभाँति हौं जानत, मानत तोहिं बलवान।
लख चौरासि योनि नचायो, नट मरकट उनमान।
पै हौं एक बात पूछत हौं, उत्तर दो तब जान।
पियत विषय–विष रस निशिवासर, क्यों नहिं प्यास बुझान।
तजि 'कृपालु' हठ अबहुँ शरण गहु, सुंदर श्याम सुजान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

7

अरे मन! अवसर बीत्यो जात।
काल–कवल वश विधि हरि, हर सब, तोरी कहा बिसात।

लहि पारस नर–तनु सुर–दुर्लभ, गुंजन–हित भटकात।
बधिर, अंध जिमि सुनत न देखत, रहत विषय मदमात।
'अब करिहौं, अब करिहौं', इमि कहि, रहि जैहौ पछितात।
होत 'कृपालु' प्रलय पल महँ तू, केहि बल पर इतरात॥

8

अरे मन! अस तृष्णा बलवान।
बड़े बड़े भूपति भये भूतल, उदय अस्त लौं भान।
तिनहुँन की सोइ दशा रही जो, एक भिखारिहिं जान।
यह तृष्णा नहिं छोड़ति इंद्रहुँ, जेहि सुरपति सब मान।
जब लौ नहिं सुमिरहु मन निशिदिन, सुंदर श्याम सुजान।
तब लौ सुख 'कृपालु' नहिं पैहौं, वेद पुरान प्रमान॥

COPYRIGHT

9

RADHA GOVIND SAMITI

अरे मन! इहै सार संसार।
सुर दुर्लभ तनु पाय भजन करु, निशि दिन नंदकुमार।
लगत न दाम छदाम याम वसु, सुमिरु श्याम सरकार।
हरि व्यापक संसार एकरस, प्रति परमाणु मझार।

तिनके नाम–रूप–गुण गावत, का घटि जात तिहार।
झूठो जप, तप, जोग, याग, व्रत, नेम, धर्म, आचार।
हरि बिनु सुख 'कृपालु' नहिं सपनेहुँ, पचि पचि मरिय हजार॥

10

अरे मन! उभय रूप जग जान।
शब्दादिक विषयन पदार्थ जे, स्थूल रूप तेहि मान।
इनकी जो उर बिधुर कामना, ताहि सूक्ष्म अनुमान।
स्थूल जगत के तजत, जात नहिँ, सूक्ष्म जगत बलवान।
पै जो सूक्ष्म जगत को तजि दे, नहिं स्थूलहिँ रह भान।
ताते तजिय 'कृपालु' कामना, भजिय रैन दिन कान्ह॥

11

अरे मन! काहे करत गुमान।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
विष्ठा–विषय हेतु निशि वासर, सुनहुँ नेकु करि कान।
बनत दीन बनितादिक सन्मुख, पुनि कहँ रह अभिमान।
इत तो रह अभिमान दास हौं, मम स्वामी भगवान।
भूल होत सब ते, पै बुध जो, लेत भूल निज मान।
अबहूँ चेत 'कृपालु' हेत कर, सुंदर श्याम सुजान॥

12

अरे मन! चार दिना की बात।
नर–तनु शरद चाँदनी बीते, पुनि अँधियारी रात।
तू सोवत कछु जानत नाहीं, काल लगायो घात।
तजत न नींद यदपि विषयन के, छिन छिन जूते खात।
अवसर चूकि फिरिय चौरासी, कर मींजत पछितात।
रसिकनि कही 'कृपालु' मानु गहु, युगल चरण जलजात॥

13

अरे मन! तू निज स्वारथ साध।
जब लौं स्वारथ साधि न ले निज, कल जनि ले पल आध।
स्वारथ साधन ही महँ निशि दिन, करु अभ्यास अगाध।
तजि दे मूढ़ परार्थ कल्पनहिं, करु श्रम गतिहिं अबाध।
जान्यो स्वारथ तिन जिन छिन–छिन, राधावर अवराध।
विषय–बालि कहँ करु 'कृपालु' बध, प्रेमबान जनु व्याध॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

14

अरे मन! तू मेरो मत मान।
'अनन्य चेताः सततं यो मां', गुन येहि गीता–ज्ञान।

तन, मन, प्राण समर्पण करि जो, कर नित हरि को ध्यान।
ताको हरि अति सुलभ जान मन, रह न कामना आन।
तर्क, वितर्क, कुतर्क आदि की, तजि दे अपनी बान।
रहु 'कृपालु' सद्‌गुरु शरणागति, करु गोविंद गुनगान॥

15

अरे मन! मनमोहन मन लाय।
सुन ले टुक निज कान खोलि मन, याको सरल उपाय।
काउहिं युवतिहिं छेड़ युवक जब, तब युवती जरि जाय।
पै विभोर ह्वै जाय सखिन सुनि, भई सगाई याय।
त्यों निज–तनु–प्रिय को ही अब लौं, निज–प्रिय जानि लुभाय।
अब दिय रसिक बताय कृपा करि, तेरो प्रिय बलभाय।
अमर सुहाग 'कृपालु' करिय मन, रसिक वचन पतियाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

अरे मन! मूरख निपट गँवार।
बिगरत आपु बिगारत मो कहँ, नेकु न करत विचार।
कोटि–कल्प भटक्यो ज्यों शूकर, विष्ठा–विषय मझार।
बिनु सेवा जहँ पाइय मेवा, गयो न तेहि दरबार।

दोउ कर–कमल पसारि निहारति, तोहिँ वृषभानुदुलार।
अस अवसर नर देह सुदुर्लभ, मिलत न बारम्बार।
साधन बिनुहिं 'कृपालु' द्रवत जो, को अस सरल उदार॥

17

अरे मन! यह ऐसो जग जान।
करत रहे पवनासन जिन मुनि, विश्वामित्र महान।
काम विवश किय तिनहुँ मेनका, मारि तानि दृगबान।
ऋषि वशिष्ठ कहँ वधन बैठ सोइ, लै कर परशु कृपान।
जब अस मुनि को काम क्रोध अस, दीख परत बलवान।
तब 'कृपालु' का गति औरन की, ताते भजु मन कान्ह॥

18

अरे मन! यह जग एक सराय।
इस सराय में देश देश के, सौदागर सब आय।
इस सराय में सोइ आवत जो, मायाबद्ध कहाय।
इस सराय में कोउ कमात है, कोउ धन–मूल गमाय।
इस सराय में चोर प्रबल हैं, काम क्रोध बहुताय।
इस सराय में मिलत 'कृपालुहिं' प्रेम भजे बलभाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

19

अरे मन! यह जीवन दिन चार।
चारु चाँदनी चार दिना की, पुनि होइहिं अँधियार।
तू मतिमंद, मूढ़ नहिं जानत, इन कपटिन व्यवहार।
तू सोचत, हौं चतुरशिरोमणि, पै सब हैं इकसार।
सबै सबन कहँ ठगन हेतु नित, बहुविधि स्वाँग सँवार।
तजि 'कृपालु' अब त्रिविध ईषणा, भजि ले नंदकुमार॥

20

अरे मन! यह संसार असार।
पुत्र, कलत्र, मित्र आदिक सब, स्वारथ को संसार।
तू समुझत सब प्यार करत मोहिं, सुत, पति, भगिनी, नार।
तिमि समुझत सुत, पति, भगिनी, तिय, तू कर तिनसों प्यार।
पै तू तो जानत निज सुख हित, करत कपट व्यवहार।
पुनि 'कृपालु' कत यह नहिं जानत, तेऊ तोहिं अनुहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

अरे मन! सुन इक अटपट बात।
दृग वारेन को नेकु न दीखत, अचरज यदपि जनात।

बिनु देखे दृगवंत अंध बिच, अंतर कछु न लखात।
जिमि गज दंत विलोकन ही को, खाय न कछुक सकात।
तिमि साधन–दृगबल हरि हेरत, पाव न पचि मरि जात।
लोकहुँ माहिं 'कृपालु' न दीखत, बिनु प्रकाश कहुँ रात॥

22

अरे मन! सुन उपनिषद विचार।
कोउ पितु मातु, पुत्र सुख कारन, करत न सपनेहुँ प्यार।
तिमि कोउ पुत्र, मातु–पितु सुख हित, करत न कछु व्यवहार।
कोउ तिय, पति–हित प्यार करत नहिं, अस कह वेद पुकार।
तिमि कोउ पति, तिय–सुख कारन कछु, करत न यह उर धार।
सब 'कृपालु' निज सुख हित नित प्रति, जोरत नात हजार॥

23

अरे मन! सुन सूधी–सी बात।
तू अपनी स्वामिनि आत्महिँ हित, करत कर्म दिन रात।
पै आत्महिं–हित, परमात्महिँ नित, यह कत नहिं पतियात।
जग–वैभव मायाभव यामें, सुख–दुख कछु नहिं तात।
पुनि येहि दै चह परमात्महिं–सुख, कत इतनो बौरात।
तजु 'कृपालु' हठ भज मन निशि–दिन, सुंदर श्यामलगात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

24

अरे मन! हरि, हरिजन नहिं दोय।
जहँ हरि तहँ हरिजन, जहँ हरिजन, तहँ हरि विलग न होय।
दोऊ रहत दास दोउन को, मरम न जाने कोय।
दोउ कर पर उपकार निरंतर, पतितन–मन मल धोय।
जल, तरंग दोउ नाम उपाधी, वस्तुतस्तु इक सोय।
पै 'कृपालु' हरिजन रूपी हरि, ही सों स्वारथ तोय॥

25

अरे मन! हौं मानत हौं हार।
तू जो चहत सोइ हौं दैहों, रखिहौं बात तिहार।
तू चाहत इंद्रिय विषयन कहँ, चलु ढिग नंदकुमार।
तिनकोइ शब्द परस तनु तिनकोइ, तिनकोइ रूप निहार।
तिनकोइ सरस दिव्य रस तिनकोइ, दिव्य गंध रिझवार।
इमि 'कृपालु' लहि दिव्य विषय सब, बस गोलोक मझार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

26

अरे मन! स्वारथ को संसार।
विकसित कुसुम सुवास लेत जिमि, मधुकर करि गुंजार।

जब ही कुसुम गिरत भूतल पर, भूलि न ताहि निहार।
त्यों जग पुत्र, कलत्र, मित्र, पति, जहँ लगि नातेदार।
बिनु स्वारथ कोउ बात करत नहिं, करु गंभीर विचार।
ताते भजु 'कृपालु' अब निशिदिन, नागर नंद–कुमार॥

27

अवध के राम बने ब्रज श्याम।
लखन बने बलराम जानकी, राधारानी नाम।
त्रेता में बड़भ्रात राम भये, द्वापर में बलराम।
मुकुट, ग्रीव, कटि, पद टेढ़ो करि, प्रकटे चंचल राम।
योगारूढ़ जीव हित कीन्ही, लीला रास ललाम।
पग पलुटावति सदा जानकी, रामहिं येहि ब्रजधाम।
इनमें भेद 'कृपालु' मान जो, नरकहुँ नाहीं ठाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

28

आजु मन! देखहुँ शक्ति तिहार।
ठग्यो मोहिं युग–युग ते याते, हो पूरे ठगहार।
मोहिं ठगि नहिं कछु धन पायो रह, टोटो येहि व्यापार।
ढूढ्यौं हौं इक धनिक ठगन को, जो अति सरल उदार।

धन बड़ प्रेम धाम बरसानो, नाम जु भानुदुलार।
बिनु श्रम निज अभीष्ट धन पैहौ, जैहौ जो इक बार।
चतुर 'कृपालु' नारदी विद्या, जानत यदपि गँमार॥

29

ओ मन! मूरख अब चेत रे।
तोहिँ लखि परत न, रहत विषयरत, करत न हरि सों हेत रे।
नित्य बनावत महल कल्पनहिं, जासु नींव लखु रेत रे।
लै जैहैं विषयन हमहूँ कहँ, यमपुर तोहिं समेत रे।
तब पछिताने का पैहौ जब, खग चुगि जैहैं खेत रे।
याते करहु 'कृपालु' भजन उन, जो हैं कृपा निकेत रे॥

30

कबै हरि हौं पैहौं ब्रजवास।
नरक, स्वर्ग, अपवर्ग न माँगत, नहिं बैकुण्ठ–विलास।
माँगत भीख एक मन–मोहन, पुरवहु मम अभिलास।
गाऊँ गुन गोविंद रैन–दिन, जाऊँ नहिं जग पास।
ह्वै मदमत्त निकुंजनि–पुंजनि, लखूँ मंजु रस–रास।
हौं 'कृपालु' अस दास कहाऊँ, बनि दासन को दास॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

31

करहु बुधजन मन माहिं विचार।
निराकार है ब्रह्म कहत कोउ, कोउ कह है साकार।
हम कह निराकार साकारहिं, भेद कहा उर धार।
निराकार तुमहूँ तो तुम्हरो, तनु साकार निहार।
पुनि कत सो तनु धारि सकत नहिं, जो समरथ भरतार।
पै 'कृपालु' तव तनु प्राकृत अरु, तनु चिन्मय करतार॥

32

करो जनि मन! मनमानी काम।
विषयन हाथ अनादि–काल ते, बिके रहे बिनु दाम।
आयो लखि, दुख लख–चौरासी, पायो नहिं विश्राम।
अंधहुँ लगे ठेह बारेक, पग, धरत सोचि तेहि ठाम।
पै तू अंध जात हठि तेहि मग, अधाधुंध अविराम।
जो 'कृपालु' बीती बीती अब, सुमिरिय श्यामा–श्याम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

33

कहत हम खरी खरी कछु बात।
बुरो न मानिय साधक–जन कछु, सोचिय समुझिय तात।

कंठी–तिलक धारि वैष्णव बनि, गणिकनि राखत नात।
सबहिं योगवाशिष्ठ सुनावत, ममता–मद बलकात।
करत अनंत शिष्य पै इंद्रिन, शिष्य रहत दिन रात।
रसिकनि लखि जरि जात मंदमति, विषइन सों बतरात।
महारास–रस भेद बतावत, जहँ विधि–बुधि बौरात।
निज कहँ कहत 'कृपालु' दीन पै, रोम रोम मदमात॥

34

को कह राधे सम गिरिधारी।
कित वृषभानुभूप की बेटी ? कित गोकुल गोकुल वनचारी।
कनक–मुकुट मणिमय शोभित कित ? कित मयूर पंखन सिरधारी।
कित छवि मोतियन लर उर राजित ? कित गल गुंजन की माला री।
कित षोड़श शृंगार कलित छवि ? कित कर लकुटि कामरी कारी।
कित भोरी अति सरल किशोरी ? कित लंपट बेपीर मुरारी।
कित 'कृपालु' आराध्य स्वामिनी ? कित पद अवराधक बनवारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

35

गये सब परमहंस बौराय।
जिन सनकादि समाधि–सनक तिन, बने बिटप ब्रज आय।

जिन कह 'अलख' कहतसोइ 'आलख', पूर्ण ब्रह्म बलभाय।
जिन कह ब्रह्म अनाम अगुन तिन, सगुन नाम गुन गाय।
जिन कह 'सोऽहं' तिन 'दासोऽहं', कहि–कहि बलि–बलि जाय।
जिन 'कृपालु' कह आनँदमय हम, तिन अँसुवन झरि लाय॥

36

गयो ब्रज माहिँ ब्रह्म बौराय।
जो अदृष्ट, अग्राह्य, अलक्षण, अव्यवहार्य कहाय।
सोइ चंचल माखन हित यशुमति, अंचल गहि बिरुझाय।
जो इंद्रिय–मन–बुधि–अतीत अस, चारिहुँ वेद बताय।
सोइ छछिया लौं छाछ हेतु ब्रज, थेइ थेइ नाच नचाय।
कहँ लौं कहिय 'कृपालु' जाय बलि, चौर जार पद पाय॥

37

COPYRIGHT
गहो रे मन! श्याम चरण शरणाई।
RADHA GOVIND SAMITI
अंत समय कोउ काम न अइहैं, मात पिता सुत भाई।
काम, क्रोध अरु लोभ, मोह, मद, इन सों कछु न बसाई।
यह जग मृग–तृष्णा सम दीखत, सुख लवलेश न पाई।
धन–यौवन–तन छन–भंगुर सब, ज्यों कपूर उड़ि जाई।
बहुरि 'कृपालु' न नर–तनु पाइय, बिगरी लेहु बनाई॥

38

चपल चित! कत इत उत भटकात।
कूकर शूकर कीट पतंगनि, धर्‌यो अनंतन गात।
अगनित सुत पति नारि बनायो, अबहुँ बनावत जात।
तू चह परमानंद कहाँ सो? यह नहिं सोचि सकात।
वेद पुरानन बात मान गहु, चरण शरण बलभ्रात।
तब 'कृपालु' तिन अनुकंपा ते, सब बनि जैहैं बात॥

39

चली हौं दुलहिनि बनि ससुरार।
परम हितैषी रसिक पुरोहित, ब्याह्‌यो नंदकुमार।
गुड़ियन खेल समान जानि अब, तज्यो पदारथ चार।
चली संग लै चार कहारन, मन-बुधि चित हंकार।
अब लौं रही कुँवारि आजु ते, भई सुहागिनि नार।
माया काल 'कृपालु' न रह जहँ, तहँ ससुरार हमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

40

चलु प्रेम नगर की गैल रे।
इंद्रिन विषयन हित क्यों भटकत, ज्यों कोल्हू को बैल रे।

कोटि उपाय करे कोउ तबहूँ, पाव न सिकतहिँ तैल रे।
युग युग मथै वारि कहँ तबहूँ, पाव न कोउ घृत मैल रे।
भुक्ति मुक्ति इन दोउन जानिय, अति ही प्रबल चुड़ैल रे।
अब 'कृपालु' मन भज उनहिंन कहँ, जो कुब्जा के छैल रे॥

41

चलो मन! गहवर कुंज लतान।
जहँ विहरति वृषभानुनंदिनी, अरु नँदनंदन कान्ह।
नित नव लीला करत गौर–हरि, सँग लै ब्रज बनितान।
सिंहासन आसीन ललिहिं पग, चापत श्याम सुजान।
फिरत रहत गहवर गलियन महँ, करत लली गुन गान।
मुकुट उतारि 'कृपालु' धरत पग, लखि मानिनि को मान॥

42

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

छाँड़ि दे मन! अड़बंगी रीति।
निज अड़बंगी रीति छाँड़ि मन, गहु रसिकन की नीति।
यह नर तनु छनभंगुर याको, कहा करत परतीति।
यह देवन दुर्लभ तन जैहैं, चार दिना महँ बीति।
रसिक शिरोमणि नटनागर सों, करि ले निशि दिन प्रीति।
ताते मन 'कृपालु' मिटि जइहैं, सबै भीति की भीति॥

43

छाँड़ु मन! ठगिनी माया आस।
दै दै आस दिव्य सुख की तोहिं, पुनि पुनि करत निरास।
ब्रह्मलोक पर्यन्त भोग दै, बाँधति तिरगुन पास।
धर्म कर्म करवाय देति फल, नश्वर स्वर्गहिं वास।
ह्वै अकाम वसुयाम श्याम भजु, करु सद्गुरु विश्वास।
तब 'कृपालु' हरि कृपा 'कृपालुहिं, मिलइ प्रेम सुखरास॥

44

छाँड़ु मन! सनक तनक सुनु बात।
छिन सुख पाव पाव छिन दुख पुनि, जोरि जगत सों नात।
इक वस्तुहिं इक सुखी, दुखी इक, एक उदास लखात।
पुनि कहु वा वस्तुहिं सुख या दुख, या नहिं दोउ जनात।
जो जेहि वस्तु मानि सुख जितनो, सोचत रह दिनरात।
सो तेहि वस्तु पाव सुख तितनो, वस्तुहिं सुख पतियात।
पुनि तेहि विरह पाव दुख तितनोइ, निज भ्रमवश पछितात।
कह 'कृपालु' जग ते उदास रहु, गहहु शरण बलभ्रात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

45

छाँड़ु मन! जग मृगजल की आस।
मृगजल पियत अमित युग बीते, तऊ बुझी नहिं प्यास।
संतन चरण शरण नहिं आयो, जहँ सुरसरि को वास।
इंद्रिन विष्ठा–विषय नरक महँ, कियो वास बनि दास।
दीनभाव निष्काम श्याम भजु, करु सद्‌गुरु विश्वास।
तेहि बिनु मन! 'कृपालु' गहि बूँदन, चाहत चढ़न अकास॥

46

जग गोरखधंधा जान रे।
सुत, वित, नारि ईषणा तीनी, तू इन माँहिं भुलान रे।
नर पामर की कौन बात जब, विधि हरि हर उनमान रे।
हार मानि बलवान काल ते, छिन महँ करत पयान रे।
स्वारथ के सब मीत जान मन, मात पिता बनितान रे।
साँचो मीत 'कृपालु' मान इक, सुंदर श्याम सुजान रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

47

जगत की बड़ी अनोखी बात।
यदपि अनुभवत सतत दुसह दुख, तदपि न मूढ़ अघात।

संतन चरण शरण नहिं आवत, भावत कुलटन लात।
सुत, वित, नारि वियोग पाइ कह, मिथ्या जगत लखात।
पुनि ज्यों ही ये मिले सत्य लखि, लंपट बनि लपटात।
इक पण कारण करत तासु रण, जासु प्राण–प्रिय नात।
अगम 'कृपालु' यथा हरिलीला, त्यों मोहिं जगत जनात॥

48

जाउँ ब्रजनारिन की बलिहार।
जिन ब्रजनारिन की तारिन पै, निरतत नंदकुमार।
जिन घर 'दारी के', गारी के, सुनन हेतु पगधार।
जिन माखन चाखन हित पावत, नित उपाधि 'ठगहार'।
जिनकी हा हा खात, जात डरि, मानिनि मान निहार।
जिनकी करत 'कृपालु' चाकरी, सगुण ब्रह्म साकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

49

जीव जड़ दे जड़ता अब छोड़।
तू कह मन विषयन ही धावत, लै इन इंद्रिन घोड़।
तू बुधि–सारथि–बल मन–रजु गहि, दे इन्द्रिन मुख मोड़।
बुधि मलीन माया अधीन जो, तेहि संतन बुधि जोड़।

पुनि रथ लै चलु प्रेम नगर कहँ, जग नाते सब तोड़।
तहँ 'कृपालु' मिलिहँहिं मनमोहन, जीत जीत द्रुत होड़॥

50

जौहरी बन्यो सकल संसार।
'हीरा एक संत' तेहि परखत, सबै बुद्धि अनुसार।
ज्यौं लै लवण डली सिर हिमगिरि, पैरि सिंधु चह पार।
त्यौं बुधि अगम संत गति खोजत, जग जड़ जीव गमार।
करत नाम अपराध क्षमत नहिं, किये कोटि उपचार।
जो बुधि–बल कह 'संतहिं चीन्ह्यों', ध्रुव विनाश व्रतधार।
सुनु 'कृपालु' बिनु कृपा संतजन, कोउ न जाननहार॥

51

तजो रे मन! उन संतन को संग।
जिनको लक्ष्य लोकरंजन को, रँगि रँग रंग बिरंग।
बात बघारत ब्रजरसिकन की, पिये विषय रस भंग।
शिष्यन कान फूँकि बनि स्वामी, ठगत ठगिन के ढंग।
हरिजन बनि हरिजनहुँ न मानत, चढ़ि अभिमान तुरंग।
वरु 'कृपालु' वनचर बनि रहियो, लखु जनि दंभिन अंग॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

52

तजो रे मन! छनभंगुर वैराग।
करि विश्वास शरण गहु संतन, मोह तिमिर तव भाग।
करत करत सत्संग सतत तब, हरि चररन मन लाग।
मधुर मिलन लगि विकल रैन दिन, तपत चित्त विरहाग।
तब निर्मल मन संत कृपा ते, पाव सहज अनुराग।
हो 'कृपालु' मन सहज विरागी, सहज प्रेम रस पाग॥

53

तन यौवन धन दिन चार रे।
बड़े बड़े सुंदर तनु वारे, अंत भये जरि छार रे।
बड़े बड़े यौवन मद वारे, अंत खाँय लठ मार रे।
बड़े बड़े अगनित धन वारे, अंत चलत सब झार रे।
बड़े बड़े जे रहे कहावत, नाम न तिन संसार रे।
ताते अब 'कृपालु' बनि छोटे, भजु नित नंदकुमार रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

54

तुमहिं तजि नहिं चहिये गोलोक।
अस ससुरारि पियारि लगति केहि, पिय न होय जेहि ओक।

अस न चहौं तव मधुर मिलन रस, जहँ न विरह–रस शोक।
तजि रस द्वैत न चह सुख निर्गुण, रस अद्वैत अशोक।
तजि तव रूपहिं नहिं चह भूलेहुँ, ब्रह्मानंदालोक।
अस 'कृपालु' रस को चह पुनि जहँ, विधि निषेध को रोक॥

55

तू मन! मनमानी त्याग रे।
बीते जनम अनंत नींद महँ, अब झटपट उठ जाग रे।
पुत्र कलत्र मित्र आदिक जे, तिन करु द्वेष न राग रे।
नँदनंदन पादारविंद ते, करि ले अब अनुराग रे।
तजि दे इंद्रिन विषय वासना, प्रेम सरस रस पाग रे।
जो 'कृपालु' चह भुक्ति मुक्ति तो, लगे प्रेम पट दाग रे॥

56

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तोरि दिय तृण सम जग को नात।
रसिकन दीन बताय तिहारो, प्रियतम श्यामल गात।
अब नहिं भावत जगत मायका, दैहिक पति पितु मात।
सोइ ससुरारि पियारि लगति अब, सोइ चरचाहिँ सुहात।
कब मिलिहैं मम जीवनधन पिय, इहै सोच दिन रात।
तेहि 'कृपालु' पिय मिलत तुरत जेहि, यह रहस्य पतियात॥

57

देहु हरि! यह झगड़ो निपटाय।
अति ही प्रबल तिहारी दासी, माया शक्ति कहाय।
लख चौरासी योनि नचावति, मोहिं जानि असहाय।
सुतहिँ मार दासी पितु देखत, यह जगहूँ न सुनाय।
पुनि तुम कहँ बिनु हेतु सनेही, वेद पुरानन गाय।
बरजि 'कृपालु' आपुनी माया, देहु प्रेम रस प्याय॥

58

धन्य सोइ जोइ स्वारथ पहिचान।
स्व शब्दार्थ 'आत्मा' जानिय, अर्थ अर्थ सब जान।
परमात्मा को अंश आत्मा, वेद पुरान बखान।
आत्महिं अर्थ-सिद्धि परमात्महिं, इहै ज्ञान को ज्ञान।
परमात्मा रस-रूप वेद कह, सोइ रस स्वारथ मान।
सोइ स्वारथरत जोइ 'कृपालु' रत, चरनन श्याम सुजान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

59

धरो मन! गौर-चरन को ध्यान।
जिन चरनन को राखत निज उर, सुंदर श्याम सुजान।

भटकत कोटि कल्प तोहिँ बीते, खायो सिर पदत्रान।
चार प्रकार लक्ष चौरासी, द्वार फिर्यो जनु स्वान।
चरण–शरण कबहूँ नहिं आयो, अबहूँ करत न कान।
येहि दरबार दीन को आदर, पतितन को सनमान।
पुनि 'कृपालु' तुम कत चूकत मन, पंडित बनत महान॥

60

नाथ! मम तुम ही सौं सब नात।
सुत दंपति पितु मातु नात कहँ, अब लौं रह पतियात।
अब जान्यों यह नात तबहिं लौं, जब लौं रह यह गात।
हौं नहिं गात गात है हमरो, यह जड़–मतिहुँ सुनात।
पुनि मम गात–नात भल कैसे, ह्वै मम नात सकात?।
मायिक गात–विषय मायिक जग, सब अनुभवहिं लखात।
हौं हौं अंश सनातन हरि को, वेद विदित विख्यात।
जान्यों अब 'कृपालु' बस हमरो, सबरो इक बलभ्रात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

61

नाथ सब अहइ तिहारेइ हाथ।
काम क्रोध मद लोभ मोह मोहिँ, बहुत सतायो नाथ।

इंद्रिय–मन–बुधि सबै देत नित, माया को ही साथ।
तव माया अति प्रबल नचावति, मो कहँ जानि अनाथ।
जब लौं धरहु न हाथ आपनो, नाथ हमारे माथ।
तब लौं हौं 'कृपालु' नहिं ह्वै हौं, दीनानाथ! सनाथ॥

62

पड़ो सखि! नेम प्रेम झगड़ो।
जा दिन लख्यों नैन मनमोहन, कुंज लतान ठड़ो।
ता दिन ते इन मन बुधि महँ इक, झगड़ो आन पड़ो।
मन कह प्रेमहिं बड़ो, बुद्धि कह, नेमहिं होत बड़ो।
मन कह छाँड़ु वेद मर्यादहिं, बुधि कह, तिन पकड़ो।
प्रेमहिं नेम 'कृपालु', न नेमहिं, प्रेम बड़ो न लड़ो॥

63

पिय मोल अमोलक लीजिये।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अस अवसर फिर नाहिँ मिलैगो, बातन मोर पतीजिये।
बनन चहत जो अमर–सुहागिनी, तन–मन–प्रानन दीजिये।
दै सरबस लै प्रेम–सुधा–रस, तेहि रस महँ नित भीजिये।
पुनि तेहि रसहिं पिवाइय औरहिं, आपुहुँ सोइ रस पीजिये।
जनम 'कृपालु' सफल कर लीजिय, क्यों कर? निज कर मीजिये॥

64

प्राणधन जीवन कुंज बिहारी।
तुम तो रहे सनातन हमरे, हौं हूँ रही तिहारी।
उर लगाय भुज भरि हरि चाहे, पुरवहु आस हमारी।
चाहे मोहिँ तड़पाउ मोरि मुख, पग ठुकराव मुरारी।
जेहि विधि पिवु सुख पाउ करिय सोइ, मो कहँ सोइ सुख भारी।
यह 'कृपालु' है रीति प्रीति की, निज सुख चह व्यापारी॥

65

प्रीति की रीति न सखि सब जान।
जो मन रह रत सुत वनितनि पति, सो न सकत पहिचान।
पुनि जो मन रह रत श्रुति कर्मन, सोउ मन जान अयान।
पुनि सोउ मन नहिं जानि सकत जो, निरत मुक्ति हित ज्ञान।
जो मन लोकन वेदन मुक्तिन, ह्वै विरक्त भज कान्ह।
सोइ 'कृपालु' तिन अनुकंपा ते, प्रीति–रीति उर आन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

66

प्रीति सखि काको कहत बताय।
सखि कह कत पूछति ? का कतहूँ, चाहति प्रीति लगाय।

हौं कबहुँ सखि प्रीति कियो नहिं, जान न वाय बलाय।
पै हौं कालि लखी मनमोहन, सो मन गयो समाय।
अब मोहिं इक पल कल न परत कहुँ, पल पल कलप लखाय।
कह 'कृपालु' सखि प्रीति करी नहिं, पै ह्वै गइ बलभाय॥

67

काम प्रेम ना, प्रेम काम ना।
कामहिं, प्रेमहिं–नाम रहत ना, प्रेमहिं, कामहिं–नाम ना।
काम तिमिर, अरु प्रेम तिमिर हर, दोउ रहि सक इक ठाम ना।
प्रेम होत प्रेमास्पद–सुख–हित, काम धरत तहँ पाम ना।
कामहिं इक निज सुखहिं कामना, श्यामहिं–सुख कछु काम ना।
कह 'कृपालु' कहुँ काम प्रेम कहँ, हो न आमना सामना॥

68

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म तुम केहि बल पर इतरात।
जो होवे अपराध क्षमा तो, सुनिय कहौं कछु बात।
तुम गुनहीन निगम भाखत हम, सगुन विश्व विख्यात।
तुम निष्क्रिय मन बुद्धि रहित हम, इन सों युक्त लखात।
हम अनेक तुम एक अतनु पुनि, तुम कछु करि न सकात।

हम नामी धामी पै तुम्हरो, नाम न धाम सुनात।
जो तुम कहो सगुण सक्रिय हौं, तो पुनि हमरिहिं भाँत।
जैसे हम तैसे ही तुम हो, अंतर कछु न जनात।
हम सदोष परदोष सदा सों, खोजत, तुम घबरात।
कलियुग बहुमत पुनि हम पंडित, पुनि बहु मद मदमात।
तासों ब्रह्म ? 'कृपालु' कह्यो जो, बुरो न मान्यो भ्रात॥

69

भजो मन! निशि दिन नंदकुमार।
सकल जगत महँ सोइ एक है, साँचो मीत तिहार।
जे जग मीत मान दंपति सुत, तिन स्वारथ को प्यार।
लिय द्वै मूठि सुदामहिं तंदुल, दिय द्वै लोक, विचार।
कूबरि को सुंदरि करि लखु किय, कमला सौं व्यवहार।
कह 'कृपालु' कत चूकत नर तनु, मिलत न बारम्बार॥

RADHA GOVIND SAMITI

70

भजो रे मन! निशिदिन नंदकिशोर।
तू भोगन भोगत नहिं तो कहँ, भोगत भोगन चोर।
तू चह कामादिकन मिटावन, दै तिन विषयन घोर।

पै ज्यों परत अगिनि घृत छिनछिन, बढ़त जात बरजोर।
इमि अनुभवत अमित युग बीते, खुली आँखि नहिं तोर।
लाइ बुझाउ 'कृपालु' प्रेम जल, अबहुँ मान मन मोर॥

71

मन! इक दिन ऐसा आयेगा।
जो मुट्ठी बाँधे आया सो, हाथ पसारे जायगा।
जोरि जोरि भल धरहु करोरन, अंत कफन सँग पायगा।
जिन को कहत सपूत तिनहिँ सों, अंत बाँस सिर खायगा।
जब यम कालदंड लै अइहैं, देखि देखि डर पायगा।
तब 'कृपालु' धरि हाथ माथ पर, मन ही मन पछतायगा॥

72

मन! काहे करत गुमान रे।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
असुर भयो इक हिरणकशिपु मन, तीन लोक बलवान रे।
तिनहुँ गुमान मिटायो छन महँ, प्रकटि खंभ भगवान रे।
असुर भयो दूजो रावण मन, जेहि विधि हरि डरपान रे।
तिनहुँ गुमान मिटायो छन महँ, मारि तानि इक बान रे।
अबहूँ चेत 'कृपालु' मूढ़ मन, भज नँदनंदन कान्ह रे॥

73

मन! क्यों नहिं हरि गुन गा रहा।
यह जग है इक भूलभुलैया, क्यों तू धोखा खा रहा।
भुक्ति मुक्ति हैं प्रबल पिशाचिनि, क्यों इनमें भरमा रहा।
सुत वित नारिन त्रिविध तिजारिन, क्यौं इनको अपना रहा।
इन इंद्रिन विषयन–विष पी मन, क्यों इतनो हरषा रहा।
नर तनु पाय 'कृपालु' भजन करु, यह जीवन अब जा रहा॥

74

मन! तू काहे हठ पकर्‌यो।
तू निज विषय रूप लीलादिक, हित नित जगत अर्‌यो।
सपनेहुँ तृप्त भयो नहिं नेकहुँ, पचि पचि वृथहिं मर्‌यो।
हौं दैहौं तोहिं दिव्य विषय सब, बनि जैहैं बिगर्‌यो।
पुनि सो रस तजि भाजि सकत नहिं, प्रेम रज्जु जकर्‌यो।
अबहूँ चेत 'कृपालु' आजु लौं, जो कछु कर्‌यो कर्‌यो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

75

माई री मैं तो! आजु परी निधि पाई।
जेहि खोजत मोहिं युग युग बीत्यो, पर्‌यो न कतहुँ लखाई।

तेहि मोहिँ साधनहीन जानि के, रसिकन दई बताई।
पारस लहि बौरात रंक ज्यों, त्यों हौं गई बौराई।
भरी गुमान रैन दिन डोलति, करति सदा मनभाई।
सो 'कृपालु' बिनु मोल मिलत निधि, राधे नाम सदाई॥

76

मान मन! छाड़ु मान अपमान।
जब लौं मिल्यो न तोहिं प्राणधन, सुंदर श्याम सुजान।
तब लौं कहा मान निज मानत, मायाधीन अयान।
मायाधीन मलीन जीव कहँ, सकल दोषमय जान।
कोउ सदोष कहँ कह सदोष तो, बुरो वाय कत मान।
जो निर्दोष सदोष कहे तो, दोष रोष कत आन।
कह 'कृपालु' बनि दीन तृणहुँ ते, रुदन करहु धरि ध्यान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

77

मिलत नहिं नर तनु बारम्बार।
कबहुँक करि करुणा करुणाकर, दे नृदेह संसार।
उलटो टाँगि बाँधि मुख गर्भहिं, समुझायेहु जग सार।
दीन ज्ञान जब कीन प्रतिज्ञा, भजिहौं नंदकुमार।

भूलि गयो सो दशा भई पुनि, ज्यों रहि गर्भ मझार।
यह 'कृपालु' नर तनु सुरदुर्लभ, सुमिरु श्याम सरकार॥

78

मूढ़ मन! गूढ़ तत्व यह जान।
इक ईश्वर इक जीव और इक, माया तत्वहिं मान।
चिदानंदमय ईश्वर जाको, किंकर जीव बखान।
देही जीवहिं देह मान बस, यह अनादि अज्ञान।
जो जितनोइ यह जान मान सो, तितनोइ यह पहिचान।
जितनोइ मान प्रीति तिन तितनोइ, चरनन श्याम सुजान।
कह 'कृपालु' मन तजि मनमानी, धरु मनमोहन ध्यान॥

79

मेरो मन गौर चरन अनुराग्यो।
सोवत रह्यो अनादि काल ते, रसिक कृपा ते जाग्यो।
मिट्यो स्वप्न संसार आपुहीं, मोह तिमिर सब भाग्यो।
बिनु अष्टांग योग साधे ही, चित्त प्रेम रस पाग्यो।
छुटत न कोटि मुक्ति सुख पाये, जेहि मुख यह रस लाग्यो।
भयो 'कृपालु' धनी सब दिन को, मिल्यो रतन मुहँ माँग्यो॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

80

मोहिं मनमोहन मनभाय रे।
कोउ कर जप कोउ तप कोउ व्रत कोउ, विपिन समाधि लगाय रे।
कोउ कर तीरथ चारिधाम कोउ, मरने काशी जाय रे।
कोउ पट गेरुआ कोउ केशरिया, रँग अनेक रँगाय रे।
कोउ बिंदी, कोउ खड़ा तिलक कोउ, भस्म ललाट लगाय रे।
काम 'कृपालु' तबै बनिहैं जब, हरि चरनन मन लाय रे॥

81

यह जग सेमर का फूल रे।
मारि चोंच लखि रुई सुवा तहँ, मानत आपन भूल रे।
तू मन छिन छिन खात लात पै, रहत विषय महँ झूल रे।
यह नर तन छनभंगुर मन! ज्यों, तरुवर सरिता-कूल रे।
सुत दारा धन पाइ फूल जनि, इन कहँ जान त्रिशूल रे।
सुनु 'कृपालु' यह मूलमंत्र हरि, भजु भावन अनुकूल रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

82

यह जोरी नीकी जान रे।
यह मन अरु वह मनमोहन दोउ, दीखत एक समान रे।

इत कह मन अति चंचल वाको, वेग वायु बलवान रे।
उत चंचलताहूँ ते चंचल, सुंदर श्याम सुजान रे।
इत कारो मन जनम कोटि के, पापन, संत बखान रे।
उत 'कृपालु' कारो हरि पुनि कत, धरत न मन! उन ध्यान रे॥

83

यह माया ठगिनी जान रे।
याते विधि हरि हर सब डरपत, यह अतिशय बलवान रे।
विश्वामित्र पराशर से मुनि, माया माहिँ भुलान रे।
येहि नहिं मिथ्या तत्व मान मन, शक्ति जान भगवान रे।
बिनु हरि कृपा जाति नहिं कैसेहुँ, साधन कियेहु महान रे।
पै 'कृपालु' हरि कृपा होय तब, जब भजु श्याम सुजान रे॥

84

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

येहि जग की आशा छोड़ रे।
मात पिता भगिनी सुत दारा, नातेदार करोड़ रे।
मीठी बात बनाय भुरावत, इन से नाता तोड़ रे।
बाढ़ति विषय–वासना छिन–छिन, दे इंद्रिन घट फोड़ रे।
सात स्वर्ग अपवर्ग पाँच ते, ले अपुनो मुख मोड़ रे।
सुनु 'कृपालु' मन परम सनेही, हरि सों नाता जोड़ रे॥

85

येहि जग मृगजल ज्यों जान रे।
निशिदिन पियत मृगन मृगजल ज्यों, नेकु न प्यास बुझान रे।
त्यों इंद्रिन विषयन महँ निज सुख, खोजत यह अज्ञान रे।
प्यास बुझाय सके नहिं इंद्रिन, सुरपति इन्द्र समान रे।
तब तेरी बिसात का मूरख, अबहुँ बात ले मान रे।
भजहु 'कृपालु' रैन दिन छिन–छिन, सुंदर श्याम सुजान रे॥

86

रटु निशिदिन राधे नाम रे।
जासु नाम घनश्याम याम वसु, रट नित पूरनकाम रे।
जासु अनूपम रूपमाधुरी, ध्यावत सुंदर श्याम रे।
जासु गुनन गावत मन भावत, श्यामहुँ आठों याम रे।
जासु ललित लीला देखन हित, बिक्यो ब्रह्म बिनु दाम रे।
जासु धाम सनकादि लतन बनि, ठाढ़े उलटे पाम रे।
हम 'कृपालु' उन नाम रूप गुन, गावत लीला–धाम रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

87

रटो रे मन! छिन छिन राधे नाम।
ब्रह्मादिक की कौन बात जेहि, रटत ब्रह्म घनश्याम।

जेहि रटि महारास–रस पायो, शंकर धरि तनु बाम।
निगम–अगम निधि रसिकन दीनी, बिनुहिं मोल बिनु दाम।
राधे नाम पुकारत आरत, भाजति तजि निज धाम।
मिल्यो 'कृपालुहिं' रतन अमोलक, कहा जगत सों काम॥

88

रटो रे मन! छिन छिन श्यामा श्याम।
सद्घन चिद्घन आनंदघन जो, रूप एक द्वै नाम।
जासु नाम शिव शुक सनकादिक, गावत आठों याम।
जाकी लीला लखन ज्ञानिजन, बने विटप ब्रजधाम।
जासु धाम विधि ब्रज–रज याचत, ठड़े एक ही पाम।
जिन 'कृपालु' गुन सुनि शुक से मुनि, तजत समाधि ललाम॥

89

COPYRIGHT
रसिक जन गये फोरि सिर हार।
RADHA GOVIND SAMITI
यह जड़ जीव, अनादि–काल ते, निपट, कपट–आगार।
जिन विषयन अनुभवत दुसह दुख, नेकु विराग न धार।
पुनि जिन विषयन नहिं कछु अनुभव, किमि समुझिय संसार।
मिट्यो न जग यद्यपि हरि हरिजन, प्रकटे अगनित बार।
दोष 'कृपालु' सुभायन को जो, कर नित पर उपकार॥

90

रहु श्री बरसाने गाम रे।
जहाँ मुकुट सों देत बुहारी, पूर्ण ब्रह्म घनश्याम रे।
जहाँ विटप बनि गावत मुनि जन, राधे राधे नाम रे।
जहाँ नित्य एकत्व आदिहूँ, पांचहुँ मुक्ति गुलाम रे।
जहाँ विहारिणि विहरति निशिदिन, सँग सिगरी ब्रजभाम रे।
जहाँ 'कृपालु' लाड़िली जू को, ब्रह्म पलोटत पाम रे॥

91

रहो रे मन गौर चरन लव लाई।
जिन चरनन की चरन रेनुकहिं, सेवत श्याम सदाई।
जहँ जहँ चरन परत श्यामा को, तहँ तहँ सिर यदुराई।
चरण पलोटत रज बिच लोटत, भूरि भाग्य जनु पाई।
छिन छिन दृगन लगावत पुनि पुनि, चरनन उर लपटाई।
तुम 'कृपालु' कत रहे अभागे, इन चरनन बिसराई॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

92

रैन दिन झगरत नैनन प्रान।
प्रान कहत हौं जान चहत हौं, मिलन हेतु ढिग कान्ह।

नैन कहत दै सैन एक छिन, परखु बात मम मान।
एक बार दिखराय कमल मुख, पुनि तुम करहु पयान।
भूलि गये दिन हमहिं मिलाये, सुंदर श्याम सुजान।
वह दिन कब 'कृपालु' आवे मोहिं, इक छिन कलप समान॥

93

लख्यो जग इक अचरज की बात।
बरसत बूँद पकरि नभ चढ़ि चह, जो मन बुधि न समात।
विधि हरि हर जेहि जानि न पावत, प्रभु प्रभुता विख्यात।
बिनु जाने प्रतीति नहिं तेहि बिनु, प्रीति न कतहुँ लखात।
बिना प्रीति नहिं द्रवत पिया, यह, सोचि जिया अकुलात।
यह 'कृपालु' तो पिय-मग जोहत, खर्यो रहत दिन रात॥

94

लख्यों मैं इक अचरज ब्रजधाम।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
वेदवेद्य वेदज्ञ वेदकृत, जाको रूप न नाम।
सोई ब्रह्म अंक यशुमति के, प्रकट्यो बनि घनश्याम।
जो नहिं जात याज्ञवल्क्यादिक, किये यज्ञ निष्काम।
सोई ब्रह्म नंद के प्रांगण, विहरत पंक ललाम।
शक्ति 'कृपालु' भक्ति की है यह, नहिँ अचरज को काम॥

95

लख्यौं मैं इक अचरज संसार।
जासौं सुनिय सोइ इमि भाखत, 'यह संसार असार'।
पै जाको देखिय सोइ खोजत, निज सुख विषय मझार।
कहत सबै हरि की लीला अति, अलख अगम्य अपार।
पै नित संशय करत चरित महँ, निज बुधि बलहिँ बिसार।
बिनु सत्संग कछुक नहिं पाइय, पचि पचि मरिय हजार।
सो सत्संग 'कृपालु' जानिये, श्रद्धा बिनु खिलवार॥

96

लगति सखि अब ससुरारि पियारि।
अब लौं रह अनजान पिया ते, रही उमरिया वारि।
अब दिय रसिक बताय पिया तव, मोहन मदन मुरारि।
अब न सुहात खेल गुड़ियन इन, दंपति पितु महतारि।
अब सोइ नाम रूप गुन लीला, धाम जनहिं मन हारि।
कह 'कृपालु' जेहि चहत पिया बस, सोइ सुहागिनि नारि॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

97

लगे नहिं सगे तोर भगवान।
तू तो दास श्यामसुंदर को, सोइ स्वामी जिय जान।

तेरो सखा सनातन सोई, मनमोहन मन मान।
सोइ नँदलाल लाल है तेरो, तू पितु मातु समान।
सोइ तेरो वल्लभ है जो हैं, वल्लभ ब्रज बनितान।
सो राजा तू प्रजा 'कृपालुहिं' भाव न भावत ध्यान॥

98

लाल सम लालहिं निठुर कृपाल।
नित्य विरोधाभास रहत जहँ, सोइ ब्रह्म गोपाल।
अति कोमल चित नवनीतहुँ ते, कर्कश कुलिश कराल।
तन मन प्राण समर्पण किय जो, देत विरह ब्रजबाल।
बरबस बरि कुबरिहिं करि अपनी, विहरत सोइ नँदलाल।
सुनि 'कृपालु' तुम जनि कछु सोचिय, लीला प्रेम रसाल॥

99

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

श्याम! अब तुमहिं मान लो हार।
यह मन मूढ़ अनादि काल ते, ठाने हठहिं गमार।
तुम कह कृपा करहुँ मैं जब मन, प्रणत होय इक बार।
मन कह प्रथम कृपा करु तब हौं, अइहौं शरण तिहार।
अति महान तुम पिता हमारे, पुत्र खात नित मार।
माया दासिहिं बरजि 'कृपालुहिं', देहु प्रेम सरकार॥

100

श्याम तन भले भये घनश्याम।
जो तुम होते गौर बरन तो, विष खातीं ब्रजबाम।
भले भये अति निठुर श्याम जो, रहे द्वारिका ठाम।
जो तुम होते सरल हृदय तो, प्रलय होत ब्रजधाम।
भले भये तुम श्याम कंत इक, प्रिया अनंत ललाम।
जो होते मोहन अनन्य तो, क्यों जीती सो बाम।
जो 'कृपालु' तुम होत लली तो, होति कौन गति राम!॥

101

श्यामा श्याम शरण गहु रे मन!
युगल माधुरी ध्यान धरे उर, गाउ नाम गुन रहु वृंदावन।
सखीभाव संतन अनुगत ह्वै, प्रेम सुधा पिवु लहु जीवनधन।
ह्वै निष्काम धाम–निष्ठा गहि, गहवर वन विचरहु गोवर्धन।
भरि भरि अंक लतन आँद जल, झरझर झरि लावहु जनु सावन।
इमि 'कृपालु' मदमत्त रैन दिन, नित नव रस चाखहु मनभावन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

102

श्री राधेरानी प्रेम तत्व की सार।
निगमागम ते अगम सुगम अति, दीनन हित सुकुमार।

विधि हरि हर की कौन बात जब, ब्रह्म न पायो पार।
क्रंदन करुण सुनावत धावति, निज सुधि–देह बिसार।
'राधे' नाम पुकारत राधे, बरसावति जलधार।
मोहिं 'कृपालु' अब भय काको जब, श्री राधे रखवार॥

103

संत जन बारह मास बसंत।
पिउ पिउ कहि कहि छिन छिन निशिदिन, कूकत कोकिल संत।
कबहुँक झरत दृगन अँसुवन जनु, झर तरु–पत्र अनंत।
कबहुँक झूमि झूमि मधुकर जनु, गुनगुनात गुन कंत।
कबहुँ प्रमत्त फूल सरसौं जनु, फूलि फूलि हरषंत।
प्रेम बसंत 'कृपालु' नित्य रह, रस सरसंत न अंत॥

104

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सखी कोउ एक बात समुझाय।
जग महँ जेतिक प्रीति होति सब, छिन छिन छीजति जाय।
यह नहिं सुनी कहति सखि हमरेहुँ, सुत पति भगिनी भाय।
पै कत हरि ते प्रीति सखिन की, छिन छिन बढ़ति सदाय।
सखि कह जग सब प्राकृत जन सखि, प्राकृत तन मन पाय।
तेरो पिय 'कृपालु' चिन्मय जो, नित नव नव दिखराय॥

105

सखी मन मरम न जाने कोय।
ज्यों ज्यों भीजै श्याम रंग मन, त्यों त्यों ऊजर होय।
हिय बिच समुझि परत नहिं नेकहुँ, कान्ह कि प्रान कि दोय।
कबहूँ पिय निज ढिग लखि रोवत, कबहुँ दूर लखि रोय।
कबहुँ मिलन महँ विरह अनुभवत, सत्य कहौं सखि तोय।
किमि 'कृपालु' कहि सक जब ज्ञानी, बरबस ज्ञान बिगोय॥

106

सखी मोहिं प्रीति रीति समुझाय।
कहा कहूँ सखि रीति प्रीति की, कही सुनी नहिँ जाय।
जानत वाय प्रिया प्रियतम बस, और न जानि सकाय।
जो कर तन मन प्रान समर्पन, प्रिया प्रियहिँ हरषाय।
सो तिनहिंन अनुकंपा ते सखि, जानत कछु कछु वाय।
देनो प्रीति कामना लेनो, सुनु संक्षेप बताय।
देनो लेनो हो 'कृपालु' जहँ, सोइ व्यापार कहाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

107

सखी मोहिं समुझावहु यह बात।
जग महँ जानि नात पिय कतहूँ, तियहिं नात छुटि जात।

पुनि अँखियनहूँ लखत सखिन कत, जात पियहिं जुरि नात।
होत सौतियाडाह जगत पै, इत विपरीत लखात।
सखि कह सुनु सखि जग निज सुख हित, प्रीति करत दिन रात।
सखि 'कृपालु' अस प्रीति करति बस, सुखी रहैं बलभ्रात॥

108

सखी यह कैसो है ब्रजधाम।
जहँ नहिं धर्म अधर्म विचारत, छके प्रेम घनश्याम।
लोक वेद कुल कानि न मानत, मनमाने सब काम।
गुरुजन मात पिता पति की नित, करति अवज्ञा बाम।
हाँसी करत सबै ब्रजवासी, लै लै सुरपति नाम।
वेद विरुद्ध रास रस खेलत, सखिन कुंज वसु-याम।
ज्ञानी शंभु शुकादिक जेतिक, तेउ बिके बिनु दाम।
यह 'कृपालु' कछु मरम अलौकिक, जहँ मन बुधि विश्राम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

109

सखी सुनु इक कौतुक की बात।
जाकी माया ते विधि हरि हर, नाचत नित दिन रात।
सोइ ब्रजनारिन की तारिन पै, नाचत बलि बलि जात।

जाके भय भयभीत होत भय, सन्मुख ह्वै न सकात।
सोइ स्वामिनिहिं मनावन सन्मुख, जात न अति डरपात।
नहिं 'कृपालु' कछु कौतुक प्रियतम, प्रेम विवश विख्यात॥

110

सखी सुनु प्रेम नेम दोउ भाय।
यद्यपि कोउ कह प्रेमहिं बड़ कोउ, नेमहिं बड़ बतराय।
पै जो होय नेम प्रेमहिँ को, तो झगड़ो मिटि जाय।
होत प्रेम को नेम बड़ो सखि, चहिय वाय अपनाय।
जो न मान प्रेमहिं नेमहिं तो, कबहुँ प्रेम नहिं पाय।
कह 'कृपालु' बिनु प्रेम, नेम ते, पाय स्वर्ग पछिताय॥

111

सदा सोँ सोई दुलहिनि जाग।
आये रसिक जगावन आपुहिँ, जाग्यो तेरो भाग।
भुज पसारि कब ते पिय परखत, वेगि धाइ उर लाग।
बिनु पिय-परस न रतिरस पाइय, जरि जाइय कामाग।
रति-रस-बस बरबस करि बस पिय, खेलु रास-रस फाग।
अस 'कृपालु' संयोग बनै जो, होवे अमर सुहाग॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

112

संत गति मन बुधि नाहिँ समात।
ज्ञानी–भक्त शिरोमणि अर्जुन, अहिकन्या सों नात।
लखत राममय जग मारुत सुत, असुरन वधत लखात।
आत्माराम जिते सनकादिक, शाप देत बौरात।
गुणावतार कहत विधि हरि हर, सोउ दीखत मदमात।
सुनहु 'कृपालु' योगमाया यह, संतहिं समुझि सकात॥

113

सब झूठो जग व्यवहार रे।
जब लौं तन मन धन जन सब रह, पूछत सब संसार रे।
जब उन कहँ अभाव देखत तब, तजत सकल परिवार रे।
जब लौं काम बनत काहू सों, जोरत नात हजार रे।
COPYRIGHT
जब ही काम बनत नहिं देखत, रहति न यारी यार रे।
RADHA GOVIND SAMITI
ताते भजु 'कृपालु' मन छिन–छिन, नागर नंदकुमार रे॥

114

सुन लाख टका की बात रे।
जो तोहिँ मानत रहत आपुनो, सुत दारा पितु भ्रात रे।

सो सब धोखा जान मूढ़ मन, है सब स्वारथ नात रे।
जब ये जानत नहिं आपन हित, भटकत जग दिन रात रे।
तब ये कहा करैं हित तेरो, तू इन कत पतियात रे।
अब 'कृपालु' तू तोरि नात सब, जोर नात बलभ्रात रे॥

115

सुने हम समदर्शी भगवान।
जहँ कहुँ दीन हीन जन देखत, चोरत तन मन प्राण।
पै तिन सों कछु पेस न पावत, जिनके उर अभिमान।
चतुर ठगत भोरेन कहँ जगहूँ, सोचहु मनहिं सुजान।
अभिमानिन पर करहु कृपा तब, जानउँ कृपानिधान।
हमरे हित 'कृपालु' अब सोचिय, मम अभिमान महान॥

116

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सुनो मन इक अनहोनी बात।
जग व्यापक आनंदकंद यह, लोक वेद विख्यात।
पै यह अचरज सो नहिं काहुहिं, अनुभव माहिं लखात।
जो चींटी चीनी के गिरि पर, करत वास दिन रात।
सो यदि कहइ लवण गिरि ता कहँ, को यह मानि सकात।

जो यह मरम जान चींटी मुख, लवण डली सुनु तात।
सो 'कृपालु' तजि सकल कामना, भजइ सदा बलभ्रात॥

117

सुनो मन! एक अनोखी बात।
काम क्रोध मद लोभ तजहु जनि, भजहु तिनहिं दिन रात।
काम इहै पै कब मोहिं मिलिहहिं, सुंदर श्यामल गात।
क्रोध इहै घनश्याम–मिलन बिन, जीवन बीत्यो जात।
रहु येहि मद मदमत्त दास हौं, स्वामी मम बलभ्रात।
रह 'कृपालु' यह लोभ छिनहिँ छिन, बढ़इ प्रेम पिय नात॥

118

सुनो मन एक काम की बात।
कोउ कह 'श्याम भजन बिनु कैसेहुँ, काम न कबहूँ जात'।
कोउ कह 'काम तजे बिनु कैसेहुँ, श्याम न पाइ सकात'।
इन दोउन भोरेन बतियन सुनि, मोहिँ अचरज दरसात।
हौं कह 'करु यह काम समर्पित, श्याम चरण जलजात'।
तब 'कृपालु' इक काम इहै रह, कब मिलिहहिं बलभ्रात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

119

सुनो मन! यह अनन्य की रीत।
गौर श्याम-प्रिय परिजन तजि कहुँ, करत न सपनेहुँ प्रीत।
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ आदि सों, रहत अतीत अजीत।
रसिकनि तजि श्री महाविष्णु को, करत न भूलेहुँ मीत।
विधि निषेध अरु लोक वेद की, रहत न नेकहुँ भीत।
रह प्रति रोम 'कृपालु' गौर-हरि, अरु हरिजन परतीत॥

120

सुनहु मन! यह ऐसो संसार।
बांधि अधर्मिन और विकर्मिन, पठवत नरक मझार।
धर्मिन कर्मिन स्वर्ग पठावत, सोउ क्षणभंगुर यार।
योगिन कहँ अणिमादि सिद्धि दै, देत छाँड़ि मझधार।
ज्ञानिन कहँ तजि देत सदा को, दै तिन मुक्ति असार।
प्रेम 'कृपालु' पाव सोइ जोइ भज, नागर नंदकुमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

121

सुनो मन! यह वेदन को सार।
कहत 'रसो वै सः' यह वेदन, या पर करिय विचार।

रसिक शिरोमणि ब्रह्म श्याम बिनु, रस न पाउ संसार।
'उपासते पुरुषं' येहि श्रुति को, इहै अर्थ उर धार।
सकल कामनाहीन दीन बनि, भजिये नंदकुमार।
तब 'कृपालु' तुम पाव प्रेम रस, बस गोलोक मझार॥

122

सुनो मन! यह स्वरूप संसार।
शब्द स्पर्श रूप रस गंधहिं, पंच विषय उर धार।
तू माँगत इनहिंन कहँ पै कछु, मरम न जान गमार।
जो होवति तव पूर्ण कामना, प्रकटत लोभ अपार।
जो न होति तव पूर्ण कामना, प्रकटत क्रोध निहार।
दुहुँन 'कृपालु' भांति दुख दारुन, भज मन नंदकुमार॥

123

COPYRIGHT
सुनो मन! श्रुति सिद्धांत विचार।
RADHA GOVIND SAMITI
'यस्यामतं तस्य मतमिति' श्रुति, भाव इहै उर धार।
जानि न सकै ब्रह्म को बुधिबल, विधि हरि हर गये हार।
ताते तजि कुतर्क संशय सब, शरण जाहु हरि द्वार।
रूपध्यान करि कांत भाव सों, भजु नित नंदकुमार।
तब 'कृपालु' हो कृपा जासु फल, पाउ प्रेम रस सार॥

124

सुनो मन! सबै श्रुतिन को सार।
इक माया इक जीव दुहुँन को, ईश ब्रह्म साकार।
मायाधीन सनातन जीवहिं, माया ही सों प्यार।
जीव ब्रह्म को दिव्य अंश है, चारिहुँ वेद पुकार।
याते याको विषय न मायिक, यह मायिक संसार।
मायिक जग सों राग द्वेष तजि, रहु गुरु–शरण मझार।
तजहु 'कृपालु' अपर साधन बल, भजहु युगल सरकार॥

125

सुनो मन! सुख दुख नहिं संसार।
सुख वादी कर प्यार जगत सों, दुखवादी कर खार।
जो सुख होत जगत तो कोउ तो, पावत करिय विचार।
जो दुख होत रहत कत संतन, सदा सुखी इकसार।
जोइ असीम सोइ सुख जोइ सीमित, सोइ दुख यह उर धार।
कह 'कृपालु' मन सुन सुख पर कहुँ, होत न दुख अधिकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

126

सुनो सब एक अनसुनी बात।
सब कह साधन भजन करहु तब, कृपा करत बलभ्रात।

हौं कह साधन बिनुहिं कृपा कर, सुंदर श्यामल गात।
जब लौं शिशु नहिं कछु कर तब लौं, सब कछु कर जग-मात।
जब शिशु कछु कछु कर तब जननिहुँ, कछु कछु करत जनात।
जब शिशु सब कछु कर तब जननी, नहिं कछु करत लखात।
करि विश्वास शरण गहु पूरण, श्याम-चरण जलजात।
करत 'कृपालु' वहन सब गिरिधर, योगक्षेम दिनरात॥

127

सुनो सब जीव हमारी बात।
'यमेवैष वृणुते' मम वाणी, विश्व विदित विख्यात।
याको अर्थ शरण ह्वै जोइ भज, सोइ मोहिं पाइ सकात।
'गुह्याद् गुह्यतमं' गीता में, कह्यो गुप्त मत तात।
ताको अर्थ इहै मन बुधि दै, भजहु मोहिं दिन रात।
करहु 'कृपालु' भजन तुम निशिदिन, देहु तर्क धरि पात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

128

सुनो हरि! खरी खरी अब बात।
हौं तो मायाधीन सनातन, वेद विदित विख्यात।
पै तुम मायाधीश कहावत, पुनि काहे डरपात।

तुम्हरे सुतहिं मार तव दासी, छिन-छिन जूते लात।
बने अकारण करुण देख सब, पै कछु करि न सकात।
'यमेवैष वृणुते' इति श्रुति की, बात तिहारी जात।
पांचहुँ मुक्ति 'कृपालु' न याचत, याचत तुम सँग नात॥

129

सोच मन! श्याम मिलन की बात।
यह जग है इक गोरखधंधा, कहा याय पतियात।
जेहि यम किंकर अस दसकंठहुँ, माटी महँ मिलि जात।
परम स्वारथिन सों नित जोरत, तिय सुत पति पितु नात।
जो बिनु स्वारथ पर-उपकारी, लोक वेद विख्यात।
भजत न तेहि 'कृपालु' मन मूरख, सुंदर श्यामल गात॥

130

COPYRIGHT

हम चाकर उन ब्रज नारिनि के।
RADHA GOVIND SAMITI
भूखे रहत ब्रह्म खायेहु पै, जिन ब्रजनारिन गारिनि के।
थेइ थेइ करि नित नाचत गावत, जिनकी तारन तारिनि के।
घर घर फिरत सुनन कटु वचनन, जिनकी चोरिनि जारिनि के।
याचत चरण रेणु ब्रह्मादिक, जिन ब्रज की पनिहारिनि के।
धनि 'कृपालु' ब्रजनारिन जिन नित, विहरति संग विहारिनि के॥

131

हम डरहूँ डर ते ना डरें।
कोउ कर निंदन कोउ अभिनंदन, जेहि जो भावे सो करें।
रहें सदा अलमस्त रैन दिन, जिन हो जरना सो जरें।
गावें नाम रूप गुन लीला, करम–कीच बिच क्यों परें।
ध्यावें मोहन रूप माधुरी, सुत वित नारिन क्यों मरें।
पियें 'कृपालु' सदा प्रेमामृत, पंच प्रपंचनि हरि हरें॥

132

हम भूखे ब्रज की गारी के।
वारत निज बैकुण्ठ लोक–सुख, सुनि सुनि गारी 'दारी के'।
भाव न मो कहँ नेकहुँ अस्तुति, महावाक्य श्रुति चारी के।
होत विभोर सुनत ब्रजनारिन, वाक्यन चोरी जारी के।
भाव न मो कहँ चरण समर्चन, पद्मा सी घरवारी के।
मोहिं 'कृपालु' तो चरण पलोटन, भावत भानुदुलारी के॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

133

हमारे मन भाईं भानुलली।
भरी गुमान दिवानी डोलति, जानत जग पगली।
लोक–वेद–कुल कानि तजी सब, लोग कहें विटली।

कर्म अकर्म विकर्म आदि की, विपदा आपु टली।
राधे नाम सरस–रस चाखत, अमृत मधुर डली।
विहरति नित 'कृपालु' स्वामिनि सँग, गहवर–कुंजगली॥

134

हमारे, मन भायो ब्रजधाम।
जहँ ज्ञानिन–आराध्य मुक्तिहूँ, निशिदिन रहति गुलाम।
पानी भरति बनी पनिहारिनि, निदरतहूँ ब्रजभाम।
गहवरवन निधिवन वृंदावन, लतन–कुंज अभिराम।
नाम रूप लीला गुन गावत, भावत श्यामा श्याम।
तृण सम लखत 'कृपालु' त्रिलोकहुँ, अरु बैकुण्ठ ललाम॥

135

हमें तो अली लली सों काम।
रसिक रँगीली गुन गर्वीली, छैल छबीली भाम।
पूरनकाम श्यामहुँ जाको, आठों याम गुलाम।
गहवर गली भली अलि मो कहँ, नहिं बैकुण्ठ ललाम।
मन भावत नित आवत जावत, गावत राधे नाम।
मंजुल कुंज 'कृपालु' निकुंजनि, विचरति आठों याम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

136

हमें तो एक श्याम सों काम।
माँगि खाइबो तानि सोइबो, रहिबो श्री नँदगाम।
गावत श्याम नाम गुन लीला, पल छिन आठों याम।
निदरत विष्णुधाम बैकुंठहुँ, विचरत नित ब्रजधाम।
घूमत झूमि झूमि कुंजनि जहँ, सबरी मुक्ति गुलाम।
हम 'कृपालु' इक श्याम भरोसे, सोव पसारे पाम॥

137

हमें तो मिल्यो रतन अनमोल।
कोटि कुबेर सिहात मोहिं लखि, पियत प्रेम रस घोल।
पायो रतन अमोलक मैंने, राधे-राधे बोल।
रसिकन दीन बताय कृपा करि, बैकुण्ठहुँ की पोल।
कर्मधर्म सब ढोल पोल है, देख्यों सबइ टटोल।
साधन सिद्धि 'कृपालु' प्रेम दोउ, सुन लो कानहिं खोल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

138

हमें नहिं काहू सों कछु काम।
दास स्वामिनी श्यामा जू को, सुमिरत आठों याम।

उमा रमा ब्रह्माणी वाणी, जाकी रहति गुलाम।
कबहुँक रह वृंदावन कबहुँक, श्री बरसानो धाम।
निंदा अस्तुति भार डार हम, गावत राधे नाम।
सोवत नित 'कृपालु' श्यामा की, गोद पसारे पाम॥

139

हरि बिनु बिगरी नाहिँ बने।
कर्म ज्ञान अरु भक्ति–साधना, वेदन यदपि भने।
तदपि न छुटत मोह माया मन, किये यतन अपने।
सुत वित पति तिय महँ नित देखत, साँचे सुख सपने।
बुधि समुझाय थकी बहु विधि मन, पै मन नाहिँ मने।
कहे 'कृपालु' हरि अनुकंपा बिनु, मन हरि रस न सने॥

140

COPYRIGHT
हृदय तू कुलिश कठोर लखात।
RADHA GOVIND SAMITI
जो तू होतो लौह विरह दव, कब को ही जरि जात।
भाजु प्राण! अब प्राणनाथ ढिग, विरह करन चह घात।
उर–गृह लागि आगि तू सोवत, जोवत मौत जनात।
हाय! गोहारि लागु अब कोऊ, विरह जरावत गात।
लखि 'कृपालु' दृग धाय लाय जल, करन लगे बरसात॥

141

हृदय तू मोरि सिखावनि मान।
तू चाहत निज परम सनेही, सुंदर श्याम सुजान।
सो निष्ठुर सपनेहुँ नहिं सोचत, हृदयहीन जनु कान्ह।
बिनु दरशन तू चहत मीच पुनि, कैसेहुँ निकसैं प्रान।
सोऊ करत न प्राणनाथ तू, बड़ मूरख अज्ञान।
बूझि गई मैं गूढ़ पहेली, याचन उलटो दान।
अब 'कृपालु' मन चहहु विरह तब, मिलिहैं पिय जिय जान॥

142

होति जग इक अनहोनी बात।
जो नहिं होइ सक तीनि काल महँ, सोइ जग हो दिन रात।
रसिकन कह सिगरो जग दुलहिनि, दूलह श्यामल गात।
दूलह रस बिनु नीरस दुलहिनि, रस नहिं पाय सकात।
पै जग लखु सब दुलहिनि दुलहिनि, दुलहिनि की बनि जात।
जो 'कृपालु' यह जान मरम सो, जोरत हरि सौं नात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दैन्य-माधुरी

1

अगति के गति तुम दीनदयाल!
जग सब बने बने के साथी, पति वनिता पितु बाल।
पै तुम कूबरि कहँ सुंदरि करि, किय निहाल तत्काल।
लै द्वै मूठि सुदामहिं कन किय, दै द्वै लोक निहाल।
उन पाण्डव वनवासिन कहँ तुम, दियो साथ गोपाल।
दिय 'कृपालु' गति-मातु पूतनहिं, तुम सम कौन कृपाल॥

2

अपनी ओर टुक हेरो री, किशोरी राधे।
हौं तो कुटिल नीच सब दिन को,
विश्व विदित अघ मेरो री किशोरी राधे!
पै 'बिनु हेतु पतितपावनि' यह,
विरद दुर्यो कित तेरो री किशोरी राधे!
शिशु नवजात न जानत मातहिं,
रहत मातु रुचि चेरो री किशोरी राधे!

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

त्यों हौं अति अबोध जड़ पामर,
महामोह तम घेरो री किशोरी राधे!
हमरिहिं बेर बेर कत एतिक,
याको करिय निबेरो री किशोरी राधे!
जगहुँ सुनात 'कृपालु' कुमात न,
यदपि कुपूत घनेरो री किशोरी राधे!

3

अशरण–शरण शरण तव आयो।
भटकत रह्यों अनादि काल ते,
ज्यों अनाथ जग अग जग जायो।
तजि तव चरणकमल कहुँ नेकहुँ,
एकहुँ पल कहँ कल नहिं पायो।
गयो हारि जब दीन जानि मोहिं,
रसिक जनन यह मरम बतायो।
भुक्ति मुक्ति–सुख भार डारि अब,
बनि मधुकर चरनन लिपटायो।
जब 'कृपालु' ह्वै गयो तिहारो,
काल कर्म गुन सब खिसियायो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4

अहो पिय! जब तुम्हरी बनि जैहौं।
तव मुखचंद्र, चकोर पियत नित, दृगन न नेकु अघैहौं।
ह्वै तुम्हरी अपनो करि तुम को, तन मन प्राण लुटैहौं।।
तव कर परस पाय मदमाती, फूली अँग न समैहौं।
नचिहौं बनि उनमादिनि छिन छिन, तुम्हरोइ गुनगन गैहौं।
मन भाई 'कृपालु' करि भुज भरि, पुनि पुनि कंठ लगैहौं॥

5

अहो हरि! अब तो सह्यो न जाय।
हौं रहि 'अग जग' जहँ लगि जग कह, पलहूँ कल नहिं पाय।
तपत त्रितापन आपन पापन, अब हौं गयों अघाय।
अशरण–शरण शरण चरणन अब, आयो जनि ठुकराय।
जानि बानि निज कान्ह कान करि, लेहु मोहिं अपनाय।
माँगत भीख 'कृपालु' सीख नहिं, अब जनि बेर लगाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

6

अहो हरि! अब हौं गयों अघाय।
पचि पचि मरेउँ अनादि काल ते, जड़ जंगम भरमाय।

अब जानी नहिं चल मनमानी, रसिकन दीन बताय।
ज्यों कोउ खग जलयान त्यागि नभ, कब लौं सकत उड़ाय।
त्यों बिनु पद अवलंब तिहारे, मन विश्राम न पाय।
पियत मृगन मृगजल ज्यों नेकहुँ, सकत न प्यास बुझाय।
त्यों 'कृपालु' बिनु पिये प्रेमरस, किमि मन चैन लखाय॥

7

अहो हरि! ओहू दिन कब ऐहैं।
गावत गुन गोपाल निरंतर, दृगन अश्रु बरसैहैं।
रूप माधुरी निशिदिन ध्यावत, मन भृंगी बनि जैहैं।
बाट निहारि तिहारी पल पल, कलप समान जनैहैं।
हाय! हाय! करि इत उत भाजत, निज तनु सुधि बिसरैहैं।
यह 'कृपालु' जिय परम भरोसो, कबहुँ तो हरि अपनैहैं॥

COPYRIGHT

8

RADHA GOVIND SAMITI

अहो हरि! कब ते द्वार खड़ो।
मांगत भीख कृपा की सिर धरि, कोटिन पाप घड़ो।
यद्यपि लखि निज ओर दयामय, लाजन जात गड़ो।
तदपि तिहारो विरद सोचि जिय, साहस कछुक पड़ो।

रसिकन सुनि बिनु हेतु सनेही, हौं रिरियात अड़ो।
जेतिक पतित 'कृपालु' मिले तोहिं, हौं उन माहिं बड़ो॥

9

अहो हरि! कब लौं रहिहौं दूरि।
कबै निरखिहौं नव जलधर तनु, इन नैनन भरपूरि।
यदपि कलप कलपांतर ही सौं, कीन्यो पातक भूरि।
तदपि नाथ! यह हिय प्रतीति तुम, मेरे जीवन मूरि।
कबै सुरति करिहौ हमरीहूँ, जानि दास–पगधूरि।
क्यों 'कृपालु' अब लौं नहिं आये ?, का हिय रहे बिसूरि॥

10

अहो हरि! कहौं कौन पै जाय।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
सुनत पुरानन कान स्वर्ग कहुँ, जहँ वैभव बहुताय।
पै तहँ वेद विधान कठिन पुनि, छीन पुन्य जग आय।
पुत्र कलत्र मित्र स्वारथ रत, पुनि रंकन को राय।
हौं अज्ञानी, मुक्ति ज्ञान ते, पुनि मोहिं सो न सुहाय।
तुम ही सों 'कृपालु' हौं कहिहौं, औरन कहे बलाय॥

11

अहो हरि! तुम मम साहूकार।
तुम्हरे ऋणहिं उऋण नहिं होइ सक, अगनित जनम मझार।
करि करुणा करुणावरुणालय, नर तनु दिय सरकार।
पुनि निज वेदन मार्ग बतायो, कीनो मम उपकार।
पुनि समुझायेहु संत अनंतन, लै पुनि पुनि अवतार।
कह 'कृपालु' मन तबहुँ सुन्यो नहिं, तुम ही सुनहु पुकार॥

12

अहो हरि! देहु मोहिँ विरहाग।
जीवनमुक्त परमहंसहुँ जेहि, पाय मान बड़भाग।
पंचकोष जरिजात आपु जिमि, अशन जरत जठराग।
प्रक्षालत बरसाय दृगन जल, पापपंक उर लाग।
जरत त्रिताप आप विरहागिनि, पंच क्लेशहूँ भाग।
कब 'कृपालु' लहि विरह दुसह दुख, करिहौं अमर सुहाग॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

13

अहो हरि! बेर भई रिरियात।
तुम व्यापक पुनि अंतर्यामी, पुनि कत नाहिँ सुनात।

निगमागम पुरान यद्यपि हौं, पढ़त, सुनत दिन रात।
तदपि नाथ यह मन मनमानी, करत न नेकु अघात।
यद्यपि बार बार हौं बरजत, समुझावत बहुभाँत।
तदपि 'कृपालु' कृपा बिनु तुम्हरी, बिगरी बनि न सकात॥

14

अहो हरि! सोचहु पाछिल बात।
विरद पतितपावन लहि पतितन, भयो जगत विख्यात।
हौं पतितन सरदार तदपि तुम, भूलि गये सो नात।
मोहिं अपुनो कछु सोच न नेकहुँ, तुमहिं सोचि पछितात।
इक हमरे कारन करुनामय, तुम्हरो विरद नसात।
मुक्ति 'कृपालु' न चह, चह बंधन, अलि बनि पद–जलजात॥

COPYRIGHT
15
RADHA GOVIND SAMITI

अहो हरि! हरो विषम भव भीर।
देहु भीख निष्काम प्रेम की, आयो द्वार अधीर।
लख चौरासी योनि भ्रम्यों मैं, धरि धरि अमित शरीर।
मिटी न प्यास पियत निशिवासर, मृग मरीचिका नीर।

काम क्रोध मद बहुत सतायो, सहि न जात अब पीर।
विरद विचारि 'कृपालु' आपुनो, जनि बनिये बेपीर॥

16

अहो हरि! हौं पातक अवतार।
लटकत तव तनु रोम रोम प्रति, ज्यों ब्रह्माण्ड अपार।
त्यों हमरेहुँ शत कोटि अजामिल, रह प्रति रोम मझार।
तुम तुम्हरे जन कोटि यतन करि, हारे बार हजार।
पै हौं कियो सदा मनभायो, अंध बधिर अनुहार।
मम पातक दावानल सों अब, जरन चहत संसार।
यासों अब 'कृपालु' कछु सोचिय, याको द्रुत उपचार॥

17

आजु हरि दैहौं जो तोहिं भाय।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
पांच पूतना इंद्रिन विषयन, विष पी जाइय आय।
मारि अघासुर अघन अनंतन, जीव सखहिं हरषाय।
मारि बकासुर रूप दंभ मम, जो छल–ध्यान लगाय।
उर दावानल रूप त्रितापहिँ, आय पियहु बलभाय।
इमि 'कृपालु' उर ब्रज असुरन वधि, नित नव रास रचाय॥

18

आजु हौं करिहौं हरि! झगड़ो।
अब लौं नहिं कछु कह्यों जानि हौं, तोहिं भगवान बड़ो।
तुम मम राजा स्वामि सखा सुत, पति, यह जानि अड़ो।
नातो पाँच साँच तोहिँ याते, चाहत आजु लड़ो।
एकहिं नात मान जग, तुम्हरो, केतिक हृदय कड़ो।
हौं 'कृपालु' सत्याग्रह करिहौं, तुम्हरे द्वार पड़ो॥

19

कबहुँ सखि हमहुँ देखिहौं श्याम।
बहुत दिनन ते गुनन सुनति हौं, कोटि काम अभिराम।
अंग अंग जनु चुवत सुधारस, अस कह सब ब्रजबाम।
इक तो सुनति चपल चितवनि ते, बिके सबै बिनु दाम।
दूजो सुनति मधुर मृदु मुसुकनि, होत सबै बेकाम।
कह 'कृपालु' इक और मुरलिधुनि, घायल कर अविराम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

20

कबै हरि बनिहौं ब्रज को मोर।
लखि घनश्याम जानि घनश्यामहिं, ह्वैहौं प्रेम विभोर।

प्रेम विभोर होत ही नचिहौं, झुकि झुकि पंख मरोर।
नाचत पंख मरोर मोर मन, उठिहैं सरस हिलोर।
उठत हिलोर 'श्याम'! इमि कहि कहि, शोर मचैहौं घोर।
मोर मुकुट हित हौं 'कृपालु' नित, दैहौं पंखन तोर॥

21

करिय पिय मोहिँ भँवरा ब्रज माहिं।
गुन गुन गुन गुन गुनगन गावत, सेवाकुंज सिराहिं।
पी पराग वनमाल लाल को, ह्वै मदमत्त भ्रमाहिं।
गुंजन करत कुंज पुंजन हम, प्रिया मनावन जाहिं।
मानिनि को संदेश सुनावत, उर आनंद न समाहिं।
लहि 'कृपालु' रस–युगल माधुरी, मदिरा–मद बौराहिं॥

22

COPYRIGHT
करिय मोहिँ कुंज कदंबनि डार।
RADHA GOVIND SAMITI
जिनमें झूला डारि युगलवर, झूलैं कुंज मझार।
कबहुँक झोंटा देंय लाल जू, कबहुँ देंय ब्रजनार।
झूलूँ लाल लली सँग हौं हूँ, झुकि झुकि झूमि निहार।
प्यारी प्रीतम पर ऊपर ते, करौं पुष्प बौछार।
लखत 'कृपालु' युगल झांकी नित, ह्वै जाऊँ बलिहार॥

23

कहत प्रभु! छोटे मुहँ बड़ि बात।
निज जन जानि सुनिय नँदनंदन, बुरो न मानिय तात।
जननि पयोधर पय रस ज्यों शिशु, नहिं जानत नवजात।
यह जिय जानि डारि कुच शिशु मुख, पय पिवाय सब मात।
त्यों हौं पियत अनादि काल ते, विषयन–रस मदमात।
जान 'कृपालु' न प्रेम सुधारस, टुक पिवाय बलभ्रात॥

24

कहाँ लौं कहिये हरि उपकार।
जननि जठर दस मास राख जस, को तस राखन हार।
पुनि जनमत ही जननि–दूध दिय, धन्य धन्य करतार।
दूध गये पुनि दिये दशन पुनि, दिये अन्न बलिहार।
पुनि छिन छिन कर्मन को लेखा, राख्यो सबहिं सँभार।
पुनि 'कृपालु' दिय पूर्व कर्म फल, जड़ न मान आभार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

25

कहाँ हरि! गई कृपा की बानि।
निगमागम पुरान संतन तोहिं, कहत अहैतुक दानि।

पुनि कत किंतु परंतु लगावत, साधन भजन बखानि।
तुम कहँ सब कह सहज सनेही, कृपासिंधु सुखखानि।
तुम कहँ कछु हम सब सों चाहिय, हौं न सकौं यह मानि।
कह 'कृपालु' साँची तबहूँ उर, नहिं प्रतीति यह जानि॥

26

कहाँ हरि! सोये हमरिहिं बार।
पतित पुकार सुनत ही धावत, नेकु न लावत बार।
कारण रहित कृपालु सदा ते, जानत तोहिं संसार।
कैसेहुँ पतित शरण टुक आये, राखत चरण मझार।
पतितन ही सों प्यार करत नित, अस कह संत पुकार।
पुनि अति पतित 'कृपालु' पेखि कत, उर निष्ठुरता धार॥

27

कहो हरि! हम तुम ते कछु थोर?।
उत तव गुन अगनित इत देखिय, अवगुन अगनित मोर।
उत तव लीला ते यम कंपित, इत लखि मम अघ घोर।
तुम रसिकन सिरमोर इतै हम, विषयन रस सिरमोर।
जब ते तुम तब ते हम तुम इक, हम हैं अमित करोर।
तुम 'कृपालु' हारहुगे मोते, संधि करहु न तु दोर॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

28

कहो हरि! कहाँ रह्यो तव न्याय।
योगक्षेम शरणागत जन कहँ, वहन करत जनु माय।
उनके अश्रुबिंदु एकहुँ लखि, बिंदु सहस्त्र बहाय।
चलत सदा उनके पाछे येहि, आशा पदरज पाय।
अमित जन्म के कर्म शुभाशुभ, छिन महँ देत नसाय।
दै निज लोक आपु सँग उन कहँ, तबहूँ नाहिं अघाय।
करत दासता क्रीतदास बनि, नीच टहल बलि जाय।
यह 'कृपालु' अन्याय दयामय, वेदन न्याय बताय॥

29

कहौं का, तुम सों नंदकुमार।
वासों कहत फबत जो उर की, नहिं जानत सरकार।
खरे खरे को तो संसारहुँ, सबै निबाहनहार।
पै मो सम खोटे को तो प्रभु, इक तुम्हरो दरबार।
यद्यपि क्षमायाचनाहूँ को, नहिं हमरो अधिकार।
तदपि 'कृपालु' कहौं पुनि कासों, को पतितन रखवार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

30

कहौं हरि कहा? कौन मुहँ लाय।
तुम सों पाय पतित पावन प्रभु, चरन शरन नहिं आय।
पढ्यो सुन्यो सब वेद पुरानन, गुन्यो नाहिं इठलाय।
नित रह लक्ष्य लोकरंजन को, बातन विविध बनाय।
औरन की झूठी निंदा करि, चाहत रसिक कहाय।
अबहूँ नाथ! 'कृपालु' न चेतत, नर तनु बीत्यो जाय॥

31

कान्ह! टुक सुन लो करि के कान।
टेरत टेरत हारि गयों हौं, का नहिं तुम्हरे कान?।
तुम कहँ सब कह 'हरि' पुनि क्यों नहिं, नासत हरि! अज्ञान।
तुम 'गोपाल' कहावत पुनि कत, पाल न इंद्रिन कान्ह।
कहत 'पतितपावन' तोहिं रसिकन, करत पतित सम्मान।
पुनि कृपालु! अति पतित 'कृपालुहिं', कत न दास निज मान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

32

कान्ह! तुम नहिं मो कहँ पहिचान।
ब्रह्म सच्चिदानंद पुत्र हम, चारिहुँ वेद बखान।

माँगत साधिकार कछु तोसों, नहिं भिक्षुक मोहिं जान।
पितु सों जो संपति सुत मांगत, रहत तहाँ सम्मान।
पूत कपूत होत जगहूँ महँ, अचरज कौन महान।
लाज 'कृपालु' जात पितु ताते, करहु प्रेम को दान॥

33

किशोरी मोरी, अब न लगाओ बार।
मांगत भीख कृपा की केवल, खड़ो तिहारे द्वार।
रसिकन–मुख अस सुनी दीन को, आदर येहि दरबार।
देर होत अंधेर नहीं बस, इहै रह्यो आधार।
देर भये जनि जानेहु तजिहौं, हौं जड़ हठी गमार।
कहिहौं नहिं 'कृपालु' काहू सों, आ जाइय इक बार॥

COPYRIGHT

34

RADHA GOVIND SAMITI

किशोरी मोरी, करहु कृपा की कोर।
बहुविधि नाच नचावति स्वामिनि!, यह माया बरजोर।
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद, घेरे चहुँ दिशि चोर।
जानतहूँ नहिं मानत ठानत, हठहिँ हठी मन मोर।

सुत वित नारि पियारि लगति अति, यदपि कहावत तोर।
ताते दै निज प्रेम 'कृपालुहिं' हेरहु हमरिहुँ ओर॥

35

किशोरी मोरी, बिगरी देहु बनाय।
अति कोमल सुभाउ माँ तुम्हरो, वेद पुरानन गाय।
कासौं कहूँ सुने को तुम बिनु? मुझ दुखिया की माय।
मोरी दशा भली तुम जानत, कबहुँ न अघन अघाय।
कपटी कुटिल कुपूत रावरो, इत उत ठोकर खाय।
भक्तिभाव कछु जानत नाहीं, बनत रसिक–रस–राय।
अपनी ओर निहारि राधिके!, अब तो लेहु अपनाय।
मोहन सों इक बार मिला दो, परूँ तिहारे पाय।
तुम्हरो माय! कहाय पूत अब, काके द्वारे जाय।
यह 'कृपालु' हठ पुरवहु राधे!, न तु सुत मातु लजाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

36

किशोरी मोरी, सुनिय नेकु इक बात।
हौं मानत हौं परम पातकी, विश्व–विदित विख्यात।
पै यह कौन बात अचरज की, तव चरनन विलगात।

कोउ इक मोहिं बताउ तुमहिं तजि, बिनु पातक जग जात।
जेहि दरबार कृपा बिनु कारन, बटत रही दिन रात।
तेहि दरबार भयो अब टोटो, यह अचरज दरसात।
मोहिं 'कृपालु' कछु आपुन सोच न, तोहिं सोचि पछितात॥

37

कुँवरि! हौं, मानत हौं निज दोस।
जूते लात खातहूँ निशिदिन, इंद्रिन करत भरोस।
पुनि-पुनि विषय देत इनहिंन कहँ, करत न सपनेहुँ रोस।
ब्रह्मलोक पर्यंत भोग लहि, होत नाहिं संतोस।
यह जानतहूँ नहिं मानत हौं, भरत अघन को कोस।
लखि 'कृपालु' निज ओर करहु अब, कृपा कुमारी-घोस॥

COPYRIGHT

38

RADHA GOVIND SAMITI

कौन हरि! हमरो तुम्हरो नात।
तुम सोवत निज लोक चैन ते, हम रोवत दिन रात।
हम पल छिन तुम बिन नित तलफत, तुम नहिं पूछत बात।
नैन निगोरे बरजत मोरे, और और अकुलात।

रोम रोम नित याचत मोते, सुंदर श्यामल गात।
जानि 'कृपालु' कृपालु तोहिं हौं, प्रीति करी पछितात॥

39

जानि लइ हरि तुम्हरी सब पोल।
लाख टका की बात कहौं हौं, सुनहु कान निज खोल।
तुम कहँ चहिय न कछु काहू सों, कहत पीटि श्रुति ढोल।
भूखे तुम ब्रज नारिन गारिन, अति अटपट कटु बोल।
निदरतहूँ घर जात वनचरिन, बिके मनहुँ बिनु मोल।
सब को सार 'कृपालु' प्रेम बस, देख्यों सबइ टटोल॥

40

तुमहिं मम गति गिरिधर गोपाल।
कोउ धन साधन बल जग महँ कर, यज्ञ अनेक विशाल।
कोउ कानन महँ करत घोर तप, तजि जल अशन रसाल।
कोउ अष्टांग योग-साधन कोउ, अनुष्ठान विकराल।
सुन्यों नाथ हौं परम आलसी, तुम पतितन-प्रतिपाल।
तजि 'कृपालु' विश्वास आस सब, भजत लाड़लिहिं लाल॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

41

दयामय! अपनी ओर निहारो।
हौं तो कुटिल कुपूत सदा को, तुम निज विरद विचारो।
शिला अहिल्या, पशु वानर, गुह, श्वपच आदि उर धारो।
मम हिय कुलिश, पतितमति पशु ते, कर्म श्वपच शत वारो।
इक गुन रीझत गुनगाहक! इन, हमरे गुनन पसारो।
जो कह साधन-बल मम पद गहु, नहिं त्रिकाल निस्तारो।
हम 'कृपालु' उन प्रभु को चेरो, जो बिनु हेतु हमारो॥

42

दयामय! अपनो विरद विचार।
वेद पुरान बखान अकारन, करुनाकर सरकार।
पुनि तोहिं लगत पतित अति प्यारो, अस कह रसिक पुकार।
हौं अति पतित रहित साधन पुनि, पुनि मतिमंद गमार।
यह बड़ सोच, जान जग मो कहँ, तुम्हरोइ नंदकुमार।
लाज बचाउ 'कृपालु' आपुनिहिं, अपनो जानि निहार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

43

दयामय! अब तो दया करो।
बानि अकारन-करुन जानि निज, अवगुन चित न धरो।

हम अयान मन–बुधि–अतीत पुनि, तुम अरु जन तुम्हरो।
याते संतन कह्यो न मानत, उर अभिमान खरो।
सुन्यो कान अभिमान अशन तव, पुनि काहे जु डरो।
देहु 'कृपालुहिं' चरण कमल रति, जात त्रिताप जरो॥

44

दयामय! दया चहौं नहिं न्याय।
नहिं पैहौ प्रभु! पार न्याय करि, एतिक मम अन्याय।
बिनु जाने अपराध करत जो, सोऊ दंडहिं पाय।
पुनि जो जानि जानि कर पापन, नाथ! कौन गति वाय।
न्याय होत जगहूँ, पै तुम तो, करुणाकर कहलाय।
कहत 'कृपालु' न चतुराइहिं कछु, देखहु उर पुर आय॥

45

COPYRIGHT
दयामय! मोहिं समान मोहिं जान।
RADHA GOVIND SAMITI
ज्यों तुम सम तुम ही बिनु कारन, करुनाकर भगवान।
त्यों हम सम हम ही बिनु कारण, करत न अघन अघान।
जग महँ इक उत्तम नर जो उर, सपनेहुँ अघन न आन।
सो मध्यम नर अघ करि जो कर, प्रायश्चित्त महान।
हौं 'कृपालु' अति ही निकृष्ट पै, जग तुम्हरो जन जान॥

46

दरस कब दैहौ नंदकिशोर।
लखि घनश्याम श्याम घन नचिहैं, कबै मोर मन-मोर।
कबै दृगंचल चंचल चंचल!, लखिहौं हमरिहुँ ओर।
कब लैहौ चित चोर मोरहूँ, ब्रज बनितनि-चित-चोर।
कब ब्रजवासिनि दासिनि दासिनि, दासी बनिहौं तोर।
कब 'कृपालु' तनु-सुधि बिसरैहौं, ह्वै रस प्रेम विभोर॥

47

दर्शन देना नंद दुलारे।
नंदनंदन नैनन के तारे।
मटकनि मोर मुकुट की माथे,
चटकनि केशर तिलक लिलारे।
अलकनि-झलक मनहुँ अवलिन अलि,
जुरि जुरि जात जलज मुख पारे।
सुधा-पयोनिधि मधि विष-अंबुधि,
मतवारे चंचल दृग वारे।
अंबर पीत दिपत दुति दामिनि,
भृगुपद गुंजमाल गल धारे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कटि कमनीय काछनी काछे,
कर मुरली अँगुरीन सहारे।
हाय!! कबहुँ झूमत सखि मो ढिग,
प्रीतम अइहैं प्राणपियारे।
अब 'कृपालु' को बेगि मिलहु पिय,
नाहित जात ये प्राण हमारे॥

48

दीन की सुन लो दीनानाथ।
साधनहीन मलीन छीन हौं, सब विधि नाथ! अनाथ।
श्रद्धाबल–संबल नहिं नेकहुँ, नहिं संतन को साथ।
बूड़त हौं भवसिंधु दयामय!, पकरि लेहु अब हाथ।
सात स्वर्ग अपवर्ग न माँगत, रह तव पद मम माथ।
दै निज प्रेम कृपालु 'कृपालुहिं', करिये नाथ सनाथ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

49

दीन के तुम ही दीनानाथ।
नर किन्नर सुर कोउ देत नहिं, दीन हीन को साथ।
जब लौं तन धन जन को बल रह, गावत सब गुन गाथ।

लखतहिं निबल प्रबल स्वारथरत, तजत दंपतिहुं हाथ।
पुनि उन बाँह गहे न गहे का? तुम बिनु सबै अनाथ।
अब कृपालु अपनाय 'कृपालुहिं' धरहु हाथ मम माथ॥

50

दीनानाथ मोहिं काहे बिसारे,
हमरिहिं बार मौन कस धारे।
नाथ! अगति के गति अनाथ हम,
कहहु कौन गति मोरि विचारे।
गणिका गीध अजामिल आदिक,
सुनत अमित पतितन तुम प्यारे।
इन सम अगनित पतित रोम प्रति,
वारत पतित विरद रखवारे।
दंभ कोटि शत कालनेमि सम,
कोटिन रावन सम मद धारे।
लाजहुँ जासु लजाति अधम अस,
हैं न हुये न तु ह्वैहैं भारे।
कौने मुख 'कृपालु' प्रभु सन कछु,
कहिय नाथ अब हाथ तिहारे॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

51

द्वार पतित इक आयो री किशोरी राधे!
मांगत भीख प्रेम की यद्यपि,
पात्र संग नहिं लायो री किशोरी राधे!
विष्ठा-विषय हेतु नित अब लौं,
शूकर ज्यों भटकायो री किशोरी राधे!
संतन कह्यो नेकु नहिं मान्यो,
कियो सदा मनभायो री किशोरी राधे!
जानि जानि अपराध करत नित,
नेकहुँ नाहिं लजायो री किशोरी राधे!
नर तनु हरि हरिजन अनुकंपा,
सब ही पाय गँमायो री किशोरी राधे!
तुम बिनु हेतु कृपालु 'कृपालुहिं',
पुनि काहे बिसरायो री किशोरी राधे!

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

52

नाथ! अब बूड़त लेहु बचाय।
अति अगाध भवसिंधु दयानिधि, ओर छोर नहिं पाय।

विविध वासना तुंग–तरंगनि, बन्यों खिलौना हाय।
पुत्र कलत्र मित्र आदिक जे, कच्छ मच्छ बनि खाय।
लै जलयान टेर गुरु–केवट, सोउ मोहिं मकर लखाय।
लागु गोहारि बचाउ 'कृपालुहिं' तुम कृपालु यदुराय॥

53

नाथ! अब भटकत थकि गये पाम।
पुनि पुनि जनमि जनमि दुख पायो, नहिं पायो विश्राम।
जूते लात खात पति वनितनि, नहिं अबहूँ उपराम।
पढ़त सुनत जानत मानत पै, मन ठानत हठ बाम।
यद्यपि तव लीला गुन गावत, लेत तुम्हारोइ नाम।
तदपि 'कृपालु' कृपालु कृपा बिनु, छुटै न इंद्रिन काम॥

54

नाथ! अब लाज तिहारी जात।
झूठमूठ लै नाम तिहारो, कियो दंभ दिन रात।
भोरो जगत जान मोहिं तुम्हरो, भगत जगत विख्यात।
अब जो नहिं अपनाउ नाथ मोहिं, नामहुँ लाज नसात।
आपुहिं आपुन जांघ उघारे, आपु लाज की बात।
न्याय 'कृपालु' न याचत नाथहिं, चहत कृपा बलभ्रात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

55

नाथ! जनि अब मो कहँ बहकाय।
जिमि जननी निज शिशुहिं खिलौनहिं, दै गृह काजहिं जाय।
सुत बनितादि खिलौनहिं दै तिमि, अब लौं मोहिं बहलाय।
उत जग–जननि काज करि निज सुत, लेति गोद बैठाय।
पै तुम कहँ कछु काज न तबहूँ, कबहुँ न सुत उर लाय।
अब 'कृपालु' तजि खेल खिलौनहिं, लोटत रुदन मचाय॥

56

नाथ! मोहिं कीजै दासन दास।
तिनको दरस परस नित पावूँ, छिन छिन को सहवास।
तन मन धन सों सदा एक रस, सेऊँ सहित हुलास।
सुनत करत सतसंग अनवरत, जग सों रहूँ उदास।
निर्भय रहूँ कृपा ते तिन की, लहूँ प्रेम सुख रास।
माँगत भीख 'कृपालु' कृपा करि, पुरवहु मम अभिलास॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

57

नाथ! यह कौन तिहारो न्याय।
जगत जननि देखत सुत कैसेहुँ, विष रस पी न सकाय।

शिशु नवजात न जान हिताहित, यह जानति सब माय।
तुम छिन छिन जानत गति मन की, वेद पुरान बताय।
पुनि तुम्हरे देखत तव सुत कत, पियत विषय-विष हाय।
कह 'कृपालु' 'बिनु हेतु सनेही', यह उपाधि अब जाय॥

58

नाथ! यह माया कौन बलाय।
श्रुति कह माया शक्ति तिहारी, जड़ सुभाय पुनि वाय।
तबहुँ नचावति सुर नर मुनि कहँ, यह अचरज दरसाय।
पाय प्रेरणा-शक्ति तिहारी, माया, शक्ति दिखाय।
तुम्हरी शक्ति समक्ष नाथ मम, शक्ति कहा करि पाय।
अब निज शक्तिहिं बरजि 'कृपालुहिं', लो कृपालु अपनाय॥

59

नाथ! हौं गयो सबै विधि हार।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
धरि धरि स्वाँग लक्ष चौरासी, नाच्यों अगनित बार।
मात पिता बनितादिक झूठेहिं, जोरे नात हजार।
'यह मेरो', 'यह तेरो', करि करि, सिगरो लियो बिगार।
त्रिगुन पाश लै आपुहिं अपनेहिं, कर गर फाँसी डार।
पै 'कृपालु' चह मुक्ति न, बंधन, तव पदकमल मझार॥

60

नाथ! हौं तुमहिं सोचि पछितात।
पितु सर्वज्ञ सर्वव्यापक अरु, सर्वसमर्थ कहात।
ता सुत द्वार लक्ष चौरासी, माँगत भीख लखात।
जानत जगहुँ कौन सुत, पितु कहँ, जासु बनी यह गात।
पुनि ज्ञानिहुँ–अज्ञेय पिता कहँ, किमि हौं जानि सकात।
याते करु 'कृपालु' अनुकंपा, पितहिं लाज अब जात॥

61

नाम बड़ दर्शन छोटे श्याम।
लख चौरासी योनि भ्रमत हौं, आयो सुनि बड़ नाम।
कोउ कह श्याम पतितपावन कोउ, दीनबंधु सुखधाम।
कोउ कह सो बिनु हेतु सनेही, रहत ठड़ो सब ठाम।
पै इत नामहिं नाम लख्यों बस, लख्यों नाहिं कछु काम।
हौं 'कृपालु' नहिं चहौं और कछु, चहौं प्रेम निष्काम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

62

न्याय अब तुम ही करो ब्रजराज!
हम पतितन सरताज, तुमहिँ कह, पतितन को सरताज।

दोउ राजा निज प्रजा पूज्य अति, साजे निज निज साज।
पतितन प्यार करत दोउन को, कबहुँ न आई लाज।
पतितन ही सों हमरो तुम्हरो, नाम बड़ों जग आज।
पुनि 'कृपालु' तुम कत बिनु पातक, हम पातकन जहाज॥

63

पतित इक देत चुनौती आय।
लखि हमरे अगनित पापन कहँ, जमहूँ अति डरपाय।
हौं नहिं तनु ही की कुबरी प्रभु, मनहुँ कुटिल बहुताय।
तव सनमुखहूँ दीन बनत नहिं, रह अहमिति अधिकाय।
पतित उधारन विरद जात अब, अथवा मोहिं अपनाय।
मन मोहहु 'कृपालु' मुरलिहिं–धुनि, या पुनि चक्र चलाय॥

64

पिया! मोहिं कब ह्वै हौ दुखदाई ?।
जेहि लगि कोटि–कलप तप करिके, कमलाहू नहिं पाई।
बोय बीज उर मधुर वेदना, सिंचिहौं दृग झरि लाई।
दीरघ श्वास–पवन विरहानल, रविकर लहि अँखुवाई।
येहि विधि बढ़ि तरुवर–फल यह मिल, पलक कलप सम जाई।
तब 'कृपालु' विरहिणि जड़ जंगम, प्रियतम रूप लखाई॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

65

पिया! मोहिं प्रेम–दान जनि दीजै।
मधुर–मिलन लगि विकल प्राण रह, विरह–अगिनि तनु छीजै।
प्राण जाँय जब पंचतत्व तनु, निज परिकर करि लीजै।
प्रिया–मिलन दृगजल सों 'जल' मिलि, "भूमि" चरण–रज कीजै।
कमल–नयन बिच 'तेज', 'पवन' मिलि, सांसन जेहि पिय जीजै।
मिलि अकास जहँ महारास–रस, लली–लाल नित भीजै।
रह्यो प्राण सो प्राणनाथ को, क्यों 'कृपालु' कर मीजै॥

66

पीर हरि! तुम बिनु कौन हरे ?।
दैहिक दैविक भौतिक तापन, अब लौं बहुत जरे।
लख चौरासी योनि चराचर, बहु विधि स्वाँग धरे।
मृग मृगजल ज्यों धाय रैन दिन, इंद्रिन घट न भरे।
छिन छिन बाढ़ति जाति वासना, ज्यों घृत अगिनि परे।
नर तनु पाय 'कृपालु' चेत न तु, परि भवकूप मरे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

67

प्रभु जी! भले बुरे हम तेरे।
उदर भरे पर महा आलसी, सोवत साँझ सवेरे।

काम क्रोध अरु ममता तृष्णा, रहत सदा नित घेरे।
माया-वश सब जनम गमायो, भटक फिरे बहुतेरे।
तुम बिनु कौन सहायक मेरो, बैरी बहुत घनेरे।
दास 'कृपालु' आस तजि सब की, भये श्याम के चेरे॥

68

बताओ राधे! जाऊँ काके द्वार ?।
साधनहीन दीन अपनावत, ऐसो कौन उदार।
नर किन्नर सुर आदि आपुहीं, तपत त्रिताप मझार।
विधि हरि हर दुर्गादिक जेतिक, सबकी तुम आधार।
कहउँ रसिक रस रीति क्षमिय इक, सुने हैं नंदकुमार।
तिनके कपट जाल सों डरपत, ठगी सबै ब्रजनार।
तुम्हरोइ जानि उनहिं सब मानत, गुन अवगुनहिं बिसार।
काँख जु छोरा लखि 'कृपालु' किमि, गाम ढिंढोरा मार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

69

बनत तुम जानि जानि अनजान।
हम तो कान्ह अनादि काल ते, माया माहिँ भुलान।
बाँध्यो आपु आपु कहँ कर्मन, मकड़ी-जाल समान।

हम पूछत सुर नर मुनि महँ कोउ, है? अस देहु प्रमान।
तव माया को जीति सकै जो, साधन कियेहु महान।
ताते लो अपनाय 'कृपालुहिं', करिके प्रेम प्रदान॥

70

बनहुँ कब प्रेम सरोवर मीन।
धरि तनु मीन सलिल कहँ नित प्रति, करिहौं मल ते हीन।
करिहौं होड़ दृगन ते दोउन, यद्यपि इन उन दीन।
जब विहरैं प्रियतम प्यारी दोउ, कोटि काम छवि छीन।
तब हौं उछल उछल जल ऊपर, विहरौं रसरँग भीन।
इमि 'कृपालु' बलिहार जाउँ लखि, लीला नित्य नवीन॥

71

बात इक सुनो कान्ह! दै कान।
हम अभिमानी सदा सदा के, माया माहिं भुलान।
तुम्हरी अनुकंपा बिनु तुम कहँ, कौन सक्यो है जान।
बिनु जाने, माने किमि, यामें, अचरज कौन महान?।
पुनि बिनु माने मनमाने बनि, करत विषय को ध्यान।
हम 'कृपालु' मतिमंद आपुनो, दोष सकत नहिं मान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

72

बार इक हेरहु हमरिहिँ ओर।
इक कुपूत रिरियात द्वार पर, करहु कृपा की कोर।
सुन्यो पढ्यो सब वेद पुरानन, मन न मान बरजोर।
समुझावत दिन रात तबहुँ यह, पियत विषय–विष घोर।
तुम चितचोर कहावत पुनि कत, लेत न मम चित चोर।
नेकु दिखाउ 'कृपालुहिं' झाँकी, घटि न जाय कछु तोर॥

73

बार कत करति हमारिहिं बार!
राधे नाम सुनत ही धावति, सरल सुभायनहार।
यों रसिकन मुख कहत सुन्यों पुनि, क्यों निष्ठुरता धार।
हौं तो कुटिल अनादि काल को, अमित अघन अवतार।
पै तुम तो बिनु हेतु सनेहिनि, याको मोहिं विचार।
ताहू ते 'कृपालु' बड़ चिंता, रसिक कहाउ लबार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

74

बेर भइ टेरत नंदकुमार।
द्वार परो रिरियात पतित इक, तुम पतितन रखवार।

संतन कहत पतितपावन तोहिं, पुनि कत करत अबार।
सोये जाय क्षीरसागर या, कान तेल लिय डार।
अथवा भयो समाप्त तिहारो, करुणा को भण्डार।
या किय मान 'कृपालु' मानिनिहिं, रिझवत कुंज मझार॥

75

भयो को मो सम पतित बड़ो ?।
लखि अनंत पापन की गठरी, जम को कान खड़ो।
अजामील आदिक तो झूठेहिं, पतितन नाम पड़ो।
वे तो कछुक काल के ही रह, पापन कछुक जड़ो।
पै हौं अमित जनम को पापी, अबहूँ हठहिं अड़ो।
चक्रादिकन 'कृपालु' न फूटिय, मम उर पाप घड़ो॥

76

मनमोहन सों मन लाग रे।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
त्रिगुण त्रिकर्म त्रिताप आप ही, मन मंदिर ते भाग रे।
भार डारि अपवर्ग स्वर्ग सुख, उमग्यो अति अनुराग रे।
उनकोइ नाम रूप गुन गावत, ध्यावत मन रस पाग रे।
छकी प्रेम रस नाचति गावति, काहुहिं द्वेष न राग रे।
पै 'कृपालु' इक बात बुरी भइ, लाग पतिव्रत दाग रे॥

77

मोहिं तो भरोसो है तिहारो री किशोरी राधे।
हौं जस अधम तुमहिँ इक जानति,
और न जाननिहारो री किशोरी राधे।
भुक्ति मुक्ति नहिं माँगत केवल,
अपनो जानि निहारो री किशोरी राधे।
भयो तिहारो जानि राधिके!
ह्वै जैहौं मतवारो री किशोरी राधे।
पुनि कहँ रह अवकाश विषय को,
चारि पदारथ खारो री किशोरी राधे।
तुम 'कृपालु' सरकार हमारी,
प्यार करो या मारो री किशोरी राधे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

78

मोहिं स्वामिनि! अब अपनाइये।
श्री बरसाने धाम आपुने, मोहूँ काहिं बसाइये।
पलक पाँवड़े पंथ बिछाऊँ, जब जाइय या आइये।
देउँ बुहारी रास मँडल महँ, रास करन जहँ जाइये।

आवन देउँ न मदन मोहनहुँ, जब मानिनि पद पाइये।
अपनिहिं दासिहिं मानि 'कृपालुहिं' बारेक मोहिं बुलाइये॥

79

राधे मोहिं, चरण कमल रज कीजै।
तुव मानिनि हित पिय दृग–जल सों, जा पदरज नित भीजै।
जा पावन पदरज पावन को, कमलाहू कर मीजै।
जेहि लगि विधि वरदान माँगि कह, नाथ! सोइ रज दीजै।
बिनु कारण करुणाकारिणि तुम, मम पुकार सुनि लीजै।
अंध 'कृपालु' पाय दृग जब ही, तब ही सही पतीजै॥

80

लली करु महल टहलिनी मोय।
COPYRIGHT
कोउ माँगत मायाभव वैभव, ऋद्धि सिद्धि कोउ तोय।
RADHA GOVIND SAMITI
कोउ माँगत मायापर मुक्तिन, सुख बैकुण्ठहुँ कोय।
कोउ माँगत 'हौं कछु नहिं माँगौं, देहु अवस्था सोय'।
कोउ माँगत बैकुंठनाथ कहँ, छिन–छिन दरशन होय।
हौ 'कृपालु' माँगत सोइ दीजै, महल टहल हो जोय॥

81

लाल! तुम वृथहिं बजावत गाल।
दुंदुभि घोष कहत वेदन 'हौं, कारण रहित कृपाल'।
पुनि निज वेदन तुमहिं बतावत, सर्वसमर्थ गुपाल।
हौं संकेतहिं कह, पुनि श्रुति कह, सर्वज्ञहुँ तोहिं लाल।
पुनि श्रुति सर्व नियंता कह पै, नियमत नहिं मन–चाल।
होत हँसाइ 'कृपालु' नाथ! या, देहु प्रेम तत्काल॥

82

लो स्वामिनी मोहिं अपनाय रे।
दर दर ठोकर खाउँ तिहारोइ, दासी दास कहाय रे।
नित गुन गान करूँ तुम्हरोई, तदपि न अहमिति जाय रे।
साँची झूठ न आपुन निंदा, सुनतहिं मन हरषाय रे।
सब जानत पै मानत नाहीं, यह अचरज दरसाय रे।
तुम 'कृपालु' मोहिं जानति नीकी, पुनि क्यों बेर लगाय रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

83

श्याम तुम कैसे दीन दयाल।
सब कह तुम बिनु हेतु सनेही, विश्वंभर प्रतिपाल।

बेर भई टेरत मोहिं पुनि क्यों, कृपण भये नंदलाल।
टुक चंदन के तिलक लगाये, कुबरिहिं किये निहाल।
केतिक नाम गिनाऊँ जिन कहँ, प्रेम दिये गोपाल।
कारण कौन 'कृपालुहिं' त्याग्यो, कारण रहित कृपाल॥

84

श्याम तुम कैसे हो घनश्याम ?।
इक घनश्यामहिं लखत कृषक जन, बनत न तिन कछु काम।
तरसत कृषक न बरसत सो घन, जल भरि उर अभिराम।
इक घनश्याम बरसि कृषकन मन, हरषावत तेहि ठाम।
सब जानत घनश्याम तिहारो, रसिक शिरोमणि नाम।
दो 'कृपालु' बरसाय प्रेम रस, पियत रहौं वसु याम॥

85

श्याम मोहिं देहु प्रेम निष्काम।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
इंद्रहुँ संपति लहि इन इंद्रिन, मिटत न कैसेहुँ काम।
मन अति चपल चपलताहूँ ते, चलत रहत बसुयाम।
हौं हार्यो समुझाय विविध विधि, नहिं मानत गति बाम।
रसिकन कही मानि अब तुम्हरी, शरण गही घनश्याम।
ब्रज रस देहु पिलाय 'कृपालुहिं', भटकत थकि गये पाम॥

86

श्याम है झूठो तुम्हरो नाम।
नाम पतित–पावन लै बैठ्यो, करत न पतितन काम।
तुम कहँ कौन लाज तुम कहिहौ, श्रुति कह मोहिं अकाम।
पै तुम्हरे जन को अपयश तुम, कैसे सुनिहौ श्याम।
हम नहिं माँगत भुक्ति मुक्ति कछु, देहु कमल पद ठाम।
कहा 'कृपालु' जाय घटि तुम्हरो, करहु कृपा सुखधाम॥

87

श्याम हौं कब ब्रज बसिहौं जाय।
श्यामा श्याम नाम गुन गावत, कब नैनन झरि लाय।
कब विचरौं गहवर वन वीथिन, राधे राधे गाय।
कब झूमत वृंदावन–कुंजनि, फिरौं हिये हुलसाय।
कब लपटाय लतन गोवर्धन, कहौं हाय पिय हाय।
कब लोटत 'कृपालु' ब्रज रज बिच, हौं जैहौं बौराय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

88

श्याम हौं कब ह्वैहौं ब्रजधूरि।
ह्वै ब्रजधूरि अंग लपटैहौं, उर आनँद भरपूरि।

जेहि ब्रजरज कहँ रसिकन मानत, प्रान सजीवन मूरि।
जेहि पावन रज पावन कहँ विधि, भाग मनावत भूरि।
जेहि लगि बने लतन तरु ज्ञानिन, त्यागि समाधिन दूरि।
धूरि धूसरित तोहिं 'कृपालु' कब, अतनु लखैगो घूरि॥

89

सुनु वंशीवारे साँवरे।
लख चौरासी योनि चराचर, चलत पिराने पाँव रे।
यदपि मिली नर तनु सुर दुर्लभ, लागी भल यह दाँव रे।
तदपि न तुम सन हेत करत मन, लेत न तुम्हरो नाँव रे।
मृग मृगजल ज्यों प्यास बुझत नहिं, धोखा है सब ठाँव रे।
अब कृपालु अपनाव 'कृपालुहिं', देहु वास नँदगाँव रे॥

90

COPYRIGHT
सुनो हरि अधम उधारन हार।
RADHA GOVIND SAMITI
तुम्हरे सब चाकर हैं नागर, गुन आगर सरकार।
पै इक निगुनी बिनु नहिं शोभा, होति गुनिन दरबार।
ज्यों न होत मायिक दुख तो तोहिं, को पूछत संसार।
त्यों न होय जो मो सम निगुनी, हो न गुनिन सत्कार।
जानत जग 'कृपालु' है तुम्हरो, अपनो जानि निहार॥

91

सुनो हरि दीनन के रखवार।
चर अरु अचर लक्ष चौरासी, जहँ लगि तव संसार।
कौने द्वार भीख नहिं माँग्यों, जनमि जनमि बहु बार।
कासों नहिं रोयो अपनो दुख, प्रति ब्रह्माण्ड मझार।
तबहूँ प्रभु! मोहिं दीन न मानत, कौन न्याउ उर धार।
खोजत द्वार तिहारो निशि–दिन, ज्ञानीहूँ गये हार।
पुनि हम मायाबद्ध जीव किमि, खोजि सकें तव द्वार।
साधन बिनुहिं 'कृपालु' द्रवत तुम, याको करिय विचार॥

92

हमरी ओर टुक हेरो री किशोरी राधे।
यद्यपि भलीभांति हौं जानत,
तुम बिनु हितू न मेरो री किशोरी राधे।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
तदपि रसिक जन कही न मानत,
रहत विषय को चेरो री किशोरी राधे।
परनिंदा परदोष कथन में,
चतुर विचित्र चितेरो री किशोरी राधे।

करत नाम अपराध निरंतर,
हिय हंकार घनेरो री किशोरी राधे।
बात बनावत ब्रज रसिकन की,
मन कामादि बसेरो री किशोरी राधे।
नाम 'कृपालु' काम तुम जानति,
भलो बुरो जस तेरो री किशोरी राधे॥

93

हमारी निधि, श्री वृषभानु दुलार।
जाकी भृकुटि विलास विलोकत, नागर नंदकुमार।
ब्रज वीथिन बिच भयो बावरो, राधे राधे पुकार।
विकल नैन दिन–रैन दरस बिन, छिन छिन पंथ निहार।
भाग मनावत आपुन कबहुँक, लखौं चरन इक बार।
निज आराध्य ब्रह्म–दुर्गति लखि, लाजत ज्ञानि गमार।
मम 'कृपालु' आंधे की लाकरि, राधे नाम अधार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

94

हमारी राधे, अति भोरी सरकार।
हठि हठि दीन जनन अपनावति, देति प्रेम उपहार।
विधि निषेद को भेद मिटावति, प्रणत भये इक बार।

निज परिकर बिच करि किंकरि नित, राखत रास मझार।
निगमागम मुख तकत रहत जो, कहत अगम्य अपार।
लली 'कृपालु' अपेलि करति इमि, सरल सुभायन हार॥

95

हमारी राधे, दीनन की रखवार।
दीन पुकार सुनत ही धावति, तनिक न लावति बार।
जोगी जपी तपी साधन-बल, खोजत निपट गमार।
पंच प्रपंच न छूटत रंचक, बहे सिद्धि मझधार।
जेहि रस लगि हरि हर तरसत सो, बरसत येहि दरबार।
पियत 'कृपालु' सोइ रस जापर, कृपा करति सुकुमार॥

96

हमारी सुधि लीजो भानुदुलार।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
हमरे कछु साधन-बल नाहीं, अति जड़ कुटिल लबार।
भ्रमत उदर हित नाम ओट नित, ज्यों कूकर सब द्वार।
समुझत जगत रसिक मोहिं साँचो, तुम उर जाननिहार।
सुन्यों कान पतितन अपनावति, शरण गये सुकुमार।
पुनि कृपालु क्यों भईं निठुर अब, एक 'कृपालुहिं' बार॥

97

हमारी, सुन लो नंदकिशोर।

हम जो करत, हरत सो छन में, चोर बड़े बरजोर।
करत कामना दिव्य प्रेम की, लेत काम चितचोर।
ममता तव पद–कंज सोचतहिं, खींचत सुत तिय मोर।
हौं हौं तुम्हरो दास सोच जब, दंभ देत विष घोर।
हौं हार्‌यो 'कृपालु' अब सब विधि, करहु कृपा की कोर॥

98

हमारी, सुन लो नंदकुमार।

स्वेदज अरु अण्डज अरु उद्‌भिज, जनम जरायुज धार।
तुम सम नाथ पाय हौं भटकत, ज्यों अनाथ सरकार।
शरणागत को भजन करत तुम, अस कह रसिक पुकार।
तदपि न कर परतीति मूढ़ मन, विषयन करत विहार।
हौं 'कृपालु' अब हारि गयों प्रभु, टुक मम ओर निहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

99

हमारी स्वामिनि राधे रानी।

श्री वृषभानु किशोरी भोरी, सरल प्रेम सुख खानी।

श्री बरसानो नित्यधाम अरु, वृंदावन रजधानी।
सखिन जूथ सँग नित प्रति नव रस, बरसावति मनमानी।
ताल तमाल रसाल बोल नित, राधे राधे वानी।
सिंहासन–आरूढ़ चलति जब, करत ब्रह्म अगवानी।
लखि 'कृपालु' बलि जात कहत जय, जयति जयति महरानी॥

100

हमारो ऐसो नंदकुमार।
जैसो नहिं कहुँ भयो न ह्वैहैं, हौं कह भुजहिं पसार।
फेंट कसे घूमत पतितन हित, पतित उधारनहार।
विष लगाय कुच प्याय पूतना, लै गई गगन मझार।
उर दुर्भाव जानिहूँ ताको, मानि मातु दिय तार।
ब्रह्मलीन शुक सुनि 'कृपालु' यह, दीन समाधि बिसार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

101

हमारो धन, राधे जू को नाम।
राधे नाम प्रताप श्याम भये, रसिकन में सरनाम।
राधे नाम सिद्ध कर मुरली, तानन मोह्यो बाम।
राधे नाम कृपा ते द्वापर, रास रच्यो ब्रजधाम।

राधे नाम सुनत ही भाजत, हरि अधीर तेहि ठाम।
राधे नाम रकार बिना रह, श्यामहुँ आधे श्याम।
करु 'कृपालु' राधे राधे की, रटना आठों याम॥

102

हमें तो, एक तिहारी आस।
काहू के काहू को बल हरि, हमहिं तुमहिं विश्वास।
कोउ कर योग, यज्ञ दानादिक, कोउ कर जप उपवास।
कोउ कर चारिधाम तीरथ अरु, कोउ कर काशीवास।
कोउ कर आस स्वर्ग अपवर्गहिं, कोउ बैकुण्ठ विलास।
हम 'कृपालु' गोपाल! तिहारिहिं, करत आस बनि दास॥

103

हमें तो श्याम नाम सों काम।
COPYRIGHT
नामिहिं–नाम काम इक जब तब, कहा काम मोहिं श्याम।
RADHA GOVIND SAMITI
निर्मल मन भावत उत श्यामहिं, पतितन–मन इत नाम।
ब्रह्मादिक जिन ब्रज बनितनि सों, याचत नित रज–पाम।
उन रसिकन रवनिहुँ तजि दीनी, बसे द्वारिका–धाम।
पै 'कृपालु' यह श्यामहुँ शक्ति न, कर कोउ विरही नाम॥

104

हरि कहँ लौं मन समझाउँ रे।
मन–मतंग मानत नहिं नेकहुँ, केहि विधि याय मनाउँ रे।
भरि भरि इन इंद्रिन–विषयन घट, नेकहुँ नाहिं अघाउँ रे।
धरि धरि स्वाँग लक्ष चौरासी, दर दर ठोकर खाउँ रे।
बात बघारि महा रसिकन की, तिनकोउ नाउँ लजाउँ रे।
अब तो सुनहु 'कृपालु' बेर भइ, कहँ लौं हौं रिरियाउँ रे॥

105

हौं कहँ लौं हरि रिरियाउँ रे।
खरी खरी कछु बात अटपटी, जो सुनु आजु सुनाउँ रे।
दीनानाथ बने उत सोवत, इत हौं रोवत जाउँ रे।
तुम बेपीर अहीर नंद के, केहि विधि तोहिं मनाउँ रे।
मारी भृगु ने लात जबै तुम, सूधे ह्वै गये साउँ रे।
अब पछितात 'कृपालु' प्रीति करि, हारि गई जब दाउँ रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

धाम-माधुरी

1

चलो मन! श्री वृंदावन धाम।
जहँ विहरत नागरि अरु नागर, कुंजनि आठों याम।
भूख लगे तो रसिकन जूठनि, खाइ लहिय विश्राम।
प्यास लगे तो तरणि-तनूजा, तट पिवु सलिल ललाम।
नींद लगे तो जाइ सोइ रहु, लतन-कुंज अभिराम।
ब्रज की रेनु रेनु लखि चिन्मय, तन्मय रहु अविराम।
पै 'कृपालु' मन! जनि यह भूलिय, भाव रहे निष्काम॥

2

रसिक जन-धन गोवर्धन धाम।
त्रिगुणातीत दिव्य अति चिन्मय, ब्रज परिकर विश्राम।
मरकत-मणि-मंडित खंडित मद, गिरि सुमेरु अभिराम।
राधाकुंड कुसुम सर आदिक, लीलाधाम ललाम।
मर्दन-मधवा-मद मनमोहन, पूजित पूरनकाम।
सखन सनातन संग श्याम जहँ, विहरत आठों याम।
कब 'कृपालु' हौंहूँ बड़भागी, ह्वैहौं बसि अस ठाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

लखो रे मन, वृंदा विपिन–बहार।
जहँ विहरति वृषभानुनंदिनी, छविनिधि नंदकुमार।
जहँ चिन्मय सब जीव चराचर, जहँ राधे सरकार।
जहँ बसंत ऋतु वास करत नित, भ्रमर करत गुंजार।
जहँ विकसित नित कुंद केवड़ा, कर्णिकार कचनार।
जहँ केकी कोकिला कीर नित, राधे नाम उचार।
जहँ 'कृपालु' जलजा–प्रवेश नहिं, निगम न पावत पार॥

4

हमारो धन, श्री बरसानो धाम।
जहँ विहरति मनमोहन–मोहिनि, मोहिनि–मोहन श्याम।
लखि वैकुण्ठ कोटि शत लाजत, अद्‌भुत अनुपम ग्राम।
मंजुल–कुंज–लता–पुंजन वन, गहवर अति अभिराम।
पीरी पोखर, प्रेम सरोवर, कमल–सुशोभि ललाम।
विकसित कुसुम पारिजातादिक, बस बसंत जेहि ठाम।
खोरि साँकरी बिच सखि नचवति, ब्रह्म श्याम बिनु दाम।
'हा–हा, खात सखिन सों हरि ललि,–मिलन हेतु वसुयाम।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

आरत ब्रह्म पुकारत गलियन, लै नित राधे नाम।
ब्रह्म 'कृपालु' निरंजन बनि गयो, दृग अंजन ब्रजभाम॥

5

हमारो माई, श्री बरसानो गाम।
महरानी राधा ठकुरानी, सरस सुखद अभिराम।
गहवर–वन वृषभानुकुंड वर, प्रेमसरोवर ठाम।
विधि हरि हर दुर्लभ रजधानी, श्री वृंदावन धाम।
विहरत निज स्वामिनि सँग कुंजनि, पुंजनि आठों याम।
डगर बुहारत पंथ निहारत, रहत ब्रह्म घनश्याम।
छके 'कृपालु' प्रेम रस डोलत, लै लै राधे नाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रेम-माधुरी

1

धन्य प्रेम गोपीजन त्रिभुवन,
पूरण ब्रह्म जासु भरमावत।
जो असंख्य ब्रह्माण्ड सृजत सो,
ब्रज अहीर नँदपूत कहावत।
जिनकी नेकु योगमाया ते,
जगत नियंत्रित इति श्रुति गावत।
उनको महरि पकरि कर-अँगुरिन,
निज आँगन चलिबो सिखरावत।
जिनकी कृपा कोर विधि हरि हर,
कोटि कल्प तप करि नहिं पावत।
उनको झटकि पटकि गोदी ते,
भौंह तानि नँदरानि रुवावत।
जिनकी नाम गुणावलि लीला,
भवबंधन छन माहिं छुटावत।
उनको मातु बाँधि ऊखल ते,
लै साँटी कर अति डरपावत।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जिनकी अति विचित्र माया ते,
नारदादि को ज्ञान भुलावत।
उनको देखिय ब्रज मुरली हित,
गोपिन आगे दृग झरि लावत।
जिनकी भृकुटि तकति बनि दासी,
सो माया जो जगहिं नचावत।
उनको अब 'कृपालु' राधे जू,
क्रीत दास करि पद पलुटावत॥

2

प्रीति की अति अटपट गति हाय।
'गोपनीय अति' कहत रसिक जन, सोचत उचित लखाय।
पै जब प्रेम सिंधु बढ़ि उमड़त, मन बुधि देत डुबाय।
उठति तरंग अंग अंगनि नव, कौन थाह तेहि पाय।
जहँ मन गमन न बुधि बल संबल, तहँ को केहि समुझाय।
यह 'कृपालु' गोपन तब ही लौं, जब लौं करि सक जाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

प्रीति की, अति अड़बंगी रीत।
जोरत जुरे, न तोरत टूटे, रसिकन की अस नीत।

ज्यों ज्यों चढ़त प्रेम रँग त्यों त्यों, जग सों होत अतीत।
कबहुँ भूत पिशाचग्रही ज्यों, कबहुँ वेद विपरीत।
कबहुँ शिष्ट बनि जात जगत सम, कबहूँ भ्रष्ट पलीत।
विचरत अति विचित्र गति भूतल, करत 'कृपालु' पुनीत॥

4

प्रीति की रीति न जाने कोय।
सब कह प्रीति मीन–जल साँची, मो मत 'प्रीति बिगोय'।
ज्यौं निज तनु–हित नर–समीर रति, त्यों निज स्वारथ सोय।
मधुकर–कमल प्रीति कहँ ? लोलुप,–गति अनन्य रति खोय।
सोऊ तृषा–शमन हित स्वाती, घन–चातक रति जोय।
मरत प्रेम–पट कारिख पोत्यो, मृग–पतंग रति दोय।
स्वारथ परमारथ–अतीत कोउ, प्रेम विलक्षण होय।
सुनु 'कृपालु' बिनु कृपा रसिक जन, प्रीति मिले नहिं तोय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

प्रीति सखि नागिनि सी बल खाय।
दीखत प्रथम अमिय रस–बोरी, पाछे विष बगराय।
प्रथमहिं दीख परत जोइ हाँसी, सोइ फाँसी बनि जाय।

मधुर–मिलन–रस–सुधा माधुरी, पियत सबै बौराय।
पुनि पिय पलक ओट होवत ही, पल पल कलप लखाय।
मरति न जियति 'कृपालु' वियोगिनि, तलफति रहति सदाय॥

6

प्रेम बिनु ज्ञानी निपट गंमार।
जो नहिं प्रेम–सुधा–रस चाख्यो, सो कस जाननिहार।
'अँधेरेहिं मिली आँखि' को माने? जो न लख्यो संसार।
तिमि ज्ञानिन दृग मिल्यो लख्यो नहिं, सगुण ब्रह्म साकार।
कहा सुखी माँ तेहि सुत ते जो, नित रह गर्भ मझार।
इमि ज्ञानिन नीरस रति रस जो, लख्यो न नित्य विहार।
हमरे मत 'कृपालु' वे ज्ञानी, ज्यों खर चंदन भार॥

7

बलि जाउँ प्रेम–रस–सार की।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
नागर अरु नागरि गुन–आगरि, मूरति रूप सिँगार की।
ललित लवंग–लता–कुंजन महँ, रति–रस सरस–विहार की।
रास विलास–हास–परिहासन, बरसावत रसधार की।
रूप–लुभाने जनु अलसाने, दीवाने दृग–चार की।
यह 'कृपालु' कछु अकथ कहानी, युगल–माधुरी प्यार की॥

श्री कृष्ण-बाल लीला-माधुरी

1

अस जसुमति के भये लाल रे।
लोग लुगाइन जनु निधि पाइन, नाचति सब दै ताल रे।
कलियन-कुसुम बिछ्यो नलियन हूँ, गलियन उड़त गुलाल रे।
कोउ कछु कहत न सुनत सबै सुधि, भूले ग्वालिनि ग्वाल रे।
मोहन-मंत्र डर्‌यो जनु ब्रज महँ, गइ सुधि तिय सुत बाल रे।
कहँ लौं कहिय 'कृपालु' देख जोइ, यह सुख सोइ बेहाल रे।।

2

नंद-महर-घर बजत बधाई।
जायो पूत आजु नँदरानी,
नाचत गावत लोग लुगाई।
दूध, दही माखन की काँदौ,
सब मिलि भादौं मास मचाई।
बाजत झाँझ मृदंग उपंगहिं,
वीना वेनु शंख शहनाई।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

छिरकत चोवा चंदन थिरकत,
करि जयकार कुसुम बरसाई।
शिव समाधि बिसराइ भजे ब्रज,
देखन के मिस कुँवर कन्हाई।
याचक भये अयाचक सिगरे,
हम 'कृपालु' धनि ब्रजरज पाई॥

3

नंद के आँगन आनँदकंद।
आनंदहुँ के आनँददाता, बने आय नँदनंद।
कबहुँक किलकत चलत लजत लखि, गति मदमत्त गयंद।
कबहुँक नाचत गावत कबहुँक, बिनुहिं छंद स्वच्छंद।
कबहुँक तोतरि बोलनि सों कछु, माँगत यशुमति नंद।
लखि 'कृपालु' बरबस बिसरावत, ज्ञानिहुँ ब्रह्मानंद॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4

नंद के भये आजु आनंद।
ब्रह्म सच्चिदानंद रूप धरि, प्रकट्यो आनँदकंद।
देव–वृंद दुंदुभिहिं बजावत, कहि कहि जय ब्रजचंद।

मंगल–गान करत ब्रह्मादिक, गाइ चारि श्रुतिछंद।
नारद शारद ज्ञान–विशारद, भाग्य सराहत नंद।
होत 'कृपालु' सुकृत यशुमति लखि, वाणिहुँ वाणी बंद॥

5

पालने झूलत बाल गोपाल।
लोरी गावति मातु झुलावति, लखि लखि होति निहाल।
शिशु–भूषन–भूषित तन सोहत, मन मोहत ब्रजबाल।
कर–अरविंद पदारविंद कहँ, मुख–अरविंदहिं डाल।
कबहुँक दुहुँन पाणि–पग पटकत, किलकत अति नँदलाल।
कबहुँक फरकावत निज अधरन, 'गूँ गूँ' शब्द रसाल।
कबहुँक लखत मातु ढिग कबहुँक, इत उत दृगन विशाल।
कबहुँक दृगन मूँदि पुनि रोवत, पोवत अँसुवन–माल।
विविध खिलौने जननि दिखावति, गावति कछु दै ताल।
तदपि हठीलो लाल न मानत, ठानत रोदन–जाल।
जब 'कृपालु' लिय अंक दौरि हम, मौन भये ततकाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

6

द्वार इक योगी 'अलख' पुकार।
चंद्र–भाल गल मुंड–माल भल, शीश गंग–जलधार।

रिपु अनंग प्रति अंग भुजंगन, रंग शुभ्र बलिहार।
नाँव शंभु अरु ठाँव बतावत, गिरि कैलाश मझार।
घर ते निकरि महरि यशुमति तेहि, पूछति करि सतकार।
'सुनहु अमंगल भेष! भये मम, मंगलमय सुकुमार।
या ते जो चाहहु सो माँगहु, मणिन मोतियन-थार'।
जोगी कह 'मैया मैं जोगी, मोहिं न चहिय संसार।
इहै भीख दे माय कृपा करि, लखौं लाल इक बार'।
मैया कह 'मम लाल डरेगो, जोगी! तोहिं निहार'।
'सुनु मैया यह लाल तिहारो, सगुण ब्रह्म साकार'।
'तुम तो जोगी!' 'अलग अलख', कह, पुनि किमि लख करतार'।
'मैया! अलख न कह्यों कह्यों हौं, आ लख नंदकुमार'।
ल्याईं लाल यशोमति भोरी, हरि हर दृग भये चार।
लखि 'कृपालु' येहि मधुर-मिलन कहँ, कोटि प्रान दउँ वार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

7

'जयराम योगी!' 'जयराम माय!'।
योगी शिव अरु मातु यशोमति, रहे दोउ बतराय।
ओ जोगी! निज भेष भयानक, कारन कौन बनाय?।

सुनु मैया! तुम्हरे लाला के, कारण स्वाँग रचाय।
ओ जोगी! द्वै दिन के लालहिं, काहे दोष लगाय।
सुनु मैया! यह लाल सनातन, ब्रह्म निगम अस गाय।
ओ जोगी! क्यों बात बनावत, मो ते जो तेहि जाय।
सुनु मैया! यह लाल अजन्मा, लै अवतार सिधाय।
ओ जोगी! मम केश श्वेत भये, काहे मोहिं पढ़ाय।
सुनु मैया! यह दास आदि जग, तव सुत–सुत–सुत आय।
ओ जोगी! लै भीख जाहु घर, तोहिं उनमाद जनाय।
सुनु मैया! मोहिं भीख इहै चह, दे मोहिं लाल दिखाय।
ओ जोगी! क्यों बैर परे मम, लखि तोहिं लाल डराय।
सुनु मैया! तू भोरी याके, डर ते डर डरपाय।
ओ जोगी! भल शाप देहुँ मोहिं, पै न लाल लखि पाय।
सुनु मैया! तोरी जो इच्छा, कहि लौटे खिसियाय।
शंभु दरस हित बैठि यमुन तट, दृग–अँसुवन झरि लाय।
उत कहि 'कहाँ, कहाँ' जनु लालहुँ, नैनन नीर बहाय।
सखिन कह्यो कछु कै गयो जोगी, आईं यशुमति धाय।
ओ जोगी! हौं पाँय परौं चलु, लाला तोहिं बुलाय।
चलु मैया ! 'कृपालु' कहि जोगी, मिलत हँस्यो बलभाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

8

बड़ो कब ह्वैहैं हमरो लाल।
कब चलिहहिं घुटुवन बल आँगन, करिहैं हमहिं निहाल।
कब कर–अँगुरि पकरि ह्वै ठाढ़ो, चलिहैं लटपट चाल।
कब तुतरिन बतियन कछु मोते, बोलिहहिं वचन रसाल।
कब दृग जल भरि मम अंचल गहि, कछु मँगिहहिं गोपाल।
कब 'कृपालु' मोते कह 'मैया,' इमि कहि चूमति गाल॥

9

कबै कहि मैया! मोहिं बुलाय।
हलधर सों 'भैया, भैया', कहि 'बाबा' कहि नँदराय।
ठुमुकि ठुमुकि कब निज पग अइहैं, मो ढिग अति अकुलाय।
कब झगरहिं आँचर गहि मोहन, माखन हित विरुझाय।
कब पग पटकत लोटत भू पर, करहिं मान बिलखाय।
कब 'कृपालु' नँदराय गोद तजि, धाय माय लिपटाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

10

विराजत ब्रह्म नंद के अंक।
किलकत अति आनंद नंदसुत, सुतनु लपेटे पंक।

धूरि धूसरित अंग रंग लखि, भयहु अनंगहिं शंक।
रोम रोम आनंद नंद तनु, जनु लहि पारस रंक।
निज कुल महँ निज पितु कहँ लखि जनु, निशि मुसकात मयंक।
लखत 'कृपालु' अलखवादिन यह, झांकी भृकुटिन बंक॥

11

धन्य सो मातु यशोमति भाम।
श्री कृष्णहिं 'कनुवा', कहि टेरत 'बलुवा' कहि बलराम।
'पूर्व जनम रह शूकर' कह लखि, धूरि धूसरित श्याम।
'पूर्व जनम रह मच्छ' कहत लखि, जल विहार अभिराम।
मुख माटी लखि लै कर साँटी, बाँधति ऊखल दाम।
बन्यो 'कृपालु' पूत यशुमति को, जगत पिता नँदगाम॥

12

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सखि कालि लखी नँदलाल रे।
गई रही कछु काम महरि घर, तहँ खेलत गोपाल रे।
सिर पर वाके मोर चंद्रिका, लट कारी घुंघराल रे।
पीत झँगुलिया झलमल झलकत, हलकत कुंडल गाल रे।
कटि किंकिनि पग पायल बाजति, चलत घुटुरुवनि चाल रे।

लखतहिं मदन गुपाल सखी मैं, भई हाल बेहाल रे।
जो 'कृपालु' सब जगहिं नचावत, नाचत यशुमति ताल रे॥

13

बलि जाउँ सलोने श्याम की।
मटकनि सिर शिखि पुच्छनि, लटकनि,
लटुरिन छवि अभिराम की।
किलकनि द्वैक दँतुलियनि–दमकनि,
घुटुवनि गवनि ललाम की।
झलकनि पीत झँगुलियनि, हलकनि,
कुंडल भल सुखधाम की।
रुनझुन करनि चरन पैजनियनि,
देखनि छुपि ब्रजवाम की।
धनि धनि अवनि 'कृपालु' जननि धनि,
धनि धनि गोकुल ग्राम की॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

14

अजिर महँ विहर ब्रह्म साकार।
घुटुवनि चलत नवनि मुख मंडित, दीठि दिठौना धार।

कबहुँक चलत मंदगति कबहुँक, द्रुत चल करि किलकार।
कबहुँक लखि दूरहिं ते माटी, दौरि लेत मुख डार।
जो यशुमति मुख–माटि निकारत, लोटत धरणि मझार।
लै 'कृपालु' निज अंक यशोमति, चूमति करति दुलार॥

15

खंभ–मणि विहरत सुंदर श्याम।
लखि प्रतिबिंब खंभ–मणि छिन–छिन, किलकत अति अभिराम।
कबहुँ दिखावत दशन मगन मन, रसनहिं कबहुँ ललाम।
कबहुँ दिखावत निज कर अँगुरिन, 'गूँ गूँ' करि सुखधाम।
कबहुँक खीझि मार कर ते हरि, कबहुँक मारत पाम।
इमि 'कृपालु' रीझत खीझत हरि, रिझवत यशुमति भाम॥

16

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चलन लागे, लाल घुटुरुवनि चाल।
तनक झुकी सिर मोर चंद्रिका, लटुरिन छवि घुँघराल।
नील–कलेवर झलमलात भल, झँगुली पीत रसाल।
कटि किंकिनि पग पैजनियनि धुनि, मोहीं सब ब्रजबाल।
दुध दँतुलिन किलकनि का कहनो, लखत बनत छवि लाल।
पकरि 'कृपालु' महरि कर अँगुरिन, तनक चलत गोपाल॥

17

नवनि मुख मंडित सुंदर श्याम।
कछु कर कछु मुख कछु तनु लेपित, कछु मुख दे बलराम।
घुटुवनि चलत चरन पैजनियनि, रुनझुन धुन अभिराम।
गति सों मोर मुकुट झुकि झूमत, पग चूमत शत काम।
कुंडल हलकनि झँगुलिन झलकनि, किलकनि दशन ललाम।
बलि बलि जात 'कृपालु' ओट ते, देखि यशोमति भाम॥

18

चलत सखि, लटपटात नँदलाल।
हौले हौले धरणि धरत पग, भोले से गोपाल।
चलत चलत छुटि जात पीतपट, हँसति सबै ब्रज बाल।
पुनि पुनि पहिरावति पीतांबर, यशुमति होति निहाल।
जहँ देखत माटी चुपके ते, डारत मुख ततकाल।
तर्जनि ते 'कृपालु' डरपावत, मुख माटी लखि ग्वाल॥

19

चलन लागे, ठुमुकि ठुमुकि नँदलाल।
ठड़े होत पग द्वैक चलत पुनि, गिरि गिरि परत गुपाल।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पुनि घुटुरुवनि गवनि तहँ पहुँचत, जहँ देहरी विशाल।
कर–पद–उदर सबै छल बल करि, लाँघन चह ततकाल।
लाँघि न सकेउ मचायेउ रोदन, दौरीं मातु बेहाल।
बंक भृकुटि जेहि प्रलय सोइ कर, लीला बाल रसाल।
जनि रोवहिं मेरो लाल काल हीं, देहरिहिं देउँ निकाल।
इमि 'कृपालु' कहि हरि दुलरावति, देहरिहिं ताड़ति ताल॥

20

चलन लागे गिरत परत गोपाल।
पकरि महरि यशुमति कर अँगुरिन, ठड़े होत नँदलाल।
नट उनमानि साधि तनु अपनो, किलकत यशुमति बाल।
इक पग चलत गिरत पुनि भू पर, उठत तुरत पुनि लाल।
पुनि पुनि गिरत उठत तब खीझत, चलत घुटुरुवनि चाल।
धनि 'कृपालु' सो नंद यशोमति, जो लखि होत निहाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

मेरे नैनन तारे जाग रे।
भई भोर चहुँ ओर शोर सुन, बोलत शुक पिक काग रे।
शीतल–मंद–सुगंध पवन बह, चकई पाइ सुहाग रे।

आई भानु–किरन लखु मोहन, चंद्र–किरन गई भाग रे।
उदित–भानु लखि विकसित कमलनि, भ्रमरन पियत पराग रे।
दोउ कर परसि 'कृपालु' मातु मुख, चूमति अति अनुराग रे॥

22

उठे हरि नैनन नींद भरे।
अति–रस भरे नैन रतनारे, डोरन अरुन परे।
खंजन मीन चकोर ठगे से, देखत नैन खरे।
खुलत न नैन मैन मदमाते, जनु असि म्यान धरे।
श्यामगात जँभुवात मूँदि दृग, मातु स्वकर पकरे।
डगमगात पग धरत धरणि पर, बिच बिच दृग उघरे।
लखतहिं बनत 'कृपालु' लाल छवि, बरबस स्ववस करे॥

23

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नवनि हित झगरत दोउ सुखधाम।
ग्रीवा पकरि महरि को दोउ कर, बिरुझाने इत श्याम।
खींचत पकरि यशोमति चोटी, पाछे ते बलराम।
इक कर हरि, इक कर हलधर कहँ, पकरति लै लै नाम।
अबहिं दोउ खाउगे साँटी, करन देत नहिं काम।

जब लौं मथति दही तब लौं दोउ, खेलि आउ कहुँ गाम।
कह 'कृपालु' हरि बिनुहिं मथे दे, नवनि, हँसति ब्रजबाम॥

24

हमारो कौन बनेगो लाल ?।
हमरी बात कौन मानेगो ? 'हौं' कह हरि ततकाल।
कजरी गाय दूध को पीहैं ? यह सुनि भज्यो गुपाल।
महरि पकरि कर बहु समुझावति, नहिं समुझत हठ–बाल।
जो यह दूध पियत है वाकी, चोटी होति विशाल।
बेगि बड़ो ह्वै जात, कान्ह सुनि, फँस्यो कीर ज्यों जाल।
घूँटेक पियत लखत पुनि चोटिहिं, हँसत सकल मिलि ग्वाल।
इमि धोखेहिं पय पिये लाल जब, चलीं यशोमति चाल।
जो इक बार 'कृपालु' कहे पिय, चोटी जाति पताल॥

COPYRIGHT

25

RADHA GOVIND SAMITI

नंदघर निरतत नंदकुमार।
तांडव नृत्य करत जनु शंकर, यशुमति अजिर मझार।
धूरि धूसरित तनु इमि सोहति, जनु लेपित तनु छार।
गल विशाल कमलन की माला, मुंडमाल अनुहार।

मोर पंख मिस कालकूट विष, रहे शीश निज धार।
केहरि–नख मिस शशि धरि कंठहिं, थल भल उचित विचार।
जानि 'कृपालु' दिगंबर शंकर, डरपत मदन निहार॥

26

रेनु तनु मण्डित सुन्दर श्याम।
भरि भरि मूठि धूरि सिर मेलत, अवहेलत शत काम।
कबहुँक दुध दँतुलिन–मुख आपुहिं, किलकत अति अभिराम।
कबहुँक कहि तोतरि बोलनि कछु, गुनगुनात गुनधाम।
कबहुँक टेरि बुलावत लै लै, दाऊ जी को नाम।
लखि यशुमति लै अंक खीझि कह, गहि निज–भुज–युग–दाम।
तुम हो पूर्व जनम के शूकर, सुनि विहँसत बलराम।
बलि बलि जात 'कृपालु' लाल लखि, सिगरी ब्रज की बाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

27

लली सँग खेलत हार्यो लाल।
हारत ही भाज्यो पै लाली, पकर्यो कर गोपाल।
लली कह्यो कित भज्यो लला अब, दाउँ देउ ततकाल।
सक्यो छुड़ाय न जब कर तब हरि, ठान्यो रोदन–जाल।

**ललि छाँड़ि कर कही 'जाहु अब, जनि आयो पुनि काल'।
जाय 'कृपालु' कह्यो मैया सों, मोहिं मार्यो इक बाल॥**

28

**अरी मोरे, ललना सों कौन लरी।
या ललना के कमलानन पर, वारत हौं सबरी।
चलु री माय! पतियाय न जो तू, जाय न कहुँ भज री।
देखु मातु! सोइ गोरी गोरी, भोरी, बनि जु खरी।
तू तरुणी काकी जाई क्यों, ललना की भुज पकरी।
सिसक सिसक मेरो कान्हा रोवत, तू मुसकात खरी।
यह तो माय कछु न्याय न कीनो, निज सुत ओर धरी।
मन 'कृपालु' सोचति राधे 'कब, खबर लेउँ तुम्हरी'॥**

29

रूठे कान्ह मनावति माय।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
**झूठेहिं रोदन ठान मान गहि, लोटत पग पटकाय।
पुनि उठि खीझि रेनु–तनु–मंडित, कछुक दूरि चलि जाय।
प्रेम–मगन मन ही मन यशुमति, पकरति कर गहि धाय।
पूछत मातु काह तुम लेइहौं, काहे धूम मचाय।
हरि 'कृपालु' कह तोतरि बोलनि, मोहिं दुलहिनि देउ लाय॥**

30

हमारो भोरो भारो कान्ह।

पूछत मातु यशोमति ते हरि, करि तुतरिन बतियान।
तू मैया! मेरी मैया है, याको कहा प्रमान।
याही पूछन हित मोहिं पठयो, हलधर सहित सखान।
पूछहु कान्ह बबा सों अपने, बाबा सुनि मुसकान।
बाबा कह 'यह मैया तेरी, हौं बाबा सच मान।
जो न मान तेहि पठवहु मो ढिग, समुझैहौं विधि आन'।
हम 'कृपालु' येहि भोरेपन पर, वारत कोटिन प्रान॥

31

गोद–हित झगरत सुंदर श्याम।

अंबर पकरि महरि को दृग झरि, लावत पटकत पाम।
अति अधीर मुख–मातु लखत सो, जाति करन गृह काम।
कर सों कर अंबरहिं छुटावति, करति हाय, ब्रज बाम।
इमि दोउ लरत लखत मुनि नारद, ठड़े ठगे तेहि ठाम।
नारद चकित कहत 'धनि भामिनि, धनि धनि गोकुल ग्राम'।
कत 'कृपालु' इतराति नंद कह, लै ले री सुखधाम॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

32

परी है होड़ नंद अरु माय।
दोउन कहत प्यार मोहन को, मोही ते बहुताय।
निर्णय हेतु नंद अरु यशुमति, दोउ मोहन ढिग आय।
दोउ वात्सल्य प्रेम–रस संयुत, दिय निज भुज फैलाय।
मोहन नित की भांति यशोमति, गोदिहिं बैठ्यो जाय।
गयेउ नंद खिसियाय हार लखि, रहेउ नैन जल छाय।
परम कौतुकी श्याम नंद के, उर महँ प्रकट्यो जाय।
प्रकटत नँदनंदन नँद को निज, गोदिहिं पर्‌यो लखाय।
अंतर्धान भये उत यशुमति, गोदिहिं तजि मुसकाय।
कह 'कृपालु' सुनु मातु यशोमति, याय न कोउ पतियाय॥

33

लली सँग खेलत बाल गुपाल।
खेलन के पूरब नटखट ने, चली अटपटी चाल।
कह्यो लाल 'जो खेलहिं हारे, दाउँ देय ततकाल।
तुम हारो तो ब्याहु करहु मोहिं, जो हौं तो तोहिं बाल।
जानि सकीं नहिं भानुदुलारी, कूट चाल नँदलाल।
कह 'कृपालु' मन ही मन धनिधनि, मायापति को जाल॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

34

परी है होड़ आजु दोउ भाय।

भोरे मुख तुतराय परस्पर, हरि हलधर बतराय।
दोउ कह 'नंद हमारोइ बाबा, यशुमति हमरिहिं माय'।
नंद–यशोमति सुनति ओट ते, सो सुख बरनि न जाय।
जब झगड़ो बढ़ि गयो नंद अरु, यशुमति ढिंग दोउ आय।
छिन बैठत गोदिहिं नँद की दोउ, छिन यशुमति की धाय।
इमि झगरत भइ बेर कह्यो तब, बाबा मृदु मुसकाय।
बाबा माय वाय को जो दृग, मूँदि निरत कर गाय।
उत दोउ करन लगे तिमि इत गये, बाबा माय लुकाय।
लखि 'कृपालु' बाँकी झाँकी यह, निज कहँ दियो लुटाय॥

35

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पियत थन सुरभिन नंदकुमार।

इक थन पियत सुरभि–सुत इक थन, यशुमति–सुत बलिहार।
दोउन महँ जनु होड़ परि गई, को जीतत को हार।
अति द्रुत पियत जात पय पुनि पुनि, एकहिं एक निहार।
प्रेम मगन सुरभिन दृग अरु थन, बह पय अरु पयधार।

पुनि पुनि थन छुटि जात मुखन दोउ, पुनि पुनि निज मुख डार।
लखत 'कृपालु' नंद यशुमति दुरि, उर आनंद अपार॥

36

बड़ी सी दुलहिनि माँगत लाल।
पीतांबरहुँ सँभारि सकत नहिं, छुटत छिनहिं छिन हाल।
बोलत बोल तोतरिन बोलनि, बहत रहत मुख राल।
भरत न पेट महरि घर घर घर, चोरत दधि ब्रजबाल।
काउ चिर्‌हावत काउ बिरावत, काउहिं खैंचत बाल।
कह 'कृपालु' द्वापर ही आयो, जनु कराल कलिकाल॥

37

कान्ह मम, जागो जीवन प्रान।
COPYRIGHT
आयो भानु जगावन तो कहँ, देखु देखु उठु कान्ह।
RADHA GOVIND SAMITI
धनसुख मनसुख श्रीदामादिक, टेरत सुनहु सखान।
जितनोइ मातु जगावति तितनोइ, लेत पीतपट तान।
कह्यो जननि 'जनि उठहु नवनि सब, दाउहिं दउँ जिय जान'।
उठे 'कृपालु' श्याम झुकि झूमत, चूमति मातु सुजान॥

38

भोर भइ जागो नवल किशोर।
श्यामलगातहिं मात जगावति, नहिं जागत बरजोर।
निज कर पकरि बिठावति पुनि पुनि, गिर्‌यो परत चितचोर।
मूँदि नैन मधु बैन कहत हरि, अबहिं भई कहँ भोर।
मैया कह, 'टुक दृगन खोलि लखु' भैया कह झकझोर।
'उठ उठ उठ रे कनुआँ अबहूँ, नींद गई नहिं तोर'।
हरि 'कृपालु' तब अरबराइ उठ, यशुमति लेति अँकोर॥

39

भोर भइ जागो सुंदर श्याम।
झुकि झुकि झूमि झूमि मुख चूमति, मातु यशोमति भाम।
लै लै नाम पुकार द्वार पर, मधुमंगल श्रीदाम।
बछरन पियत नाहिं थन सुरभिन, परखत तोहिं सुखधाम।
ऊँ, ऊँ, करत तानि पीतांबर, सो छवि अति अभिराम।
सुनहु कान्ह करि कान जात हम, गोचारण, कह राम।
सुनि 'कृपालु' बल–वचन उठे हरि, अरबराइ धरि पाम॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

40

मैया मेरो, रँग गोरो करि दे री।
सबै कहत मोहिं कारो कारो, सखन सखिन हँसि के री।
भैया को गोरो मोहिं कारो, क्यों दुभाँति जनमे री।
सुनु लाला! कह मैया, वह तो, रँग भगवान दिये री।
वह भगवान रहत कहँ मैया! मारूँ मार घनेरी।
बेगि बताउ 'कृपालु' मातु न तु, गोद न अइहौं तेरी॥

41

मैया मैं तो पायो भल गुरु–ज्ञान।
कालि गयों कालिंदी तट हौं, खेलन संग सखान।
मुनि दुर्वासा ज्ञान दियो तहँ, दै वेदादि प्रमान।
कह्यो मनुज तनु को माटी को, एक खिलौना जान।
उपजत माटी ते माटी महँ, मिलत अंत सच मान।
मैया कह, 'यह हौंहूँ जानति, कहा कहन चह कान्ह।
जो यह जान माय तो काहे, देति न माटी खान।
मैया कह लाला! माटिहिं ते, उपजत तरुन लतान।
जो खैहौ माटी तो निकसहिं, तरु नासा मुख कान।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लाला कह अब कबहुँ न खइहौं, मनहुँ मनहिं डरपान।
कह 'कृपालु' हरि अब जनि सुनियो, बाबन के व्याख्यान॥

42

मैया मै तो, बड़ी सी दुल्हनियाँ लैहौं।
बनि दूलह सिर मौर बँधैहौं, सखन बरात सजैहौं।
आजुहिं करि दे ब्याहु नाहिं तो, हौं नहिं माखन खैहौं।
तेरी गोद न कबहुँ आइहौं, कठला गर न धरैहौं।
जैहौं भाजि आजु ही घर सों, कबहुँ लौटि नहिं ऐहौं।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, अब नहिं गाय चरैहौं।
कहत 'कृपालु' कान्ह जोगी बनि, घर घर अलख जगैहौं॥

43

मैया मोहिं, दै दे माखन रोटी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पग पटकत झगरत झकझोरत, कर गहि यशुमति चोटी।
'आँ, आँ, करत मथनियाँ पकरत, जात धरणि पर लोटी।
लै निज गोद मातु दुलरावति, कहति 'बात यह खोटी'।
बिनु मुख धोये हौं नहिं दैहौं, नवनी रोटी मोटी।
खाय 'कृपालु' धोइहौं मुख कह, हरि पीतांबर ओटी॥

44

मैया री! मैं नहिं माटी खायो।
जाकी भृकुटि विलास प्रलय सोइ, साँटी लखि डरपायो।
दोउ कर–उदर बँधे दामोदर, दृग झर झर झरि लायो।
मति मारिय मैया! मोहिं भैया, गैयां नित हँकवायो।
तू बरजति लालन! गैयन बिच, भूलि कबहुँ जनि जायो।
आजु न गयों बहोरन गैया, भैया मोहिं धमकायो।
हारे कालि खेल महँ मोते, याहू ते खिसियायो।
कछु बस चल्यो न जब मैया, सों, झूठी आय लगायो।
मैया कह 'मुख खोलि दिखावहु', तब हरि कछु मुसकायो।
अति ही प्रबल योगमाया–बल, रूप विराट दिखायो।
लखि कोटिन ब्रह्माण्ड एक मुख, यशुमति अति अकुलायो।
तब 'कृपालु' भये सौम्य श्याम इमि, दामोदर पद पायो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

45

अरी ओ, दधि की बेचनिहार।
हौं ब्रजराज न जानति मो कहँ, तू अति लट्ठगमार।
दै दे दधि को दान ग्वालिनी, काहे बढ़ावति रार।
'जयतु, जयतु ब्रजराज!' सखी कह, क्षमिय क्षमिय सरकार।

महल त्यागि महराज फिरत कत, वन वन बनि बटमार।
हरि कह 'सावधान ओ गूजरि!, बोलिय वचन सँभार'।
हौं 'कृपालु' चखि लखिहौं दधि को, खाटो मीठो खार॥

46

अरे ओ, छलिया नंदकुमार।
डगर छाँड़ु हटु लँगर झगर करि, दधि चाहत बटमार।
हौं तो कहँ जानति सब दिन ते, कहिहौं पल्लाझार।
नहिं पाये कहुँ ठौर और जब, जनमे कारागार।
तहहुँ न रहि पाये जब धाये, गोकुल ग्राम मझार।
तहहूँ ते धाये तब आये, नंदगाँव पगधार।
अब नँद की नित गाय चरावत, सँग रह ग्वार गमार।
ह्याँ 'कृपालु' नहिं चल बरजोरी, हम सिंहिनि तुम स्यार॥

COPYRIGHT

47

RADHA GOVIND SAMITI

अरी ओ, घूंघट वारी नारि।
तन मन प्रान दान दे कान्हहिं, जीवन है दिन चारि।
निलज निपट लंपट चलु हटु हटु, जनि दीजो मोहिं गारि।
मम गूजर लठमार कहौं जो, ले ठकुराइ निकारि।

हौं न कबहुँ पर–पुरुष निहार्‌यों, इक पतिव्रत व्रतधारि।
यह 'कृपालु' पर पुरुष नाहिं सखि, परम पुरुष अवतारि॥

48

अरे ओ, मुरली वारे कान्ह!।
मोते बढ़ि बढ़ि बात करत कत, मो कहँ जान न आन।
द्वै बापन वारो अति कारो, को नहिँ तो कहँ जान।
जियत कंस ब्रजराज कहावत, माँगत दधि को दान।
लट्ठ गँवारन ग्वारन सँग लै, छलत सबै सखियान।
यह 'कृपालु' कछु बात नई नहिं, मायापति पहिचान॥

49

अरे ओ! निलज निपट बटमार।
माखन चोरत मटुकिहुँ फोरत, तोरत मोतियन हार।
लखत पराई नारि हाय दइ!, नटखट नंदकुमार।
भोरिन गोरिन गोप किशोरिन, करत रहत दृग चार।
बहुत लगावे मार कहौं जो, मम गूजर लठमार।
पै 'कृपालु' तू कहि न सकति सखि, मन चाहत रिझवार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

50

आजु हरि! हौं माँगति इक दान।
सखी कह तब ते नींद न आवति, जब ते हौं गई जान।
मांगति भीख क्षमा की तुम्हरो, कियो बहुत अपमान।
हरि कह 'सखि यह गूढ़ पहेली, हौं न सक्यों पहिचान'।
सखि कह ऋषि दुर्वासा सों हौं, सुनी तुमहिं भगवान।
हँसि 'कृपालु' कह सखि! बाबन की, बात न करिये कान॥

51

आजु हौं देहौं विधि सों दान।
हौं राधारानी जनि मो कहँ, जान ग्वालिनी आन।
बैठि जाहु सम्मान–सहित हौं, ल्याऊँ पत्र लतान।
लतन ओट बैठीं ललितादिक, गइँ संकेतहिं जान।
धाइ पकरि दोउ कर सखि तरुवर, बाँध्यो श्याम सुजान।
कह्यो लाड़ली ठगन–दान हित, इहै विधान बखान।
कह 'कृपालु' अब मुक्ति दान चह, देहु लली वृषभान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

52

आजु हौं लरिहौं तो सन माय।
जब जब हौं तो सन पूछत हौं, देति मंद मुसकाय।

**सबै खिझावत 'कारो' कहि मोहिं, हँसि करताल बजाय।
कोउ कहत 'हम सुनी नंद जू, यमुना तट तोहिं पाय'।
'याको बाप न माय त्रिकालहुँ', इमि कहि हँस बलभाय।
सुनु लाला! तू मेरो जायो, दाउहिं बाबा जाय।
कारो रंग 'कृपालु' राम को, जो भगवान कहाय॥**

53

**उरहनो सुनि सुनि खीझीं माय।
अति रिस भरी खरी लै साँटी, कान्ह अचानक आय।
भाज्यो कान्ह देखि कर साँटी, सुधि बुधि तनु बिसराय।
आगे हरि पाछे यशुमति अति, धावति पकरि न पाय।
लखि जननी तनु अति रिस बाढ़ी, गिरे कान्ह घबराय।
रोवत कान्ह पकरि नँदरानी, बाँधे ऊखल लाय।
लै साँटी मारन जब धाईं, सखियन पकरीं आय।
आरत कान्ह पुकारत छिन छिन, कोऊ लेहु बचाय।
अति सभीत तनु कंप नैन झरि, देखि सखिन नहिं जाय।
तब कह सखिन मातु मो घर हरि, चोरि न माखन खाय।
हौं तो करी मसखरी तू तो, साँचेहिं गइ पतियाय।
लखि 'कृपालु' अकुलाय माय के, गहे पाँय बिलखाय॥**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

54

करेगो को कारे ते ब्याहु।
टुक मुख दर्पन देखु कन्हैया, पाछे दुलहिनि चाहु।
बनि बटमार ठगत नित वनितनि, बनत साहु को साहु।
निज अवगुन–गोपन हित झूठेहिं, सौ सौ सौगँध खाहु।
सिगरे ब्रज के सखन सखिन ते, रार करत न अघाहु।
कह 'कृपालु' कहुँ कारी कुबरी, मिलिहहि जनि पछिताहु॥

55

कान्ह की सुन करतूतहिं मात।
कालिंदी के पुलिन कालि हौं, रही अलिन सँग न्हात।
निलज निपट झटपट मम पट लै, दुर्‌यो कुंज बलभ्रात।
पुनि प्रकट्‌यो सब वस्त्र धारि मम, मंद मंद मुसकात।
आपुन पट यमुना–तट धरि कह, 'पहिरि लेहु निज गात'।
विनती सुनी न एक चल्यो कहि, 'राम, राम, अब जात'।
लौटि कह्यो पुनि 'तब पट दैहौं, जब जोरहु पति–नात'।
भयो 'कृपालु' कहा पुनि अब नहिं, कहौं लाज की बात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

56

कान्ह के गुन नूतन सुन माय।
हौं यमुना–तट गई भरन घट, साँकरि द्वार चढ़ाय।
साँकरि खोलि लँगर घर भीतर, धँस्यो सखन सँग जाय।
पुनि बैठारि द्वार मनसुख कहँ, साँकरि दइ लगवाय।
हौं जब गई कह्यो मनसुख तब, यशुमति तोहिं बुलाय।
गागरि धरन गई घर सोचत, काहे मनसुख आय।
तहँ देखी यह कान्ह सखन सँग, नवनि दुहुँन कर खाय।
मोहिं लखि सब भागे पाछे ते, झपटि पीत पट पाय।
हरि कह इक तो मैया मेरो, लिय पट पीत चुराय।
ऊपर ते 'कृपालु' मोहिं ग्वालिनि, उलटो चोर बताय॥

57

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कान्ह को पकर्‌यो हलधर कान।
हौं तो कहँ कब ते रह टेरत, तू इत टेरत तान।
चलिय घेरि लै आइय गैयन, अहैं रिसान सखान।
हरि दृग–अँसुवन–माल पिरोवत, चले मनहिं डरपान।
सखन कह्यो 'क्यों रे कनुआँ कहँ, अब लौं रह्यो लुकान।

जितनोइ छोट खोट तू तितनोइ, झूठेहिं रोदन ठान'।
कह 'कृपालु' यह छलिन शिरोमणि, मायापति भगवान॥

58

कान्ह तुम माँगत कैसो दान।
माँगत दान दीन बनि भिक्षुक, तुम्हरे उर अभिमान।
जो कहु 'हौं नहिं भिक्षुक, माँगत, दान सहित सम्मान'।
तो सुनु ऐसो दान द्विजन कहँ, तुम यादव जग जान।
ग्रहन–शमन हित दान माँग जो, ज्योतिर्विद उनमान।
मम 'कृपालु' अनुकूल सबै ग्रह, जाहु गाम कहुँ आन॥

59

कान्ह यह कौन तिहारी बान ?।
यशुमति कह सुनि लेहु कान्ह अब, खोलि आपुनो कान।
ज्यों ज्यों तोहिं जगावति त्यों त्यों, सोवत कामरि तान।
अब लौं तोहिं न कबहुँ जगैहौं, सोउ साँझ लौं कान्ह।
अपनो लाल बनैहौं दाउहिं, तुमहिं नाहिं जिय जान।
जानि 'कृपालु' रिसानि मातु हरि, धाय अंक लिपटान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

60

कान्ह सों कहति कहानी माय।
नींद न आवति आजु कान्ह कहँ, चाहत माय सुवाय।
कह्यो माय सुनु अवधपुरी महँ, इक रहे दशरथ राय।
तिनके चारि पुत्र रह तिन महँ, राम रहे बड़भाय।
उनके रही नारि वैदेही, दोउ अवतार कहाय।
चौदह बरस काँहि कछु कारन, उन वनवासहिं पाय।
वन महँ रावण हर्यो जानकिहिं, लै गयो गगन उड़ाय।
यह सुनि कहत चल्यो 'हा सीते!, हा वैदेही हाय'।
यह लखि सभय माय कर पकर्यो, मुरछित भये बलभाय।
माय 'कृपालु' लगाय कंठ कह, करु भगवान सहाय॥

61

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कान्ह! हम सुने तुमहिं भगवान!
साँचु बताउ मोहिं मनमोहन, कहहुँ न काहुहिं आन।
मोहिं परतीति होति नहिं नेकहुँ, हौं तुम कहँ भल जान।
षडैश्वर्य परिपूर्ण सुन्यों हौं, है याकी पहिचान।
तुम्हरे तो एकहुँ नहिं दीखत, पुनि हम लें कत मान।

मोहिं समुझाउ सौंह तोहिं मोरी, सुनहु सखी! कह कान्ह।
होत विभोर 'कृपालु' प्रेम लखि, रहत न शक्तिहिं भान॥

62

को कर, कारे ते यारी।
कहत मनसुखा, सुनहु कान्ह तुम, मन के कपटी भारी।
जनमत जननि जनक तजि भाज्यो, बंदी गृह छल धारी।
बन्यो धूत-मति पूत यशोमति, निज माया विस्तारी।
नव लख धेनु बबा घर तबहूँ, करत रहत बटमारी।
काहुहिं भरत चहुँटिया काहुहिं, चुटिया बाँधत डारी।
आपन काम बनाय चातुरिहिं, औरन काम बिगारी।
कहत 'कृपालु' यार! कारे की, सब करतूतिहुँ कारी॥

63

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

क्यों रहिहैं ब्रज ब्रजनार रे।
करत लँगरई दिन प्रति दूनी, नटखट नंदकुमार रे।
घूँघट के पट टारि कहत टुक, हमरिहुँ ओर निहार रे।
जो बरजहु तो कर बरजोरी, चुनरिहुँ शीश उतार रे।
लै लकुटिहिं मटुकीहूँ फोरत, तोरत गर लर हार रे।
सब 'कृपालु' ब्रज नारि हारि गईं, कछु न याय उपचार रे॥

64

गईं हम सब नटवर ते हारि।
सुनु मैया! यह तेरो छैया, बहुत सताई नारि।
माखन चोरि फोरि घट पनघट, लंपट सों दे गारि।
हँसि हँसि कहत 'रसीली' मो कहँ, घूँघट के पट टारि।
सब घर करत लँगरई नित प्रति, नहिं घर इक दुइ चारि।
अति की अति 'कृपालु' अति खोटी, मन महँ लेहु विचारि॥

65

ग्वाल सँग गो चारत गोपाल।
कोउ गावत कोउ वेनु बजावत, कोउ नाचत दै ताल।
खेलत खेल हरावत हारत, रीझत खीझत ग्वाल।
षटरस व्यंजन करत वियालू, राजत बिच नँदलाल।
भोग लगाय खाउ सब, इमि कहि, चली मनसुखा चाल।
हरि दृग मूँदत खाइ गये सब, उन कर अशन रसाल।
हँसनि सखनि सुनि, अशन न निज लखि, भज्यो रुदत ततकाल।
इमि 'कृपालु' तेहि ग्वाल रुवावत, अमित काल जेहि गाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

66

ग्वाल सँग जेंवत बाल गुपाल।
लेत सखनि मुख छोर कौर हरि, भाजत इत उत ग्वाल।
मनसुख मन सुख–सिंधु समाने, ठाने मन कछु चाल।
'हमरी दही पकौरी जो कोउ, खावै होय निहाल'।
सुनतहिँ श्याम भये उठि ठाढ़े, खोलि वदन ततकाल।
मनसुख मुख डारन मिस लै दधि, चुपरि दियो हरि गाल।
लखि 'कृपालु' बलि हँसे ग्वाल सब, दै पुनि पुनि करताल॥

67

ग्वालिनी! अबहुँ बात ले मान।
हौं अति हठी, दान बिनु लीन्हे, नहिं जैहौं जिय जान।
हठ करिहौं, मटुकीहुँ गमैहौ, घर जैहौ खिसियान।
'दारी के' गारी को गूजरि!, हौं नहिं करिहौं कान।
रार बढ़ेगी दिन प्रति दूनी, अति को बुरो गुमान।
बड़भागिनि 'कृपालु' ग्वालिनि जेहि, भीख माँग भगवान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

68

छाँड़ि ब्रज और चलहु कहुँ मात।
इन ब्रज वनितनि अति दुख दीनी, अब न मात सहि जात।

नित प्रति बात बनावति तो सों, बिनुहिं एक कर सात।
होत एक को सात बहुत पुनि, इनकी बड़ी जमात।
तुमहिं बताउ मात! हम कैसे, छींकेहिं पहुँचि सकात।
सबै 'कृपालु' एक सी मैया! सुनि सखि मृदु मुसकात॥

69

टुक सुन ओ! ढोटा नंद के।
छलत फिरत ब्रज बालनि चालनि, चलि अनुरूप गयंद के।
काउ दिन तोय कोउ ऐसिउ मिलिहैं, फल पैहौं छल छंद के।
लखतहिं ललिहिं भूलि जैहौ सब, खेल प्रेम के फंद के।
तब नहिं काम बने मनमोहन, मुसकाने मृदु मंद के।
किमि 'कृपालु' इमि करति निरादर, सनमुख आनँदकंद के॥

COPYRIGHT

70

RADHA GOVIND SAMITI

डगर महँ झगरि लँगर कर रार।
मटुकी फोर तोर लर हारन, चुनरी शीश उतार।
जितनोइ छोट खोट सखि तितनोइ, हारीं सब ब्रजनार।
'तुम मोरी', इमि कहि सुनु गोरी, करत दृगन सों वार।

निधरक कहत नेकु चलु कुंजनि, लंपट नर अनुहार।
हौं 'कृपालु' नहिं जाति लाज ते, मन चहत रिझवार॥

71

ढाँपि मुख कामरि रूठे लाल।
उठहु लाल बेला गोचारण, द्वार टेरि रहे ग्वाल।
कैसेहुँ उठत न, उठत, न बोलत, रिस भौंहन बल भाल।
'बात कही किन कहा?' मातु कह, उठि बोले ततकाल।
'सुनु मैया! मोते कह भैया', इमि कहि रुदत गुपाल।
बिनु पितु मातु आपु कह मो कहँ, हँसत ग्वाल दै ताल।
बाबा तोहिं परो पायो कहुँ, कहँ लौं कहौं कुचाल।
तू मैया! मुसकाति बात सुनि, है यामे कछु जाल।
जो जस होत 'कृपालु' कहत तस, यशुमति कह सुनु लाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

72

दधि को एकहुँ बूँद न देइहौं।
हौं हौं भूप भानु की बेटी, नहिं निज आन घटैहौं।
अति की कीन लंगरई अब लौं, अब हौं मजा चखैहौं।

जोरि एक की सात मात ते, पुनि ऊखल बँधवैहौं।
जो यशुमतिहूँ सो बचि जैहौ, बंदीगृह पठवैहौं।
हँसि 'कृपालु' हरि कह सखि! पुनि हौं माया करि भजि जैहौं॥

73

निज ब्रजधाम लेहु नँदरानी, हम कहुँ अंत बसेंगी जाय।
अति खोटा यह तुम्हरो ढोटा, नेकहुँ नाहिं लजाय।
हम भोरी गोरिन सों नित यह, बरबस रार मचाय।
छींकेहूँ ते खात काढ़ि दधि, भाजन फोरि गिराय।
छोटो सो मत जान यशोदा, हाल बड़ो ह्वै जाय।
मग रोकत अरु कहत गूजरी!, हम ब्रजराज कहाय।
दै दधि–दान जाहु अब आगे, नाहिं तो जान न पाय।
जो हौं कहौं कंस पै कहिहौं, खोटी खरी सुनाय।
मटुकी फोरि खाय दधि छलिया, चितवन चोट चलाय।
मोको घायल करि बेदरदी, मंद मंद मुसकाय।
वशीकरन जादू चेटक सब, यह तो जाने माय।
तू याको बरजति नहिं नेकहुँ, बहुतै लाड़ लड़ाय।
को 'कृपालु' बसि जादू नगरी, तन मन प्राण गमाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

74

निरत कर आजु ब्रह्म साकार।
दै करताल मातु यशुमति–सँग, पग नूपुर झनकार।
झिँगुली झीन छीन कटि किंकिनि, मोर पंख सिर धार।
गोपद रज राजित तनु अलकनि, उरझि रहीं घुँघरार।
तुतरिन बतियन कहि कछु गुन गुन, पुनि पुनि कर किलकार।
लखिय 'कृपालु' ब्रह्म–गति जेहि कह, माया गुन गो पार॥

75

नेकु दे माखन ओ ब्रजनार।
चलु हटु छाँडु गैल भल आयो, माखन चाखन हार।
माखन चाखन के पूरब टुक, दर्पण मुखहिं निहार।
नव लख धेनु नंद बाबा के, तबहुँ बन्यो बटमार।
सब कारी करतूत तिहारी, सब जानत संसार।
जाय कहूँगी नँदरानी पै, तोय लगावे मार।
प्रथम 'कृपालु' खाउँ माखन तब, खाउँ मार बलधार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

76

पकरि गयो चोरत माखनचोर।
सूने घर घुसि खात रहे दुरि, नवनि चोर–सिरमोर।

पाछे ते गोपी ने औचक, पकर्‌यो कर बरजोर।
ल्याईं बाँधि मातु यशुमति ढिंग, दियो उरहनो घोर।
हरि कह 'पद्मराग–मणि–कंकण, तपत पाणि रह मोर'।
याही ते 'कृपालु' हौं मैया!, दिय मटुकिहिं कर बोर'॥

77

पकरि गयो माखन चोरत कान्ह।
द्रुत युग–पानि नवनि मुख मेलत, चितवत चहुँ दै कान।
यदपि निविड़–तम तनु–दुति दमकति, घन–दामिनि उनमान।
लखि पूछति गोपी 'तू को है ?, धंसि आयो घर आन'।
अति सभीत कह चौंकि कान्ह 'मैं, आयो निज घर जान'।
'कहा करत मटुकी बिच ?' 'चींटी, अपसारत सच मान'।
'सोवत शिशु कस आइ जगायो', 'सपनो लखि डरपान'।
किमि 'कृपालु' इमि देत थेगरी, मृषा फटे असमान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

78

परीं सब बैर हमारे लाल।
हम पूछति छींके पै कैसे, पहुँचि सकत गोपाल।
सुनु येहि छोट जान जनि मैया!, बड़ो होत है हाल।

हम पूछति तुम सब के घर कत, पहुँचि सकत इक काल।
सुनु मैया! इक काल अनेकन, रूप धरत यह बाल।
भोरी मातु 'कृपालु' न जानति, मायापति को जाल।।

79

बात सुनु साँची साँची माय।
ये ऐसी ब्रज ग्वालिनि जैसी, त्रिभुवन खोजि न पाय।
'मो ते ब्याहु करहु' कहि मोते, सिगरी मृदु मुसकाय।
जब मैया! हौं कहौं 'पूछिहौं मैया सों हौं जाय'।
तब मो कहँ बर्जन–हित तर्जनि, अँगुरिन सों डरपाय।
पुनि कर पकरि कहत 'हाँ करु न तु, दउँ ऊखल बँधवाय'।
बेगि 'कृपालु' ब्याहु करु मैया! सब मिटि जाय बलाय।।

80

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भला तुम कैसे हो भगवान।
प्रीति करत नित पर नारिन सों, लंपट नर उनमान।
पतिव्रत–धर्म मिटावत आपुहिं, आपुहिं करत बखान।
वेद वेद्य जब वेद न मानत, और कौन पुनि मान।
हरि कह 'दैहिक धर्म पतिव्रत, ता फल स्वर्गहिं जान।
यह 'कृपालु' परधर्म मोरि–रति, ता फल दिव्य महान'।।

81

मातु टुक सुन ले याकी बात।
सखि कह बनत न बात बनावत, कहत कहत रुकि जात।
भला बिलैया मैया! कैसे, छींकेहिं पहुँचि सकात।
कह्यो कन्हैया सुनु मैया! यह, कैसी है बतरात।
याते पूछहुँ हौं भल छीकेंहि, पहुँचि सकत कत मात।
तू मैया! कछु कहति न इन कहँ, मोहीं कहँ रिसियात।
कह 'कृपालु' सखि मौन भई सुनि, गइ घर अति खिसियात॥

82

मातु सुनु खरी खरी अब बात।
तुम्हरोइ लाल अनोखो जायो, तुमहिं अनोखी मात।
तुमहिं रहहु नँदगाँव आपने, हम सब है, अब जात।
गोरस मिस गो-रस मोहिं माँगत, कहि प्यारी मुसकात।
लोक-वेद-मर्याद मिटावत, सब सों जोरत नात।
सो 'कृपालु' ब्रजवास करे जो, धर्म देइ धरि पात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

83

मातु! सुनु साँची साँची बात।
कालि निकट यमुना-तट मैया! रह्यो सखन सँग न्हात।

इतनेहिं माहिं सखिन मोहिं टेरीं, सुनियो श्यामलगात।
हौं नहिं गयों सखिन तब बोलीं, चलहु आजु ढिग मात।
ये मोते गागरि उठवावति, इनकी बड़ी जमात।
गुलचन–गाल मार मोहिं सिगरी, हँसति न नेकु लजात।
जो कहुँ इनकी बात न मानहुँ, तो मो पे रिसियात।
बार बार मो कहँ डरपावति, 'देन उरहनो जात'।
ये 'कृपालु' ऐसी ब्रज ग्वालिनि, बिनु एकहिं कर सात॥

84

माय ले, निज लालहिं समुझाय।
हौं पनघट घट भरन गई रहि, साँकरि द्वार चढ़ाय।
झटपट खोलि कपाटनि नटखट, भीतर पहुँच्यो जाय।
खाय अघाय माय! पुनि माखन, मटुकिहुँ दिय ढुरकाय।
वा दिन हौं झटपट घट भरि घर, आय अचानक माय।
मोहिं लखि कह 'सखि आइ बिलैया, गइ माखन सब खाय'।
देखु 'कृपालु' मातु! यह ढोटा, केतिक बात बनाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

85

माय! सखि झूठेहिं दोष लगाय।
इक दिन कही माय! पनघट सखि, मो घट दे उठवाय।

हौं छोटो न उठाय सक्यों तब, कही चलहु ढिग माय।
इक दिन कही याहि को ब्याहै, द्वै बापन को जाय।
खाय बिलैया मैया! माखन, मेरो नाम बताय।
देखु 'कृपालु' मात! यह गूजरि, चाहति मोहिं पिटवाय॥

86

माय! सखि पानिहिं आग लगाय।
रोम रोम महँ कपट भर्‌यो येहि, तू न जान कछु माय।
याकी सास बताय माय! यह, चोरि चोरि दधि खाय।
लरिकैयन की बानि परी कछु, सो नहिं छुटत छुटाय।
जो तेहि डाँट खाय तो झूठेहिं, मेरो नाम लगाय।
मोहिं न माय पतियाय पूछि ले, मनसुख या बलभाय।
भोरी माय 'कृपालु' मानि गइ, लिये लाल उर लाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

87

मैया! तेरे, छैया ने जुलुम करी।
तट पनघट घूँघट–पट खोलत, देखति सखि सिगरी।
'नथवारी मम प्राण पियारी', इमि कहि भुज पकरी।
हटकत ही झटपट लै नटखट, लकुटि फोर गगरी।

पुनि अति छोट खोट यह ढोटा, जात तुरत भग री।
अब 'कृपालु' हम सब नहिं रहि सक, रहु तुम ही नगरी॥

88

मैया! तेरो, कैसो दैया छैया ?।
अब लौं सही कही नहिं तोसों, सहि न जात अब मैया।
नागरि गर लर हार तोर अरु, गागरि फोर कन्हैया।
चुनरी शीश उतार वार कर, नैनन सों बलभैया।
'मोरी तोरी जोरी गोरी', कहि कर पकरत दैया।
बरजु 'कृपालु' यशोमति! निज सुत, अब न लाल लरिकैया॥

89

मैया! मैं तो मोहिनि–रूप बनैहौं।
घघरा चुन्नटदार पहिरिहौं, चुनरी शीश धरैहौं।
बेंदी भाल लाल लगवैहौं, सेंदुर माँग भरैहौं।
वेणी गूँथि पहिरि नथ बेसर, सुरमा सुघर लगैहौं।
गर दुलरी, लर हार मोतियन, उर कंचुकी कसैहौं।
कर करपत्र चुरी कंकण–मणि, मेहँदी लाल रचैहौं।
घूँघट को पट घनो काढ़िहौं, लाजन लाज लजैहौं।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

नाँव साँवरी सखी धरैहौं, गति हंसहुँ सकुचैहौं।
कालि छली चंद्रावलि अलि मोहिं, आजु छलन हौं जैहौं।
छलि 'कृपालु' इमि चन्द्रावलि कहँ, हौं तेहि मजा चखैहौं॥

90

मोहन! मोहिं न आँखि दिखायो।
हटु जी लँगर करि झगर डगर महँ, माखन चाहत खायो।
हौं राधे बरसाने वारी, पितु वृषभानु कहायो।
भाजि जाहु अब बेगि ग्वाल लै, जनि मोय रिस लगवायो।
ढोर चरावत सब दिन बीतत, चाहत मोहिँ चरायो।
बिनु पितु मातु रूप कारो अति, जाति अहीर जतायो।
सुनि रिसाय ग्वालन सैनन दै, बरबस दधि लुटवायो।
सखी विशाखा खीझि श्याम सिर, दधि मटुकी ढुरकायो।
तब 'कृपालु' बलि संग सखिन के, हँसि हँसि ताल बजायो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

91

लँगर मोते, डगर चलत कर रार।
लपटि झपटि झट पट पनघट घट, फोर तोर लर हार।
अली गली साँकरि कर काँकरि, ताकरि गागरि मार।

कह बर जोरी कर बरजोरी, बरजो री बटमार।
मोहिं कह प्यारी भानुदुलारी, घूँघट वारी नार।
नैनन कहि 'कृपालु' कछु सैनन, बैनन नहिं रिझवार॥

92

लाल तुम नाहक गाल बजाय।
तुम कहँ ब्याहि कौन निज हाथहिं, बेटिहिं कूप डुबाय।
अकड़ि हँकड़ि श्रीदामादिक सों, झगरत रहत सदाय।
ब्रज वीथिन ललितादि सखिन सों, करि करि रार खिझाय।
ब्रज वासिन आबाल वृद्ध सब, जानत तव गुन आय।
कह 'कृपालु' पुनि मात पितहुँ की, कतहूँ साख न पाय॥

93

सखी मोय, दै जा दधि को दान।
हौं ब्रज को सरताज न जानति? भरी गरूर गुमान।
सखी कही मोते जनि अटकिय, मोय न जान कोउ आन।
हौं ललिता बृषभानुलली की, सखियन परम प्रधान।
यह ब्रजभूमि लाड़ली जू की, सूधेहिं करहु पयान।
अबहीं जाय कहौं यशुमति ते, करु साँटी को ध्यान।
हँसि 'कृपालु' कह सखि साँटी हम, खात भये बलवान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

94

सखी सुनु, इक रहस्य की बात।
जो मो कहँ भगवान मान सो, मो ते अति डरपात।
राजा स्वामी मित्र पुत्र पति, भाव पाँच विख्यात।
जिन भावन सों प्रीति करत जो, हौं जोरत सोइ नात।
अति नीरस ऐश्वर्य सखी मम, रसिकन नाहिं सुहात।
तू 'कृपालु' प्यारी प्रियतम की, प्रियतम श्यामल गात॥

95

सुनु मुरली वारे कान्ह रे।
मुरली मधुर बजाय बुलावत, काहे ब्रजवनितान रे।
नीरस लकरी सरस होत सुनि, सरस सुरीली तान रे।
इत हौं दरस हेतु तरसत उत, पकत न टुक पकवान रे।
COPYRIGHT
पुनि गुरुजनहूँ कहत डाँटि मोहिं, रहत कहाँ तव ध्यान रे।
RADHA GOVIND SAMITI
भनत 'कृपालु' बनत कत इतनो, जानि जानि अनजान रे॥

96

हमारे, बैर परीं ब्रज बाल।
ये अति चतुर मातु! मैं भोरो, जानत नहिं कछु चाल।

मोको इकलो देखि बुलावतिं, उर विष वचन रसाल।
सरल सुभाय जात ढिंग जब ही, पकरि लेतिं ततकाल।
'माखन खाय निहाल करहु चलि, मोरेहु घर नँदलाल।
हौं साँचेहिं पतियाय गयों घर, इन मन रह कछु जाल।
पुनि पुनि पकरि नचावतिं मो कहँ, मारतिं गुलचन गाल।
कोउ छोरति अंबर कोउ नूपुर, कोउ मुरली, कोउ माल।
बाबा की सौगंध खवावतिं, 'कहहु आइहौं काल'।
पुनि बरबस मुख दधि लपटावतिं, हँसतिं सबै दै ताल।
कर गहि पुनि इत बात बनावतिं, कहँ लौं कहौं कुचाल।
हौं 'कृपालु' बालक ये धींगरि, सुनि सखि होतिं निहाल॥

97

हरि! जनि, मो कहँ आँखि दिखायो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अपनी गाय हिगारि चरावहु, कियो बहुत मन भायो।
हौं सहि सकौं न धौंस तिहारी, केहि बल रह डहकायो।
बलभैया को अनुज जानि हौं, अब लौं तोहिं बचायो।
कबहूँ जाय खिरक परि सोयो, कबहुँक वेनु बजायो।
तुम्हरे बाबा को नहिं चाकर, जाकर धौंस बतायो।

खात न नंद बबा को दीनो, रहत न उन घर छायो।
सखन रिसाने मोहन जाने, नैन नीर भरि आयो।
सखे! 'कृपालु' लोकहूँ दीखत, गोद लियो इतरायो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री राधा-बाल लीला-माधुरी

1

कीर्ति घर प्रकटीं कीर्ति कुमारि।
ब्रह्मादिक स्वस्त्ययन पाठ कर, अस्तुति करि श्रुति चारि।
नारदादि विरदावलि गावत, कहि जय भानुदुलारि।
ताण्डव नृत्य करत शिवशंकर, सुधि बुधि देह बिसारि।
उमा रमा ब्रह्माणी आदिक, आरति कुँवरि उतारि।
लखत 'कृपालु' ज्ञानिजन इकटक, पुनि पुनि कहि बलिहारि॥

2

भइँ कुँवरि भूप वृषभान के।
थिरकत चले झुंड ग्वालन अरु, झुण्ड सबै वनितान के।
भई भीर वृषभानु भूप घर, शोर बधाइन गान के।
कोउ कछु कहत न कोउ कछु पूछत, बंद सबै पट भान के।
कीरति मातु लुटावति दोउ कर, थार भरे मोतियान के।
पै 'कृपालु' सब भानुकुँवरि के, भूखे दर्शन-दान के॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

भानुभूप–घर बजत बधाई।
प्रकटीं अंक लली कीरति के, देव वृंद दुंदुभिहिं बजाई।
सब विधि सज्यो आजु बरसानो, लखि कोटिन बैकुँठ लजाई।
चहुँ दिशि विविध बाजने बाजत, परत न कहुँ कछु शब्द सुनाई।
भरिभरि मूठि मणिन मोतिन की, यद्यपि कीरति मातु लुटाई।
तदपि न लूटनि की सुधि काहुहिं, सबै विदेह, देह पद पाई।
विधि हरि हर सुर कहत एक सुर, जय जय ह्लादिनि शक्ति सुहाई।
करत 'कृपालु' निछावर तापर, निज कर कोटि ब्रह्म सुख जाई॥

4

चलो अलि देखन भानुलली।
आनंदहुँ आनंद देति यह, ह्लादिनि–शक्ति अली।
रूपहिं रूप रसहिं रसदायिनि, प्रेम–पियूष पली।
लोग लुगाइन गाइ बधाइन, कीरति महल चली।
चोवा चंदन विविध सुगंधनि, सुरभित गली गली।
सबै विभोर 'कृपालु' प्रेम–रस, जनु कोउ छलिन छली॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

पालने झूलति भानुदुलार।
रतन–जटित चंदन को पलनो, रेशम डोरी डार।
नील वसन शिशु भूषन–भूषित, गौर–बदनि सुकुमार।
लोरी गाय, झुलाय माय मन, भाय जाय बलिहार।
कर गहि पग अँगुठा मुख मेलति, अवहेलति तिय मार।
किलकनि, लखनि, पाणि पग पटकनि, लीला ललित अपार।
लखि 'कृपालु' ललचाति मातु टुक, मो ढिंग कुँवरि निहार॥

6

मेरी प्रानन प्यारी जाग रे।
लाली भानु भानुलाली लखु, बगरावति वन बाग रे।
आयो भानु जगावन धरि तनु, वात्सल्य अनुराग रे।
महकत मंद पवन चहुँ चहकत, खग वन बाग तड़ाग रे।
नहिँ पिवाय थन सुरभिन बछरन, परखत तोहिं रस पाग रे।
जब 'कृपालु' कह 'आय कान्ह उठु', उठीं नींद गइ भाग रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

7

लली के अलसाने दोउ नैन।
माय उठाय बिठाय दियो पै, कैसेहुँ नैन खुलै न।

गिरि गिरि परत मातु पकरतहूँ, सो छवि भनत बनै न।
पुनि पुनि हलरावति दुलरावति, कीरति कहि मृदु बैन।
उठीं न तबहुँ तबहिं कह जनि उठु, बनिहौं मैया मैं न।
सबरो माखन देन जात अब, श्रीदामहिं सुखदैन।
सुनि 'कृपालु' दिय खोलि नैन पै, कछु रिस नैनन सैन॥

8

माय! दे चंद्र खिलौनहिं लाय।
धरि धरि चिबुक कुँवरि कीरति को, कहति ठुनकि तुतराय।
हौं मैया! चंदा सँग खेलिहौं, सो मोहिं अति मन–भाय।
तब लौं हौं नहिं माखन खैहौं, जब लौं नाहिं मँगाय।
तोसों बात न करिहौं लेइहौं, औरहिं माय बनाय।
कोउ भूषण कबहूँ न पहिरिहौं, दैहौं बसन बहाय।
जइहौं भाजि सखिन घर तुम्हरे, घर रह मोरि बलाय।
मातु हठीली लली चंद्रमहिं, दर्पन लाय दिखाय।
भोरी कुँवरि जानि साँचो तेहि, किलकति पकरति धाय।
जब 'कृपालु' नहिँ पकरि पाय तब, कह कछु मुँह लटकाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

9

कुँवरि की लरिकैयन की बानि।
धनि सो कीरति मातु निहारति, वारति तन मन प्रान।
मैया सों 'ऐया' कहि टेरति, 'पापा' कहि वृषभान।
किलकति द्वैक दँतुलियनि आपुहिं, कारन नहिं कोउ जान।
झलकति झँगुली नील बदन पर, नील गगन उनमान।
ह्लादिनि शक्ति 'कृपालु' भक्तिवश, प्रकटीं रस की खान॥

10

कुँवरि की किलकनि की बलि जाउँ।
अति द्रुत गवनि घुटुरुवनि आँगन, लखि लखि हौं ललचाउँ।
गौर बदन पर नील झँगुलियनि, झलकनि लखि मन भाउँ।
मणिन–खंभ प्रतिबिंब विलोकनि, लखि सुधि–देह भुलाउँ।
रुनझुन पग पैंजनियनि सुनि सुनि, फूलो अँग न समाउँ।
देखत बनत 'कृपालु' न लेखत, किमि उपमाहिँ लजाउँ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

11

कुँवरि रहिं, कीरति सों विरुझाय।
'ऊँ ऊँ' करि झगरति झकझोरति, मैया बलि बलि जाय।

पग पटकति, मटकति, गर लटकति, कह कछु मुख लटकाय।
वा बाँकी झाँकी झांकन हित, शंभु समाधि भुलाय।
कही माय 'बतराय बात का?' कहीं कुँवरि तुतराय।
एँड़ी लौं वेणी कब ह्वैहैं, तो सम मो बतराय।
कही माय, अरि कुँवरि अबहिं तू, पाँच बरस की आय।
जब तू होय बड़ी तब वेणिहुँ, बड़ी होयगी वाय।
कुँवरि कही, मैया! मोहिं अबहीं, दे ना बड़ी बनाय।
दउँ बनाय जो बड़ी, माय कह, तो केहि गोद खिलाय।
सुनि 'कृपालु' यह कुँवरि किलकि गईं, माय कंठ लिपटाय॥

12

लाड़लिहिं लीला ललित रसाल।
तुतरिन बतियन कहति मातु ते, पकरि चिबुक अरु भाल।
मैया! गई रही खेलन वन, संग सखिन ब्रजबाल।
इतनेहिँ माहिँ अनेकनि नौतनु, आईं तहँ ततकाल।
देखन लगीं मोहिं सब इकटक, पुनि चूमेउ मम भाल।
पुनि कानन कछु कहीं परस्पर, भई शंक मोहिं हाल।
पुनि 'कृपालु' अस कहत चलीं भल, जोरी लालिहिँ –लाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

13

माय री जोरी कौन बलाय।
लाल कौन जाकी जोरी हौं, वेगिहिं मोहिं बताय।
पुनि पुनि अति झकझोरति पूछति, कीरति बलि बलि जाय।
ओ लाली! ओ नंदगाम की, नौतनि मोहिँ जनाय।
नंदलाल ते तोरि सगाई, चाहति याते आय।
तब 'कृपालु' कह कुँवरि सगाई, काको कहियत माय॥

14

कुँवरि! जा खेलु लतान तरे।
कहा करेगी जानि सगाई, पाछे वृथहिं परे।
ऊँ, ऊँ, करि पटकति पग भू पर, झगरति नैन झरे।
मैया कह, सुनु कुँवरि! कान महँ, रहियो उरहिं धरे।
तू जिमि गुड़ियहिं ब्याहु करति नित, तिमि सो ब्याहु करे।
कह 'कृपालु' किलकारि कुँवरि द्रुत, करि दे ब्याहु अरे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

15

मातु! अब तो सन करहुँ न बात।
कहति कुँवरि कीरति मैया सों, रूठि वचन तुतरात।

कहा बात कह मातु कुँवरि ते, कहा इतै रिसियात।
गुडिया अरु गुड़रा सखियन की, दिय बनाय उन मात।
तू नहिं सुनति कहति दिन द्वै ते, इमि कहि रोवति जात।
हौं न चहौं तोरी सी मैया, श्रीदामा सों भ्रात।
निज अंचल-पट पोंछि नैन जल, कह मैया मुसकात।
दऊँ बनाय 'कृपालु' अबहिं तोहिं, गुड़िया कहु जेहि भाँत॥

16

माय! अस गुड़िया मोहिं बनाय।
जाकी निरखि सुघर सुंदरता, गुड़रा जिय ललचाय।
भूषन-वसन पिन्हाउ वाय अस, जस कहुँ सखिन न पाय।
पुनि बनाउ अस सुंदर गुड़रा, लखि गुड़िया मनभाय।
नख शिख करि श्रृंगार दुहुँन सिर, सेहरा देउ बँधाय।
कह 'कृपालु' तब कुंवरि सखिन लै, दोउन ब्याहु कराय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

17

बनाई गुड़िया गुड़रा माय।
गुड़ियहिं रंग रूप छवि ऐसी, जैसी कुँवरि जनाय।
गुड़रहिं रंग रूप छवि ऐसी, जैसी छवि बलभाय।

गुड़रहिं रंग श्याम लखि श्यामा, पुनि गइ कछुक रिसाय।
कहति कुँवरि यह गुड़रा कारो, नहिं गुड़ियहिं मन भाय।
कह मैया कारो रंग हरि को, जो सब काहिं बनाय।
कह 'कृपालु' कह मातु साँचु यह, आगे परी लखाय॥

18

मातु! यह कुँवरि न मानति बात।
श्रीदामा कह मातु! हमारे, संग न खेलन जात।
सुनु मैया! इक यशुमति ढोटा, है कोउ श्यामल गात।
वाही संग सदा यह खेलति, करत जोइ मनभात।
कुँवरि कहीं सुनु मैया! भैया, मोर खार नित खात।
देत न दाउँ हारि खेलन महँ, ऊपर ते रिसियात।
कबहुँक भरत चहुँटिया कबहुँक, मोहिं डरावत मात।
कबहुँ चिर्हावत कबहुँ बिरावत, कबहुँ दिखावत दाँत।
कह 'कृपालु' यह बात बुरी कहुँ, झगरत भगिनी भ्रात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

19

माय मोहिँ भैया बहुत खिझाय।
कुँवरि कहति मैया! श्रीदामहिं, हौं न बनैहौं भाय।

आजु गई रहि खेलन कुंजन, संग सखिन समुदाय।
श्रीदामा प्रथमहिं कुंजन महँ, छुपि के बैठ्यो जाय।
कामरि ओढ़ि भूत बनि हम कहँ, औचक दियो डराय।
बोल भयानक बोलि कह्यो पुनि, हौं हाऊ तोहिं खाय।
भाजत भाजत हारि गई तब, कह्यो प्रकटि 'हौं आय'।
कहति 'कृपालु' माय आवन दे, मरिहौं साँटिन वाय॥

20

मैया! मोहिं भैया बहुत रुवाय।
मेरी गुड़िया गुड़रा लै लै, इत उत कतहुँ छुपाय।
तू श्रीदामहिं कहति नाहिं कछु, मोहीं काहिं रिसाय।
सुनि लाली की बात मात ने, श्रीदामाहिं बुलाय।
श्रीदामा कह याउ लेति नित, लकुटी मोरि चुराय।
कहति 'कृपालु' मातु दोउन ते, झगरत बहिन न भाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

खाय अब माखन मोरि बलाय।
रूठी भानुकुँवरि मैया ते, लखि मैया बलि जाय।
ऊँ ऊँ, करि जब लोटन लागी, लिय उठाय तब माय।

पूछति मातु कहा लैहौ तुम, कुँवरि कहति तुतराय।
सबै सखिन की भई–सगाई, सखियन मोहिं चिढ़ाय।
कीरति कहीं, कुँवरि! तू अबहीं, पांच बरस की आय।
करिहौं तोर सगाई अस जेहि, लखि सब सखि ललचाय।
हँसीं 'कृपालु' कुँवरि अति भोरी, कीरति कंठ लगाय॥

22

माय ते कुंवरि कहति तुतराय।
खेलत रही संग ललितादिक, अबहिं पौरिया माय।
इतनेहिं माहिं माय इक बाबा, कर वीणा ले आय।
इकटक लखन लग्यो पुनि मों कहँ, नैनन नीर बहाय।
पुनि किय सात प्रदक्षिण दक्षिण, राधे राधे गाय।
सुनु मैया! पुनि लियो बलैया, पुनि लिय पद–रज खाय।
जब ललिता ने पूछी बाबा! आपुन नाम बताय।
तब मैया! सो अट्टहास करि, तुरतहिं भाज्यो धाय।
मैंने कही 'अरी ललिता यह', पगलो मोहिं जनाय।
क्यों मैया! हौं सही कही ना?, तू तो जनु डरपाय।
अरी लाड़ली! नारद मुनि सो, मो कहँ कत न बुलाय।
पूछति कुँवरि 'कृपालु' मातु इन, लागी कौन बलाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

23

माय! मोहिं सखियन बहुत चिढ़ाय।
कहति सगाई होति जासु तव, सो कारो तनु आय।
हम सब की तो करी सगाई, गोरे तनु मम माय।
जो यह साँचु माय! नहिं करिहौं, कबहुँ सगाई वाय।
बड़े भये लाली! सब कारे, गोरे तनु बनि जाय।
तब तो माय! सबै गोरे तनु, कारो तनु पुनि पाय।
हाँ री कुँवरि! साँच यह, तब तो, जैहैं सखि खिसियाय।
कह 'कृपालु' कारो तनु रामहुँ, जेहि भगवान बताय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीकृष्ण-माधुरी

1

अनुपम रूप नीलमणि को री।
उर धरि कर करि हाय! गिरत सोइ, लखत बार इक भूलेहुँ जो री।
प्रति अंगनि छवि कोटि अनंगनि, सुषमा-सुधा-सार-रस बोरी।
जिनहिंन अंगनि नैनन निरखत, तिनहिंन कहँ कह सरस बड़ो री।
नखशिख लखि सखि अँखियन हूँ ते, पलपल तलफति देखन को री।
कह 'कृपालु' गागर महँ सागर, आव न यतन करोर करो री॥

2

अनोखो जायो जशुदा लाल।
मोर मुकुट की लटक अनोखी, तैसेहिं लट घुँघराल।
भृकुटि बंक की मटक अनोखी, तैसेहिं तिलक सुभाल।
चितवनि जादूभरी अनोखी, तैसेहिं नैन विशाल।
मधुर मधुर मुसकानि अनोखी, तैसेहिं गल वनमाल।
पीतांबर फहरानि अनोखी, तैसेहिं काछनि लाल।
नूपुर की झनकार अनोखी, तैसेहिं चाल मराल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ग्रीवा–कटि–पद–मुरनि अनोखी, तैसेहिं मुरलि रसाल।
है 'कृपालु' सब बात अनोखी, फँसे शंभु शुक जाल॥

3

अचंभो वीर! अहीर निहार।
बह अनुकूल धार सब पै हौं, बहि गइ उलटी धार।
जाति रही पनघट सिर धरि घट, घूँघट–पट मुख डार।
मंजुल–कुंज–लतान छेड़ दइ, तान मुरलि रिझवार।
मुरलि–तान सुनि कान, बही हौं, गइ ढिंग नंदकुमार।
मुरलिहिं धार 'कृपालु' शिवहुँ बहि, आये रास मझार॥

4

कहुँ देखे आली, ललित त्रिभंगी लाल।
जेहि सिर सोहति मोर चंद्रिका, लोचन कमल विशाल।
भृकुटी कुटिल कनक श्रुति कुंडल, मृगमद तिलक सुभाल।
उर फहरत पट पीत मनोहर, गल विलसत वनमाल।
युगल पाणि मणिमय कंकण कटि, किंकिणि शब्द रसाल।
झूमत चलत बजत पग पायल, लजवत राज मराल।
मृदु मुसकाय बजाय मुरलि–धुनि, मोहत सब ब्रजबाल।
सो 'कृपालु' मम जीवनधन पिय, नँदनंदन गोपाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

कहुँ देखे जशुदा लाल रे।
केकी–पक्ष शीश पै जाके, अलकनि बिखरी गाल रे।
जाके सरस रसीले नैना, केसर तिलक सुभाल रे।
जाके कंध लकुटि अरु कामरि, गल कौस्तुभमणि माल रे।
कटि किंकिनि पग पायल जाके, हंस लजावनि चाल रे।
जाके अंग 'कृपालु' त्रिभंगी, बैनन वेनु रसाल रे॥

6

कान्ह की जादूभरी मुसकान।
जिन देखी तिन बिसरी गई छिन, लोक–वेद–कुल कान।
जिन नहिं देखी तिन देखन कहँ, टेरत मुरलिहिं तान।
जिन नहिं देखी, सुनी तिनहुँ मन, लहकत सुनि गुन–गान।
जिन नहिं भान तनुहुँ तिन ज्ञानिहुँ, छुटत समाधिन ध्यान।
देत 'कृपालु' चुनौती हरि कहँ, मोहिं मोहहु तब जान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

7

कुंज बिच विहरत कुंज बिहारी।
लै अरविंद वृंद कर पिवु को, सजवति नखशिख प्यारी।

पीत पाग पर अरुण–कमल धरि, बलि बलि जात निहारी।
पीत कमल की नवल कलिन लै, करनफूल श्रुतिधारी।
नील कमल को बलय युगल कर, लटकनि कलिन सँवारी।
नील पीत अरु अरुण कमल की, गर मनहर माला री।
करि 'कृपालु' शृंगार लली इमि, लखि निज सुरति बिसारी॥

8

खरे हरि कुंज–लतान तरे।
सा रे ग म प ध नि सुरन सों पुनि पुनि, मुरलिहिं तान भरे।
तानन श्री वृषभानुलली के, गुनगन गान करे।
करत ललिहिं गुन–गान मूँदि दृग, तिनकोइ ध्यान धरे।
धरत ध्यान देखन कहँ छिन छिन, नैनन प्रान लरे।
परत 'कृपालु' आन जब प्रानन, तब ही जानि परे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

9

चलत झुकि झूमि झूमि नँदलाल।
इत उत लखत चपल चितवनि ते, घूमि घूमि गोपाल।
अलकनि झूमि झूमि मुख चूमति, घूमि घूमि घुँघराल।
पुनि पुनि मोर–मुकुट झुकि झूमत, चूमत कुंडल गाल।

झूमत गुंजमाल गल चूमति, बेसर अधर रसाल।
मुरलि 'कृपालु' झूमि झुकि चूमत, सर्वाधिक मुख लाल॥

10

चपल तोरि, चितवनि की बलि जाउँ।
देखतहूँ नहिं देखत पुनि पुनि, देखन कहँ ललचाउँ।
चुवत प्रेम–पीयूष निरंतर, पियत न नेकु अघाउँ।
दृग सोइ श्रीपति के यद्यपि पै, तेहि लखि नहिं सुख पाउँ।
मुखहूँ सोइ श्रीपति के पै नहिं, मृदु मुसकनि मन भाउँ।
जब लौं मिलइ 'कृपालु' सिता क्यों ? तब लौं हौं गुड़ खाउँ॥

11

चुरावति चित चितवनि नँदलाल।
COPYRIGHT
यद्यपि महाविष्णु के ऐसेहिं, लोचन कमल विशाल।
RADHA GOVIND SAMITI
पै ना जाने का जादू सखि, इन चितवनि गोपाल।
इन महँ रति–रस–सरस–प्रेम–रस, छलकत रह सब काल।
लखत लटू ह्वै जाति भटू सब, उमा रमा सी हाल।
इक 'कृपालु' चितवनि महँ मुर्छित, गिर्‌यो काम बेहाल॥

12

दृगन बिच हलकैं अलि अलकें।
हम पल पल ललकें देखन कहँ, लखन न दें पलकें।
चंचल नैन प्रेम रस छलके, श्रुति कुंडल हलके।
नासा भल मुक्ताहल हलके, पीतांबर झलके।
मुरि मुरि मृदु–मुसकनि लखि भल के, पुनि पुनि दृग ललके।
लखु 'कृपालु' तुमहूँ हरि अलकें, प्रेमनगर चलके॥

13

देखु सखि! झूमत आवत श्याम।
गति मदमत्त गयंद लजावत, मनभावत ब्रजबाम।
झुकि झुकि झोंके खाति चंद्रिका, झुकी ग्रीव दिशि बाम।
मुख आवति पुनि पुनि लटकारी, घुँघरारी अभिराम।
मुरली मधुर बजाय बुलावत, लै लै सखियन नाम।
लखि 'कृपालु' अनुपम छवि लाजत, कोटि कोटि शत काम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

14

देखु सखि! नागर नंदकुमार।
रसिक रँगीलो गुन गर्वीलो, नीलो रंग निहार।

लटक मुकुट सिर मटक भृकुटि वर, चटक तिलक बलिहार।
कंध पीतपट लकुटि लिपटि पट, कर मुरली रिझवार।
गोल कपोलनि अति मृदुबोलनि, मोहत सब ब्रज नार।
प्यारी प्यारी गति मतवारी, हंस लजावनि हार।
प्रति अंगनि श्रृंगार–माधुरी, लखि लाजत श्रृंगार।
लखतहिं बनत 'कृपालु' अनूपम, रूप–माधुरी–सार॥

15

देखु सखि! पीतांबर फहरान।
या पीतांबर की अति नीकी, लहर लहर लहरान।
कबहुँक दृग कबहुँक मुख कबहुँक, उर परसत हरषान।
जो कोउ बड़भागिनि पिय भेंटति, परत बीच महँ आन।
जो कोउ तिय मानिनि बनि रोवति, पोंछत तेहि अँसुवान।
धनि 'कृपालु' जो सोवत जागत, नित पिय–तनु लिपटान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

देखु सखि! बेसर–छवि छविदार।
कियो कौन तप जासु दियो इन, अस पद नंदकुमार।
आठों याम पियत यह बेसर, अधर–सुधा–रस–सार।

झुकि झुकि झूमि झूमि बड़भागिनि, चूमति मुख बलिहार।
जो कहुँ इन पीतांबर उरझत, सुरझावत रिझवार।
लखि 'कृपालु' बलि जात तबै जब, दर्पण माहिं निहार॥

17

देहु सखि! तन मन प्रानन कान्ह।
प्राकृत तन मन प्रान मोल दै, ले अमोल मुसकान।
बारेक लखि मुसकान न रहिहैं, तन मन प्रानन भान।
जो नहिं देगी दान, लूटिहैं, प्राकृत जन जिय जान।
पुनि जग जनमि जनमि मरि जैहौं, तिनहिंन तिय पति मान।
कह 'कृपालु' हौं भुज उठाय सखि! कान्हहि, प्रानन-प्रान॥

18

धरु नँदनंदन को ध्यान रे।
जाको ध्यान धरत निशि वासर, विधि हरि हर भगवान रे।
मोर मुकुट लकुटी लपटी पट, लजवति भृकुटि कमान रे।
चंचल नैन दृंगचल चंचल, अंचलपट फहरान रे।
गति मदमत्त गयंद लजावनि, मंद मंद मुसकान रे।
विहरत नित 'कृपालु' वृंदावन, रति-रस चतुर सुजान रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

19

धरु मन मनमोहन ध्यान रे।

सिर पर पीत पाग अति टेढ़ी, टेढ़ी पट फहरान रे।
रसिक रँगीली चितवनि टेढ़ी, टेढ़ी भृकुटि कमान रे।
ग्रीव कपोत मुरनि अति टेढ़ी, टेढ़ी मृदु मुसकान रे।
सुघर नासिका बेसर टेढ़ी, टेढ़ी लर मोतियान रे।
कटि किंकिनि पग पायल टेढ़ी, टेढ़ी मुरलिहुँ जान रे।
गति मति रति 'कृपालु' सब टेढ़ी, कहँ लौं करिय बखान रे॥

20

धूसरि धूरि भरे हरि आवत।

मोर मुकुट कटि कछनी काछे, मुरली मधुर बजावत।
धुनि सुनि वेनु सबै ब्रजबनिता, देखन को जुरि धावत।
काँधे लकुटि कामरी कारी, लट उरझी मन भावत।
वत्स-प्रेम रस पूरि सुरभि थन, मेदिनि क्षीर चुवावत।
सो 'कृपालु' झाँकी झाँकन हित, शंभु समाधि भुलावत॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

21

नटखट की लट घुँघराल रे।

सिगरे ब्रज की ब्रज वनितनि के, गल महँ फाँसी डाल रे।

ऊपर ते मटकावति निगुरी, मोर चंद्रिका भाल रे।
वानेइ कान भरे कछु याते, कुंडल मटकत गाल रे।
लियो मिलाय उरहुँ याते लखु, मटकत उर मणिमाल रे।
अतिकारी 'कृपालु' घुँघरारी, लट लखि हम बेहाल रे॥

22

प्रान प्रान, कान्ह तान, नैन बान मारी।
नैन सैन, पैन चैन, दैन मैन हारी।
अलक–झलक, पलक–छलक, ललक–कलक प्यारी।
रमनि–रमन, कमनि–गमन, नमनि त्रितनुधारी।
मुकुट लटक, भृकुटि–मटक, लकुटि–अटक न्यारी।
कंकन किंकिनि 'कृपालु', झननन झनकारी॥

23

COPYRIGHT
बलि जाऊँ रसीले लाल की।
RADHA GOVIND SAMITI
विलसत कटि पटपीत मनोहर, लोचन चपल विशाल की।
उर वनमाल दुकूल अलंकृत, मणिमय मुक्तामाल की।
पग नूपुर झनकार मधुर–मृदु, गवनि मत्त गज चाल की।
रोम रोम ते चुवत सुधारस, रतिरस सरस रसाल की।
निर्निमेष ह्वै लखु 'कृपालु' छवि, ललित त्रिभंग गुपाल की॥

24

मेरे नैनों को नीलमणि भाय गयो रे।
सरस रसीले नैन–सैन सों, प्रेम–सुधा–रस प्याय गयो रे।
जेहि खोजत रह रंक आजु लौं, सोइ पारस–मणि पाय गयो रे।
अगलो पिछलो भयेउ भलो सब, पगलो मोहिं बनाय गयो रे।
अब सोइ रूप अनूप प्राणधन, तन मन प्राण समाय गयो रे।
कह 'कृपालु' जब विरह पाय तब, कहिहौ धोखा खाय गयो रे॥

25

यमुन तट ठाढ़ो सुंदर श्याम।
मुकुट–ग्रीव–कटि–पद छवि बाँकी, अति बाँकी अभिराम।
लकुटी कर लपटी पट दुपटी, लखि सिहात शत काम।
कटि पट–पीत काछनी ता बिच, मुरली सुघर ललाम।
चितवनि–चोट चलावत इत उत, मनभावत ब्रजभाम।
छवि प्रतिबिंब 'कृपालु' यमुन जल, लख इक सखि तेहि ठाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

26

रसिकवर नागर नंदकुमार।
चंदन चर्चित नील कलेवर, रूप–सुधा–रस–सार।

मणिन–जटित सिर कनक मुकुट पर, मोर पुच्छ रिझवार।
अनियारे कारे घुँघरारे, कुंतल कुटिल सँवार।
मणिमंडित मकराकृत कुंडल, गंडनि करत विहार।
बाँकी भृकुटि बनी अति बाँकी, लजवत धनु जनु मार।
गरल–सुधा–मदमइ दृग–चितवनि, मृदु मुसकनि मनहार।
गोल कपोल नासिका बेसर, मुक्ताहल भल धार।
पीतांबर फहरात भात तनु, घन–दामिनि अनुहार।
गुंजमाल वनमाल अलंकृत, विविध मणिन उर हार।
युग कर कंकन कटि तट किंकिनि, काछनि अति अरुणार।
पद–नख–मणि–छवि–चंद्र–तिरस्कृत, मृदु नूपुर झनकार।
चलित दृगंचल चंचल नैननि, मोहत सब ब्रजनार।
रोम रोम लखि रूप–माधुरी, कोटि काम बलिहार।
ताहू पै 'कृपालु' मुरली धुनि, जरे लोन जनु डार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

27

रुनुक झुन, धुन नूपुर नँदलाल।
जिनके चरण–कमल नहिं आवत, शंभु–समाधिहुँ हाल।
उनके चरण–कमल पर राजत, नूपुर नित्य रसाल।

चलत सदा चरनन सँग उनकेइ, गावत गुन गोपाल।
रास–रसहिं सँग नाचत गावत, विविध सुरन दै ताल।
मूर्छित गिरत 'कृपालु' सुनत धुनि, सनकादिक बेहाल॥

28

लखी मैं सखि! सुंदर श्यामल गात।
अलकनि कुटिल मनहुँ मुख–कमलनि, अवलिन–अलि चलि जात।
कनकन मुकुट लकुटि वर कनकन, कनकन कंकन भात।
कुंडल लोल सुगोल कपोलनि, करत कलोल लखात।
दृग अंजन खंजन–मद–गंजन, जन–रंजन मदमात।
मणिन–जटित कटि तट किंकिनि धुनि, हार मणिन बहुभाँत।
पीतांबर परिधान काछनी, ता बिच वेनु सुहात।
चलत चाल अलमस्त चंद्रिका, झुकि झुकि झोंके खात।
मणि–मंडित मंजीर गुंजरति, ताहू पर मुसकात।
कोटि अनंग 'कृपालु' अंग प्रति, वारत हौं न अघात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

29

लतन में ठाढ़ो सुंदर श्याम।
ग्रीवा–कटि–पद भंगि मनोहर, लजवत कोटिन काम।

मुरली मधुर अधर धरि टेरत, लै ललितादिक नाम।
परिमल-सारस-केशर-चंदन, चर्चित तनु अभिराम।
नख शिख सब श्रृंगार सुशोभित, सुषमा सींव ललाम।
लखि 'कृपालु' छवि छकी रहें नित, सिगरी ब्रज की बाम॥

30

लाल की अति मतवाली चाल।
चलत घूमि झुकि झूमि झूमि अति, लटपटात गोपाल।
मो कहँ जानि परत इनहिंन ते, सीखी चाल मराल।
पुनि इनहिंन ते सीखी उनहुँन, हस्तिन-चाल रसाल।
लखि सो चाल न घायल हो जो, नहिं त्रिभुवन अस बाल।
कहँ लौं कहिय 'कृपालु' चाल ते, भोलेनाथ बेहाल॥

31

लाल के घूँघर वारे बाल।
लगे उखारन कौरव पुरि जब, बल यमुनहिं हल डाल।
तब जैसी यमुनहिं भँवरिनि परि, तैसेहिं लट घुँघराल।
कबहुँक विहरत हरि-मुख ऊपर, कबहुँक विहरत भाल।
कबहुँक पियत अधर रस कबहुँक, चूमत नीले गाल।
जब 'कृपालु' उड़ि परत दृगन महँ, टारत निज कर लाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

32

वारी हौं, वारी छवि, पीतपट वारी पै।
मणिन–जटित, कनक–मुकुट, लटनि–लटक कारी पै।
मुरलि–मधुर, मधुर–अधर, तान सुघर प्यारी पै।
मणिन–माल, मुक्त–माल, गुंजमालधारी पै।
नील–गाल, झलक–हलक, कुंडल छवि न्यारी पै।
कह 'कृपालु', अति रसाल, चालहिं गिरिधारी पै॥

33

श्याम की मंद मंद मुसकान।
बिसरत नाहिं सखी एकहुँ छिन, पीतांबर फहरान।
मटकनि–मुकुट लटनि की लटकनि, अटक्यो तन मन प्रान।
अति रस भरे नैन सों हेरत, टेरत मुरली–तान।
नित्य–विहार करत वृंदावन, मंजुल–कुंज लतान।
लखि 'कृपालु' छुटि जात समाधिन, शिव सनकादिक ध्यान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

34

श्याम के जादू भरे दौउ नैन।
बनि निर्दयी दई!! उर मारत, तकि तकि नैनन सैन।

इमि घायल करि मोहिं बेदरदी, बोलत अटपट बैन।
मंद मंद मुसकात ताउ पै, छीनि सबै सुख चैन।
जिन देख्यो इन नैन भूलिहूँ, तलफत तिन दिन रैन।
धनि 'कृपालु' तिन जनम सूर जिन, नैनन–बान परै न॥

35

सखि! अस रस मोहन मुसकान।
जा रस बस बरबस बिसरावत, शंभु समाधिन ध्यान।
पुनि चह सखिन लखन बारेक लखि, नहिं अघात अँखियान।
प्रति मुसकान लखत कह पुनि पुनि, अस मुसकान न आन।
कहत रहन चह नैन रोम प्रति, विधि विधिताहुँ न जान।
कह 'कृपालु' प्रतिरोम लखतहूँ, सुरपति नाहिं अघान॥

36

सजीले छैल छबीले श्याम।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
रसिक रँगीले, गुन गर्वीले, चटकीले छविधाम।
नीले तन पर अम्बर पीले, चमकीले अभिराम।
सरस–रसीले दृगन गँसीले, सी ले मन ब्रज बाम।
चलि लचकीले सखि मन कीले, मुरली ले तिन नाम।
अस पी ले 'कृपालु' रस पी ले, ही ले धरि अविराम॥

37

सब झुकि झूमत सखि! लाल पै।
सिर झुकि झूमति मोर चंद्रिका, लट झुकि झूमति भाल पै।
सुघर नासिका भल बेसर झुकि, झूमति अधरन लाल पै।
मणि–मंडित–कुंडल कानन झुकि, झूमत नीले गाल पै।
पीतांबर दुकूल झुकि झूमत, गल गुंजन वनमाल पै।
मो 'कृपालु' मनहूँ झुकि झूमत, बाल मरालनि चाल पै॥

38

सबै सखि! चूमत मुख नँदलाल।
झुकि झुकि झूमि झूमि चूमति मुख, लटकारी घुँघराल।
कानन कुंडलहूँ झुकि झूमत, चूमत मुख गोपाल।
नासा बेसरहूँ झुकि झूमति, चूमति मुख सब काल।
मोहन कर मुरलिहुँ झुकि झूमति, चूमति मुखहिं रसाल।
करत 'कृपालु' रास झुकि झूमति, चूमति मुख ब्रजबाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

39

हम किंकर कुंज बिहारी के।
रहहुँ निडर नहिं डरहुँ, डरहुँ डर, केवल बल बनवारी के।

विचरौं झूमि झूमि ब्रज वीथिन, गाऊँ गुन गिरिधारी के।
खाऊँ टूक पिवूँ यमुना जल, दास न लोटा थारी के।
लखि व्यवधान विधान वेद को, ढिंग न जाउँ श्रुति चारी के।
करि करि सुरति 'कृपालु' जाउँ बलि, चरित यार की यारी के॥

40

हम देखे श्यामलगात रे।
मधुर मधुर धुनि बेनु बजावत, गैयन पाछे जात रे।
काँधे कनक लकुटि कामरि अरु, पीतांबर फहरात रे।
चितवनि–चोट चलावत मुरि मुरि, मंद मंद मुसकात रे।
सँग धनसुख मनसुख श्रीदामा, अगनित सखन जमात रे।
झूमि 'कृपालु' चलत पुनि देखत, घूमि यशोमति मात रे॥

41

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हमारो अलबेलो नँदलाल।
झूमत चलत प्रमत्त चाल सों, लजवत बाल मराल।
अति रस भरे नैन जित घूमत, तित सब होत बेहाल।
मोर मुकुट पट पीत मनोहर, लट उरझी घुँघराल।
श्रुति कुंडल नासा भल बेसर, उर दुकूल वनमाल।

पग नूपुर कटि किंकिनि अरु मुख, मुरली शब्द रसाल।
लखतहिं बनत 'कृपालु' न बरनत, कुकवि बजावत गाल॥

42

हमारो ऐसो मदन गोपाल।
जैसो नहिं कहुँ तीनि लोक महँ, ह्वैहैं तीनिहुँ काल।
बिनु प्रयास जो सकल जगत को, पालन बनि प्रतिपाल।
सोइ माँगत यशुमति ते रोटी, ठुनकि ठुनकि नँदलाल।
जिनके भय भयभीत होत भय, अमित काल जेहि गाल।
सोइ 'कृपालु' छुपि सभय खात रज, लखि न लेइ कोउ ग्वाल॥

43

हमारो ऐसो सुंदर श्याम।
COPYRIGHT
जैसो नहिं कहुँ तीनि लोक महँ, कारुणीक अभिराम।
RADHA GOVIND SAMITI
जो नहिं गयेउ बुलायेहु पै नृप, दुर्योधन के धाम।
सोइ सप्रेम लगवाय तिलक किय, कुबरिहिं पूरनकाम।
जिनके चरण पलोटति निशिदिन, पद्माहूँ सी बाम।
सो 'कृपालु' बलि जात पलोटत, कुंजविहारिणि पाम॥

44

हमारो, कान्ह प्रान को प्रान।
आजु सखी! हौं करन गई रहि, यमुना महँ असनान।
तहँ दुर्वासा मरम बतायो, दै वेदादि प्रमान।
मुनि इमि कह इंद्रिय मन बुधि कहँ, जिमि प्रिय प्रान बखान।
तिमि इन प्रानन प्रान जान उन, सुंदर श्याम सुजान।
कह 'कृपालु' तबही सखि! लागत, प्रानन प्यारो कान्ह॥

45

हमारो ठाकुर नंद कुमार।
चिदानंदमय नील बदन पर, इंद्रनील मणि वार।
मुकुट ग्रीव कटि पद टेढ़ो करि, ठाढ़ो कुंज मझार।
सुबरन बरन लसत कटितट पट, मुकुट लटक बलिहार।
काँधे लकुटि भृकुटि अति बाँकी, कटि काछनि रिझवार।
शुक सनकादि 'कृपालु' लखत नित, लता विटप तनु धार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

46

हमारो छैल छबीलो श्याम।
रसिक रँगीलो गुन गर्वीलो, नीलो तनु अभिराम।

धेनु चरावत बेनु बजावत, अति मनभावत भाम।
झूमत मोर मुकुट मुख चूमत, घूमत लट छविधाम।
काँधे पीतपटी दुपटी कर, लिपटी लकुटि ललाम।
कर कंकन कटि किंकिनि बाजति, पायल बाजति पाम।
कर 'कृपालु' जब नैन–सैन तब, ह्वै गयो काम तमाम॥

47

हमारो, दृग–अंजन नँदलाल।
कुंचित कच निकुरंब विडंबित, विलुलित–अलि–कुल–माल।
सिर शिखि पुच्छ तिलक गोरोचन, लोचन कमल विशाल।
मत्त मधुव्रत गुन गुन गुंजित, गल दोलित वनमाल।
मंद–स्मित–मुख–चारु विलोकनि, मोहिनि सब ब्रजबाल।
कटि किंकिनि कलरव मनरंजिनि, मुखरित बेनु रसाल।
चलत 'कृपालु' झूमि झुकि लटपट, लजवत चाल मराल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

48

हमारो पिय प्रानन प्यारो।
जाको अंग अंग अस प्यारो, शत अनंग वारो।
झूमत मोर मुकुट मतवारो, कनक मुकुट न्यारो।

कच केतिक कारो घुँघरारो, श्रुति कुंडल धारो।
लोचन चपल सहज कजरारो, जेहि मोहिनि डारो।
कह 'कृपालु' एतिक प्यारो पिय, रसिकन कह कारो॥

49

हमारो प्रियतम नंदकिशोर।
नील जलद रुचि–रुचिर कलेवर, रसिकन को सिरमोर।
मनमाने अलसाने नैना, श्रीमुख चंद्र चकोर।
अद्भुत रूप–विलास–विलोकनि, परमहंस चितचोर।
ब्रजरस ब्रज वीथिन बरसावत, होत साँझ ते भोर।
हम 'कृपालु' नित पियत प्रेम रस, गौर–श्याम–रस घोर॥

50

हमारो बाँको सुंदर श्याम।
बाँकी मोर मुकुट की लटकनि, बाँकी लट अभिराम।
बाँकी मटक भृकुटि अति बाँकी, बेसर नासा ठाम।
बाँके नैन सैन अति बाँके, बाँके पट उरधाम।
मधुर मधुर मृदु मुसकनि बाँकी, बाँकी ग्रीव ललाम।
बाँको कटि तट नूपुर बाँको, बाँको वाको पाम।
सब 'कृपालु' बाँको अति बाँको, बाँको वाको काम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

51

हमारो रसिक रँगीलो श्याम।
इंद्रनीलमणि–नील कलेवर, लखि लाजत शत काम।
छलकत प्रेमसुधारस चितवनि, मृदु मुसकनि अभिराम।
मधुर मधुर धुनि वेनु बजावत, मनभावत ब्रजभाम।
कबहुँ सखन सँग कबहुँ सखिन सँग, विहरत आठों याम।
लखत 'कृपालु' शंभु शुक झाँकी, श्री वृंदावन धाम॥

52

हमारो राधावल्लभ प्रान।
कोटिन प्रान वारि दउँ लखि सखि! नेकु मंद मुसकान।
चितवनि चपल लखत अपलक दृग, कलप पलक सम मान।
झूमत मुकुट लटनि मुख चूमति, घूमति भृकुटि कमान।
लकुटिहिं लपट पीतपट अटपट, काछनि नट उनमान।
सो 'कृपालु' रस को बखान जब, टेरत मुरलिहिं तान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

53

हमारो श्री वृंदावन चंद।
सद्घन चिद्घन आनँदघन जोइ, बन्यो सोइ नँदनन्द।

परमात्मा की परम आत्मा, राधा कह श्रुति छंद।
युगल एकरस रस बरसावत, सरस रास आनंद।
वृंदावन निधिवन गहवरवन, विहरत आनँदकंद।
फिरत 'कृपालु' शंभु से जिनके, परे प्रेम के फंद॥

54

हमारो साँचो मीत गोपाल।
मणिन जटित सिर कनक मुकुट जनु, बहुरंगी बिधु–बाल।
तापर मोरपुच्छ झुकि झूमत, लहि प्रमत्त गज–चाल।
कारी लट बल खाति एक सँग, जनु अगनित तिय व्याल।
गोल कपोल लोल श्रुति कुंडल, लोचन चपल विशाल।
भृकुटी रुचिर नासिका बेसर, केसर तिलक सुभाल।
दुहुँन कंध लकुटी अरु कामरि, बैनन बेनु रसाल।
चितवनि हँसनि गवनि लखि ज्ञानी, सनकादिक बेहाल।
करत 'कृपालु' केलि गोपन सँग, ललित त्रिभंगी लाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीराधा-माधुरी

1

अलिन सँग सोहति भानुलली।
नित नव लीला करति अलिन सँग, गहवर-कुंजगली।
गौर बदनि, मृदु हँसनि दशन-दुति, दमकति जनु बिजुली।
मणि-मंडित सिर कनक मुकुट पर, लर मोतिन अवली।
सिर चूनरि नासा नथ बेसर, लखतहिं बनत अली।
लखि 'कृपालु' तनु सुधि बिसरावत, जासु कंध कमली॥

2

अलि! लखु आजु लली सिंगार।
अंग त्रिभंग ढंग नँदनंदन, रंग अनंग निहार।
सुवरन वरन गौर तनु सुवरन, नील वरन हरि वार।
सुवरन वरन तिलक भल सुवरन, सुवरन खौरि सँवार।
सुवरन वरन पीतपट सुवरन, सुवरन काछनि धार।
सुवरन मुकुट लकुटि वर सुवरन, सुवरन सुवरन हार।
सुवरन कुण्डल सुवरन नूपुर, सुवरन पग रिझवार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

सुवरन कंकन सुवरन किंकिनि, सुवरन छवि छविदार।
सुवरन वरन 'कृपालु' हरन मन, मृदु मुसकनि बलिहार॥

3

अस भानुलली मुसकान रे।
जाकी लखि मुसकान–माधुरी, रहत न कान्हहिं भान रे।
जगमोहन मदनहुँ मन मोहन, तिन मन मोहिनि जान रे।
मृदु मुसकनि देखन हित छिन छिन, करत सखिन गुनगान रे।
मुरि मुरि मधुर मधुर मृदु मुसकनि, लखि भूलत भगवान रे।
हा हा खात परत पग सखियन, झरि लावत अँसुवान रे।
जाको लखि 'कृपालु' हरि मोह्यो, केहि विधि कौन बखान रे॥

4

इक देखी छवि मनभावनी।
सो छवि लखि लाजति कमला मम, चाल मराल लजावनी।
अनुपम छवि शृंगार माधुरी, प्रेम–सुधा बरसावनी।
मुरि मुरि बहुरि मधुर मृदु मुसकनि, बरबस रस बरसावनी।
दृग खंजन चकोर मद गंजन, चितवनि उर हरषावनी।
पै 'कृपालु' जब मान करहिं तब, मानिनि छवि डरपावनी॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

5

करु गुन आगरि–गुन–गान रे।
गुन आगरि नागरि गुन गावत, सुंदर श्याम सुजान रे।
मणिमय मुकुट चंद्रिका तापर, बिच बिच लर मोतियान रे।
गौर वदनि मृदु हँसनि, दशन दुति, नील वसन फहरान रे।
अति भोरी चितवनि ताहू ते, अति भोरी मुसकान रे।
लालहिं मेंहदी लाल मिहावरि, लाल ललिहिं मुख पान रे।
अंग अंग शृंगार सुशोभित, कहँ लौं करिय बखान रे।
गुन आगर 'कृपालु' नटनागर, प्रानन प्यारी जान रे॥

6

कहूँ का छवि सखि! गोरे ग्वाल।
तिरछी बँधी पागरी सिर पर, तिरछी लट घुंघराल।
तिरछी बँधी मोर की पंखी, तिरछी खौरि सुभाल।
तिरछी अँखियन चितवनि तिरछी, तिरछी मुरलि रसाल।
तिरछी पट–दुपटी उर फहरति, तिरछी गल वनमाल।
तिरछी किंकिनि पायल तिरछी, तिरछी अटपट चाल।
अति तिरछी मुसकनि 'कृपालु' लखि, लाजत तिरछे लाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

7

करौं का राधा तत्व बखान।
शुक सनकादि समाधि साधि जेहि, आराधत धरि ध्यान।
सोइ ज्योतिर्मय ब्रह्म, राधिका,–पद–नख–मणि–दुति जान।
ब्रह्महिं–तत्व न जान वेद जब, बुधि अतीत तेहि मान।
पुनि सो ब्रह्म प्रतिष्ठित जामे, सोई श्याम सुजान।
सोउ 'कृपालु' अवराधत तुमहू, भज राधे तज ज्ञान॥

8

किशोरी जु कि, मधुर मधुर मुसकान।
नहिं बिसरत मोहिं एकहुँ छिन कहँ, नीलाम्बर लहरान।
मणिमय मुकुट चंद्रिका तापर, तापर लर मुक्तान।
एँड़ी कहँ वेणी चूमन चह, बाँकी भृकुटि कमान।
खंजन–मंजु रसीले नैननि, मोहति श्याम सुजान।
लखि 'कृपालु' हम भोरे मुख पर, वारत तन मन प्रान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

9

किशोरी जु कि, भोरेपन की बान।
भोरे नैन विलोकनि भोरी, जा–वश श्याम सुजान।

अतिभोरे मुख की अति भोरी, मधुर मधुर मुसकान।
बलि बलि जात लाल सुनि भोरी, रति–रस की बतियान।
लखि पिय उर प्रतिबिंब सुभायन, भोरी ठानति मान।
जान 'कृपालु' कला चौसठहूँ, अचरज इहै महान॥

10

किशोरी जू के, रतनारे दोउ नैन।
सरस सुरति–रस–सरस प्रेम–रस, चुवत मनहुँ दिन रैन।
अति रसभरे नैनहूँ ते अति, सरस रसीले सैन।
घायल करत रैन दिन मोहन, नैन सैन अति पैन।
तदपि विकल पल पल देखन कहँ, बिनु देखे नहिं चैन।
सो 'कृपालु' सुख कौन भने जब, बोलति मधुरे बैन॥

11

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

किशोरी तोरे, चरनन की बलि जाऊँ।
जिन युग–चरण अरुणिमा–उपमा, पचिहारी नहिं पाऊँ।
जपा गुलाल प्रवाल आदि की, उपमा देत लजाऊँ।
मृदुता में गुलाब नवनी की, समता लखि न सकाऊँ।
जिन चरनन को चापत हरि नित, का महिमा मैं गाऊँ।
यह 'कृपालु' की चाह रैन दिन, चरनन ध्यान लगाऊँ॥

12

किशोरी मोरी, सरस प्रेम–रस खान।
जग आराध्य ब्रह्म–आराधित, रति–रस चतुर सुजान।
लखि ललितहिं लालिहिं पग चापत, लाल मनहिं ललचान।
मनिहारिनि लिलिहारिनि बनि बनि, ललिहिं रिझावत कान्ह।
गहवर–गलिन अलिन सँग हिलिमिलि, विहरति कुंज लतान।
बनि 'कृपालु' जनकादि लतन तरु, लखत त्यागि निज ध्यान।।

13

कुँवरि की चितवनि की बलिहार।
सुधा–गरल–मधु रूप धर्यो जनु, श्वेत श्याम रतनार।
दृग अंचल चंचल लखि, चंचल, चंचलताहु बिसार।
रानी, स्वामिनि, सखी, सुता की, चितवनि यदपि निहार।
पै जब पिय चितवनि सों चितवति, पिय नहिं सकत सँभार।
हौं 'कृपालु' तव सखि, मोहिं सखि लखि, चितवहु सखि अनुहार।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

14

कुँवरि नथ बेसर छवि छविदार।
धनि जिन झूमि झूमि मुख चूमति, धनि जिन तिनहिं निहार।

वा बाँकी झाँकी का कहिये, लर मोतिन बलिहार।
कनक मुकुटहूँ पर लर मोतिन, कैसो है शृंगार?।
सैंदुर काजर मेहँदी मिहावरि, चूनरि जरिन किनार।
लखि 'कृपालु' चितवनि मृदु मुसकनि, घायल नंदकुमार॥

15

कुँवरि लखि लाजत सखि! शृंगार।
कहा कहूँ छवि कनक मुकुट पर, लर मोतिन बलिहार।
सिर चूनरि नासा नथ बेसर, नयन सहज कजरार।
सेंदुर भाल पाणि मेहँदी पग, जावक सुघर सँवार।
कटि किंकिनि पग पायल अँगुरिन, बिछुवनि छवि छबिदार।
को 'कृपालु' कह चितवनि छवि कछु, जानत नंदकुमार॥

16

छबीली छवि, अलि छलियाहुँ छली।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
यह छलिया रह छलत अलिन सब, छल करि कुंज–गली।
पायो फल भल, निज छल–बल को, अति अति बुरी अली।
अब तो विलपत हा राधे कहि, हा वृषभानु–लली।
भूली दृगन विलोकनि मुसकनि, भूली सुधि मुरली।
कब 'कृपालु' सरिता चंचलता, जलनिधि माहिं चली॥

17

यमुन तट ठाढ़ीं भानु दुलार।
छवि सोरह श्रृंगार लजावति, मूर्तिमान श्रृंगार।
अति भोरी मुसकान मधुर मृदु, रसिकन की रिझवार।
रति रस–सरस रसीले नैनन, देखति यमुना–धार।
प्रत्यंगनि उत्तुंग तरंगनि, कालिंदिहुँ बलिहार।
कह कर जोरि 'कृपालु' सखिन सँग, जल बिच करिय विहार॥

18

जयति जय, जयति जयति राधे।
जग आराधे जेहि हरि, सोइ हरि, राधे आराधे।
गावत राधे नाम मुरलि महँ, रूप–ध्यान साधे।
खोजत गहवर गलिन विरह महँ, कल नहिं पल आधे।
'रा' कहि गिरत धरणि ह्वै मुर्छित, मुख कहि सक ना 'धे'।
मोहिं 'कृपालु' सखि मानु आपनी, प्रेम–सुधा गाधे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

19

धरु उन स्वामिनि को ध्यान रे।
जाकी नख–मणि–चंद्र–चंद्रिकहिं, ध्यावत श्याम सुजान रे।

जाकी नाम रूप गुण लीला, रसिकन जीवन प्रान रे।
जाकी झाँकी हित सनकादिक, धर तनु तरुन लतान रे।
जाकी भृकुटि–विलास विलोकत, परम पुरुष भगवान रे।
जाकी सुनि 'कृपालु' अस महिमा, हमरहुँ मन ललचान रे॥

20

धरु भानु नंदिनिहिं ध्यान रे।
सुवरन वरन गौर तनु दमकनि, दुति दामिनि उनमान रे।
मणिनजटित सिर कनक–मुकुट लखि, अगणित चंद्र लजान रे।
मधुर नैन की मधुर विलोकनि, मधुर मधुर मुसकान रे।
गोल कपोल नाक नथ बेसर, करनफूल दोउ कान रे।
गर दुलरी तिलरी, उर कंचुकि, नीलांबर लहरान रे।
कटि किंकिनि, पग पायल भल छवि, बिछुवनि कौन बखान रे।
रूप 'कृपालु' अनूपम कछु कछु, जानत श्याम सुजान रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

धरो मन, भानुलली को ध्यान।
जाको ध्यान धरत निशिवासर, सुंदर श्याम सुजान।
कनक मुकुट सिर चारु चंद्रिका, तापर लर मुक्तान।

चूनरि जरिन किनार गौर तनु, नीलांबर परिधान।
श्रुति ताटंक गुंथी वर वेणी, लजवति भौंह कमान।
नासा भल मुक्ताहल सोहति, मन मोहति मुसकान।
पग पायल गति अति अभिरामिनि, लखि मराल सकुचान।
पाय 'कृपालु' सरस अस स्वामिनि, चरन न कस लपटान॥

22

प्यारी तोरी, अरुण अधर-छवि न्यारी
विकसित जनु बंधूक कुसुम वर, अधर ओष्ठ-लेखा री।
प्रकट साथ मुख शशि संध्या सम, शैशव यौवन प्यारी।
उदित मुखेंदु अधर-पियूष-भू, बिंब बिंब अनुहारी।
ह्लादिन्यादि-शक्ति-गणना-मिस, अधर सुरेख सँवारी।
हम 'कृपालु' उपमान बिंबफल, राधा अधर विचारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

23

प्यारी तोरी, लट लटकनि पर वारी।
कुसुम गुच्छ गुंफित वर वेणी, जनु चूमन पग चह घुँघरारी।
ब्रह्मलीन जन जानि न पायो, इन अलकनि-रहस्य बड़भारी।
श्री मुख पेखन हित बहु तप करि, अमित रूप धर कुंजबिहारी।

सोइ कृश तनु बनि केश रूप हरि, गिरत अधो मुख चरण मझारी।
यह 'कृपालु' नहिं कछु कौतुहल, सेवक सदा चरण अधिकारी॥

24

प्यारी तोरी, वेणी लटक अति प्यारी।
कारी कारी अति घुँघरारी, अनियारी छवि न्यारी।
जनु मुख–चंद्र तिरस्कृत–तम भजि, बँध्यो पृष्ठ लट झारी।
शिखि–कलाप अरु केश परस्पर, तुमुल करत नित भारी।
लखि विधि दै गलहस्त अर्धशशि, चिह्नपुच्छ–शिखि डारी।
सब 'कृपालु' उपमान प्रकृति–भव, सो चिन्मय छवि वारी॥

25

प्रेम–रस–बोरी भानुदुलार।
रतन जटित सिंहासन राजति, लाजत लखि श्रृंगार।
मणिन–जटित सिर कनक–मुकुट पर, चारु चंद्रिका धार।
लोचन सलज सहज कजरारे, जलज लजावन हार।
झुकि झुकि परत नाक नथ–बेसर, लर मोतिन रिझवार।
कानन करणफूल मणि–मंडित, उर मुक्तन–मणि हार।
चुनरी नील नील पट कंचुकि, लहँगा नील निहार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

कर करपत्र चुरी मणि–कंकण, मेंहँदी अरुण सँवार।
पग जावक 'कृपालु' भल पायल, बिछुवनि छवि छविदार॥

26

प्रेम रस रूप अगाधा राधा।
सोइ बिनु बाधा पाय रास–रस, जोइ राधा आराधा।
नित्य विहार करति बनि सहचरि, रस न विरह पल आधा।
रासहिं रिझवत सानुराग नित, ताल राग स्वर साधा।
निरतत दिव्य हाव–भावन सों, कहि धा तिर–किट–धा–धा–धा।
लहि 'कृपालु' इमि युगल–रास–रस, होति धन्य बिनु बाधा॥

27

बलि जाउँ लली वृषभान की।
COPYRIGHT
रूप उजारी भानुदुलारी, प्रानन प्यारी कान्ह की।
RADHA GOVIND SAMITI
रति–रस–बातन, बितवति रातन, घातन नेह सुजान की।
गति गज गामिनि, छवि अभिरामिनि, दुति दामिनि उनमान की।
मंजु निकुंजनि भृंगनि पुंजनि, गुंजनि सुनि किय मान की।
हम 'कृपालु' मानिनि लखि स्वामिनि, करत निछावर प्रान की॥

28

बलि जाउँ लली सुकुमार की।
सकल सहेली संग नवेली, अलबेली सरकार की।
नवल किशोरी, रति–रसबोरी, भोरी भानुदुलार की।
अभिरामिनि, गजगामिनि भामिनी, स्वामिनि नंदकुमार की।
रूप उजागरि राधा नागरि, जनु मूरति शृंगार की।
लखि 'कृपालु' छवि सुधा–माधुरी, पियत प्रेम–रस धार की॥

29

मम स्वामिनि गुन की आगरी।
गति गज गामिनि छवि अभिरामिनि, राधा नामिनि नागरी।
रूपहिं देति साँचु जो रूपहिं, प्रकटी रूप उजागरी।
गहवर–मंजु–निकुंजनि पुंजनि, विहरति अति अनुराग री।
कुँवरि चरन चापन हित आपन, ब्रह्म मनावत भाग री।
पग पर धरत 'कृपालु' पागरी, सरस–प्रेम–रस–पाग री॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

30

मम स्वामिनि छवि अभिरामिनी।
गौर वदनि, मृदु हँसनि दशन–दुति, दमकति जनु दुति दामिनी।

रोम रोम ते प्रेमसुधारस, छलकावति नित भामिनी।
सो रस पियत अघात न मोहन, मानि आपनी स्वामिनी।
चलति लली झुकि झूमि झूमि इमि, लजवति गति गजगामिनी।
लखौं 'कृपालु' कबहुँ हमहूँ छवि, स्वामिनि राधा नामिनी॥

31

मम स्वामिनि राधा नामिनी।
रति–रस–सरस–रास–रस लंपट, रसिक शिरोमणि स्वामिनी।
त्रिभुवन–मोहनहूँ मन मोहिनि, लजवति गति गज–गामिनी।
अगणित उमा रमा ब्रह्माणी, गावति गुण गण भामिनी।
विहरति ललित लवंग निकुंजनि, संग सखिन दिन यामिनी।
कृपा कृपालु 'कृपालु' किशोरिहिं, लखि सक छवि अभिरामिनी॥

32

मोहिं स्वामिनि! अपनी मान रे।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
तुम्हरे चरण कमल कहँ ध्यावत, गावत नित गुनगान रे।
भुक्ति मुक्ति नहिं माँगति स्वामिनि, माँगति यह वरदान रे।
करौं टहल बनि महल टहलिनी, उर न कामना आन रे।
देउँ बुहारी पलकनि महलनि, लेउँ कबहुँ पिकदान रे।
खाय 'कृपालु' जाउँ बलि कबहुँक, जूठन मुख के पान रे॥

33

रँगीली राधा रसिकन प्रान।
सरस किशोरी की रसबोरी, भोरी मृदु मुसकान।
सुबरन बरन गौर तनु सुबरन, नील बरन परिधान।
कनकन मुकुट लटनि की लटकनि, भृकुटिन कुटिल कमान।
कनकन कंकन कनकन किंकिनि, कनकन कुंडल कान।
लखि लाजत शृंगार लाड़लिहिं, कहँ लौं करिय बखान।
होत 'कृपालु' निछावर जापर, सुंदर श्याम सुजान॥

34

राधे तोरे, अरुण चरण पर वारी।
तव पद–लव शोभा लखि पल्लव, नाम धर्‍यो कवि झारी।
उमा, रमा, ब्रह्माणी आदिक, सदा चरण सिर धारी।
सोइ सुहाग–सिंदूर मनहुँ भइ, चरण अरुणिमा सारी।
दोउ पद–दश नख चंद्र–चंद्रिका, चमकति चरण मझारी।
बड़भागी 'कृपालु' शशि–अंबुज, भये संग अधिकारी॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

35

रास–रस रसिक रँगीली राधा।
जा पद–नख–मणि–चंद्र चंद्रिकहिं, शंभु समाधिहिं साधा।

बिके श्याम बिनु दाम याम-वसु, जासु नाम आराधा।
जासु विरह विरहातुर हरिहूँ, रहि न सकत पल आधा।
नित्य विहार करति वृंदावन, कुंजनि प्रेम अगाधा।
किमि 'कृपालु' तहँ रहि सक सपनेहुँ, भुक्ति-मुक्ति दुइ बाधा॥

36

लखी जिन भानुलली मुसकान।
भूलि जात मुसकान मधुर तिन, सुंदर श्याम सुजान।
सो न जानि सक ज्ञानिन गर्दभ, महली रसिकन जान।
टुक मुसकान लखन हित मोहन, वारत तन मन प्रान।
लखतहिं बरबस बिसरि जाति सुधि, सनक समाधिन ध्यान।
धनि 'कृपालु' तिन गोप-वधूटिन, निरखत जिन रह भान॥

37

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लखु लालिहिं, लालहिं लाल रे।
सेंदुर लाल बाल बिच सोहत, बिंदी लालहिं भाल रे।
सोहत लाल फुलन वेणी बिच, राग लालिमा गाल रे।
अधरहुँ सहज लाल लाली के, लाल कमल गलमाल रे।
लाल रंग की कंचुकि नीकी, दृग कछु लाल विशाल रे।

लालहिं मेहँदी, लाल मेहावरि, चुनरि लाल सिर डाल रे।
कहँ लौं कहौं 'कृपालु' लली के, उरहूँ लाल गुपाल रे॥

38

लतन में ठाढ़ीं भानुदुलार।
मणिन-अलंकृत कनक मुकुट सिर, लर मोतिन शृंगार।
अति कारी एँड़ी लौं वेणी, अनियारी घुँघरार।
कानन करणफूल मणि मंडित, बिंदी अति अरुणार।
दृग रस भरे सहज कजरारे, मतवारे रतनार।
झलमलात मुक्ताहल नासा, नथ बेसर छबिदार।
मंद मंद मुसकानि दशन दुति, चंद्र लजावनि हार।
उर कंचुकि लर हार मोतियन, नीलांबर रिझवार।
कनकन कर कंकन, कटि किंकिनि, नूपुर धुनि झनकार।
लाल मिहावरि लाल ओढ़नी, लालहिं मेहँदी सार।
लखि 'कृपालु' शृंगार किशोरिहिं, भाल दिठौना डार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

39

लली की अति मतवाली चाल।
लखतहिं होत बेहाल लाल जू, एतिक चाल रसाल।

ललिहिं चाल लखि मानसरोवर, छुपि गये बाल मराल।
गये भाजि गजराज लाजवश, दुरे विपिन विकराल।
जनकादिक सनकादि शुकादिक, तजत समाधिहुँ हाल।
चाल रसाल 'कृपालु' लखति नित, बड़भागिनि ब्रजबाल॥

40

ललीदृग छवि लखि कवि भरमाये।
नयन कमल कहँ कमल-नयन कह, उलटी चाल चलाये।
आघूर्णित-पक्ष्मल-अपांग-दुति, श्वेत-अरुण दरसाये।
चंचल-इंद्रनील-गोलामल, श्यामल-तारा भाये।
मृग चकोर-दृग कमल-सार-रस, यंत्र निमेष खिंचाये।
सोइ पियूष-उद्गार समन्वित, सार सुनैन सुहाये।
अति चंचल दोउ नैन पृष्ठ सिर, कबहूँ नहिं मिलि पाये।
लखि 'कृपालु' श्रुति-कूप-पतन-भय, मनहुँ मनहिं डरपाये॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

41

ललीमुख उपमा देत लजाये।
सभय चंद्र जनु राहु-भखन-भय, राधानन बनि आये।
चन्द्रवाल-कर-चक्रवाल जनु, अधर बिंब पद पाये।

अर्धचंद्र सम भाल निम्न पुनि, पूर्ण चंद्र छवि छाये।
यह मुख छवि चंद्राधिक सोहति, भ्रू–कलंक विलगाये।
श्री मुख श्री प्रतिबिंब अंबु अरु, दर्पण कबहुँक पाये।
पद्म चंद्र तिन तात मित्र सों, याचि दिवस निशि भाये।
शशि 'कृपालु' मिस होड़ अजहुँ जनु, शिव सिर तनुहिं तपाये॥

42

ललली मुख लखि लाजत शृंगार।
कुंतल–कुटिल कलित कलिकनि जनु, हँसि उपमान निहार।
सघन–भंगु–भंगुर जनु बल हल, कर्षित यमुना धार।
कनक पट्टिका भाल चंचला, जनु कच जलद मझार।
पी मुख–चंद्र–सुधा–रस चपला, लई अमरता धार।
दृग–अंजन जनु ब्रह्म विजय हित, दृग इषु–किण अनुहार।
हौं 'कृपालु' कहँ लौं अनुपम की, उपमा कहौं गमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

43

लली सी छैल छबीली नाहिं।
जाके पटतर छैल छबीलो, नटवरहूँ न लखाहिं।
रसिक रँगीली गुन गर्वीली, जब कबहूँ रिसियाहिं।

रसिकन के सिरमोर श्यामहूँ, ताहि मनावन जाहिं।
जब मानिनि नहिं मान तजैं तब, सखियन सों रिरियाहिं।
लखत 'कृपालु' गौर तनु मोहन, मन ही मन सकुचाहिं॥

44

वृषभानु ललिहिं उर आनिये।
नरक, स्वर्ग, अपवर्ग आदि की, खाक वृथा मत छानिये।
तुम हो नित्य किंकरी जिनकी, तिन स्वरूप पहिचानिये।
अस उदार सरकार न मिलिहैं, उनहिंन स्वामिनि मानिये।
येहि दरबार दीन को आदर, जो जानन चह जानिये।
कह 'कृपालु' यह बात मानि मन! ललिहिं प्रेम रस सानिये॥

45

वृषभानु लली गुन गाइये।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
उनकेइ चरण कमल कहँ ध्यावत, आठों याम गमाइये।
उनकेइ नाम लेत निशिवासर, अँसुवन धार बहाइये।
उनकेइ नित्यधाम बरसाने, पुनि पुनि आइय जाइये।
उनकेइ परम पवित्र चरित कहँ, सुनिये और सुनाइये।
उनकेइ जो 'कृपालु' जन उन ते, प्रेम सुधा रस पाइये॥

46

श्री राधे जू को, अधाधुंध दरबार।
जिन वनचरिन आचरन कुत्सित, जग जेहि कह ब्यभिचार।
तिन कहँ निज सहचरि करि हरि सों, करवावति मनुहार।
जेहि रासहिं तरसति 'कमला' सी, तप करि–करि गइ हार।
तेहि वनचरिहिं सखिन किय रासहिं, को अस सरल उदार।
कह 'कृपालु' यह जानि गहहु मन! शरण गौर सरकार॥

47

श्री राधे जू को, ऐसो है दरबार।
जैसो नव–नीरद–तनु श्यामहुँ, नहिं दरबार उदार।
मार्यो चौंच जयंत जबै तब, राम धनुष सर मार।
जब लौ कह्यो न 'त्राहि त्राहि' तेहि, नहिं छोड़्यो सरकार।
क्षमेउ राक्षसिन अघ अक्षम इत, बरज्यो पवन कुमार।
जासु 'कृपालु' उदार सुभायन, शूर्पणखा भइ नार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

48

श्री श्यामा जू को, ऐसो सरल सुभाय।
जैसो नहिं कहुँ सुन्यौं न देख्यौं, हौं कह भुजहिं उठाय।

जाकी नख–मणि चंद्र–चंद्रिकहिं, शंभु समाधिहिं ध्याय।
ताके संग रैन दिन विहरति, ब्रज वनचरि समुदाय।
तजि ब्रजराजहुँ भजति, भजत जो, क्रंदन करुण सुनाय।
जासु 'कृपालु' शरण गहि गिरिधर, अशरण शरण कहाय॥

49

श्री श्यामा जू को, श्याम पलोटत पाम।
ब्रह्म सच्चिदानंद नंदसुत, जेहि कह पूरनकाम।
कोमल कमल लली पग लाली, लखि बेहाल सोइ श्याम।
बलि–बलि जात लगावत निज दृग, निज कर–कमल ललाम।
कबहुँक हरि निज उर लपटावत, चरन कमल अभिराम।
मृदु मुसकाय 'कृपालु' विलोकति, लतन ओट ब्रजबाम॥

50

सखी! ये सब के सब बौराये।
श्रीमुख–कमल जानि अंबुज चहुँ, भ्रमर निकर मँडराये।
अधर बिंब हिय जानि बिंबफल, शुक अहार हित आये।
वेणी शीश जानि जनु नागिनि, मोर–वृंद ललचाये।
मधु–वानी सुनि जानि वेनु रव, मृग–कदंब उठि धाये।
इमि 'कृपालु' वृषभानु ललिहिं लखि, सब इक सँग भरमाये॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

51

साध यह पुरवहु राधे! मोर।
बनूँ तिहारी महल–टहलिनी, करहु कृपा की कोर।
देउँ बुहारी कुंज–महल की, होत साँझ अरु भोर।
सोई रुचि राखौं करि आपन, जोइ रुचि देखौं तोर।
जब रस की बतियन महँ झगरें, तुम सँग नंदकिशोर।
तब 'कृपालु' लउँ पक्ष तिहारोइ, यह रस रसिक अथोर॥

52

हम चाकर कुंज विहारिणि के।
डरत न डर रुक्मिणि वल्लभ अरु, श्री रुक्मिणि अवतारिणि के।
मुक्ति चार मनुहार करत पै, जाउँ न ढिंग जग तारिणि के।
नित्य–विहार लखौं गहवर वन, सरस रास–रस कारिणि के।
बनि अलमस्त नाम गुन गाऊँ, शरणागत–भय हारिणि के।
जूठनि खाउँ 'कृपालु' जाउँ बलि, नित नीलांबरधारिणि के॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

53

हमारी अलबेली सरकार।
रसिक रँगीली गुन गर्वीली, रसिकन की रिझवार।

**विधि निषेध, मर्याद वेद की, रहति न येहि दरबार।
त्रिगुण, त्रिकर्म, त्रिताप नसावति, देति प्रेम–उपहार।
पलक ढाँपि राखत पुतरिन ज्यों, प्रणत भये इकबार।
डरत 'कृपालु' जासु डर गिरिधर, सो हमार रखवार॥**

54

**हमारी राधे, निराधार आधार।
पतितन ही को देति प्रेमधन, पतितन की रिझवार।
दीन जनन ही प्यार करति नित, दीनबंधु सरकार।
सहि न सकति क्रंदन पुनि अधमनि, अधम–उधारनि हार।
आये शरण प्राण सम राखत, शरणागत रखवार।
हम 'कृपालु' सरकार भरोसे, सोवत पाँव पसार॥**

55

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

**हमारी राधे, रसिकनि–जीवन–मूरि।
रसिक शिरोमणि श्यामहुँ याचत, जिन के पग की धूरि।
ललीचरन चापन हित आपन, भाग मनावत भूरि।
पल पल कलप लखात ललिहिं गये, पलक–ओटहूँ दूरि।
गहवर–मंजु–निकुंजनि–पुंजनि, रस बरसत भरपूरि।
लखि 'कृपालु' बलि जात सरस रस, ज्ञानी रहे बिसूरि॥**

56

हमारी श्यामा, रसिकन–मुकुट–मनी।
इन्द्राणी, रुद्राणी, वाणी, जेतिक मणिरमनी।
रूपध्यान साधे आराधे, राधे गजगमनी।
ब्रज महँ अस ब्रजरस बरसावति, लजत विकुंठ धनी।
भृकुटि–विलास लखत कमलापति, किमि कमला कमनी।
सोइ 'कृपालु' वनचरिन बनायो, प्रानसखी अपनी॥

57

हमारी, स्वामिनि भानुदुलार।
जाकी निशि–दिन करत खवासी, सगुण ब्रह्म साकार।
गौर बदन लखि मदन–मोहनहुँ, सुधि बुधि देइ बिसार।
लली मिलन लगि ललितादिहुँ की, करत रहत मनुहार।
मुकुट उतारि धरत पग ऊपर, मानिनि मान निहार।
लखि 'कृपालु' झाँकी बाँकी यह, करत प्रान बलिहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

युगल-माधुरी

1

अनूपम, जोरी श्यामा श्याम।
इक सोरह सिंगार सजीं इक, नटवर भेष ललाम।
गलबाहीं दै दोउ वृंदावन, विहरत आठों याम।
पुंज निकुंजनि मंजु रास-रस, खेलत पूरनकाम।
सनक समाधि छाँड़ि सनकादिक, बने विटप ब्रजधाम।
आत्माराम 'कृपालु' श्याम की, आत्मा श्यामा नाम॥

2

अनोखी, पिय प्यारी की बात।
समुझि सकी नहिं बात सखी! यह, सोचि थकी दिन-रात।
जब पिय कहँ देखहुँ तब पिय मोहिं, प्यारिहुँ-सरस लखात।
जब प्यारिहिं देखहुँ तब प्यारिहुँ, पिय ते सरस जनात।
पुनि इन दुहुँन लखहुँ जिन अंगनि, तिनहिंन रस अधिकात।
कह 'कृपालु' दोउ चिन्मय याते, नित नव रस सरसात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

जाउँ बलि, जोरी–जुगल निहार।
तनु गोरी मोहन–मन–मोहिनि, भोरी भानुदुलार।
तनु श्यामल मोहिनि–मन–मोहन, चंचल नंदकुमार।
गौर शरीर सोह नीलांबर, पुनि सोरह सिंगार।
नील शरीर सोह पीतांबर, पुनि नट–भेष सँवार।
मान 'कृपालु' न भेद दुहुँन पै, रस–स्वामिनि बलिहार॥

4

युगल रस, वृन्दावन बरसे।
रसिक–शिरोमणि, इन्द्रनील मणि, कौस्तुभ मणि सरसे।
मनि–रमनी राधा गजगमनी, कमनी मनहर से।
हावन भावन नृत्य लुभावन, गावन मधु स्वर से।
रसमय हासन–परिहासन युत, रासन मन करषे।
लाड़लि लाल 'कृपालु' दुहुँन दुहुँ, डाल बाँह गर से॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

देखु सखि, युगल नवल सरकार।
पीत वरन उत नागरि ता पर, नीलांबर बलिहार।

नील-वरन इत नागर ता पर, पीतांबर रिझवार।
उत अति सरल सुभायन मोहिनि, मोहति नंदकुमार।
इत अति चपल सुभायन मोहन, मोहत भानुदुलार।
लखि जोरी 'कृपालु' बरजोरी, शंभु समाधि बिसार॥

6

धरो मन! युगल माधुरी ध्यान।
मनमोहन मोहिनि श्यामा अरु, मोहिनि मोहन कान्ह।
इन दोउन कहँ विलग न मानिय, द्वै देही इक प्रान।
पै लीला-विलास मँह मोहन, अनुचर रसिक प्रमान।
रिझवत नित निकुंज श्यामा कहँ, मरम न सक कोउ जान।
यह 'कृपालु' रस रसिकहिं जानत, जो नित कर रह पान॥

7

बनी कस जोरी युगल-किशोर।
गरबाहीं दीने रस-भीने, छीने ले मन मोर।
श्याम गौर-दृग गौर श्याम-दृग, चितवत दृग की कोर।
श्यामल-मुख दुति गौर गौर मुख, श्यामल दुति चितचोर।
पीत बसन तनु नील इतै उत, नील-बसन तनु गोर।
कह 'कृपालु' सखि देहु दिठौना, दीठि दुहुँन बरजोर॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

8

बलि जाऊँ, युगल सरकार की।
इतै रवति सुर मधुर–मुरलिका, नागर नंदकुमार की।
उत ते आईं भानुनंदिनी, जनु मूरति शृंगार की।
कुंज कुटीर तीर कालिंदी, मिलनि दुहुँन दृग–चार की।
लखहु द्वैत–अद्वैत मधुरिमा, युगल–माधुरी–प्यार की।
यह 'कृपालु' भी चहत बूँद इक, प्रेम–पयोधि अपार की॥

9

बलि जाऊँ लाड़ली लाल की।
गरबाहीं दीने दोउ विहरत, कुंज–लतान तमाल की।
कीरति–कुँवरि गौर तनु इत, उत, श्यामल यशुमति–बाल की।
छवि सोरह सिंगार इतै उत, नट–वपु वेष रसाल की।
प्रेम दिवाने, मनमाने दोउ, लजवत चाल मराल की।
यदपि 'कृपालु' एक दोउ स्वामिनि, स्वामिनि तदपि गुपाल की॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

10

बसे रे मेरे, नैनन दोउ सरकार।
गरबाहीं दीने रँग–भीने, छीने छवि–शृंगार।

**रस मुरली ने अस सुख दीने, कीने बस ब्रजनार।
हँसनि दसन, दृग फँसनि गँसनि अस, रसनि कस न बलिहार।
दै सरबस बरबस रस-बस ह्वै, बस रस-रास मझार।
जित 'कृपालु' चितवति तित तिनहिंन, चितवति गति-मतिहार॥**

11

**युगल गल बँहियन की बलिहार।
छवि शृंगार सखी! का कहनो, लजवत 'छवि' 'शृंगार'।
बैठे महल युगल सिंहासन, आरति सखिन उतार।
कबहुँक लखत सखिन कहँ कबहुँक, एकहिं एक निहार।
लखतहिं बनत युगल मुसकनि छवि, अगनित 'छवि' छवि वार।
कहत 'कृपालु' निहार बार-इक, मोरेहुं ढँग सरकार॥**

12

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

**युगल छवि, देखि गई बलिहार।
मोर-मुकुट कटि तट पीतांबर, भ्राजति भानुदुलार।
कनक-मुकुट कटि तट नीलांबर, राजत नंदकुमार।
वेणी खुली हार उत गुंजन, केसर खौरि लिलार।
वेणी गुथी हार इत मोतिन, बिंदी अति अरुणार।**

उत हलकत कुंडल इत झलकत, करणफूल छविदार।
पै 'कृपालु' उत गौर–श्याम इत, श्याम–गौर सरकार॥

13

युगलवर, उरझनि की बलिहार।
उरझ्यो मुकुट मुकुट सों अटपट, लट सों लट घुँघरार।
करणफूल कुंडल सों, नथ सों, बेसर सुघर निहार।
नीलांबर सों पीतांबर अरु, गर हारन सों हार।
कर सों कर, पग सों पग दोउन, दृग सों दृग रतनार।
जब 'कृपालु' दोउ उर उरझानो, को सुरझावनहार॥

14

युगलवर, ठाढ़ो कुंज लतान।
COPYRIGHT
नथवारी वृषभानुदुलारी, मुरली वारो कान्ह।
RADHA GOVIND SAMITI
लखतहिं बनत जुगल जोरी की, मधुर मधुर मुसकान।
गलबाहीं दीने रँग–भीने, नैनन कीने बान।
करति निछावर प्राण सखिन लखि, प्रेम–रूप–रस–खान।
मन मोहन 'कृपालु' मन मोहिनि, टेरत मुरली तान॥

15

युगलवर, नैन नींद रहि छाय।
ललिता कह 'चलि महल सोउ दोउ, सोवन-बेला आय'।
मणिन-अलंकृत कनक पलँग भल, फूलन सेज सजाय।
तापर किय छिरकाव सुगंधित, जो दोउन मन-भाय।
पुनि तापर पौढ़े दोउ, सखियन, शयन आरती गाय।
दोउ-उर धरि दोउ कर दोउ सोवत, लखि-लखि सखि हरषाय।
करि संकेत 'कृपालु' सखिन कह, सोवहु अब सब जाय॥

16

युगलवर, रसिकन को सिरमोर।
ठकुरानी राधा महरानी, ठाकुर नंदकिशोर।
गौर वरनि वृषभानुनंदिनी, नील वरन चितचोर।
दोउ कर नित्य विहार निकुंजनि, ह्वै रस रास विभोर।
दोउ मुख चंद्र चकोर दोउ दृग, भैंटत प्रेम अँकोर।
कहत 'कृपालु' ओर दोउन लखि, हेरहु हमरिहुँ ओर॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

17

सखी सुनु, प्रिया पियहिं इक बात।
दोउन हमरो ठाकुर दोउन, प्रानन-प्यारो नात।

पै दोउन महँ कौन बड़ो सखि, यह नहिं सोचि सकात।
जब पिय सों पूछति सो प्यारिहिं, गुन गावत न अघात।
जब प्यारिहिं पूछति सोउ पिवु को, गुन अगनित गनि जात।
कह 'कृपालु' जब दोउ इक तब कत, सखि! इत मति भरमात॥

18

हम चाकर प्रीतम प्यारी के।
वृंदाविपिन बिहारी के, अरु श्री–बरसाने वारी के।
पास न फटकत महाविष्णु के, अरु उनकी घरवारी के।
चिन्मय दिव्य धाम वृंदावन, विहरत संग बिहारी के।
कबहुँक रहत पक्ष प्यारी के, कबहुँ पक्ष बनवारी के।
परत न जाल 'कृपालु' भूलिहूँ, मुक्ति पिशाचिनि नारी के॥

19

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हमारे मन, बसे युगल सरकार।
गौर वरनि वृषभानुनंदिनी, नील वरन रिझवार।
गरबाहीं दीने दोउ ठाढ़े, मंजु निकुंज मझार।
उत पहिरे नीलांबर सोहति, इत पीतांबर धार।
उत सोरह सिंगार सजीं इत, नटवर भेष सँवार।

उत सिंगार मध्य छवि सोहति, इत छवि मधि शृंगार।
बड़भागी 'कृपालु' जिन छिन–छिन, जोरी युगल निहार॥

20

हमारे माई, गौर श्याम दुइ आँखी।
गौर तेज, तिल श्याम पलक पुनि, रस–विलास–हित राखी।
माया–पलक–विलास होत हम, तलफति दृग–जल साखी।
बिनु वियोग, संयोग सुखद कम, रसिक–जनन यह भाखी।
सोइ रस प्रेम विषामृत जानत, जो बारेक रह चाखी।
चाखे पुनि 'कृपालु' नित नव–रस, रह चाखन अभिलाखी॥

21

हमारो, ठाकुर युगल किशोर।
दोउ शृंगार रूप रस सागर, दोउ रसिकन सिरमोर।
दोउ कर नित्य रास वृंदावन, नित्य साँझ ते भोर।
दोउ सेवक दोउ सेव्य परस्पर, दोउ चित दोउ चितचोर।
दोउन मिलन लगत दोउन कहँ, पल–सम कलप करोर।
दोउ 'कृपालु' कोमल–कोमल पै, दोउ कह दोउ कठोर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

22

हमारो, दोउ प्यारी प्यारो।
एक गौर तनु एक नील–तनु, दोउ नैननि–तारो।
इक धारो नीलांबर अरु इक, पीतांबर धारो।
इक सोरह श्रृंगारहिं छवि इक, नटवर–छवि वारो।
इक भोरी अति इक अति चंचल, दोउ त्रिभुवन न्यारो।
कह 'कृपालु' जब होति होड़ तब, कोउ नहिं कोउ हारो॥

23

हौं ह्वै गई प्रीतम प्यारी की।
धर्म अर्थ अरु काम, मोक्ष सुख, रुचि न तनिक इन चारी की।
बलि बलि जात टहल करि महलन, प्यारी अरु बनवारी की।
भावत टहल सबै पै अतिशय, भावत टहल बुहारी की।
जब कर मान मानिनी तब चह, टहल महल–रखवारी की।
कह 'कृपालु' यह चाह, कहाऊँ, सखि बरसाने वारी की॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लीला-माधुरी

1

अनोखी, वीणा वारी नारि।
जाकी लखि श्रृंगार माधुरी, अगनित रति बलिहारि।
चिबुक पाणि धरि कुसुम सरोवर, बैठी वीणावारि।
पूछति लली, 'अली तू को है? काकी है घरवारि?'।
'हौं लाली! हौं देवलोक की, अब लौं अहौं कुमारि।
यह संसार असार जानि हम, उर विराग लिय धारि'।
लली कहीं 'चल, महल हमारे, करिहौं टहल तिहारि'
'हमहिं लली! लै चलि सक जो मम, आदेशहिं नहिं टारि।'
'हाँ' करि, चलीं 'कृपालु' छली सँग, भोरी भानुदुलारि॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

2

अरी वो, माला बेचनिहार!
हँसि कह लाली बनमाली ते, डाली शीश उतार।
कहा नाम? काकी बेटी तू? को तिहार घरवार?।
नाँव हमार साँवरी मालिनि, नहिं पितु नहिं भरतार।

घूँघट के पट खोल मलिनियाँ, मो ढिंग नेकु निहार।
लली लजीली मालिनि लखि चट, घूँघट पट दिय टार।
घूँघट के पट हटत दुहुँन दृग, भये अचानक चार।
बेसुध कह मालिनि 'हा राधे!' 'हा वृषभानुदुलार'।
उत मालिनि कहँ लखि लालिहुँ कह, 'हा पिय नंदकुमार'।
ललिता ताड़ि तबै भेंटन मिस, परसेउ कंचुकि भार।
'छली लली छलिया, कह ललिता, ह्वै गयो बंटाढार'।
सब 'कृपालु' भजि जाहु छलै न तु, सबै छलिन सरदार॥

3

अरी वो, लीला गोदनिहार।
छवि शृंगार निहारि तिहारी, लाजत छवि शृंगार।
कौन गाम की? कौन नाम की? कौन पुरुष की नार?।
दिव्यधाम की, दिव्य नाम की, दिव्य पुरुष भरतार।
कौन काम ते गाम हमारे, आई तू सुकुमार?।
''सुन्यो कान तव रूप अनूपम, तीनिहुँ लोक मझार।
ताते ओछी जाति भेष धरि, आई बनि लिलिहार।
लंपट मिल्यो तबहुँ मो कहँ इक, कह 'प्यारी! करु प्यार'।
लीला गोदन मोहिं सिखायो, आदि पुरुष करतार''।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

लीला गोदु अंग प्रति अंगनि, नँदनंदन की झार।
लीला गोदि समोद गोद गिरि, कह 'हा भानुदुलार'।
लिय 'कृपालु' पहिचान सखिन तब, कंचुकि मुरलि निहार॥

4

"अरी ओ, मनहारिनि मनिहार।
मुनि–मन–हारिनि मनिहारिनि तू, मो मन–हारिनि हार।
जैसो रूप अनूपम तैसो, भल सोरह श्रृंगार।
नाँव गाँव है कहा तिहारो?", पूछति भानुदुलार।
'प्यारी जू! मम नाँव साँवरी, गोकुल गाँव हमार'।
'कौन तिहारो प्रियतम साँवरि?', 'प्रियतम नंदकुमार'।
पुनि पूछति 'पितु मातु कौन तव?', यह सुनि मौनहिं धार।
हिय ललितहिं कछु शंक भई तब, इकटक ताहि निहार।
कछु कछु लिय पहिचान कान्ह कहँ, चिर परिचित दृग चार।
कंचुकि तट कौस्तुभ मणि लखि कह, 'यह छलियन सरदार'।
हँसीं 'कृपालु' ललिहुँ लखि लालहिं, मिल्यो युगल सरकार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

5

इक आई मालिनि स्वामिनी!।
रूप अनूप लखी सखि जो ही, मोही सो ही भामिनी।

झूमति झुकति चलति मन भावति, लजवति गति गजगामिनी।
तनु सोरह शृंगार सुशोभित, नख शिख छवि अभिरामिनी।
श्यामल रंग अंग प्रति अंगनि, वारत रति–पति कामिनी।
लिये पारिजातादिक फूलनि, माल अनेकन नामिनी।
लली 'कृपालु' कहीं 'लै आवहु, कहहु इहैं रह यामिनी'॥

6

'कपाटनि, को नटखट खटकाय।'
जानि जानि पूछति प्यारी जू, अधरातिन मुसकाय।
हरि कह, 'हौ, माधव,' 'वसंत तुम, अबहिं न फागुन आय।'
'हौं चक्रीधर,' 'हो कुम्हार तो, घट बनाउ कहुँ जाय।'
'हौ अहि मर्दी,' 'गरुड़राज! तजि, बैकुण्ठहिं कित धाय।'
'हौं हौं हरि,' 'अरि! वानर दैया, हौं न खोलिहौं माय।'
'हौं घनश्याम', 'अहौ जो घन तो, नील गगन रहु छाय।'
'हौं धरणीधर,' 'अहौ शेष तो, जाहु पताल सिधाय।'
खोल्यो लली 'कृपालु' कपाटहिं, लालहिं बहुत खिझाय॥

7

गई लखि, दीपावलि बलिहार।
जगमग–जगमग जगमगात गिरि, गोवर्धन रिझवार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

लखि जाकी बाँकी झाँकी कहँ, दउँ बैकुण्ठहुँ वार।
इत ललितादि सखिन सँग विहरति, अलबेली सरकार।
उत मधुमंगलादि सँग क्रीड़त, नागर नंदकुमार।
निज–निज साज साजि दोउ दल चल, मानसि–गंग मझार।
इक तट नटखट दल इक तट दल, राजत भानुदुलार।
दोउ दल निज–निज कनक–दीपकन, डार्‌यो जल मझधार।
दोउ कर अँजुरिन जल हलकोरत, दीपन–छवि छविदार।
झलमलात दोउ दल दीपावलि, हिल–मिल भये इकसार।
लखि 'कृपालु' कह, पुनि–पुनि जय हो, दीपावलि शृंगार॥

8

चलीं ललि, आजु छलन नँदलाल।
COPYRIGHT
मुकुट मयूर–पुच्छ–गुच्छन सिर, खौरि तिलक दिय भाल।
RADHA GOVIND SAMITI
दुपटी, पीतपटी, लकुटी कर, गर–गुंजन–वनमाल।
छूटी लट, कानन कुंडल मुख, मुरली–शब्द रसाल।
काछनि काछे कटितट अटपट, नटखट सौं चलि चाल।
गोरे ग्वाल भानुपुर के बनि, गइँ 'कृपालु' ढिंग लाल॥

9

चले बनि, मालिनि बनमाली।
करि सोरह सिंगार धरे सिर, फुलनहार डाली।
पहुँचे श्री वृषभानु भवन जहँ, अलिन संग लाली।
टेरि कह्यो मालिनि यह आई, नंदगाम वाली।
जो ब्रजबाल माल ले आली!, ले निज गल घाली।
ताको श्याम गुलाम होय लखु, आजुहिं नहिं काली।
'जाउ बुलाउ ल्याउ,' कह लाली, 'सुनु ललिता आली'।
चली लली के महल अली सँग, मालिनि गति जाली।
लाल 'कृपालु' छली अति लाली, अति भोलीभाली॥

10

छुवो जनि, कान्ह मान लो बात।
हम गोरी वृषभानु–किशोरी, तुम हो श्यामल गात।
कारी ह्वै गइ कालिंदीहूँ, तुम्हरे न्हातहिं न्हात।
यद्यपि तुम जानत, हौं मानति, हमरो तुम्हरो नात।
तदपि छुवो जो ह्वै हौं कारी, सुबरन बरन नसात।
सुबरन माहिं 'कृपालु' कसौटिन, रंग न लागि सकात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

11

युगलवर, जल विच करत विहार।
जुरि गोरिन, जलजन भरि झोरिन, घेरि लईं रिझवार।
नैन-सैन लहि भानुलली को, सज्जित सखिन अपार।
लै कर-कमल कोउ डरपावति, कोउ चुपके कर धार।
कोउ धावति, कोउ घात लगावति, करि दृग-कमलन वार।
खेलत दुरत भजत जल बिच हरि, बह्यो जाय मझधार।
लखि कौतुक-विचित्र कालिंदिहुँ, रोक दई निज धार।
यह 'कृपालु' येहि जल विहार पर, बार बार बलिहार॥

12

देखु सखि, द्वै सावन सँग भाय।
सावन महँ जनु तनु धरि सावन, रस बरसावन आय।
इत सावन घनश्याम उतै जनु, तनु घनश्याम जनाय।
इत सावन दामिनि दमकनि उत, पीत-वसन फहराय।
इत सावन नभ इंद्र-धनुष उत, मणिगण मुकुट लखाय।
इत सावन बरसावत जल उत, आनँद-जल बरसाय।
इत सावन तृण हरित अवनि उत, काछनि हरित सुहाय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

इत सावन दादुर धुनि उत पग, नूपुर शब्द सुनाय।
दोउ 'कृपालु' मनभावन सावन, हिलि मिलि भल छवि छाय॥

13

देखु सखि, स्वामिनि को शृंगार।
मणिन–जटित सिर कनक–मुकुट पर, मोर–पंख रिझवार।
मणि–मंडित मकराकृति कुंडल, बेसर सुघर सँवार।
मटकनि भृकुटि, लटनि लटकनि पट, अटकनि लकुटि निहार।
कनकन–कंकन कनकन किंकिनि, पुनि पायल झनकार।
गति अटपट लटपट लखि नटखट, कह पुनि–पुनि बलिहार।
कह 'कृपालु' जब निरख गौर तनु, तब का गति ? सरकार॥

14

नचत ता, थेइ थेइ नंदकुमार।
सखियन कहत 'ततत ता थेइ थेइ', मंजु निकुंज मझार।
बजत चरन छूम छननन नूपुर, किंकिनि धुनि झनकार।
हस्तक, मस्तक, कटि, पद, भृकुटिन, भेद दिखाउ निहार।
बाजत चंग, मृदंग ढोल, ढप, सबै सुरन इक सार।
पंचम सुर सों कुंज–विहारिणि, गावति राग मलार।
कबहुँ बिलंबित, कबहुँ मध्य लय, कबहुँक द्रुत लय धार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ललितादिक संगीत स्वामिनिहुँ, करत स्वरन विस्तार।
कहत 'कृपालु' सखिन सब 'जय हो, जय हो जय बलिहार'॥

15

नवल लिलिहारिनि की बलिहार।
लखी लली! मैं भली, अली कह, कुंज गली लिलिहार।
मोही मोही, जोही जोही, सोही मोही नार।
अगणित मणि-गण-किरण-विभूषण, अगणित विधुगण वार।
गज गामिनि, अभिरामिनि भामिनि, दुति दामिनि अनुहार।
सुनि 'कृपालु' गुन गुनगर्वीली, लिय बुलाय सरकार॥

16

बनायो, हरि नाइनि को भेष।
करि सोरह सिंगार नवेली, लाजत लखि राकेश।
लिये मिहावरि पाणि चली, वृषभानु लली के देश।
सखिन-समेत लखति श्री राधे, जनु दृग बिनुहिं निमेष।
प्रेम सहित बैठारि नाम कुल, पूछति चकित अशेष।
रचति मिहावरि प्रीति दुरावति, दुरति न सो लवलेश।
गिरि 'कृपालु' राधे-पद मुर्छित, लखि सखि कहीं 'ब्रजेश'॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

17

बनायो, हरि योगिनि को भेष।
भसम लगाय श्याम इमि सोहत, जिमि किय भेष महेश।
देखत बनत साँचु जनु योगिनि, अंतर नहिं लवलेश।
लाड़लि–महल चली इकली जहँ, कमलाहूँ न निवेश।
बातन कछुक बनाय पाइ गयो, महलहुँ माहिं प्रवेश।
हाव भाव रँग रूप देखि भइ, शंका सखिन विशेष।
कंठमाल देखन मिस देख्यो, भृगु पद चिह्न रमेश।
कह 'कृपालु' यह छली लली को, आयो छलन ब्रजेश॥

18

बने अलि, लाली वनमाली।
सुनी कहति नहिं सखी! लखी मैं, इन अँखियन काली।
उर कंचुकि सिर सुरँग चूनरिन, पचरँग भल जाली।
मधुकर श्रेणी सम वर वेणी, काली घुँघराली।
कानन करनफूल भल झलकत, जनु मकरिहिं पाली।
नासा नथ बेसर लर मोतिन, अनुपम छवि वाली।
कर चूरी करपत्र मूँदरिन, भल मेहँदी लाली।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पग पायल अरु अरुण मेहावरि, लखत बनति आली।
करि सोरह श्रृंगार मनहुँ भये, लाल साँचु लाली।
मन सोचत 'कृपालु' तबहूँ तनु, काली की काली॥

19

बने मनिहारिनि नंदकुमार।
लखि मन हारिनि मनिहारिनि छवि, पनिहारिनि बलिहार।
रूपहुँ जासु लजात रूप अस, पुनि नख शिख श्रृंगार।
नीली पीली भल चमकीली, चूरिन निज सिर धार।
चली लली के महल अकेलिहिं, 'चूरी लेहु' पुकार।
लली बुलाय 'कृपालु' अली सँग, लै गइँ महल मझार॥

20

युगलवर, जेंवन की बलिहार।
COPYRIGHT
मणिन-जटित चंदन-पीठासन, राजत दोउ सरकार।
RADHA GOVIND SAMITI
कनक-थार महँ कनक कटोरिन, साजीं सखिन सँवार।
पुनि तिन महँ परसीं बहु व्यंजन, षटरस सरस अपार।
पुनि कर-जोरि कहेउ, 'आरोगहु, सखिन प्राण-साकार'।
पिय प्यारी-मुख, प्यारी पिय-मुख, हँसि हँसि ग्रासहिं डार।

सखिन समाज साज सँग गावति, मधुर स्वरन जेंवनार।
लखि 'कृपालु' सो बाँकी झाँकी, को न प्राण दे वार॥

21

यमुन जल, विहरत नंदकुमार।
घनन घनन घन सघन गगन पै, गरजि तरजि बलिहार।
चमचम चमकति चपल चंचला, रिमझिम परत फुहार।
सखि परिकर दोउ कर हरि पर कर, जल अँजुरिन बौछार।
घूमि घूमि झुकि झूमि झूमि हरि, हूमि हूमि जल डार।
नाचत मनहुँ मयूरिन संग लै, पंख मयूर पसार।
हार मानि लइ जब 'कृपालु' हरि, हँसीं सबै ब्रजनार॥

22

श्याम सखी अति सुघर नवेली,
भानुललिहिं चुरियाँ पहिरावति।
लली कमल–कोमल–कर–अँगुरिन,
चापि सकोरति अति मन भावति।
पुलक, स्वेद, तनु थर–थर काँपत,
हँसि–हँसि प्यारी सों बतरावति।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

उमग्यो परत प्रेम–रस–अंबुधि,
बिनु चुरियाँ चुरियान पिन्हावति।
उठि सँभारि सुधि–देह साँवरी,
दौरी वेगि कदली–दल लावति।
धरि तर पात चढ़ावत पुनि पुनि,
बेर बेर चुरियाँ चटकावति।
प्रिया भरति मधुभरी–सिसकारी,
मुख सकोरि भौं मोरि नचावति।
भइ मतिभोर छुट्यो कर ते कर,
इकटक चित्रलिखी दरसावति।
दुहुँन केर अद्भुत गति लखि, सखि,
ललितादिक मन विस्मय लावति।
मुर्छित गिरी अवनि मनिहारिनि,
'मेरी प्यारी राधे!' गावति।
ललिता कह 'यह जशुमति जाई,
सुनी रही जो साँचु जनावति'
'भूत भूत' कहि भजीं सखी सब,
प्रिया पिया निज कंठ लगावति।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अब 'कृपालु' उघरे दृग–छल–दोउ,
ललिहिं लाल बहुभाँति रिझावति॥

23

सखी कछु, प्रियतम बात सुनाय।
सुनु सखि! तन कारो मन कारो, कारो करतब वाय।
सखि कह हौं मानत सब कारो, तबहुँ तोहिं मनभाय।
तू न मान भल सुनु सखि! वाकी, बात न नेकु सुहाय।
सखि कह हौं मानत सुनि बातन, विरह व्यथा बढ़ि जाय।
कह 'कृपालु' सखि चलु हटु तू तो, आपनि बात बताय॥

24

होड़ है, आजु युगल सरकार।
दोउ कह, गावन हमरोइ नीको, हमरोइ स्वर–विस्तार।
आईं निर्णय हेतु विशाखा, सँग लै सखिन अपार।
गौरी राग लगे गावन दोउ, मधुर सुरन बलिहार।
कहीं विशाखा, 'गावन दोउन, यद्यपि है इकसार।
तदपि 'कृपालु' ललिहिं कलकंठहि, अधिक मधुरता धार'॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

महासखी-माधुरी

1

इंदुलेखा सखियन गल हार।
सोहति अति हरिताल बरन तनु, रूप-माधुरी-सार।
पहिरे दाड़िम-बरन वसन सब, लखि लाजत शृंगार।
रति-रस-प्रेम-कलानि सिखावति, सदा युगल सरकार।
मोहन, वशीकरण-मंत्रादिक, सब की जाननिहार।
याही ते 'कृपालु' यह दोउन, अति प्रिय सखिन मझार॥

2

चंपकलता, सखिन-सिरमोर।
चंपक बरनि सुतनु मनहरनी, नित रह प्रेम-विभोर।
पहिरे तनु सोहति नीलांबर, अंबर-दुति लिय चोर।
व्यंजन विविध बनाय खवावति, नित उठि जुगल किशोर।
जानत प्रीति रीति सब बातन, घातन नेह अथोर।
जेहि विधि पाव 'कृपालु' दोउ सुख, सोइ कर, नित उठि भोर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

तुंगविद्या सखियन सरताज।
गौर बरनि, तनु–सुंदरता लखि, सुंदरताहूँ लाज।
पहिरे पांडुर–वसन मनोहर, अंग–अंग छवि छाज।
विविध राग लै तान सुनावति, साजि सबै विधि साज।
गुन–आगरि, नागरि तहँ राजत, जहँ दोउ रहे बिराज।
लखि 'कृपालु' दोउन रुचि रिझवत, महरानिहिं महराज॥

4

रंगदेवी सखियन सरनाम।
पुंडरीक–किंजल्क बरन तनु, लखि लाजत शत काम।
पहिरे वसन जपा कुसुमन रँग, सोहति अति अभिराम।
विविध भाँति भूषण पहिरावति, नित प्रति श्यामा–श्याम।
परम चतुर शृंगार–कला महँ, नहिं पटतर कोउ बाम।
रहति 'कृपालु' निकुंजविहारिणि, संगहिं आठों याम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

विशाखा सखि, सखियन सरदार।
दामिनि–दुति सम गौर कलेवर, दमकत सुषमा सार।

पहिरे वसन मनोहर सोहति, तारागन अनुहार।
रंग बिरंगे वसन पिन्हावति, सदा युगल सरकार।
जनु प्रतिबिंब संग श्यामा के, रात दिवस इकसार।
जानत सबै 'कृपालु' रीति–रस, प्यारी सों अति प्यार॥

6

सखिन महँ, नामी चित्रा नाम।
कुमकुम बरनि सुसोहति तनु–दुति, मोहति कोटिक काम।
पहिरे कनक–वसन तन मनहर, सुंदर अति अभिराम।
सौरभ सुरभित सकल सरस–रस, प्यावति श्यामा–श्याम।
दोउन रुचि जिय जान, चतुर अति, रसिक रँगीली बाम।
छिन–छिन बढ़ति 'कृपालु' प्रीति उर, संग रहति वसुयाम॥

7

सखिन महँ ललिता परम प्रधान।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
गोरोचन सम तनु–दुति दमकति, रति–रस–चतुर सुजान।
पहिरे पट परिधान मनोहर, मोर पुच्छ उनमान।
बीरी रुचिर बनाय खवावति, श्यामा–श्यामहिं पान।
प्यारी पी के ही के नीके, संकेतहिं पहिचान।
जेहि विधि बढ़े 'कृपालु' दुहुँन रति, तिमि आचरति न आन॥

8

सुदेवी सबै सखिन सिरमोर।
दामिनि-दुति दमकति तनु आभा, लेति काम चित चोर।
पहिरे सुही वसन तन सोहति, जनु सिंगार-निचोर।
वर वेनी गूँथति सुख-देनी, रिझवति युगल-किशोर।
खंजन नैन लगावति अंजन, भरि दोउ नैनिनि कोर।
मनभाई 'कृपालु' दोउन की, मुहँलग, अति बरजोर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निकुंज-माधुरी

1

अरि देखो आली, लाली को फुलन सिंगार।
फुलन की चंद्रकला सिर सोहति, फुलन की वंदनिधार।
झूमत श्रवण फुलन के झुमके, बेसर कलिन निहार।
पहुँची बाजूबंद फुलन को, फुलन को गल बिच हार।
नीलांबर पर फुलन पंक्ति जनु, तारे गगन अपार।
फुलन की पायल अँगुरिन बिछुये, वेणिहिं फुलन सँवार।
अंग अंग प्रति फुलन रंग रँग, लखि 'कृपालु' बलिहार॥

2

आजु दोउ, झूलन महँ झगरे।
जब ह्वै गयो शृंगार सबै विधि, झूलन कदम परे।
तब प्यारी प्रीतम सौं इमि कह, वचन गुमान भरे।
'तुम झूलो या हम झूलैं, नहिं, दोउ इक संग सरे'।
पिवु कह, 'दोउ इक सँग झूलैं या, रह दोउ संग खरे'।
कह 'कृपालु' दोउ एकहिं तब का, आपुहिं आपु लरे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

आजु रस, बरसत कुंजन माहिं।
मंजु-निकुंजनि-मंजुलता लखि, विधि विधिताहुँ लजाहिं।
झूला डर्‌यो कदंब डार पै, पै झूलत दोउ नाहिं।
पिय कह प्यारी ते 'तुम झूलहु, हौं तोहिं काहिं झुलाहिं'।
प्यारी कह पिय ते 'तुम झूलहु, हौं झुलवहुँ तोहि काहिं'।
नहिं कोउ झूलत नाहिं झुलावत, बहु विधि सखि समुझाहिं।
तब 'कृपालु' कह तुम दोउ झूलहु, हम दोउ झुलवत आहिं॥

4

आजु लखि, ललिहिं गई बलिहार।
सिंहासन-आसीन ललिहिं पग, चापत नंदकुमार।
विधि, हरि, हर सब कहत एक स्वर, 'जय श्री भानुदुलार'।
अनुपमेय-छवि-सींव-माधुरी, शोभा सिंधु अपार।
सकल-सुवासि-सुवासित जल सों, मज्जन करि रिझवार।
उर कंचुकि परिधान नील पट, चूनरि लिय सिर धार।
किये अरगजा लेप गौर तनु, तेल फुलेलन बार।
भरी माँग सिंदूर-अलंकृत, बिंदी इंदु लिलार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कजरारे दृग काजर राजत, सुरमा सुघर सँवार।
राग-अरुणिमा अधर कपोलनि, रदन पान अरुणार।
चिबुक एक तिल, इत्र सुगंधित, विविध अंग बहु हार।
अंग अंग आभूषण भूषित, दोउ कर मेहँदी सार।
चरण मेहावरि अरुण, सखी इमि, किय सोरह शृंगार।
सोइ 'कृपालु' लखि सकै कृपा करि, जेहि चितवति सुकुमार॥

5

आजु लखु, मंजु निकुंज-बहार।
झूलन की झाँकी अति बाँकी, धनि जिन दृगन निहार।
किये श्याम सिंगार-गौर अरु, गौर श्याम-शृंगार।
दोउ बैठे झूलन पाछे ते, लखि सखि करति विचार।
कारन कौन आज जो बैठे, उलटे दोउ सरकार?।
जब 'कृपालु' देखी आगे ते, हँसि हँसि कह बलिहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

6

किशोरी सँग, नाचत नवल किशोर।
लली लाल मंडल बिच राजत, ललितादिक चहुँ ओर।
इक ते इक संगीत निपुन सखि, गावति प्रेम-विभोर।

बजत वाद्य बहु विधि पुनि कंकन, किंकिनि नूपुर सोर।
ता थेइ, ता थेइ, थेइ करि निरतत, बहु विधि अंग मरोर।
लेत अलाप 'कृपालु' लाल पै, तान लली बरजोर॥

7

खेलत श्याम संग श्यामा के,
आँख मिचौनी कुंज मझारी।
चलि न चातुरी अलि–छल–बल बँधि,
दृगन बँधावत हारि बिहारी।
प्रेम–सिंधु चह सुधि–बुधि बोरन,
द्रुत युग–दृग पट बाँधति प्यारी।
उत कर–परस पाइ पुलकित तनु,
'सूर–श्याम' निज सुरति बिसारी।
ज्यों आतम–अवराधक ज्ञानी,
निज–स्वरूप खोजत उर धारी।
त्यों ही निज–स्वरूप श्रीजू को,
खोजत आजु ब्रह्म बनवारी।
या बांकी–झाँकी झांकन को,
ब्रह्मलीन जन नहिं अधिकारी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

हेरत, हार मानि हरि टेरत,
दरस दिखाओ भानुदुलारी।
येहि विधि दीन–पुकार कीन जब,
दीनबंधु प्रणतारति–हारी।
'सूर ब्रह्म' को दृगपट खोलति,
श्रीजू पर 'कृपालु' बलिहारी॥

8

चलो पिय, झूलें कुंज मझार।
मनभावन वृंदावन, सावन, रस बरसावन–हार।
देखि अंबराडंबर, अंबर, दामिनि दमक निहार।
प्यारी को संकेत जानि कह, रसिकन को रिझवार।
दमकनि दामिनि देखि, देखु घन, गरजत जनु बलिहार।
सुनि 'कृपालु' संकेत लली कह, मृदु मुसकाय 'लबार'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

9

झुलावति, अलिन युगल–सरकार।
डारि कदंबनि डार झुलन किय, कस शृंगार निहार।
कस छविदार सिँगार युगलवर, भल गलबाँहीं डार।

बहुविधि वाद्य बजावति गावति, सब सखि मेघ-मलार।
चितवत दुहुँन-दुहुँन चितवनि जनु, चितवनि सौं निज प्यार।
झूलत दुहुँन-, दुहुँन उर फूलत, भूलत सुधि बलिहार।
कह 'कृपालु' बलिहार हमहुँ लखि, सखि सँग बारम्बार॥

10

देखु सखि! अद्भुत कुंज विहार।
प्यारिहिं भेष बनायो प्यारो, करि सोरह सिंगार।
उत प्यारी, प्यारे को सुंदर, नटवर वेष सँवार।
प्यारी कह प्यारे ते 'प्यारी', उर आनंद अपार।
उत प्यारे प्यारिहिं कह 'प्यारे', तद्वत रतिरस धार।
रति विपरीत रास-रस खेलत, आपुहिं आपु बिसार।
लखति 'कृपालु' सखिन ललितादिक, छुपि-छुपि कुंज मझार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

11

देखु सखि! झूलत श्यामा श्याम।
झूलत श्यामा श्याम, झुलावति, ललितादिक ब्रजबाम।
गरबाहीं दीने रस भीने, छीने छवि शत काम।
झुकि-झुकि झूमि-झूमि दोउ झूलत, प्रेम रूप रस-धाम।

मुरली मधुर बजावत गावत, राग मलार ललाम।
हिय फूली 'कृपालु' कालिंदिहुँ, छुवति तरंगनि पाम॥

12

देखु सखि! दोउ रस रंग भरे।
झूलें श्याम गौर दोउ झूले, डार कदंब डरे।
अति बाँकी झाँकी सो दोउन, डारे बाँह गरे।
ललिता सखी झुलावति झूला, झूला पाणि धरे।
लाल अलापत, लाड़लि गावत, सखियन तान भरे।
लखत 'कृपालु' हमहुँ यह झाँकी, मंजु निकुंज खरे॥

13

देखु सखि! सावन मास बहार।
नवल निकुंज-मंजु बिच झूलत, नवल युगल सरकार।
पकरे दोउ इक-इक कर डोरिन, इक-इक कर गर डार।
दोउ दें झोंटे झूमि-झूमि झुकि, एकहिं एक निहार।
फहरत नील पीत पट अंचल, चंचल लट घुँघरार।
गावत राग मलार दुहुँन मिलि, अलि कर स्वर-विस्तार।
सखिन बजावति बीन वेनु कोउ, सब प्रवीन इक-सार।
लखि 'कृपालु' कह 'दोउ मम ठाकुर, जय हो जय बलिहार'॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

14

पधारो, झूलन दोउ सरकार।
फूले फूल कूल कालिंदी, झूले कदमनि डार।
सखिन समाज साज सब साजे, परखत कुंज मझार।
छाये नभ घनश्याम बुलाये, दामिनि–गौर निहार।
पिय संकेत जानि कह 'चलिये, स्वामिनि भानुदुलार'।
कह 'कृपालु' दोउ दै गरबाहीं, चले झूमि, बलिहार॥

15

परो सखि, झूलन में झगरो।
रतन खचित चंदन को झुलना, यमुना पुलिन परो।
ललिता कहीं, 'चलो झूलन कहँ, दोउ ठाकुर हमरो'।
कह्यो लाल 'लाड़लिहिं झुलावें, नहिं हौं रहत खरो'।
कह्यो लाड़लिहुँ 'लाल झुलावें', वचन गुमान भरो।
तब 'कृपालु' कह हरि ते 'तुम कत, आजुहिं नई करो'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

प्रेम रस, बरसत कुंज मझार।
शरद चंद्र, उत्फुल्ल–मल्लिका, ऋतु बसंत रिझवार।

मधुर मुरलि–धुनि सुनि सनकादिक, दीन समाधि बिसार।
भृकुटि–लता–विभ्रम करि नाचत, सखियन यूथ अपार।
मधुर–सुरन सौं तान अलापति, गावति राग मलार।
भजु 'कृपालु' मन लाल लाड़ली, जो चह रास–विहार।।

17

बलि जाउँ निकुंज लतान की।
अलि–कुल–संकुल विपुल–सुफूलनि, लतनि तरुनि लिपटान की।
नैन–कुरंग–तरंग तरंगिणि, कुँवरि भूप वृषभान की।
रति–रस–सरस–केलि–रस–लंपट, सुंदर श्याम सुजान की।
मणि–गण किरण–कदंबनि भूषण, दामिनि दुति उनमान की।
लखत 'कृपालु' अनूपम जोरी, प्रेम–सुधा–रस–खान की।।

18

बलि जाउँ निकुंज विहार की।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नागरि श्री वृषभानु कुँवरि अरु, नागर नंदकुमार की।
धरि जनु रूप अनूप प्रकट भइँ, मूरति छवि शृंगार की।
करत केलि भुज मेलि विविध विधि, बरसावत रसधार की।
संग नवेलिन, अति अलबेलिन, हेलिन यूथ अपार की।
पियत 'कृपालु' रसिक निशि वासर, प्रेम सुधा रस सार की।।

19

युगलवर, झूलनि की बलिहार।
नागरि अरु नागर झुकि झूमत, भल गलबाँहीं डार।
उमड़ि घुमड़ि घन गरजत चमकति, चपला बारम्बार।
पंचम सुर सों तान अलापति, गावति सखिन मलार।
गावत ही घन बरसन लागे, भीजत दोउ सरकार।
धनि 'कृपालु' सो बाँकी झाँकी, धनि जिन ताहि निहार॥

20

युगलवर, झूलें कुंज कुटीर।
नथवारी प्यारी अरु प्यारो, मुरली वारो वीर।
झूला डर्‌यो कदंबनि डारन, कालिंदी के तीर।
श्यामा झूलति श्याम झुलावत, ह्वै रस प्रेम अधीर।
गावति मेघ मलार अलिन मिलि, पुलकित सकल शरीर।
लखत 'कृपालु' शंभु सनकादिक, धरि तनु शुक, पिक, कीर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

युगलवर, झूलें कुंज मझार।
श्री वृषभानुदुलारी प्यारी, प्रियतम नंदकुमार।

बह्यो जात रस–सुधा–माधुरी, छवि–निधि–सिंधु अपार।
मृदु मुसकात, झूमि झुकि झूलत, जनु दोउ रूप सिँगार।
बिनु वानी बतरात परस्पर, दुहुँन दृगन दृग डार।
कहि न जात बड़भाग विटप को, बड़भागिनि वह डार।
जो निज गल बंधन दै झुलवति, युगल–नवल–सरकार।
होत मगन दोउ यमुना जल बिच, निज प्रतिबिंब निहार।
लली लाल के या झूलन पर, हम 'कृपालु' बलिहार॥

22

युगलवर, निरतत कुंज कुटीर।
छिटकि रही चहुँ चारु चाँदनी, कालिंदी के तीर।
विकसित–मुकुलित, कुसुम–कलिन पर, भई अलिन की भीर।
शीतल मंद सुगंध पवन बह, कलरव केकी कीर।
हास–विलास–रास–रस खेलत, झूमत प्रेम अधीर।
होत 'कृपालु' सुमिरि सो झाँकी, पुलकित सकल शरीर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

23

युगलवर, निरतत कुंज मझार।
देखति ललितादिक सखियन सब, पुनि–पुनि कहि बलिहार।
आजु होड़ परि गई निरत महँ, युगल नवल सरकार।

विविध अंग बहु भेद संग दोउ, हाव–भाव–विस्तार।
निरतत गति अविराम गौर–हरि, हार–जीत उर धार।
तब ललिता सखि उठि कह 'बस करु, नाचत दोउ इकसार'।
दोउ 'कृपालु' कह 'पक्षपात यह, ये गईं, ये गये हार'॥

24

युगलवर, भीजत कुंज मझार।
श्यामा श्याम लतन तर ठाढ़े, रिमझिम परत फुहार।
प्यारी सिर पटपीत ओट कर, प्रीतम नंदकुमार।
उत प्यारे सिर सुरँग चूनरिन, ओट करति सुकुमार।
'तुम जनि ओट करहु' कह दोऊ, दोऊ सौं बलिहार।
गहि रस रीति प्रीति दोउ झगरत, गौर श्याम सरकार।
लखत 'कृपालु' शंभु यह झाँकी, छुपि गोपी तनु धार॥

COPYRIGHT

25

RADHA GOVIND SAMITI

लखो री आली! लाली जु कि झुलन बहार।
झुलवत लाल रूप जनु, लाली, झूलत जनु सिंगार।
हिय फूली कालिंदी, ता तट, फूली कदमनि डार।
ता पर लता–बेलि बहु फूली, उरझी तरुवर झार।
रंग बिरंगे विविध सुफूलनि, रेशम डोर सँवार।

किय सोरह शृंगार फुलन को, राजति भानुदुलार।
झुकि झुकि झोंटे देत लाल जू, करन चहत दृग चार।
मुरि मुरि मृदु मुसकाय लाड़ली, करति नैन सौं वार।
लाल अलापत तान, लाड़ली, गावति मेघ मलार।
अति द्रुत झोंटे दियो लाल जब, डरपीं हिय सुकुमार।
कह्यो लाड़ली 'करु न लँगरई, नटखट नंदकुमार'।
'हौं 'कृपालु' तब ही मानौं जब, सँग झुलवो रिझवार'॥

26

लख्यों इक अचरज कुंज मझार।
पिय पूछत प्यारी ते 'कित गये, पिय मम प्राणाधार'।
प्यारी पूछति पिउ ते, 'कित गइँ, प्यारी मम सुकुमार'।
पिवु कह प्यारिहिं 'को प्यारी तव', सो कह 'भानुदुलार'।
प्यारी कह पिउ ते 'को पिउ तव'? पिउ कह 'नंदकुमार'।
सखि समुझाय हारि गईं पै नहिं, समुझत दोउ सरकार।
कह 'कृपालु' दोउ अति अचरज ते, एकहिं एक निहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

27

श्याम तुम! रसिकन नाम लजायो।
सब दिन ग्वार गँवारन सँग लै, वन वन ढोर चरायो।

वेणी गुहत, केश उरझावत, किन गुरु तोहिं सिखायो।
लखि सखियन हँसिहैं बस करु हटु, लट छूटी मोहिं भायो।
कुसुम-गुच्छ इमि धरत शीश जनु, शिव प्रतिमाहिं चढ़ायो।
व्यजन करत पुनि गिरत कुसुम जनु, झंझावात चलायो।
धनि 'कृपालु' तुम रसिक शिरोमणि, धनि जिन तोहिं निभायो॥

28

सखी! दोउ, झूलत मृदु मुसकात।
ज्यों सखि! गगन मगन मन घनगन, घनन-घनन घननात।
त्यों सखि! इत घनश्याम मगन मन, झूलत गावत जात।
ज्यों सखि! घन सँग चपल चंचला, चम-चम-चम चमकात।
त्यों सखि! श्यामा संग श्याम इत, रहि-रहि हिय हुलसात।
पै चपला सचला इत अचला, लली, लाल सँग भात।
लखत 'कृपालु' झुलन झाँकी बस, मुख कछु कहि न सकात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

29

सखी! ये भ्रमर निकर भरमाये।
रति-रस-सरस-रास-मंडल पर, जानि सरोवर धाये।
जानि सुविस्तृत श्वेत वस्त्र कहँ, निर्मल जल मनभाये।

ता बिच लाल गाल गोपिन जनु, लाल कमल दरसाये।
तैसेहिं नील गाल लालहिं जनु, नील कमल छवि छाये।
चपल नैन जनु मीन, विभूषण, धुनि खग बैन जनाये।
इमि 'कृपालु' जुरि भृंगनि पुंजनि, गुंजन करि मँडराये॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मिलन-माधुरी

1

अरी सखि!, किरिकिरि आँखि परी।
जब ते परी किरिकिरी तबते, नींदिहुँ गई भग री।
कोटि यतन करि करि हौं हारी, तबहूँ नहिं निकरी।
अब मोहिं कल ते परत न कहुँ कल, पल-छिन एक घरी।
करहु तुमहिं उपचार सखी! कछु, नैननि लाग झरी।
हौं 'कृपालु' जानत हौं नीके, यह किरिकिरी 'हरी'॥

2

आज सखि, गिरी शीश पै गाज।
COPYRIGHT
तट-पनघट घट भरन गई रहि, सँग रह सखिन समाज।
RADHA GOVIND SAMITI
आय अचानक रवि-तनया-तट, टेर्यो मोहिं ब्रजराज।
टेरि कही 'सखि! तोहिं ललिता सखि, द्रुत बुलाय कछु काज'।
हौं जब चली अली! तब छलिया, चल्यो संग बिनु लाज।
इकली जानि लगाय लियो उर, मोहिं छलियन सरताज।
नहिं 'कृपालु' तब ते कल इक पल, लाजहुँ निगुरी भाज॥

3

आजु सखि! ह्वै गये नैना चार।
हौं दधि बेचन जाति वृंदावन, देख्यों नंदकुमार।
सो छवि लखत बनत, नहिं वरनत, रूप–माधुरी–सार।
तन–मन–प्रान निछावरि करि मैं, लियो मोल रिझवार।
पुनि–पुनि कह्यो 'हमारी प्यारी' सुनि–सुनि गइ बलिहार।
कत 'कृपालु' बलि जात नंद को, कै गयो बंटाढार॥

4

इकली जनि जइयो कहुँ गोरी।
श्याम सलोना नंद डुठोना,
टोना करत फिरत ब्रजखोरी।
नव किशोर सिरमोर छलिन को,
तू अति भोरी सरल किशोरी।
जादू, तंत्र, मंत्र सब जानत,
याते बात मानि लेउ मोरी।
बिनु बैनन नैनन–सैनन ही,
बाते लेत नात निज जोरी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

हा प्राणेश्वर! प्राणनाथ हा,
कहि कहि भजिहौ इत उत कोरी।
बनि उनमादिनि नचिहौ गैहौ,
पीहौ लोक लाज सब घोरी।
परी ठगोरी सब ब्रज गोरी,
को 'कृपालु' अस जो न ठगो री॥

5

कछू सखि, कै गयो मो पै आज।
हौं पनघट–तट गई भरन घट, चट आयो ब्रजराज।
हौं अनजानी भेद न जानी, जुरे नैन गई लाज।
नैन–सैन तन मन अरु प्रानन, गह्यो लवा जनु बाज।
अब हम विकल, न कल इक पल कहँ, लगत न चित घरकाज।
सागर विरह 'कृपालु' बूड़िहौ, न तु चढ़ु आस जहाज॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

6

करन गइ! कालि यमुन असनान।
न्हात हि न्हात अचानक आयो, सुंदर श्याम सुजान।
बिनु बैनन नैनन सैनन दिय, मारि बान मोहिं तान।

भई विवस रस बस जब, बरबस, तन परसन मन ठान।
कटि लौं जलहिं कह्यौं हौं बूड़ी, कोउ बचावहु प्रान।
धाय 'कृपालु' उठाय लियो हरि, सो सुख कौन बखान॥

7

कहहु सखि, प्रथम–मिलन की बात।
कब देखी ? कित देखी सो छवि ?, कस देखी मुसकात ?।
कैसो लख्यो रूप सखि! कैसो ?, लख्यो रंग सो गात ?।
कैसे नैन ? सैन सखि कैसे ? कस बैनन बतरात ?।
कैसी चलत चाल सो छलिया, कहहु न ? कत इतरात।
लगति 'कृपालु' सगी सखि पुनि कत, मो ते कहत लजात॥

8

कहूँ का, वा दिन की सखि! बात।
जा दिन देखी नँदनंदन छवि, मंद मंद मुसकात।
जिन अँखियन देखी सखि! सो छवि, सोऊ कहि न सकात।
अंग–अंग प्रति रूपमाधुरी, लखि अनंग सकुचात।
देखतहूँ नहिं देखति सखि! इन, अँखियन जल भरि जात।
बिनु देखेहूँ सखि! 'कृपालु' मोहिं, इक पल कलप लखात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

9

कहहु सखि! वा दिन की कछु बात।
जा दिन निज अँखियन सखि! देखी, सुंदर श्यामल–गात।
सो–झाँकी झाँकन कहँ सजनी, हमरहुँ जिय ललचात।
सुनी अनूपम रूप सखिन सों, सबै सराहत जात।
तू तो लखी सखी! अँखियन ते, कहु सखि कस मुसकात।
कबहुँ 'कृपालु' देखिहौं हौं हूँ, कत इतनो इतरात॥

10

कहूँ मैं, कासों मन की बात।
मोहिनि–रूप हर्‌यो मनमोहन, उन बिन जिय घबरात।
सखियन मनहुँ होत कछु संशय, बातन मोहिं जनात।
लोक–लाज बैरिनि भइ मोरी, धरूँ धीर केहि भाँत।
दृग झरि लाय कहत कब देखूँ, सुंदर श्यामल गात।
उड़न चहत बिनु पंख, पँखेरू, परबस उड़ि न सकात।
दिन नहिँ चैन 'कृपालु' एक छिन, काल निशा सम रात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

11

काँकरि मोरि मारी गागरी।
सखि सँग जाति रही दधि बेचन, वृंदावन हौं नागरी।

काँकरि लगत फूटि गइ गागरि, तब मोहिं अति रिस लाग री।
देख्यो घूमि नंदनंदन जब, तब सिगरी रिस भाग री।
सो छवि लखत रही तहँ ठाढ़ी, उमग्यो उर अनुराग री।
अब उर लाग 'कृपालु' आग री, जात जरी गुन आगरी॥

12

कान्ह कछु कै गयो टोना री।
यमुना–तट रह धेनु चरावत, श्याम सलोना री।
हौं तहँ गई, अचानक देखी, नंद डुठोना री।
देखत ही मोहिं डस्यो दृगन जनु, नागिनि छोना री।
तन, मन, प्राण सबै सखि! लै अब, दै गयो रोना री।
दिवस 'कृपालु' न चैन एक छिन, रैन न सोना री॥

13

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

कामरी वारे पै, का मरी जात।
कारो रंग कौन बड़ नीको, द्वै तातरु द्वै मात।
अति बेपीर, अहीर जाति को, हरजाई बलभ्रात।
गति–मति–रति अति चंचल अलि ज्यों, छिन थिर रहि न सकात।
आपु गँवार, गँवार–ग्वार सँग, अति स्वतंत्र मदमात।
यह 'कृपालु' कछु बात अटपटी, रसिक–जनन मनभात॥

14

कालि की, बात कहौं आली।
भानु–सुता–तट भानु–सुता गइ, कालि आलि लाली।
तहँ रह मुरली मधुर बजावत, ठाढ़ो वनमाली।
द्वै दृग ह्वै गये चार अचानक, प्रेम–पाश घाली।
लखतहिं गिरी नागरिहिं गागरि, निर्मल–जल वाली।
उत 'कृपालु' नागर गिरि मुरलिहुँ, कह देखी भाली॥

15

कोउ जनि, जाहु जमुन असनान।
जादू करत फिरत पनघट पै, इक जादूगर कान्ह।
मोहन मंत्र फूँकि मनमोहन, मोहत मुरलिहिं तान।
जो कोउ तानहुँ सौं बचि आवे, मारत नैनन बान।
परम चतुर ललिता–सी कालिहिं, हारीं तन मन प्रान।
पुनि 'कृपालु' भोरिन गोरिन गति, कौन होय भगवान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

कोउ बेगि बुझाओ, हौं जरी।
तरणि–तनूजा–तट सखियन सँग, कालि रही सखि हौं खरी।

मारि दियो तहँ नैन–बान उन, मुरछित छिति गिरि हौं परी।
पुनि कह 'प्यार करेगी ?' यह सुनि, ना ना ना हाँ हौं करी।
मृदु मुसकाय गये पिय उत, इत, जात विरह महँ हौं मरी।
बुझति न आग 'कृपालु' हारि गइ, जल बरसावत हौं हरी॥

17

गई डसि नागिनि अबहीं भोर।
सो नागिनि रहि श्याम रंग की,फन रहे अति बरजोर।
वाके जीभ रही दुइ सजनी!, अंगनि रह्यो मरोर।
वाके डसतहिं गिरी धरणी कहि, 'हाय भला हो तोर'।
अब सखि द्रुत उपचार करहु कछु, प्राण जात हैं मोर।
सुनु 'कृपालु' सखि! एक मदारी, झारत नंद किशोर॥

18

गई मैं, गिरिधर पर बलिहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कालि आलि वनमालिहिं देख्यों, मंजु निकुंज मझार।
लखि त्रिभुवन संपति भइ खारी, खारी मुक्तिहुँ चार।
लोक वेद के विधि निषेध सब, दिये भार महँ डार।
ललित त्रिभंग अंग प्रत्यंगनि, कोटि ब्रह्म सुख वार।
मूकास्वादनवत् 'कृपालु' बस, रसिकहिं जाननिहार॥

19

गई लखि, मधुर–मिलन बलिहार।
उत ते आईं रूप–उजागरि, नागरि–भानुदुलार।
इत ते आये सब–गुन–आगर, नागर–नंदकुमार।
तरणि–तनूजा तट दोउन दृग, भये अचानक चार।
सखिन टेर नहिं सुनति लली इत, इकटक रहीं निहार।
उत 'कृपालु' नहिं सुनत टेर हरि, हारे सखन पुकार॥

20

गई हिय, तीछी बीछी मार।
छिन–छिन बढ़त जात विष सब तन, कोउ करउ उपचार।
सुनि उठि धाईं सकल सहेलिन, हिलमिल कीन विचार।
कोउ लगावति औषधि बहु विधि, कोउ मंत्र सों झार।
मिटी न पीर तबहुँ जब, कोउ कह, है यह भूत बयार।
यह 'कृपालु' नँदपूत, भूत नहिं, किय हिय नैनन वार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

गयो हरि, मो पै जादू डार।
हौं जमुना–असनान करन गइ, तहँ रह नंदकुमार।

पिय दृग पिय–रस–रूप माधुरी, दृगन बचाय निहार।
रस–लंपट दृग पट घूँघट–पट, करन चहत जनु पार।
जब घट भरि चलि घर नटवर तब, चट काँकरि दइ मार।
फूट्यो घट टूट्यो घूँघट पट, औचक दृग भये चार।
उत 'कृपालु' नागरि इत गागरि, बहत प्रेम–जलधार॥

22

गागरि मोरि मारी काँकरी।
हौं दधि बेचन जाति रही सखि! घूँघट–पट मुख ढाँक री।
तू तो जानति सखी! डगर महँ, परति खोरि इक साँकरी।
मारि दई काँकरि पाछे ते, पुनि लंपट सौं झाँकरी।
भई विभोर यदपि लखि छलिया, तदपि न मुख ते हाँ करी।
जैसी करी 'कृपालु' हरी तस, अब लौं नहि कोउ ह्याँ करी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

23

चलीं दधि, बेचन ब्रज की बाम।
मटुकी शीशधरी रसमाती, पहुँचीं सब नँदगाम।
नंदद्वार भइँ जुरि ठाढ़ी जहँ, नव–लख–धेनु ललाम।
लो कोउ दही, टेर भूली कह, 'लो कोउ सुंदर श्याम'।

लखि बेहाल ब्रजबाल, लाल तहँ, आये तजि निज धाम।
दधि बेचन हरि मिलहिं 'कृपालुहिं' एक पंथ दो काम॥

24

छुवो जनि, मनमोहन तन मोर।
'सखि! मोहिं कह मनमोहन पुनि कत, इत ममता तनु तोर'।
सखि कह 'हौं पतिव्रता दियो मन, तन नहिं तोहिं चितचोर'।
'सखि! काहुहिं व्रत होत मनहिं ते, सुनु यह श्रुतिन निचोर।
सखि सुनु मर्म, सर्व–धर्मन तजि, जो भज नंदकिशोर।
वाको पाप 'कृपालु' क्षमा करि, देउँ प्रेम–रस बोर॥

25

तुम जीवन–जीवन जीवनधन।
तिन जीवन जीवन बस जीवन,
जिन जीवन, किय जीवन अरपन।
जिन किय निज कहँ अरपन तिन कहँ,
अरपन कर निज कहँ यह तव पन।
तिन दिय भार डारि तोहिं शिशु जनु,
तुम सँभार जननी जनु छन छन।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

तिनके अवगुन गिनत न अगनित,
अगनित करि तिन कहँ इक गुन गन।
कह 'कृपालु' पुनि ते जिन जन जन,
तिन मानत निज जन महँ प्रिय-जन॥

26

दई अब, हारि गई सब दाउँ।
गई रही दधि बेचन सजनी, हौं इकली नँद-गाउँ।
तहँ देख्यों इक लँगर देखतहिं, बिकि गइ रुकि गये पाउँ।
कछुक बेर महँ सुधि सँभारि पुनि, पूछेउँ वाको नाउँ।
नाउँ गाउँ सब जानि लई पै, कैसे काउ बताउँ।
अब 'कृपालु' उन पिय देखे बिनु, इक छिन रहि न सकाउँ॥

COPYRIGHT

27

RADHA GOVIND SAMITI

दई! हौ, आजु ठगाय गई।
गई रही सखि! कुसुम-सरोवर, सँग रहिं सखिन कई।
प्रकट्यो आय अचानक छलिया, लतन कुंज उनई।
मोते कही 'सखी! तोहिं देखन, मैया मोहिं पठई।
तोरी-मोरी होय सगाई, मैयन बात भई'।

हौं पतियाय गई सँग मग महँ, मो गर बाँह दई।
बात 'कृपालु' झूठ निकली पै, तन मन लूटि लई॥

28

दई! हौं, गई धार–हूँ धार।
गई रही तट तरणि–तनूजा, तहँ आयो इक जार।
वाते जोरि लई पिय नातो, जैसेहिं दृग भये चार।
सखि कह 'नाउँ बताय वाय सखि! जेहि बनाय भरतार'।
सखि! सुनु तुम्हरे पति की भगिनी, को है सखी कुमार।
सखि कह 'कहा बकति मम पति कहँ, कब भयो ब्याहु हमार'।
कह 'कृपालु' भरतार बूझि गइ, नंदकुमार तिहार॥

29

दई! हौ, लुटि गई बीच बजार।
गई रही घट–भरन यमुन–तट, सँग रहिं सखिन हजार।
आय निपट नटखट झट पनघट, बोल्यो सखिन पुकार।
हौं मानूँ पतिव्रत तिय तेहि जो, बारेक मोहिं निहार।
हौं अनजान गुमान भरी तेहि, देख्यों टुक इक बाार।
लखतहिं हौं 'कृपालु' भइ परबस, दइ सरबस गइ हार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

30

परी मैं, काल लाल के जाल।
गई अलिन सँग यमुन पुलिन तहँ, मिलि गयो मदन गोपाल।
घूँघट पट ही सों टुक देख्यों, चुपके ते नँदलाल।
इतनेहिं माहिं छेड़ि दइ वाने, मुरलिहिं तान रसाल।
सुधि बुधि भूलि गई सखि! सिगरी, सुनत तान ततकाल।
गागरि संग 'कृपालु' नागरिहुँ, गिरी धरणि बेहाल॥

31

बनत नहिँ, भनत अनत यह बात।
कालि रही सखि! न्हात यमुन तहँ, आयो श्यामल–गात।
भौंह कमान तानि अस मार्यो, नैन–बान बलभ्रात।
लखतहिं गिरी 'हाय!' कहि यमुनहिं, ज्यों तरुवर सों पात।
तब सोइ धाय उठाय लियो मोहिं, मिल्यो परस मनभात।
अब 'कृपालु' सोइ दरस–परस हित, तलफति हौं दिन–रात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

32

बसे रे मेरे, नैनन पिय! तेरे नैन।
नैनन को नहिं डर पिय! उतनो, डर उन नैनन–सैन।

पुनि सैननहूँ डर नहिं उतनो, डर उन सैनन पैन।
जब चह सैन निकारन दृग कह, पैन किंतु सुख–दैन।
अब नैनन करकत तिन छिन–छिन, चैन न मोहिं दिन–रैन।
कह 'कृपालु' यह रोग लाग जेहि, कैसेहुँ कबहुँ छुटै न॥

33

व्याध इक, मारेहु हिरणिहिं बान।
प्रथम सुनाई मधुर सुरन सों, वेनु रसीली तान।
सुनत विभोर भई हिरणी तब, मार्यो तानि कमान।
हिरणी गिरी धरणि जब घायल, व्याध मंद मुसकान।
अब हिरणी पल–पल तलफति सखि! करु उपाय जो जान।
हौं 'कृपालु' जानत तू हिरणी, व्याधहुँ श्याम सुजान॥

34

COPYRIGHT
भई री मैं तो, घायल नैनन बान।
RADHA GOVIND SAMITI
जाति रही सखियन सँग सजनी! जमुना तट असनान।
तहँ औचक मुरली वारे ने, टेरी मुरलिहिं तान।
सुनतहिं तान न भान रह्यो मोहिं, बरबस तन मन प्रान।
तब हौं लख्यों विवस रस बस ह्वै, सुंदर श्याम सुजान।
अब 'कृपालु' कैसे निबहेगी, लोक वेद कुल कान॥

35

भटू! मैं, पटू लटू भइ आज।
परम चतुर मोहूँ कहँ छलिया, लूटि लियो ब्रजराज।
जित देखूँ तित सोइ सोइ दीखत, गई भाज सब लाज।
इत कुमारि, उत जार प्रीति सखि!, परी शीश जनु गाज।
बीछी–सी तनु विष बगरावत, विरह साजि निज साज।
औषधि जान 'कृपालु' लाउ जो, रसिकन को सरताज॥

36

मनमोहन–छवि मन भा गई।
कालि लखी सखि! साँवरि–सूरति, लखतहिं सुरति समा गई।
जेहि निधि कहँ खोजति रहि अब लौं, सो निधि हौं सखि! पा गई।
अब सोइ मन–मोहन–मोहिनि–छवि, रोम रोम महँ छा गई।
चितवनि–चपल मधुर–मृदु–मुसकनि, प्रेम सुधा बरसा गई।
फूली फिरति 'कृपालु' कहत क्यों, सखि तू धोखा खा गई॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

37

मन मोहि लियो मनमोहना।
बरजी सखी, जाहु जनि तहँ कहुँ, मन–मोहन मन मोह ना।

पुनि सोइ कही, जाहु जो तो सखि!, नैनन मोहन जोह ना।
हौं नहिं मानी, किय मनमानी, जानी नहिं अस सोहना।
लखतहिं भई विकल उत, इत यह, डर कहुँ होय बिछोह ना।
धरु 'कृपालु' उर धीर, निराशा, प्रेम माहिं सखि! सोह ना॥

38

मो पै कछु कै गयो नंदकुमार।
नैनन–नैनन ही भईं बातें, जब नैना भये चार।
हौं भोरी कछु जानि न पाई, ठग्यो नैन ठगहार।
तन–मन–प्रान हारि दृग रोवत, पोवत अँसुवनहार।
हेली! भई पहेली, नैनन, हाँसी फाँसी डार।
धरु 'कृपालु' उर धीर, मिटै नहिं, विधि जो लिखा लिलार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

39

मोहिं मोहि लियो निरमोहिया।
इक दिन जाति रही गहवर–वन,मारग मिलि गयो सो पिया।
मोते कही 'अरी ओ गूजरि! मन मेरो हरि क्यों लिया?।
हौं इकली रहि कहा करूँ सखि! पिय मन–भायो सो किया।

अब सोइ दरस–परस पुनि चाहत, चैन न इक छिन को जिया।
कह 'कृपालु' सो अस छलिया जेहि, बचि आवे अस को तिया॥

40

मोहि लइ, मोहिं मोहन–मुसकान।
भानु–ललिहिं गुनगान करत रह, तानन कुंज लतान।
लखी कान्ह–मुसकान तान केइ, ध्यान भान, अनजान।
सुनी तान जब कान कान्ह की, रह्यो न प्रानन भान।
कान तान, अँखियान चहत पुनि, सोइ मुसकान न आन।
प्रान 'कृपालु' पयान करन चह, आन मिलहु मम प्रान॥

41

मोहि लियो, मो मन मदन गोपाल।
देखत ही छवि भई बावरी, ललित–त्रिभंगी लाल।
कासों, केहि विधि, कहा कहूँ अब, सब हँसिहैं दै ताल।
दोउ नैना धैना करि बैठे, मैं ना समझी चाल।
टोना सों कछु कै गयो मो पै, भई हाल बेहाल।
तुम 'कृपालु' निज भाग सराहिय, फँसे न जो येहि जाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

42

यमुन तट, गई भरन घट आज।
कहा कहूँ सखि तहँइ ठड़ो रह, ठगहारन-सरताज।
मोहिं लखि तान मधुर-मुरली की, छेड़ दई ब्रजराज।
सुनत रसीली तान सखी मम, गिरी शीश जनु गाज।
बैठि गई इत, उर धरि कर, उत, हरि गयो कुंजन भाज।
तलफति हौं 'कृपालु' इत पल-पल, लरत प्रीति उत लाज॥

43

यह कैसी लागि बलाय रे।
कालि गई वंशीवट पनघट, आयो तहँ बलभाय रे।
जाकी लखि सखि! रूप-माधुरी, आपुहिं आपु गमाय रे।
दृग सों निकसति सलिल-धार अरु, मुख सों निकसति 'हाय' रे।
सुक, पिक, मोर, पपिहरा सिगरेइ, मिलि जनु मारन धाय रे।
कहँ लौ कहिय 'कृपालु' दशा तनु, साँसहि आवे जाय रे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

44

यह यारी है, हाय या बटमारी।
मोते कही सखी! टुक देखूँ, तव आँखिन लाग्यो का री।

हौं अनजानी मरम न जानी, लखतहिँ नैन–सैन मारी।
कहा कहूँ पुनि भयो कहा सखि! अहा! अहा! कहि मन हारी।
अब तो कमल–नैन देखे बिनु, चारिहुँ मुक्ति लगति खारी।
कह 'कृपालु' बिनु हेतु सनेही, यह साँचो पिय बनवारी॥

45

लखि आजु गई बलिहार रे।
लतन कुंज ठाढ़ो टेढ़ो है, नागर–नंदकुमार रे।
मंद–मंद–मुसकाय लख्यो मोहिं, हौं हूँ ताहि निहार रे।
चितवत पलक चलत लखि रिस भइ, ब्रह्मा निपट गमार रे।
उन कछु कह्यो न हौं कछु बोली, सुधि बुधि देह बिसार रे।
कह 'कृपालु' सखि! नहिं कछु अचरज, द्वै–द्वै मिलि ह्वै चार रे॥

46

लखी इन, नैनन नैनन कान्ह।
नैनन बैन न नैन न बैनन, सैनन सों बतरान।
लवण–डली जिमि जल मिलि तिमि भइ, घुलमिल एक समान।
चंचल ते चंचल ते मिलि मन, चंचलताहुँ भुलान।
सुधि बुधि बुधि सुधि सब विधि भूली, इंद्रजाल उनमान।
कह 'कृपालु' तू आजुहिं फूली, कल मिल फल जिय जान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

47

लखी इन, नैनन मृदु–मुसकान।
बिसरि गई तनु की सुधि सिगरी, लखतहिं श्याम सुजान।
भाज गई सब साज बाज लै, लोक लाज कुल कान।
जब जित देखूँ तब तित दीखत,सोइ मुसकान न आन।
नैन न रसना, रसना नैन न, केहि विधि करौं बखान।
अब 'कृपालु' इक काम याम वसु, श्याम–नाम–गुन–गान॥

48

लखी मैं सखि! सुंदर श्याम सुजान।
जमुना पुलिन अलिन सँग हिलिमिलि, गई करन असनान।
ललित लवंग लता कुंजन ते, प्रकट्यो औचक कान्ह।
सान धरे सैनन उर, सो तकि, मार्‌यो नैनन बान।
छूमंतर सौं करि उर अंतर, दुरि गयो कुंज लतान।
घायल करि 'कृपालु' ललिता कहँ, टेर्‌यो मुरलिहिं तान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

49

लूटि मोहिं लै गयो नंदकुमार।
यमुना–पुलिन, अलिन–सँग हौं गइ, ह्वै गये नैना चार।

नैनन–नैनन बात भई कछु, कै गयो कछु रिझवार।
मधुर–मिलन–रस प्याय हाय! अब, दै गयो विरह अपार।
हौं भूली सुधि–बुधि तब कर गहि, लै गयो कुंज मझार।
अब 'कृपालु' जनि कहिय जानि गइ, बै गयो बीजहिं प्यार॥

50

सखी! पिय–मुसकनि मन भा–गई।
बची रही अब लौं पै आजुहिं, औचक धोखा खा गई।
सखिन संग उत्तुंग तरंगनि, देखन हौं यमुना गई।
तहँ इक सखि कह इक अस मुसकनि, को अस जो बचि आ गई।
हौं बोली 'तू भोरी जो री, पतिव्रत दाग लगा गई'।
इतनेइ महँ मुसकात आय पिय, लखि दोउ लोक गमा गई।
कह 'कृपालु' यह अस मुसकनि जहँ, शंभु–समाधि समा गई॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

51

सखी! हरि, 'छू–मंतर' सों करि गयो।
हौं जमुना जल भरन गई रहि,
सखि! हरि तहँ किरिकिरि सों परि गयो।

दुहुँन दृगन मिलि कछु बतराये,
सखि! हरि तुरतहिं हिय सौं हरि गयो।
अब दिन–रैन चैन नहिं कैसेहुँ,
सखि! हरि नैननि जल सौं भरि गयो।
पलक लखात कलप जनु उन बिन,
सखि! हरि विरह शैल सौं धरि गयो।
तुम 'कृपालु' मूरख, लखि विरहिनि,
सखि! हरि प्रीति जुरन सों डरि गयो॥

52

सखी! इक, सपनो देख्यौं रात।
वंशीवट तट–तरणि–तनूजा, हौं इकली रहि जात।
औचक लख्यौं एक तहँ ढोटा, सुंदर श्यामलगात।
पियरो पट, कटि काछनि काछे, मोर मुकुट बल खात।
कर मुरली, गल–गुंजमाल भल, गति सौं हंस लजात।
अति रसभरे नैन रतनारे, कजरारे मदमात।
कटि किंकिनि, पग पायल सोहति, मन मोहत मुसकात।
कहँ लौं कह सखि! रूप–माधुरी, कोटि काम सकुचात।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लखतहिं हौं सखि! भइ वश ताके, बड़ी बुरी यह बात।
यह 'कृपालु' कछु भेद अलौकिक, जग न होत अस नात॥

53

सखी! क्यों, निज पिय पै इतराय।
जैसो है मेरो पिय तैसो, तेरो होइ न सकाय।
अरी वीर! तू का जाने जस, मेरो प्रियतम आय।
नेकु बताउ नाउँ वाको सखि!, जाको अस गुन गाय।
प्रथम बताउ तु ही निज पिय सखि!, जेहि बढ़ि–बढ़ि बतराय।
कह 'कृपालु' हौं बतराऊँ सखि!, दोउन पिय बलभाय॥

54

सखी! तू, काहे मोहिं छुपाय।
COPYRIGHT
हौं तो तोरी सगी सहेली, पुनि कत कहत लजाय।
RADHA GOVIND SAMITI
हौं गइ जान मान नहिं भल तू, दृगन–चोट गइ खाय।
चितवनि गवनि हँसनि बतरावति, कोउ रसिया मन–भाय।
कहु सखि! तेरो वो कैसो है?, रूप रंग कस वाय।
कह 'कृपालु' सखि! वो ऐसो है, जैसो है बलभाय॥

55

सखी! मैं, गिरिधर हाथ बिकानी।
पी बिनु मोल अमोल-मधुर-मधु, भइ पिय प्रेम दिवानी।
छकी पिया-रस-रूप-माधुरी, लोग कहें बौरानी।
रोम रोम रमि रह्यो श्याम-रस, सुधि-बुधि देह भुलानी।
तृण सम डारि वेद-मर्यादा, लोक-लाज कुल-कानी।
पिय 'कृपालु' सखि! हरि-रस-मदिरा, करति सदा मनमानी॥

56

सखी! मैं, बिकी आजु बिनु दाम।
कियो न मोल-तोल कछु मोते, लियो मोल घनश्याम।
करि तन, मन, अरु प्रान निछावरि, भइ जग सों बेकाम।
अब सोइ नाम-रूप-गुन-लीला, सुमिरत आठों याम।
भुक्ति-मुक्ति तजि पियत प्रेम-रस, कान्त भाव निष्काम।
जाको चहत 'कृपालु' पिया बस, सोइ सुहागिनि बाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

57

सखी! मैं, लुटि गइ कुंज मझार।
ना जाने का कै गयो मो पै, जादूगर सरदार।

सुधि बुधि भूलि गई अपनीहूँ, करु कछु द्रुत उपचार।
इक पल महँ ह्वै गयो प्रलय जनु, तन मन गइ सब हार।
कासों कहा कहूँ सखि! निज कर, निज गर फाँसी डार।
पूछत नाउँ 'कृपालु' कौन सो, सखि कह, 'नंदकुमार'॥

58

सखी! मैं, ह्वै गइ काउ कि आज।
वे मेरे मैं उनकी, जग ते, कहा हमारो काज।
माँगत रह्यौं भीख सब दिन ते, बंध्यो आज सरताज।
जेहि विधि बढ़ै प्रीति छिन–छिन सोइ, सजिहौं, अब सब साज।
इमि कहि बार बार भइ बावरि, नाचति नेकु न लाज।
हम 'कृपालु', जानी, नहिं छानी, मोते सो ब्रजराज॥

59

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सखी! मोहिं, डसि गयो श्याम–भुजंग।
कालि आलि! कालिंदी तट हौं, देखत रही तरंग।
कोटि अनंग अंग–प्रति वारत, आयो ललित–त्रिभंग।
हाय! हाय! कहि गिर्‌यो धरणि पर, नहिं जानी छल–ढंग।
हौं ढिग गई लखी तब वाने, लंपट सौं प्रति–अंग।

कर परस्यो कहि 'प्यारी' हौं हूँ, 'प्यारे' कहि इक संग।
अब 'कृपालु' तनु विष बगरावति, सोइ धुनि श्यामल–रंग॥

60

सखी! मोहिं, नैनन–सैन सिखाय।
सिखन चहति कत नैन–सैन सखि!, का कहुँ चहति चलाय।
'कालि यमुन–तट गई भरन–घट, झट आयो बलभाय।
नैन–सैन अस तकि उर मार्‌यो, गिरी धरणि कहि 'हाय'।
जो दे मोहिं सिखाय सखी! सो, जाय दाउँ लउँ वाय'।
कह 'कृपालु' यह नाहिं सिखन की, बात और ही आय॥

61

सखी! सुनु, एक दिना की बात।
न्हात रही तट तरणि–तनूजा, आयो श्यामल–गात।
जो सुख भयो लखत सखि अँखियन, सो मुख कहि नहिं जात।
'तोरी मोरी जोरी' इमि कहि, चल्यो मंद मुसकात।
हौं हूँ मंद सुरन सों इमि कह, 'श्याम गौर कस नात'।
'अस क्यों कही, 'कृपालु' सोचि यों, अब मन महँ पछितात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

62

सखी! सुनु, प्रथम मिलन की बात।
लखी कालि यमुना तट नटखट, मंद मंद मुसकात।
रूप अनूप नंदनंदन को, सुंदर–श्यामल गात।
बाँके नैन, सैन अति–बाँके, मधु बोलनि बतरात।
जनि पूछहु सखि! चाल लाल की, लखि मराल सकुचात।
लखि 'कृपालु' सो बाँकी–झाँकी, पुनि पुनि मन ललचात॥

63

सखी! सुनु, वो मेरे मन भाय।
मोते कहा दुरावति सखि! टुक, 'वो' को नाम बताय।
वो को नाउँ लेउँ सखि! कैसे? जेहि हौं पिया बनाय।
जनि बताउ वो नाम सखी! पै, वो गामहिं बतराय।
वो के गाम–नाम महँ वो के, बाप–नाम सखि आय।
कह 'कृपालु' हौं जानि गई सखि! वो रसिया बलभाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

64

साँवरो, जादूगर सरदार।
लखतहिं लटू भटू ह्वै जावति, देत मूठि सी मार।

ब्याही अनब्याही सब ही सखि, मोहीं ब्रज की नार।
जित देखूँ तित ही तिय तलफति, कहि हा! प्राणाधार।
बिँधी बान हिरनी ज्यों वन वन, ढूँढति नंदकुमार।
जब 'कृपालु' सब ही बौराईं, को केहि कहइ गमार॥

65

सो, टोना सों कछु कै गयो।
कालि रही मैं न्हात अचानक, पिय यमुना–तट पै गयो।
मृदु मुसकाय नैन सैनन ही, मनमोहन मन लै गयो।
लै गयो जो सो लै गयो, सो उर, मधुर–वेदना दै गयो।
छिन–छिन बाढ़ति मधुर–वेदना, विरह बीज उर बै गयो।
अब 'कृपालु' का पछिताने जो, होना था सो ह्वै गयो॥

66

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हम देखे ढोटा नंद के।
हौं सखि! हैं अवतार सुन्यो अस, ब्रह्म सच्चिदानंद के।
भई लटू मैं भटू पटू ह्वै, लखतहिं आनँदकंद के।
सो सुख जान नैन जो पाये, मुसकाने मृदु–मंद के।
सो सुख जानत श्रवण सुन्यो जो, वेनु–बैन ब्रजचंद के।
तुम 'कृपालु' बचि रहियो उनते, वे स्वामी छल–छंद के॥

67

हरि कै गयो बंटाढार रे।
इकली कालि कूल–कालिंदी लखत रही जलधार रे।
तहँ आयो घूमत अति झूमत, नटखट–नंदकुमार रे।
देखत ही देखत देखत ही, द्वै दृग ह्वै गये चार रे।
कह्यो मोहिं प्यारी नथवारी!, मोते करि ले प्यार रे।
इकटक लागि 'कृपालु' टकटकी, सुधि बुधि देह बिसार रे॥

68

हर्‌यो सखि, मो मन मोहन–लाल।
हौं यमुना–तट गई भरन घट, पनघट मिल्यो गुपाल।
सुघर सलोना, नंदडुठोना, टोना किय ततकाल।
परी ठगोरी, रति–रस बोरी, भोरी हौं ब्रजबाल।
नैन निगोरे, अति बरजोरे, जोरे नात रसाल।
अब मोहिं पल पल, परत न कहुँ कल, जलभर नैन विशाल।
अनजाने 'कृपालु' मनमाने, ठाने हठ अस हाल॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

69

हाय दइ! उठत करेजे हूक।
लख्यो सखी! ब्रजराज आज बस, इहै दृगन की चूक।

लखतहिं मोहिं मार्यो मनमोहन, नैनन बान अचूक।
घायल गिरी धरणि हिरणी ज्यौं, भयो हृदय दुइ टूक।
अब सिंगार भार सम लागत, विष सम कोकिल कूक।
काहू सौं 'कृपालु' कछु कहु जनि, जानु प्रेम रस मूक॥

70

हाय सखी! दृगन मिलाय मन लै गयो।
हौं भोरी सखि! वयस किशोरी,
हाय सखि! ना जाने का जादू कै गयो।
भई बावरी तलफत डोलूँ,
हाय सखि! दुसह–पीर उर दै गयो।
मृदु मुसकाय मधुर धुनि 'प्यारी',
हाय सखि! कहि के न जाने कितै गयो।
कहा करूँ कित जाउँ पिया बिनु,
हाय सखि! पलक, कलप सम ह्वै गयो।
अब 'कृपालु' केहि भाँति सरेगी,
हाय सखि! विष–बेलरि उर बै गयो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मान-माधुरी

1

मानिनी, छिन-छिन मान करे।
इक कर नखन लिखति कछु भूपर, इक कर, चिबुक धरे।
भृकुटी कुटिल कमान तनी जनु, नागिनि फन निकरे।
अति रिस भरी, लखति इत उत चहुँ, लखि लखि सखिहुँ डरे।
बिखरी लट दुलरी, तिलरी, पट, भूषन अवनि परे।
गिरिधर दोउ 'कृपालु' कर जोरे, काँपत डरनि खरे॥

2

मानिनी, डर हरि दूर खरे।
जाके डरहिं डरहुँ डरपत सो, मानिनि डरहिं डरे।
भृकुटिन लखत, निकट फटकन को, साहस नाहिं परे।
पुलक, स्वेद तनु थर थर काँपत, नैननि नीर ढरे।
कहन चहत नहिं कहत, लखन चह, लखत न, लखत तरे।
लिखत 'कृपालु' नखन पग भू पर, उर नहिं धीर धरे॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

3

मानिनिहिं, सनमुख जात डरे।
गये मनावन हरि ललिता के, पाछे भये खरे।
ललितहिं लली लखीं तेहि दृग जेहि, शंकर, प्रलय करे।
पुनि इमि कर 'तू इत कत आई?, कौन काम बिगरे'।
ललिता कह 'स्वामिनि! तुम बिनु मोहिं, इक पल कल न परे'।
उत 'कृपालु' प्रीतम तो तुम बिनु, साँचुहिं जात मरे'॥

4

सखी तू, उनहिन ओर ढुरे।
मानिनि कहति, सुनो सखि! ललिता, वे सब भाँति बुरे।
हम उन ते नहिं बात करन चह, वे ऐसे निगुरे।
ऐसे घाव किये उनने जो, कैसेहुँ नाहिं पुरे।
तोरि दियो तृण सम सब नातो, अब नहिं नात जुरे।
सुनत 'कृपालु' ओट ते हरि उर, लागत बैन छुरे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

मानिनी, कहु कछु तो का बात?।
ललिता कहति स्वामिनी जू सों, मन ही मन डरपात।

हौं मानति वे बड़े बुरे हैं, निगुरे श्यामल–गात।
पै जो कह, हम ओर ढुरे उन, यह अचरज दरसात।
हम तो तुमहिं दुखी लखि आईं, मम वासों का नात।
तुमहिं 'कृपालु' लली! हम नित चह, देखन मृदु मुसकात॥

6

बताऊँ, तो कहँ सखि! का बात।
सुनहु सखी! ललिता, वाकी कछु, बात कही नहिं जात।
कहत मधुर बोलनि मो ते अस, 'तुम ही सों मम नात'।
पै विहरत चंद्रावलि घर वह, नेकहुँ नाहिं लजात।
कह्यो कालि अइहौं अध रातिहिं, करिहौं तव मनभात।
नहिं आयो 'कृपालु' परखत रहि, तलफत बीती रात॥

COPYRIGHT

7

RADHA GOVIND SAMITI

मानिनी, बात हमारी मान।
बिनु समुझे बूझे ही नित प्रति, लेति मान तुम ठान।
मोहू ते पूछति नहिं टुक यह, कौन तिहारी बान।
चंद्रावलि तो कालि गई रहि, हमरेहिं भवन सुजान।

भई बेर तब सोइ गई तहँ, नहिं आयो तहँ कान्ह।
सो 'कृपालु' नित छली जाति जो, सुनति आन के कान॥

8

कहति का, ललिता बात बनाय?।
हम जानति तुम चोर–चोर दोउ, मौसियाउतहिं भाय।
हम देखी इन नैनन ते पुनि, कत चह मोहिं भुराय।
वाके नखन चिह्न प्रति अंगनि, मो कहँ पर्‌यो लखाय।
देख्यो नाहिं पीत पट वाको, चुनरी उर लहराय।
कहँ लौं कहौं 'कृपालु' बात सखि! मुरलिहुँ तहँ बिसराय॥

9

मानिनी, तू मानति नहिं बात।
हमहूँ देखी निज नैनन सों, कालि यमुन तट जात।
तू तो अपनी अष्ट सखिहुँ की, बातहुँ नहिं पतियात।
तू जानति कितनो नटखट पिय, ऊधम ते न अघात।
कालि लरन लागे बनरन ते, उनकी रही जमात।
बनरन नखन प्रहार किये बहु, इनके श्यामल गात।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि भाजे लै मुरलि पीत पट, हरि रहि गये खिसियात।
चुनरी यह 'कृपालु' मैया की, ओढ़ि लई बलभ्रात॥

10

मानिनी, यह ऐसो संसार ।
अहि मूषिक इव बिनु स्वारथ ही, नित कर पर अपकार।
काउहिं दंपति सुख संपति लखि, खात जगत सब खार।
बिनु इक बातहिं सात बनावत, कुटनिनि यह व्यापार।
भोरिन कहँ बहुभाँति भुरावति, लखि न सकत तिन प्यार।
सुनहु 'कृपालु' कान आपुन अरु, आपुनि आँखि निहार॥

11

सुनो मम, स्वामिनि भानुदुलार।
COPYRIGHT
यह गोलोक नाहिं मानिनि! यह, माया को संसार।
RADHA GOVIND SAMITI
ह्याँ कोउ देखि सकत नहिं काउहिं, सुख संपति परिवार।
लेति मान काहू सों सुनि कछु, नेकु न करति विचार।
अपनेहुँ कानन सुनि सीता के, उर भ्रम भयो अपार।
ताको फल 'कृपालु' हरि रावण, लै गयो लंक मझार॥

12

सुनो मम, प्रियतम नंदकुमार।
तुम मम प्राणनाथ प्राणेश्वर, तुम मम प्राणाधार।
तुम यह भलीभाँति हो जानत, तुम ही सों मम प्यार।
हौं हूँ यदपि जान यह नीके, तुम सब जग भरतार।
तदपि प्रेम बस मानत अपनोइ, सबै भाँति अधिकार।
कह 'कृपालु' यह ज्ञान जात बहि, प्रेम पयोधि मझार॥

13

'माँग हम, स्वामिनि! इक वरदान।
यह नँदनंदन दास तिहारो, देहु दया करि दान।
सृष्टि करौं मुसकान–मात्र ते, प्रलय करौं भौं तान।
निगमागम पुरान सब मो कहँ, कह समरथ भगवान।
सोइ हौं माँगत भीख', लली कह, 'माँगहु श्याम सुजान'।
'माँगत अहौं इहै बस स्वामिनि, अब जनि करियो मान'।
'करि हौं मान 'कृपालु' लाल! जब, हो अपराध महान'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

14

अहो मम, प्रियतम सुंदर श्याम।
हम जानति तुम मोहिं बिनु तलफत, पल–पल आठों याम।

तुमहूँ यह जानत हम तुम बिनु, तलफत रह सब ठाम।
तुम पुनि जानत, मान करति हम, लखि अटपट तव काम।
पुनि क्यों अटपट काम करत इमि, जानि–जानि सुखधाम।
तुमहूँ जान 'कृपालु' तबहुँ कह, विरह प्रेम अभिराम॥

15

श्यामा–श्याम धाम–वृंदावन
सरस प्रेम–रस विपिन बहावत।
यामिनि शरद, संग ब्रज भामिनि,
अभिरामिनि धुनि वेनु बजावत।
जेहि सुनि, तजि अनहद धुनि ज्ञानी,
जानि समाधि उपाधि भुलावत।
दिव्य विलास रास–रस खेलत,
लाल–लाड़ली नाचत गावत।
उरझत उत कुंडल अलकनि, इत,
बेसर वनमालहिं उरझावत।
हिय हुलास कछु हास युगलवर,
लाल युगल निज कर सुरझावत।
पिय तनु लखि प्रतिबिंब प्रिया निज,
जानि आन तिय मान बढ़ावत।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उठि रिसाय चलि कटु सुभाय ललि,
कर धरि चिबुक भृकुटि बल लावत।
लै ललिता सखि अति सभीत पिय,
सजल–नयन कर जोरि मनावत।
फिरि बैठीं मुख मोरि कहति ‘उर,
धरि कोउ तिय अब मो ढिग आवत’।
बड़ असमंजस कहि न जाय कछु,
ठाढ़ो गिरिधर दृग बरसावत।
ललिता बुधि–बल लाल–ओढ़नी,
ओढ़ि लाल दुति–देह दुरावत।
लखि ‘कृपालु’ तिरछे दृग राधे,
हँसि निज प्रियतम कंठ लगावत॥

COPYRIGHT

16

RADHA GOVIND SAMITI

सखी! सुनु, इक अनहोनी बात।
हिलिमिलि कालि निकुंज मंजु बिच, रहे दोउ बतरात।
औचक उर संकल्प दुहुँन के, भयो एक सँग रात।
‘आजु करौ हौ मान अकारन’, हँसिन बात बढ़ि जात।

दोउ किय मान, न दोउ मनायेउ, तब भइ दोउ रिस गात।
कियो मान साँचेहिं तब दोउन, इमि ह्वै गई परभात।
सखिन मनावत हारि गईं पै, मरम न जानि सकात।
पुनि दोउ संगहिं चले मनावन, आपुहिं आपु रिसात।
लखि 'कृपालु' द्वै गात चित्त इक, अचरज कछु न लखात॥

17

छैल भल, अटपट भेष बनायो।
चंद्रावलि-पद बंदि भाल निज, लाल, लाल करि लायो।
दै उपहार पीत अंबर निज, अरुण-ओढ़नी भायो।
बिखरे केश, नैन रतनारे, मुरली कित बिसरायो।
वचन अरबरे, स्वेद, कंप तनु, तव अपराध जतायो।
धनि-धनि निलज! आजु छल उघर्यो, भली करी जो आयो।
सुनि 'कृपालु' कटु वचन लली के, लाल दृगन तम छायो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

18

"कुँवरि! तू झूठेहिं दोष लगाय"।
सुनु मानिनि! सब बात बताऊँ, साँच, न बात बनाय।
कालि सखिन मिलि नवल-कुंज महँ, ललितहिं दईं बिठाय।

मोते कहीं चलहु कुंजन बिच, राधे तोय बुलाय।
हौं भोरो कछु भेद न जान्यों, जानि तोहिं गयों धाय।
गहन–तिमिर पुनि घूँघट याते, कैसेहुँ मुख न लखाय।
मोते कह किय मान मानिनी, पद गहि लेहु मनाय।
हौं याते अकुलाय चरण गहि, दृग अँसुवनि झरि लाय।
याही ते यह लाल–मिहावरि, गई भाल लिपटाय।
मोहिं रोवत तजि उठि पुनि ललिता, कुंजन गई दुराय।
हौं ढूँढत कुंजनि–प्रति हार्यों, कहि–कहि 'राधे! हाय'।
भई प्रभात मरम तब जान्यो, सखियन गयो ठगाय।
याही ते दृग अति अरुणारे, मुरलिहुँ गई हिराय।
अपर चिह्न देखति तू जेतिक, सब उन के गुन आय।
सुनि 'कृपालु' हँसि कंठ लगायेहु, मानिनि सखिन रिसाय॥

19

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्री राधे रानी! अब की लेहु अपनाय।
माँगत भीख क्षमा की राधे! तुम बिनु रह्यो न जाय।
जाहु पिया! तुम्हरी बातन महँ, अब राधे नहिं आय।
कहाँ जाउँ राधे! अब, इमि कहि, गह्यो चरण अकुलाय।
यह पिय! चंद्रावलि–पद नहिं जेहि, लियो अंक लिपटाय।

झिटकि बैठि मुख मोरि मानिनी, पिय अँसुवन झरि लाय।
कह 'कृपालु' मानिनि! ये हारे, अपने सरल सुभाय॥

20

बलि जाउँ मनावन–मान की।
मानिनि श्री वृषभानुनंदिनी, की छवि भौहँ–कमान की।
सजल–नयन, तनु–कंप, जुरे–कर, सभय–बिलोकनि कान्ह की।
कहन चहत कछु कहि न सकत, भौं, लखत लली वृषभान की।
पल–पल कलप जनात, दशा ज्यों, बिनु जल मछली प्रान की।
यह 'कृपालु' दंपति–कौतुक सखि, देखति कुंज–लतान की॥

21

जावो जी, न जल बिच आग लगावो।
तुम्हरो पग, मग चलत थकत कत,
बँटत न कछु किमि पुनि इत आवो।
जा पद–रत, दृग झरत, हरत चित,
धरत शीश तेहि कस बिसरावो।
सुघर! अधर धर, मुरलि मधुर धुनि,
सौतिन–गुन–गन गाइ रिझावो।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

कारी रेख खँचाय प्रेम-पट,
बेदरदी! जनि जरिहिं जरावो।
यह 'कृपालु' वृषभानुलाड़ली,
नहिं गँवारि जेहि पाठ पढ़ावो॥

22

छोड़ि मोहिं, राधे कितै गई।
बिनु कारन लिय ठान मान मम, जीवन प्रान-मई।
ढूँढ़त-ढूँढ़त हारि थक्यों हौं, कुंज-लतन उनई।
तुम बिनु मो कहँ सब जग सूनो, दीखत हाय दई।
प्रान पयान करन चह पै इन, नैनन रोक लई।
तुम बिनु अब 'कृपालु' नहिं बीते, अब लौं हौं बितई॥

23

हाय! मैं, कैसी करूँ जिय जाय।
हा राधे! हा प्रेम अगाधे! तुम बिनु कछु न सुहाय।
पलक-ओट नहिं भई कबहुँ अब, गईं कितै बिसराय।
एकहुँ छिन नहिं तुम बिन बीतत, कहा करूँ अब हाय।
प्रान निकसि जैहैं जब ऐहौ, तब का पैहौ आय।
प्रान एक द्वै तनु 'कृपालु' जिन, तिन कहँ विरह सताय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

24

हाय! मैं, धरूँ कौन विधि धीर।
राधे बिनु आधे पल मो कहँ, ह्वै गये युग सम वीर!
ढूंढत थक्यों, लख्यों नहिं कतहूँ, सुंदर गौर शरीर।
तुम बिनु कौन हमारी राधे! जानि सके उर पीर।
दरसन हित तरसत दोउ नैनन, झर झर बरसत नीर।
बँध्यो 'कृपालु' पियारो प्यारिहिं,–प्रेम पाश जनु कीर॥

25

कुँवरि बिनु, कैसे राखूँ प्रान।
बिनु अपराध मान गहि बैठी, ताने भृकुटि–कमान।
हौं पुनि उन बिन रहि न सकत छिन, यह उनहूँ जिय जान।
केहि विधि धरूँ धीर मोहिं पल पल, भये कलप उनमान।
तनु बिनु प्रान रहे कहु कैसे?, सोचहु मनहिं सुजान।
प्राण एक तनु द्वै 'कृपालु' जब, अचरज कौन महान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

26

लली बिनु, सब विपरीत लखात।
सखिन–समाज साज सब मो कहँ, नेकहुँ नाहिं सुहात।
स्त्रवत सुधा सब जान सुधाकर, मोहिं अंगार जनात।

किसलय–सेज सबन सुखदाई, मोहिं नागिनि बनि खात।
शीतल–मंद–सुगंध पवन मोहिं, मारि मूठि सी जात।
धुनि 'कृपालु' पिक, कीर, मयूरन, वज्रपात जनु गात॥

27

ललो बिनु, पल पल कलप लखात।
लखि प्राणाधिक–प्यारिहिं प्यारिहिं, प्रानहुँ तजि न सकात।
अब अइहैं, मिलिहैं, बतरैहैं, यह आशा नहिं जात।
सुन पिक–बैन ध्यान पिक–बैनिहिं, रहि रहि जिय घबरात।
लखत मृगन मृगनैनिहिं सुधि करि, अधिक अधिक अकुलात।
जियत न मरत 'कृपालु' कहाँ लौं, कहिये दुख की बात॥

28

कुँवरि बिनु, अब तो रह्यो न जाय।
कोटिन प्रान निछावर वापै, जो कोउ लाय मनाय।
सुनु ललिते! तू चतुर–शिरोमणि, पुनि प्यारिहुँ मनभाय।
याते राखि लेहु अब प्रानन, परूँ तिहारे पाय।
'हा! हा!' खाउँ, बलैयाँ लेऊँ, तव कर जाउँ बिकाय।
लै 'कृपालु' मोहिं मोल बार इक, कुँवरि–चरन दिखराय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

29

कुँवरि बिनु, पल छिन कल न परे।
दुसह–विरह–दावानल परि यह, तन, मन, प्रान जरे।
पुनि पुनि ललिहिं नाम गुन गावत, नैनन नीर ढरे।
करि करि सुरति विहार निकुंजनि, उर नहिं धीर धरे।
'हाय! हाय! कहि मुर्छित छिति पर, गिरत लतान तरे।
वेगि 'कृपालु' ललिहिं लै आवहु, उन बिन अब न सरे॥

30

कुँवरि बिनु, सूनो सब संसार।
मालावलि व्यालावलि लागत, अंबर ह्वै गये भार।
किसलय–सेज भई जनु शूली, चंद्र मनहुँ अंगार।
लागत बोल भयानक सखियन, यद्यपि मधुर अपार।
उठति हूक सुनि कूक पिकन की, पवन लूक अनुहार।
कासों कहौं 'कृपालु' लली बिनु, को उर जाननिहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

31

कुँवरि बिनु, जनु उनमाद लखात।
चित्रा कह, सुनु प्रान पियारे, तोहिं लखि हौं घबरात।

कबहुँक बनि विरही दृग अँसुवन, पोवत हार जनात।
कबहुँक कहि 'हा! राधे! राधे!', ह्वै मुर्छित गिरि जात।
पुनि कबहुँक करि अट्टहास अति, आनँद–मद–मदमात।
कबहुँक नाचत, गावत कबहुँक, कबहुँक काँपत गात।
कबहुँक गहत 'कृपालु' मौन पुनि, कबहुँक कछु बतरात॥

32

कुँवरि बिनु, प्रियतम होत अधीर।
तलफत नित जलहीन–मीन ज्यों, बहत रहत दृग–नीर।
'हा प्राणेश्वरि! हा राधे!' कहि, बिलपत, कुंज–कुटीर।
पुनि मुर्छित ह्वै गिरत छिनहिं छिन, नेकहुँ धरत न धीर।
प्रानन आन परी है अब तो, सहि न जाति उर–पीर।
चलु 'कृपालु' द्रुत ललिहिं मनावन, प्रान जात न तु वीर!॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

33

कुँवरि बिनु, कुँवर न उर धर धीर।
कबहुँक पंथ निहारत ठाढ़ो, मंजुल कुंज–कुटीर।
कबहुँक नखन लिखत कछु मेदिनि, नैनन बरसत नीर।
कबहुँक देखि चरन–चिह्नन महँ, धरत शीश तहँ वीर!।

कबहुँक 'हाय! हाय!' कहि निकसत, दीरघ–श्वास समीर।
कबहुँक उठि इत उत को भाजत, विह्वल प्रेम–अधीर।
होत 'कृपालु' कबहुँ पुनि मुर्छित, सुंदर श्याम शरीर॥

34

पिया बिनु, प्यारी होति अधीर।
'पिवु पिवु, रटति अटति ब्रज–वीथिन, घटत न दृग घट–नीर।
तरु–तमाल–श्यामल लखि श्यामा, श्याममई भइँ वीर।
लखन शिखिन, शिखि–पुच्छ–मुकुट सुधि, होति बढ़ति उर–पीर।
करि करि सुरति विहार निकुंजनि, मुर्छित कुंज–कुटीर।
निशि 'कृपालु' लखि चक्रवाक कहँ, कछुक धरत उर धीर॥

35

पिया बिनु, प्यारी जिया अकुलात।
मग जोहति कुंजन बिच बैठी, इत उत चितवत जात।
तरु ते खगन उड़त लखि सोचति, 'आवत श्यामल गात'।
कछु पल परखि 'हाय प्राणेश्वर!' कहि कहि अति बिलखात।
ह्वै अचेत पुनि गिरति धरणि पर, 'हा! हा!' शब्द सुनात।
पुनि उठि करत बिलाप विविध विधि, नेकु न धीर बँधात।
कह 'कृपालु' हम मान अकारन, किये आपु पछितात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

36

पिया बिनु, प्यारिहिं विरह सताय।
विरहिनि निशा निशाचरि बनि ज्यों, रही छिनहिं छिन खाय।
तारे मनहुँ भये अंगारे, नींद सौत भइ आय।
दक्षिण–पवन अहिन–विष लै जनु, सब तनु विष बगराय।
बन्यो सुधाकर, मनहुँ दिवाकर, चिनगारिन बरसाय।
विधि विपरीत 'कृपालु' कुँवरि लखि, गिरी धरणि बिलखाय॥

37

पिया बिनु, उठति हूक हिय हाय।
साँवरि सूरति, मोहिनि मूरति, मो मन गई समाय।
अब मोहिं भूषन, अशन, वसन कछु, सपनेहुँ नाहिं सुहाय।
पुनि पुनि कोउ मूठि सी मारत, मोते सह्यो न जाय।
ज्यों–ज्यों हौं विसरावति त्यों त्यों, अधिक अधिक सुधि आय।
लखि 'कृपालु' प्राणाधिक–प्रियतम, प्राणहुँ तजि न सकाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

38

पिय बिनु, पिय सों तिय बतरात।
भावावेश–समाधि–मगन मन, विहरति तिय दिन–रात।

कबहुँक उठि कह 'तुम अति निष्ठुर, तो सन करहुँ न बात' ।
कबहुँक कह, 'कितने प्यारे तुम, सुंदर श्यामल गात'।
कबहुँक उर लपटाति कहति कछु, कबहुँक पुनि रिसियात।
ललन 'कृपालु' लखति ललितादिक, लखि लखि हिय हुलसात॥

39

अरी ओ ललिते! सुनु इक बात।
गह्यो मान वृषभानुनंदिनी, हौं डरपत तहँ जात।
तू मनाय दे प्राण सखी मम, विरह जरावत गात।
बिनु देखे मोहिं चैन न इक छिन, इक पल कलप लखात।
रहिहौं ऋणी तिहारो युग युग, करिहौं तव मन-भात।
माँगत भीख प्राण की, इमि कहि, पर्‍यो चरण बिलखात।
सुनि 'कृपालु' सखि चली मनावन, मंद मंद मुसकात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

40

कुँवरि बिनु, प्रियतम करत विचार।
ललिता गईं मनावन अबहीं, अइहैं भानुदुलार।
कछुक लजाय कछुक बतरैहैं, करिहैं नहिं दृग चार।
पुनि हौं, ह्वै अधीर भुज भरिहौं, कहिहौं, 'सुनु सुकुमार'।

'भलो बुरो जैसो हूँ तुम्हरो, तुमहिं निभावन–हार'।
यह सुनि रोम रोम लपटैहैं, कहि 'हा! प्राणाधार'।
इमि 'कृपालु' करि ध्यान गिरे हरि, मुर्छित धरणि मझार॥

41

मानिनी, मान मान अब मान।
तुम बिन मोहन रहि न सकत छिन, जान जान जिय जान।
पल पल पंथ निहारत आरत, कान्ह कान्ह तव कान्ह।
रोम–रोम रमि रह्यो गौर–तनु, ध्यान ध्यान नित ध्यान।
पलकनि अटकि कछुक पल परखत, प्रान प्रान सुनु प्रान।
सुनि 'कृपालु' नहि रह्यो मान को, भान भान अब भान॥

42

लखी मैं, नवनि ते अति मृदुताई।
हौं नीकी जानति सखि! पी की, ही की नीकि निकाई।
नवनी द्रवत ताप निज, प्रियतम, पर–तिय–ताप द्रवाई।
सोऊ लखि दूरहिं ते हा हा!, कितनो सूध सुभाई।
'को कह पिय बेपीर' वीर! जो, पीर देत बरिआई।
अति विशाल मन–मानस उनको, अबला अमित समाई।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

कहा कहौं सखि! मन नहिं मानत, उलटो लखत खुटाई।
अब 'कृपालु' भई बेर जाहु घर, राधे भलि भरि पाई॥

43

मानिनी! बात मान तजु मान।
प्रियतम प्राण जात उत तू इत, ठानति मान गुमान।
तुम बिनु उत उन्माद भयो उन, तू इत करति न कान।
'हा राधे!' कहि पुनि पुनि टेरत, मंजुल कुंज–लतान।
गिरत धरनि विलखाय छिनहिं छिन, मनहुँ चले अब प्रान।
अति की बात 'कृपालु' न कतहूँ, नीकी यह जिय जान॥

44

जहँ रहे रैन जाहिं वोहि घर री।
तू मति की भोरी नहिं जानति,
वृथहिं सखी! रहि पायन पर री।
रति–रस–चिह्न प्रकट तनु दीखत,
अबहुँ रही कछु कोर कसर री।
हौं सिगरी निशि जागि बिताई,
दोउ दृग रह निर्झर जनु झर री।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

उत चंद्रावलि घर वे विहरत,
इत हौं विरह–अगिनि रहि जर री।
'कृष्ण पक्ष चन्द्रावलि' सुनि हम,
मन 'कृपालु' अचरज बड़ कर री॥

45

मानिनी, भई बेर अब मान।
तजु अभिमान गुमान मान को, जान चहत पिय प्रान।
खरकत पात चौंकि, तोहिं आवत, जान कान्ह कर कान।
कबहुँक इत उत भाजत तुम्हरोइ, धरे ध्यान नहिं आन।
कबहुँक 'हा राधे' कहि मुर्छित, छिति पर गिरत, न ध्यान।
तुम 'कृपालु' दोउ एक बनहु जनि, जानि जानि अनजान॥

46

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मानिनी, तुम्हरे उर नहिं पीर।
उत विरहागिनि जरत छिनहिं छिन, सुंदर श्याम शरीर।
ठाने मान गुमान इतै तुम, बैठीं छुटि लट चीर।
तुम बिन इक छिन कल नहिं, पल पल, तलफत होत अधीर।
दृग–अँसुवन सों हार पिरोवत, बैठो यमुना–तीर।

'लै कोउ प्राण, प्राण प्यारी कहँ', कहत 'लाउ अब वीर'।
अति, अति बुरी 'कृपालु' जात परि, बहुत मिठाइहुँ कीर॥

47

मानिनी! कौन तिहारी बान।
भरी गुमान तान दोउ भृकुटिन, छिन छिन ठानति मान।
रस महँ विरस करत निशि–वासर, करि करि उर अभिमान।
तलफत ज्यौं जल–हीन मीन त्यौं, तुम बिनु कान्ह सुजान।
आरत बने पुकारत, हारत, कुंज–लतान–पतान।
भई 'कृपालु' निठुर कब ते तुम, तोहिं सरल सब जान॥

48

मानिनी! मान की बान बुरी।
COPYRIGHT
तव छवि मधु–मखियाँ पिय–अँखियाँ, नहिं मानति निगुरी।
RADHA GOVIND SAMITI
निकसन चह असुरी अब तुम बिन, सुधि भूली बँसुरी।
पुनि पुनि कहत बिलखि 'हा राधे!, कुंजनि कौन दुरी'।
दुहुँन रुवावति मान–बानि यह, विष की बुझी छुरी।
तुम 'कृपालु' दोउ विलग न रहि सक, ज्यों घन ते बिजुरी॥

49

सखी सब, सुनहु बात इत आय।
आवत ह्वैहैं मोहिं मनावन, बातन कछुक बनाय।
याते तुम सब कुंज-महल की, बनहु पहरुवा जाय।
सावधान ह्वै करु रखवारी, मो ढिग आन न पाय।
सुनहु और, जब आवे वाते, कोऊ जनि बतराय।
चुपके ते 'कृपालु' मोहिं ललिता, तुरतहिं आय बताय॥

50

लख्यो पिय, कुंज-भवन भननात।
बड़ोइ भयानक कुंज-भवन लखि, मन-ही-मन डरपात।
प्रतिहारिनि चहुँ दिशि लखि डोलत, पूछत 'सखि का बात'?।
एकहु सखि नहिं बात बतावति, तब औरहुँ घबरात।
दृगन झरत, सखि-पगन परत, अति, आरत 'हा! हा' खात।
झटकि पटकि सब आँखि दिखावति, पिय व्याकुल बिलखात।
धाय 'कृपालु' ललिहिं कह ललिता, 'आये श्यामल गात'॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

51

बताओ सखि! राधे गई कौनी ओर।
पैयां परूँ, मैं हा, हा! खाऊँ, लेउँ बलैयाँ तोर।

जल बिनु मीन जिये बरु सजनी, रवि बिनु हो बरु भोर।
प्रियाहीन पै प्रान न रहि सक, कीजै यतन करोर।
पल–पल कलप कोटि सम लागत, उठति हूक हिय घोर।
सिगरी कहति 'प्राणप्रिय' मोको, लेन प्रान चह मोर।
कहि 'कृपालु' 'राधे! राधे' पुनि, मुर्छित नवल किशोर॥

52

सखी मैं, परूँ तिहारे पाय।
वेगि मोहिं दिखराउ गौर–मुख, उन बिन रह्यो न जाय।
जो तू कहे सोइ हौं करिहौं, ललिते! लागु सहाय।
इमि कर जोरत, सखिन निहोरत, कहत 'राधिके! हाय!'।
ढूँढ़त, फिरत निकुंजनि मोहन, गिरत धरणि बिलखाय।
कह 'कृपालु' अति मंद सुरन सों, लागी बुरी बलाय॥

53

COPYRIGHT

मानिनी! कासों सीखी मान।

RADHA GOVIND SAMITI

सद्गुरु कौन दीन गुरु–दीक्षा, फूँकेउ तुम्हरे कान।
ताने भृकुटि–कमान गुमानन, पायो भल गुरु–ज्ञान।
प्रणय करन सिखयो नहिं सद्गुरु, ज्ञान अधूरो जान।
सद्गुरु करे जानि के जग महँ, पानी पीवे छान।

कहति विशाखा हौं लाई लखु, सद्गुरु एक महान।
हँसीं 'कृपालु' लली ललितहिं लखि, संत भेष किय ध्यान॥

54

श्री राधे रानी, परूँ तिहारे पाय।
तू भोरी कछु भेद न जानति, हारी सरल सुभाय।
ये अति चतुर सखी–ललितादिक, झूठेहिं बात बनाय।
सुनु मानिनि! हौं साँचु कहौं मोहिं, कुंजन सखिन बुलाय।
हौं न जात, तो बात बनावति, तू साँचेहि पतियाय।
तुम जानति 'यह तुम्हरो तुम बिनु, पल छिन रहि न सकाय'।
सुनि 'कृपालु' मानिनि अति भोरी, लियो अंक भरि धाय॥

55

श्री राधेरानी!, लागी बुरी बलाय।
बारेक लाग आग अनुरागहिं, फेरि न बुझे बुझाय।
छिन छिन बढ़त जाति विरहागिनि, तन, मन, प्रान जराय।
अनुरागिन कहँ मान विषागिनि, नागिनि–सी बनि खाय।
मानहिं करन जान तुम मानिनि, कबहूँ देखु मनाय।
सो 'कृपालु' किमि जान पीर जेहि, पग नहिं फटी बिवाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

56

श्री राधे रानी! जाके लगे सोइ जान।
तुम तो भरी गुमानन मानन, ठानति करि अभिमान।
तुम बिनु, मनि बिनु फनि जनु छिन–छिन, तलफत पल–पल प्रान।
घेरत विरह, हारि तोहिं हेरत, टेरत कुंज–लतान।
अबहूँ भान न रहत प्रान कहँ, करत मान को ध्यान।
उत 'कृपालु' हाँसी इत फाँसी, का सीखी अस बान॥

57

श्री राधे रानी! अब जनि करियो मान।
जाको जात नात जुरि जासों, जाने या अनजान।
ताको गुन–अवगुन सो सपनेहुँ, धरत न कबहूँ ध्यान।
पुनि तू तो पी की हूँ नीकी, ही की गति पहिचान।
हौं तुम बिनु इक छिन नहिं रहि सक, ज्यों नहिं तनु बिनु प्रान।
तुम 'कृपालु' भल प्रीति रीति कहँ, जानति बनति अयान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

58

श्री राधे रानी! केहि विधि तोहिं समुझाऊँ।
भृकुटि–विलासहिं जियत मरत नित, तुम ते कहा दुराऊँ।

तुम मम गति, पुनि तोहिं तजि मानिनि! कहहु कहाँ हौं जाऊँ।
तुम मम मन, मन बिनु मनमोहिनि, किमि पलहूँ कल पाऊँ।
तुम मम प्रान, प्रान बिनु इक छिन, कैसेहुँ रहि न सकाऊँ।
तुम 'कृपालु' मम सरवस, स्वामिनि!, देहु कमल–पद ठाऊँ॥

59

कुंवरि! तुम, मेरी जीवन–मूरि।
तुम्हरे रास हेतु नित धारत, तव दासिन–पग–धूरि।
किंकर जानि सनातन अपनो, कबहुं न करियो दूरि।
हौं अवगुन–सागर, तुम नागरि, गुन–आगरि भरपूरि।
याते कबहुँ न मान ठानियो, रिस जनि करियो भूरि।
लली 'कृपालु' लगाय कंठ कह, 'तुम सुहाग हम चूरि'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुरली-माधुरी

1

अलि! मुरली के बड़ भाग रे।
याने जाने कौन कियो तप, नित मोहन-मुख लाग रे।
निधरक पियत अधर-रस निशि-दिन, सरस प्रेम रस पाग रे।
कबहुँक कर, कबहुँक उर हरि तेहि, इक छिन कहँ नहिं त्याग रे।
शुक सनकादि शंभु से योगिहुँ, याय करत अनुराग रे।
कह 'कृपालु' यह लोकहिं, वेदहिं, कुलहिं लगावति दाग रे॥

2

अली मोरी, मुरली कौन लई ?।
मुरली बिनु मोहिं चैन न इक छिन, सो मम प्राणमई।
एक कहे 'मैं सुनी कालि कोउ, भार मे डार दई'।
एक कहे 'देखी मैं कतहूँ, सुधि नहिं भूलि गई'।
एक कहे तारी दै हँसि हँसि, 'यह तो भली भई'।
सुनि-सुनि वचन सखिन हरि खीझत, दृगन घटा उनई।
कहति 'कृपालु' मातु 'कत रोवत, देउँ मँगाय नई'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3

अली! यह मुरली बुरी बलाय।
भई बावरी गोपिन डोलति, जनु कोउ मूठि चलाय।
कोउ धावति, कोउ दृग झरि लावति, कोउ करति मुख 'हाय!'।
लोक–वेद–कुल–कानि–आनि–तजि, गई कोउ बौराय।
आनन धरे हिरन तृन कानन, नेकु न सकेउ चबाय।
शुक, सनकादि, शंभु आदिक जे, तेउ समाधि भुलाय।
बधिर 'कृपालु' करत कत अचरज, जो न ठगोरी आय॥

4

अली! यह, मुरली बैर परी।
हौं तो श्याम–विरह विरहागिनि, आपुहिं जाति जरी।
पुनि उत जरिहिं जरावति निगुरी, गिरिधर अधर धरी।
निलज निपट पनघट यमुना तट, डगर बगर पसरी।
जहँ देखहु तहँ बजति लजति नहिं, नगन देह सबरी।
लेहु चुराय 'कृपालु' याय कोउ, नहिं हौं जात मरी॥

5

अरी सखि! क्यों मो पै रिसियाय।
तुम जो कहति कौन तप कीनो, सो जानत बलभाय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

इक पग ठाढ़ी तपत विपिन महँ, जीवन दियो बिताय।
सहत शीत–वर्षा तप निशि–दिन, निज तनु दियो सुखाय।
अंग अंग कटवाय आपुनो, शूलिहुँ आठ लगाय।
तब 'कृपालु' हरि दियो अधर रस, नहिं अस बात बनाय॥

6

बँसुरिया, सखि! या लेहु छिनाय।
विष की बुझी छुरी जनु निगुरी, बँसुरी सबै रुवाय।
ताल, तमाल, रसाल, सालहूँ, नैनन नीर बहाय।
केकिन, कोकन, शुकन, पिकन लखु, अपलक जल बरसाय।
कियो मार–रिपु छार मार कहँ, सोऊ दृग झरि लाय।
सबहिं 'कृपालु' जरावति लै कोउ, याऊ देउ जराय॥

7

मधुर–धुनि, मुरली बजावत कान्ह।
धुनि सुनि विधि, हरि, हर सब मोहे, छुट्यो ज्ञानि–जन ध्यान।
जंगम जीव, भये जड़ सिगरे, जड़ जंगम सुनि तान।
जो जैसेहिं, तैसेहिं उठि धाईं, गोपिन तजि कुल–कान।
नभ तारागन, चंद्रादिक कहँ, निज–निज गतिहिं भुलान।
एक 'कृपालुहिं' बच्यो जगत महँ, निश्चल शैल समान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

8

रवति कहुँ, मुरली कुंज कुटीर।
सुरभि वृंद दोना करि कानन, पियत मूँदि दृग वीर।
क्षुधा क्षुधित बछरन मुख थन, पै, पियत नाहिं बह क्षीर।
मुरछित गिरत अवनितर तरु ते, खग–पिक, केकी कीर।
शिव सनकादि परमहंसन दृग, झर–झर बरसत नीर।
कहँ लौं कह 'कृपालु' कालिंदिहुँ, धार भई लखु थीर॥

9

श्याम तोरी, मुरली ने जुलुम करी।
धुनि सौं नर, किन्नर, सुर मोहे, शिव समाधि बिसरी।
तुम जो रची वेद–मरजादा, सो सब खोय धरी।
वंस–वंस वनवास, आठ–मुख, अंतर पोल परी।
इतनेहुँ पै इतराति, निलज अति, नगन देह सिगरी।
नहिं 'कृपालु' कछु दोष बंसरी, मुँह लग कीन हरी॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

होरी-माधुरी

1

आजा आजा रे, आज खेलन होरी।
कालि लाल इकलिहिं लखि लालिहिं, अंग अंग दिय रँग बोरी।
आजु चलीं खेलन होरी लखु, लली संग लख-लख गोरी।
टेरि सखान कान्ह कह 'आव न, ललकारति ब्रज की छोरी'।
सखन-सखिन, अरु कुँवर-कुँवरि सँग, भई होरी की झकझोरी।
लाल-गुलाल रंग पिचकारिन, कीच मची गहवर-खोरी।
मनसुख मन कछु सूझ ठिठोरी, कह्यो 'सखन सुनियो मोरी।
लाला बँध्यो हारि लाली ते, भाजहु सब अपुनी पोरी'।
जब लौं लाला कहत 'झूठ यह', तब लौं भज्यो सखन दोरी।
इकलेहिं लालहिं बाँधि अली सब, चलीं लली-महलन ओरी।
कह 'कृपालु' तहँ कहा भयो सखि, जनि पूछहु अस बरजोरी॥

2

आजु होरी री, अरी ओरी गोरी।
हैं सिगरी गोरी रँग-बोरी, तू क्यों री कोरी-कोरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरो पिय परदेश गयो पुनि, हौं कैसे खेलौं होरी।
कह्यो कान्ह 'इक बात कान सुनु, कहौं सखी! चोरी–चोरी।
तेरो तो साँचो पिय हौं ही, नेकु देखु मोरी ओरी'।
लखतहिं भई विभोर गूजरी, लोक–लाज तृण सम तोरी।
अवसर पाइ 'कृपालु' तबहिं हरि, किय नख–शिख रँग सरबोरी॥

3

करत हरि, होरी महँ हुरदंग।
देखु सखी! जनु तांडव–गति सों, निरतत शत्रु–अनंग।
बाजत वीणा, वेणु, ढोल, ढप, चंग, मृदंग, उपंग।
रंग–बिरंग रंग पिचकारिन, मारत तकि तकि अंग।
सखिन समेत श्याम–सुंदर को, इंद्रधनुष सों रंग।
एतिक उड़त गुलाल लाल भये, भू–अंबर इक संग।
लाल–गुलालन लखि न परत पुनि, बूड़ी प्रेम–तरंग।
सखि मुख हरि–मुख जानि मलति सखि, रोरिहिं गति अड़बंग।
सुधि नहिं भूषन वसन काहु कहँ, पिये मनहुँ सब भंग।
सखियन लरत परस्पर लखि हरि, दुरि गयो कुंज–लवंग।
कह 'कृपालु' धनि छलिन–शिरोमणि, धनि उन इन छल–ढंग॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

4

चंचल चलु, हट तजु अंचल–पट।
हौं क्वाँरी तू क्वाँरो नटखट, लख ब्रजनारिन लख लंपट।
जो होरी खेलन रुचि तोरी, ऐहौं चोरी वंशीवट।
रंग–बिरंग अनंग–विमोहन!, ल्यैहौं संग रंग भरि घट।
और कान्ह! इक बात कान सुनु, जनि सखान ल्यैयो नटखट।
इमि कहि देखन–मिस पिचकारिहिं, लै कर रँग मार्‍यो झटपट।
हँसि 'कृपालु' कह होरी है, होरी है, सखियन ताल पिटी पटपट॥

5

चल्यो सखि, अस पिचकारिन रंग।
ललित–त्रिभंग अनंग–विमोहन, ह्वै गये रंग–बिरंग।
चंग, मृदंग, उपंग संग ही, बाजत अद्‌भुत ढंग।
वयस किशोरिन जुरि ब्रज–गोरिन, गावत होरिन संग।
मारति रंग अंग प्रति अंगनि, प्रेम–तरंग उमंग।
कह 'कृपालु' मनसुख मन सुख अति, 'पिये सखिन सब भंग'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

6

डारो डारो री, रंग बनवारी पै।
लालहिं लाल गुलाल गाल मलु, मलु अबीर लटकारी पै।

रंग बिरंग रंग पिचकारिन, डारो री गिरिधारी पै।
छोरि लेउ याकी लकुटि कमरिया, लै चलु भानुदुलारी पै।
सेहरा बाँधि बनाय दुल्हनियाँ, मिलि नचाउ अलि! तारी पै।
बलिहारी 'कृपालु' ब्रज नारिन, बलिहारी येहि यारी पै॥

7

देखो देखो री, ठिठोरी होरी की।
परम–पुरुष को नारि बनायो, छवि जनु श्यामा गोरी की।
अटपट पट भूषन पहिरायो, चुनरी पीत पिछोरी की।
सैंदुर, काजर, मेहँदी, मिहावरि, माथे बिंदी रोरी की।
बारम्बार उचार सखिन सब, जय–जयकार किशोरी की।
करत विविध परिहास कहति 'कित, बानि गई बरजोरी की ?।
कोउ कह याय नचावन लै चलु, कुंजनि गहवर खोरी की।
कह 'कृपालु' बलि–बलि होरी की, बलि बलि बलि बलि छोरी की॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

8

बरजो री, लँगर कर बरजोरी।
गालन लाल–गुलाल मलन मिस, गालन लाल मलत गोरी।
कबहुँ मोरि मोतिन–लर तोरी, कबहुँ मोरि गागर फोरी।

गारी सुनि कह 'पुनि दे प्यारी, भल जोरी मोरी तोरी'।
मैया सों कह, सो कह दैया! तुम सब जोवन–मद बोरी।
कह 'कृपालु' को साँचु मान जब, लाला पाँच बरस कोरी॥

9

भाजो भाजो री, कान्ह पकड़ो, पकड़ो।
आजु चखाउ मजा नटखट को, मिटि जावे नित को रगड़ो।
होरी खेलन हित फागुन महँ, जहँ देखो अकड़ो, अकड़ो।
सखिन जूह जुरि घेरि लेहु हरि, भाजि न पाव बाँधि जकड़ो।
पुनि बनाय होरी को भँड़ुवा, कहहु लली सों अब हँकड़ो।
तब 'कृपालु' कछु बस न चलेगो, मुख ताकेगो खड़ोइ खड़ो॥

10

भाजो भाजो री, कान्ह लखु होरी ते।
एक अचंभो देखु सखी यह, हार्‌यो छोरा छोरी ते।
सिगरे ब्रज को माखन खायो, बरजोरी कहुँ चोरी ते।
तदपि भज्यो तजि मुरलि पीत–पट, गहवर वन की खोरी ते।
कछुक दूरि भजि पुनि हरि कह सुनु, का होरी सखि गोरी ते।
कह 'कृपालु' यह बात कहिय अब, जाय आपुनी पोरी ते॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

11

माधव सँग, माधव आयो री।

चलु माधवि! सखियन सँग माधव, माधवि-कुंज बुलायो री।
कह माधवि हम जानत माधव, कुंजन फाग रचायो री।
अलिगन छलन चहत सो छलिया, याते अस जनि जायो री।
सब ब्रज नारिन लै पिचकारिन, कंचुकि माहिं दुरायो री।
कनक कटोरिन भरि-भरि रोरिन, तापर कुसुम सजायो री।
कछु सखियन भरि-भरि घट रंगन, कुंजन माहिं बिठायो री।
पुनि तहँ जाय रंग इक संगहिं, डारि गुलाल उड़ायो री।
पुनिकोउकर, कोउपग, कोउकटिधरि, बांधिललिहिंढिगलायोरी।
तहाँ 'कृपालु' बनाय दुल्हनियाँ, घर-घर जाय दिखायो री॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

12

यह छोरा है, सखी या छोरी है।

याको लखि शृंगार लगत अस, मानहुँ नवल-किशोरी है।
पै लखि याको हाव-भाव सखि!, नहिं लागति यह गोरी है।
कोऊ सखि कह छवि लखि लागत, काहू की चितचोरी है।

कोऊ सखि कह तनु अंगनि लखु, लगत पुरुष को–सो री है।
कह 'कृपालु' यह ब्रह्म नपुंसक, सखिन कहत हो होरी है॥

13

यह होरी है, अरी या होरा है।
दूभर भयो घरहुँ ते निकरन, कैसो गाम निगोरा है।
तनु ही नहिं मनहूँ सखि कारो, मैया कह 'यह भोरा है'।
यह नहिं इकलो चलत, रहत सखि!, संग करोरन छोरा है।
कालिहिं भयो ब्याहु मम आजुहिं, पकरि मोहिं झकझोरा है।
घूँघट टारि फारि कंचुकि पट, कह 'कहु सखि कस जोरा है'।
निधरक गाल गुलाल लाल मलि, पिचकारिन रँग बोरा है।
पुनि कह 'जो पूछे पिय तेरो, कहियो सो पिय मोरा है'।
कह 'कृपालु' हम जानत नीके, यह तेरो चितचोरा है॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

14

यह होरी है, लली! या बरजोरी।
जहँ कहुँ पाव लँगर कोउ इकलिहिं, करत वाय रँग सरबोरी।
तुम्हरे राज पाँय दुख हम सब, जाय लाज बाबा को री।
लली कहीं, सब निज–निज घट महँ, भरहु रंग केसर घोरी।

पुनि जल–यमुन भरन मिस चल सब, पिचकारिन घट महँ बोरी।
एक सखी रह डगर ठड़ी अरु, सिगरी दुरहु कुंज खोरी।
जैसेहिं लँगर वाय छेड़े सब, घेरि लेहु चारिहुँ ओरी।
पुनि इक संग रंग पिचकारिन, मारि मलहु गालहुँ रोरी।
पुनि सब पकरि बांधि लै आवहु, सुनहु सखी मोरी पोरी।
तब 'कृपालु' हौं मन की करिहौं, कहिहौं 'कहु कैसी होरी ?'॥

15

या कारे ने, करे करतब कारे।
सुनु गोरी होरी खेलन मिस, हाय! करोर जुलुम ढारे।
मलत गुलाल गाल कहि ''प्यारी'', मोहूँ कह 'तू कह प्यारे'।
बरबस नैनन नैन मिलावत, पुनि तकि–तकि सैनन मारे।
कहत लजात बात औरन सखि, करत न का, रे दैया रे।
कह 'कृपालु' तू तो अबला सखि! याते विधि, हरि, हर हारे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

रँग डारो न, कान्ह! दउँगी गारी।
सास, ननद सब नाम धरेंगी, तू न जान हम पर–नारी।
छाँड़ु गैल, लखु सखियन देखति, कहहुँ जोरि कर बनवारी।

जगत-प्रपंच न जानत रंचक, यह गोलोक न गिरिधारी।
अहौ श्याम बदनाम सुनै जो, मम गूजर कर लठमारी।
इमि 'कृपालु' कहि झपटि अचानक, छोरि लई कर पिचकारी॥

17

रँग डारो न, लँगर नइ सारी रे।
लेइ निकारि तोरि ठकुराई, हौं जाकी घरवारी रे।
देइ निकारि सास मोहिं घर ते, घर न राख महतारी रे।
बात फैलि जैहैं दिन द्वै में, सब हँसिहैं दै तारी रे।
नित नइ चरचा होय तिहारी, तकत रहत परनारी रे।
तब 'कृपालु' खुलि जाय भेद सब, हम दोउन की यारी रे॥

18

रँग डारो री, वीर! मुरली वारो।
हौं पनघट घट भरन गई रहि, आयो झूमत मतवारो।
काँधे पट-लिपटी-पिचकारी, हौं जानी लकुटी धारो।
जब हौं घट भरि चली डगर तब, लँगर रंग तकि उर मारो।
पकरन भजी पकरि नहिं पायो, भाजि गयो कुंजनि कारो।
कह 'कृपालु' सखि! जल ही को घट, क्यों नहिं वा सिर पर डारो॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

19

राधे सँग, श्याम खेलैं होरी।
इत अगनित सखियन सँग राधे, उतै सखन श्यामहुँ जोरी।
फाग–समर–आँगन वृंदावन, भिरे दोउ दल झकझोरी।
लालहिं–लाल–गुलाल लाल भये, लाल, लाल भइ ब्रज खोरी।
लै पिचकारिन मार परस्पर, रंग बिरंग रंग घोरी।
केशर–रंगभरी लै गागरि, नागरि, नागर–सर ढोरी।
औचक अवसर लखि रँगदेवी, लालहिं गाल रँगी रोरी।
हारे सखन संग हरि इत, उत, जय जयकार लली को री।
सखि–परिकर कर पकरि बांधि हरि, कह्यो करहु अब बरजोरी।
करि सोरह श्रृंगार लाल को, दियो बनाय सुघर गोरी।
दै 'कृपालु' कर ताल अलिन सँग, हँसत कहत हो!हो!होरी॥

COPYRIGHT
20
RADHA GOVIND SAMITI

लला! यह, भला कौन सौं फाग।
धींगामुश्ती करत लरत जनु, धन्य फाग अनुराग।
जैसेहिं लली चली खेलन कहँ, जात गली महँ भाग।
महापुरुष तोहिं परमपुरुष कह, नाम लगावत दाग।

'हा, हा, हू, हू,' करन जान बस, तान, अलाप न राग।
राजहंस की गति 'कृपालु' किमि, जानि सकै कोउ काग॥

21

लाल भये, लाल-गुलालन लाल।
भरि झोरिन गोरिन खोरिन इत, रोरिन होरिन डाल।
बाल लाल भये, भाल लाल भये, लाल-लाल भये गाल।
गुंजमाल मणि-माल लाल भई, लाल भई वनमाल।
दुपटिहुँ लाल, लाल भइ लकुटिहुँ, भृकुटिहुँ लाल गुलाल।
लालहिं लाल 'कृपालु' लाल लखि, देत ताल ब्रजबाल॥

22

लाल सँग, खेलिय हिल मिल फाग।
COPYRIGHT
चलु री सखी! भव-निशा सिरानी, भई भोर गइ जाग।
RADHA GOVIND SAMITI
केशर घोर भाव की गोरी!, पिचकारी अनुराग।
पानि तानि मारिय दृग-बानन, सहज पिया-रस-पाग।
रति-रस-रँग-सरबोरी गोरी, लखु अपुनो बड़भाग।
इमि 'कृपालु' करि उर-पट-बंदी, करु निज अमर सुहाग॥

23

वृंदावन, धूम मची होरी।
सखन सखिन को, सखिन सखन को, लै पिचकारिन रँग बोरी।
लली लाल मंडल बिच ठाढ़े, दुहुँन, दुहुँन किय सरबोरी।
लाल गुलाल लाल भये बादर, लाल लाल भइ ब्रजखोरी।
स्त्रस्त व्यस्त सब के पटभूषन, करत परस्पर झकझोरी।
तब 'कृपालु' कह, साँझ भई अब, कालि होय होरी हो री॥

24

सखी! सब, ह्वै गये लालहिं लाल।
ऐसो रंग चल्यो पिचकारिन, ऐसो उड्यो गुलाल।
लाली लाल, लाल भये लालहुँ, लाल भईं ब्रजबाल।
तरुवर लाल, लाल भये सरवर, शुक, पिक लाल मराल।
धेनु लाल ब्रजरेनु लाल भइ, लाल भये सब ग्वाल।
बाहर लाल 'कृपालु' फाग को, भीतर लाल गुपाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

25

हट खोलो न, घुँघट पट, ओ नटखट।
आगे ननद, सास है पाछे, अबहिं होयगी झट खटपट।

जाय कहेगी मम गूजर सों, लै आवे सो लठ झटपट।
दुइ दिन भये ब्याहु कहँ मो कहँ, अबहिं जायगो पिट चटपट।
चखिहौं मजा फाग को अबहीं, भूलि जायगी चट सटपट।
यह 'कृपालु' गोलोक नाहिं यह, माया लोक निपट अटपट॥

26

हट लिपट न, निपट यमुन–तट पै।
तजु चंचल अंचल–पट लखु सखि, लखति दृगंचल पनघट पै।
वा दिन बाँह मरोरि मोरि दिय, फोरि मारि लकुटी घट पै।
करि बरजोरी मुख मलि रोरी, तोरी लर वंशीवट पै।
करत रीत अनरीत मीत! कत ?, लगत कलंक प्रीत–पट पै।
धनि 'कृपालु' यारी सँग गारी, धनि–धनि वारी लंपट पै॥

COPYRIGHT

27

RADHA GOVIND SAMITI

होरी आई री, अरी वो नथवारी।
घुँघट के पट खोलि खेलि ले, लै प्यारी! कर पिचकारी।
बहुत दिनन ते कहति रही तू, होरी आवति बनवारी।
जो तोय डर गुरुजन को तो चलु, जमुना पार उतर प्यारी।

जो तोय डर मोहूँ ते कछु तो, सँग लै चलु सखियन सारी।
मनभाई 'कृपालु' करि ले तू, यह तेरो पिय गिरिधारी॥

28

होरी खेलो न, श्याम सँग कोउ गोरी।
होरी खेलन मिस सखियन सों, करत फिरत नित बरजोरी।
निधरक कहत 'हमारी प्यारी, मोते लेहु नात जोरी'।
नटखट झपटि खोलि घूँघट पट, मलत गुलाल गाल रोरी।
सब सौं कहत 'नेकु चलु कुंजनि', तकि उर मार सैन को री।
बात बनावति किमि 'कृपालु' सखि!, मन चाहत चोरी–चोरी॥

29

होरी खेलो री, छैल सँग रँग घोरी।
COPYRIGHT
रंग बिरंग रंग लै संगहिं, अंग अंग करु सरबोरी।
RADHA GOVIND SAMITI
आजु बनाय देउ याय विधि सों, मिलि अलि, गाल रँगो रोरी।
सखि कोउ छोरि लेहु पीतांबर, कोउ लेहु मुरली छोरी।
'होरी है', 'होरी है', 'होरी है, कहि कहि, सब लालहिं ललकारो री।
जो 'कृपालु' हरि तबहुँ न हारे, नैन बान मारहु गोरी॥

30

होरी में, हारे हरि हो री।
भागे हरि आगे, सखि परिकर, घेरि पकरि लइ बरजोरी।
बांधि श्याम ल्याईं श्यामा ढिग, करि जयकार लली को री।
वेणी गूँथि, माँग भरि सेंदुर, दियो भाल बिंदी रोरी।
उर कंचुकि, नासा नथ बेसर, चुनरी शीश अतर बोरी।
कर मेंहँदी, पग सुघर मिहावरि, बिछुवनि छवि अँगुरिन पोरी।
करि सोरह श्रृंगार श्याम भये, मनहुँ साँचु श्यामा गोरी।
ललितादिक ढप ढोल बजावति, नाचत हरि गहवर खोरी।
तन, मन, प्राण 'कृपालु' लुटावत, पूछत, 'तू काकी छोरी'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विरह-माधुरी

1

अँखियाँ झर-झर लागीं बरसन।
पल छिन कैसेहुँ कल न पिया बिनु,
जाय कहो कोउ श्याम-सुँदर सन।
उठति करेजे हूक छिनहिं छिन,
पिय हिय तरस न, हम लागीं तरसन।
परसों आवन कहि गये अबहूँ,
आये न, बीत गये सखि बरसन।
प्रान पयान करत नहिं, नैनन,
यह आशा 'पिय देइहैं दरसन'।
अब 'कृपालु' भरि अंक मिलो, या,
निज-कर देहु चलाय सुदर्शन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

2

अँखियाँ, श्याम-प्रेम-रस माती।
जब ते लखी नंदनंदन छवि, मंद मंद मुसकाती।

तब ते इक पल कहँ नहिं कल सखि, तलफति हौं दिनराती।
ये निगुरी समुझति नहिं यद्यपि, समुझावति बहु भाँती।
करि–करि सुरति साँवरिहिं सूरति, भरि अँसुवन झरि लाती।
खारी लग बैकुण्ठ–विभूतिहुँ, मुक्तिहुँ नाहिं सुहाती।
हौं 'कृपालु' अब हारि गई सखि!, तू ही कछु समुझाती॥

3

अँखियाँ, सखि! या रूप लुभानी।
देखन चहत कमल दल लोचन, सुनन चहत मृदुबानी।
हौं समुझावत हारि थकी पै, इन ने एक न मानी।
नहिं सूखत एकहुँ छिन कहँ सखि! इन अँखियन को पानी।
तजि दीनी तृन सम इन निगुरिन, लोक–लाज,कुल–कानी।
जो 'कृपालु' होनी थी हो गइ, अब का होनी जानी॥

COPYRIGHT

4

RADHA GOVIND SAMITI

अब रही न काहू काम की।
जब ते लखी,सखी! मन मोहन, मनमोहिनि छवि श्याम की।
तब ते भई श्याम की, वानेइ, मोल लई बिनु दाम की।
अब तो इन नैनन, मन महँ इक, सुरति बसी सुखधाम की।

लोक वेद की गैल चलूँ कत, ह्वै गइ हौं बिनु पाम की।
धरु 'कृपालु' अब धीर सखी! कोउ, गति न जान विधि वाम की।।

5

अरी कोउ, उर उरझी सुरझावे।
ज्यों ज्यों जतन करत सुरझन को, त्यों त्यों अति उरझावे।
फाँसी भई दृगन की हाँसी, अब सोउ दृग झरि लावे।
मनहूँ जाय मिल्यो उनहिंन सँग, बुधि निज सुधि बिसरावे।
मोहिं अकेली जानि सहेली, विरह अनल धधकावे।
दीरघ श्वास–धूम–दृग–वारिद, कहँ लौं जल बरसावे।
बड़ कलंक सखि! अंक प्रेम पट, जो निज प्राण गँवावे।
अब 'कृपालु' निज सिर धरि ओखलि, चोट ते कस घबरावे।।

6

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अरी! कोउ विरहिनि बाट बतावे।
लखी रीत विपरीत प्रीत की, कहि न जाय सहि जावे।
इत विरहानल जारत सखि! उत, मधुर–मिलन मन भावे।
इत चह सपनेहिं श्याम–मिलन, उत, चिंता सवति जगावे।
इत चह जान प्राण निज तनु तजि, उत दृग रोकन धावे।

इत चह तजन प्रीति विष बेलरि, उत आशा रजु लावे।
गति 'कृपालु' लखि साँप–छछूँदरि, ज्ञानिहुँ ज्ञान भुलावे॥

7

अरी तोय कहा भयो! 'कछु नाहिं'।
कहा बिसूरति बैठी मौन गहि? 'ब्रह्म–रूप निज काहिं'।
कत तनु कंप? 'डरी सखि सोचत, नरक दुखन मन माहिं'।
कत रोवति? 'रोवति नहिं दोउ दृग, आनँद–जल बरसाहिं'।
कत दीरघ निःश्वास? 'सिखत सखि! प्राणायाम सदाहिं'।
कत पुनि पुनि मुर्छित? 'सखि सो तो, ब्रह्म–समाधि समाहिं'।
प्रीति दुरावति किमि 'कृपालु' सखि! तेहि मग, बुध नहिं जाहिं॥

8

अरी मैं, मरी हरी बिनु हाय।
विरह न रहन देत अब प्रानन, कोउ बचावहु धाय।
बिनुहिं अनल हौं जरी जात हौं, रहे नैन झरि लाय।
कहा करूँ? कित जाऊँ? एक छिन, उन बिनु रह्यो न जाय।
तुम प्राणन–ईश्वर प्राणेश्वर!, पुनि कत बेर लगाय।
अब 'कृपालु' पिय बेगि मिलहु न तु, हौं ही मिलिहौं आय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

9

अरी सखि!, पिय सँग नींद गई।
दे कोउ लाय मनाय हाय! यह, कैसी भई दई।
कहति नींद इक रात सखी! तोहिं, हौं निज गोद लई।
आये पिय फिरि गये तबहीं तू, गारी मोहिं दई।
अब जब लौं पिय रह, हौं नहिं रह, यह हौं उरहिं ठई।
दैव 'कृपालु' दुर्बलहिं घातक, दै नित विपति नई॥

10

अरी सखि!, प्राण कंठ चलि आय।
अब तो जीवन–धन बिनु जीवन, कैसेहुँ रहि न सकाय।
उचकति चौंकति बकति तकति कछु, पुनि पुनि मुर्छा आय।
ऐसी हूक उठति हिय पुनि–पुनि, मनहुँ प्राण अब जाय।
है कोउ प्राणसखी लै प्राणन, प्राणनाथ मिलवाय।
अब 'कृपालु' पिय आन मिलो न तु, होइहिं तोरि हँसाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

11

अरी सखि!, प्रीति न करियो कोय।
प्रीति करत दुख होत सखी! अस, जस मरतहुँ नहिं होय।

पुनि मारति पुनि वाय जियावति, प्रीति कहावति सोय।
दिन नहिं चैन एक छिन कहँ कहुँ, रैन गँवावति रोय।
लौकिक वैदिक मर्यादहिं सखि! प्रीति पलक महँ धोय।
कह 'कृपालु' तजु प्रीति जान तब, प्रीति न भावे तोय॥

12

अरी सखि!, मति तोरी भरमाई।
तेरी सौंह साँचु शशि–किरनन, नेकु न ताप लखाई।
श्रुति प्रमाण ते श्रेष्ठ कहत सब, बुध अनुभवहिं सदाई।
कहा सोच! तव रोम रोम महँ, प्रियतम रह्यो समाई।
ये दोउ नैन नेकु नहिं मानत, कोटि भाँति समुझाई।
तजु सखि! वैरिणि प्रीति नाहिं तो, तोर प्राण लै जाई।
तू 'कृपालु' अनजान, लगी नहिं, छूटति कोटि उपाई॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

13

अरी सखि! मन मेरो कहुँ जात।
मैं मति की भोरी अति मोते, दृग मिलाय किय घात।
श्याम–सलोना टोना करि गयो, लगी दृगन बरसात।
मधुर–वेदना हिय बिच पुनि पुनि, विरह करेजो खात।

सुरति बिसूरत सब दिन बीतत, करवट बदलत रात।
यह 'कृपालु' नहिं कहन सुनन की, समुझ प्रीति की बात॥

14

अरी सखि! सिगरो जग बौराई।
तनु जारत जनु अगिनि अंशु–शशि, सब कह शीतलताई।
विरहिणि–वधू वधत सोइ पातक, हिय कलंक बनि छाई।
सोइ पातक नित फैंकि गगन–पथ, अस्ताचलहिं गिराई।
ताही ते शशि चूर चूर ह्वै, तारा बनि बिखराई।
आवन दे शशि! भानु भोर हीं, देखिहौं तव प्रभुताई।
यह 'कृपालु' 'द्विजराज' कहावत, द्विजन विरहिनिनि खाई॥

15

अरे मन, मोहन सों बचि रहियो।
हित की बात कहहुँ, भूलेहुँ जनि, गैल प्रीति की गहियो।
छलिया के छल–छंद–फंद–परि, जनि दारुण दुख लहियो।
निज–वल्लभ इंद्रिन–विषयन सँग, विरहानल जनि दहियो।
लोक वेद–मर्याद मेटि जनि, प्रेम सिंधु मधि बहियो।
हम 'कृपालु' हैं जग के याते, हमरी लाज निबहियो॥

RADHA GOVIND SAMITI

16

अहो प्राणेश्वर! प्राणाधार।
रसिक रँगीलो गुन गर्वीलो, नागर नंदकुमार।
कासों कहूँ! जाउँ कित? प्रियतम, तुम उर जाननहार।
इन नैनन कछु सूझत नाहीं, बहत रहत जलधार।
रहि रहि हिये हूक सी हूलति, भूलति सुधि संसार।
कैसे प्राण रहत नहिं जानति, जियत मरत शत बार।
अब 'कृपालु' पिय आन मिलो, जनि, इतै निठुरता धार॥

17

अहो हरि! अब न विरह सहि जात।
विरहानल दृग–जलहुँ जलायो, लायो मीचहुँ घात।
आस–निरास ग्रंथि निरुबारत, इक पल कलप लखात।
इन मन–इंद्रिन ते हम हारी, कोउ न सुनत इक बात।
यद्यपि समुझत प्रीति–रीति भल, तदपि न धीर बँधात।
जो भावे सो करिय हमारो, एक तुमहिं सों नात।
कत 'कृपालु' अकुलात रात ते, होत सदा परभात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

18

आय नहिं, माधव माधव आय।
कंत बसंत पाय जनु फूली, सरसों हिय हुलसाय।
अंबहुँ गयो बौराय मनुहँ पुनि, कोकिल पिय–गुन गाय।
प्रकटत तनु रोमांच भाव–जनु, फूल कदंब फुलाय।
पतझड़ गयो आय पल्लव जनु, गयो विरह, पिय पाय।
फूल पलास 'कृपालु' फूलि जनु, हँसि हँसि हाय! चिढ़ाय॥

19

आय री, दृग बरसावन सावन।
रस बरसावत लखि पिय आवन, हौं कह 'हा! पिय आव न'।
सब कह यह सावन मन–भावन, पै मो कहँ मन–भाव न।
घन–दामिनि सब काहिं सुहावन, विरहिनि मोहिं सुहाव न।
पपिहा पिवु धुनि सब हरषावन, पै मो कहँ हरषाव न।
सब सुन चावन कोकिल गावन, हौं कह निगुरी गाव न।
सब 'कृपालु' शिखि–नृत्य लुभावन, पै मोहिं नेकु लुभाव न॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

20

ऊधो!, ऐसेहिं कहियो कान्ह।
वे ऐसी अबला प्रबला जिन, जीति न सक भगवान।

वे सब देति चुनौती तुम कहँ, सुनहु खोलि निज कान।
वे अस कहति, न चाहति हम सब, ब्रह्म–ज्ञान, अज्ञान।
नहिं चाहति भगवान न चाहति, सुख बैकुण्ठ महान।
वे 'कृपालु' चाहति जिन प्रियतम, तिन उन माहिं समान॥

21

ऊधो! कहा कहौं तिन काहिं।
अगनित गुन आगरि ब्रजनागरि, तजि कुबरिहिं घर जाहिं।
जो उर महँ कछु और धार अरु, मुख औरहिँ बतराहिं।
ऐसे लबरन कहँ कहु ऊधो!, हौं केहि विधि पतियाहिं।
जिनके प्रथम चरित सुमिरत ही, रोम–रोम हरषाहिं।
उनके चरित 'कृपालु' लखत अब, रोम–रोम डरपाहिं॥

22

ऊधो! कहि दीजो उन जाय।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
उन जस करी, करी नहिं तस कोउ, तबहुँ उनहिं मनभाय।
जिन मैं भजी रैन दिन छिन–छिन, तन मन प्रान लुटाय।
तिन मोहिं तजी दूध माखी जनु, धन्य प्रीति बलभाय।
मो कहँ नहिं कछु सोच आपुनो, सोचत उन डरपाय।
सुनि 'कृपालु' कहुँ कोउ इन बतियन, उनहिं न दोष लगाय॥

23

ऊधो! कहि दीजो बलभ्रात।
जैसी प्रीति करी तुम मोते, तैसी कहुँ न सुनात।
एक प्रेम लखि प्रेम करत जग, सब देखत दिन–रात।
इक बिनु प्रेमहिं प्रेम करत जग, सब जानत पितु मात।
इन दोउन सों रहित न काहुहिं, करत प्रेम इक तात।
तुम 'कृपालु' नहिं इन तीनिउ महँ, सब अटपट तव बात॥

24

ऊधो! कहि दीजो यह तात।
जोरे नात जासु ब्रज बनितनि, तोरि सकल जग नात।
तोर्‌यो तृण सम नात हाय! सोइ, इक पल महँ बलभ्रात।
ज्यों विधवा निज गर्भ पीर कहुँ, काहुहिं कहि न सकात।
त्यों ब्रजनारिन पीर विरह की, काहुहिं कहत लजात।
कहे बिनाहुँ 'कृपालु' काउ सों, अब नाहिंन रहि जात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

25

ऊधो! कहि दीजो संदेश।
ब्रज महँ रहे ब्रजेश, भये अब, मथुरा महँ मथुरेश।

ब्रज महँ रह भोगेश, भये अब, मथुरा महँ योगेश।
ब्रज महँ रह राधेश, भये अब, मथुरा महँ कुब्जेश।
ब्रज महँ रह गोपेश, भये अब, मथुरा महँ भूपेश।
अँगुठा-छाप 'कृपालु' रहे, अब, पंडित भये विशेष॥

26

ऊधो!, कहियो उन घनश्याम।
कोटिन ऊधो भलेइ पठावैं, कोटि काम अभिराम।
पै हमरे प्रति-रोम श्याम बस, तिलहु धरन नहिं ठाम।
यह जानत उनहू निज मन महँ, कहैं न भल सुखधाम।
हम नहिं कहति कछू उनते वे, सुखी रहें वसुयाम।
पै 'कृपालु' करि लैंय सुरति पिय, कबहुँ कबहुँ ब्रजबाम॥

27

ऊधो!, कहियो उन चितचोर।
रास विलास हास परिहासन, प्रथम चोर चित मोर।
अब तुम ते संदेश पठावत, ब्रह्मज्ञान चित जोर।
मधुर मिलन रस सुधा माधुरिहिं, दियो विरह विष घोर।
जो हौं प्रथमहिं अस जनतिउँ, तो, नहिं लखतिउँ दृग कोर।
जबरा मार 'कृपालु' बांधि के, करन न दे पुनि शोर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

28

ऊधो !, कहियो उन नँदलाल।
पहले तो मीठी बतियन को, भल फैलायेहु जाल।
फँसीं जबै तेहि जाल अचानक, सब भोली ब्रज–बाल।
तब अब कह सब निकसि जाहु येहि, तजि जालहिं ततकाल।
यह सब दोष आय अँखियन को, जो देखी गोपाल।
दोषहुँ जानि 'कृपालु' रोष सँग, लागत लाल रसाल॥

29

ऊधो !, कहियो उन भगवान।
उन बिन पल छिन तलफति निशिदिन, यद्यपि ब्रज वनितान।
पै उनते कछु भीख न माँगति, ऐसेहिं कहियो कान्ह।
जाको होय वियोग न ऊधो!, सोइ 'प्रेम' बखान।
जाको होय वियोग भूलिहुँ, सोइ 'काम' जिय जान।
हम 'कृपालु' दोउ एक सदा ते, थे, हैं, रहिहैं, मान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

30

ऊधो !, कहियो कृपानिधान।
बिनु कारण कृपालु वे माधव, वेद–पुरान बखान।

एक बार महराज पधारें, दे दें दर्शन दान।
जो यह नहिं करि सकें, कह्यो तब, दे दें यह वरदान।
अगले जनम जनमि हम मथुरा, कुबरिहिं होंय न आन।
तब 'कृपालु' हो कृपा अवसि तिन, तब मिलि जैहैं कान्ह॥

31

ऊधो!, कहियो नंदकुमार।
हम तुम कहँ जानति सब दिन ते, करुणा को भण्डार।
यह जो अभिनय करत विरह को, सोउ समुझति ब्रजनार।
मथुरा की का बात! जाहु भल, पुनि गोलोक मझार।
पै जब निकसि जाहु हिय ते तब, मानि लेउँ निज हार।
जो 'कृपालु' मिलि विलग न होइ सक, सोई मम भरतार॥

32

ऊधो!, कहियो श्याम सुजान।
पाण्डु रोग जनु भयो तुमहिं बिनु, जड़–जंगम पियरान।
बछरन पियत न दूध सुरभि–थन, तृण न चरति गैयान।
लता गुल्म औषधि सब सूखे, यमुना जलहुँ सुखान।
गोपिन, गोपन की का कहिये, जिनके तुम हो प्रान।
वे 'कृपालु' भल भूलि जाहिँ मोहिँ, हौं न भूलि सक कान्ह॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

33

ऊधो!, कहियो श्यामलगात।
ब्रजवासिन की दशा बतायेहु, जस देखत तस तात।
पुनि इमि कह्यो, श्याम बिनु यद्यपि, तलफति हौं दिनरात।
पै न कबहुँ आवहिं मथुरा तजि, जो वह उनहिं सुहात।
जोइ आचरन सुहात उनहिं बस, सोइ हमरेहुँ मनभात।
सदा 'कृपालु' रहौं भल विरहिनि, पै वे रह मुसकात॥

34

ऊधो!, कहियो हरि समुझाय।
हम सब उनहिं न कबहुँ बिसरिहैं, वे चाहे बिसराय।
वे मेरे प्रियतम, प्राणेश्वर, हम अबला असहाय।
हम सब भईं सनातन चेरी, वे चाहे ठुकराय।
चितवत पंथ रैन–दिन देइहौं, अगनित जनम बिताय।
पै 'कृपालु' को भय पिय! जग सों, तव परतीति न जाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

35

ऊधो!, कहु कब ते अज्ञान।
यदि अज्ञान 'अनादि अनंतहिं', तो अद्वैत न मान।

यदि है 'सादि अनंत' मिटै नहिं, वह कबहुँ जिय जान।
'सादि सांत' तो लहि निज रूपहिं, पुनि मिटि जैहैं ज्ञान।
जो लें मान 'अनादि सांत' तो, सुनि लीजो करि कान।
जगहिं 'कृपालु' अनादि अनंतहिं, वेदन करत बखान॥

36

ऊधो!, कह्यो इहै बलभाय।
गोपन, गोपिन, गायन, बछरन, निशिदिन नीर बहाय।
मुरछित छिति पर गिरत छिनहिं छिन, कहत 'कन्हैया हाय!'।
ज्यों प्रथमहिं आनंद-सिंधु महँ, दिय तिय, पतिहिं बहाय।
त्यों अब विरह-सिंधु महँ दीनी, पति बनितादि डुबाय।
बारेक आय 'कृपालु' श्याम ब्रज, बूड़त लेहु बचाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

37

ऊधो!, जनि कहियो कछु कान्ह।
वे अति सरल-हृदय दुख पैहैं, सुनि मम प्रानन-प्रान।
जो तुम लखत दशा अँखियन ते, सोउ सकें नहिं जान।
जो हठ करि पूछैं कहि दीजो, हैं प्रसन्न बनितान।

पुनि जो पूछें 'कही नहीं कछु', कहियो नहिं कछु आन।
सोइ 'कृपालु' कहियो तुम जासों, रह उन मुख मुसकान॥

38

ऊधो!, जाय कह्यो तुम वाय।
इक इक द्वै ह्वै जात जान सब, पै द्वै ह्वै इक आय।
जग प्रसिद्ध यह चोर चोर दोउ, मौसियाउतहिं भाय।
जस वे माधव तस तुम ऊधव, अंतर कछु न जनाय।
उनने उर विरहाग लगाई, तुम लै घृत छिरकाय।
मोहिं 'कृपालु' नहिं कहन सुनन वे, करैं जोइ मनभाय॥

39

ऊधो!, तजु अद्वैत विचार।
COPYRIGHT
सृष्टि आदि जो करत ब्रह्म सो, अस कह वेद पुकार।
RADHA GOVIND SAMITI
जीव ब्रह्म को अंतर केतिक, सुनहु कहति श्रुति चार।
एक व्याप्य, इक व्यापक, इक है, भृत्य एक भरतार।
एक अंश, इक अंशी, इक है, सुत, इक पितु करतार।
एक प्रेर्य, इक प्रेरक, इक है, अणु इक विभु उर धार।

इक है अल्प–शक्ति–युत इक है, सर्व शक्ति–आधार।
बनि द्वैती 'कृपालु' अब ऊधो!, भजिय ब्रह्म साकार॥

40

ऊधो!, तुम अज्ञान निधान।
हम श्रुति–ऋचन ज्ञान समुझावत, जिनते प्रकटत ज्ञान।
ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान काको कह, काको मानत आन।
तुम ज्ञानी, हम सब अज्ञानी, यह कैसे रह भान।
ब्रजरस लता–पता बनि याचत, सनकादिक तजि ध्यान।
ज्ञान 'कृपालु' उनहिं समुझावहु, जिनकी कुब्जा प्रान॥

41

ऊधो!, तुम आये सोइ देश।
जहँ ब्रह्मा नित ब्रज–रज याचत, धरे भिखारिहिं भेष।
जहँ विचरत गोपी तनु धरि नित, योगीराज महेश।
जहँ सनकादि विटप बनि देखत, सगुण ब्रह्म सविशेष।
जहँ वेदहुँ नित देत बुहारी, नहिं कमलाहुँ प्रवेश।
सुनि 'कृपालु' इन जगतगुरुन गति, सुधि न रही लवलेश॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

42

ऊधो!, तुम दोउन इकसार।
तुम अरु सखा तुम्हारे माधो, भले बने बटमार।
चंदन तजि हम भसम रमावैं, बाघंबर तनु धार।
करें तुम्हारे सखा मधुपुरी, कुब्जा संग विहार।
जेहि मन योग सिखावन आये, सो ढिंग नंदकुमार।
मन 'कृपालु' हरि के मन–मोहन, मो सन कर खिलवार॥

43

ऊधो!, तुम नहिं जानत ज्ञान।
तुम जानत हो ब्रह्म–ज्ञान भल, यदि यह लैं हम मान।
तो कत मन बुधि सों अतीत कह, वेद ब्रह्म विज्ञान।
बुद्धिगम्य यदि ब्रह्म मान तो, ब्रह्म प्रकाशक आन।
विज्ञाता है ब्रह्म, वेद कह, कौन ज्ञान तेहि जान।
दै 'कृपालु' अब जाहु ज्ञान सब, करहु प्रेम–रस पान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

44

ऊधो!, तुमहिं ज्ञान को ज्ञान।
जब लौं जगत भान रह तब लौं, जानिय तेहि अज्ञान।

जब जग भान रहत नहिं नेकहुँ, सोई ज्ञान बखान।
मिटइ ज्ञान, अज्ञान भान जब, ब्रह्म ज्ञान तेहि मान।
जितनोइ ब्रह्मज्ञान उर तितनोइ, प्रकट प्रेम रस खान।
लोकहुँ माहिं 'कृपालु' ज्ञान ते, होत प्रेम सब जान॥

45

ऊधो!, तुमहिं शब्द को ज्ञान।
पढ़े वेद वेदांत बड़े तुम, पै न अर्थ कछु जान।
निर्गुन मान ब्रह्म को तुमहूँ, हमहूँ निर्गुन मान।
प्राकृत त्रिगुण रहित है याको, अर्थ ऋचान प्रमान।
सगुण ब्रह्म मानत दोउन पै, तुम न अर्थ पहिचान।
ताको अर्थ 'कृपालु' कृपादिक, अगणित गुणहिं बखान॥

46

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ऊधो!, दोष न कछु उन आय।
फेंट कसे घूमत बनितनि हित, अस सुभाय बलभाय।
जितनोइ लिख्यो भाग्य महँ सुख बस, तितनोइ सो सुख पाय।
कूबरि को त्रिभुवन सुंदरि किय, नेकु तिलक लगवाय।
त्रिभुवन-सुंदरि कहँ कूबरि किय, गिरति सबै कहि हाय।
बनि कुबरी 'कृपालु' हौं मधुपुरि, मिलिहौं अब हरि जाय॥

47

ऊधो!, धनि तव ज्ञान प्रचार।
हम पूछति तुम सों बिनु वानी, को जग बोलनहार।
बिनु पग गवनि, श्रवन बिनु श्रवनन, कतहुँ लख्यो संसार।
बिनु कर कर्म, जीभ बिनु वक्ता, निज बुधि करिय विचार।
श्रवण मनन तिमि बिन मन बुधि कत, सो ढिंग नंदकुमार।
हँसब ठठाय फुलाय गाल दोउ, यह करि सक करतार।
गूदरि–ज्ञान 'कृपालु' जानि यह, खोलिय हरि दरबार॥

48

ऊधो!, धनि तव ज्ञान विचार।
तुम कह, 'निज स्वरूप चीन्हे बिनु, बँध्यो जीव तनुधार'।
शिशु न जान कोउ मातु पितहिं पै, होत न पशु संसार।
बिनु जाने कोउ अगिनि छुवे तो, होत न शीत तुषार।
माया, शक्ति ब्रह्म की श्रुति कह, बारम्बार पुकार।
सुनि 'कृपालु' ऊधो भये सूधो, बह्यो प्रेम जलधार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

49

ऊधो!, धन्य तुम्हारो ज्ञान।
सब कुछ ब्रह्म, कहत ज्ञानी–जन, तुम कह हमहिं अयान।

पुनि अधिकारिहुँ भेद न जानत, करन चहत कल्यान।
जिनको मन लै गयो श्याम, सो, कैसे धरिहैं ध्यान।
यह छल-ज्ञान उनहिं समुझाइय, जो छल-कपट निधान।
ह्याँ 'कृपालु' नहिं चलिय ठगोरी, खोलिय अनत दुकान॥

50

ऊधो!, धन्य हमारो भाग।
प्रियतम-प्राणसखा-प्रिय दर्शन, हर्ष बुझी विरहाग।
यह मन नहिं अब हाथ हमारे, रह्यो प्रेम-रस पाग।
रोम रोम मोहन मोहिनि-छवि, उरझी अति अनुराग।
कौनेहुँ जनम अवशि पिय मिलिहैं, यह आशा उर लाग।
ज्ञान 'कृपालु' परमहंसन कहँ, किमि जानें हम काग॥

51

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

ऊधो!, बलिहारी येहि ज्ञान।
जीवहिं ब्रह्म कहत तुम मोते, मायहिं मिथ्या जान।
हम पूछति तुम ज्ञान देत केहि, जीवात्महिं या आन?।
यदि 'जीवात्मा ब्रह्म', ज्ञान कस?, मिथ्या आन बखान।
हम पूछति अज्ञान सादि है, या अनादि अज्ञान?।

यदि अनादि कह, ब्रह्म एक कस ?, सोचहु मनहिं सुजान।
कत अज्ञान 'कृपालु' ज्ञान हर, सादि लेहु यदि मान॥

52

ऊधो !, भली करी तुम आये।
यह ब्रज इक जादू की नगरी, ज्ञानिहुँ ज्ञान गमाये।
श्रीयुत करन परमहंसन कहँ, यह ब्रज हरि प्रकटाये।
नीरस ज्ञान सरस करिवे को, माधव तोहिं पठाये।
योगीराज शंभु सनकादिक, जे आये बौराये।
वचन 'कृपालु' गूढ़ सुनि ऊधो, बूड़े थाह न पाये॥

53

ऊधो !, माधो की गति न्यारी।
कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं, समरथ सो गिरिधारी।
निष्कामिनि ब्रज भामिनि तजि किय,कामिनि कुबरिहिं प्यारी।
भूलि गये जो नंद बबा अरु, यशुमति सी महतारी।
वे यदि भूलि जाँय ब्रजनारिन, कौन अचंभो भारी।
हम जानति 'कृपालु' यह नीके, हरि हैं लीलाधारी॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

54

ऊधो!, मैया सों कहियो जाय।
तुम्हरो लाल कियो पालागन, चरण कमल सिर नाय।
यदपि मधुपुरी सकल राज सुख, असन–बसन बहुताय।
तदपि भाव–वात्सल्य–हीन सब, फीको परत लखाय।
विष पिलाय कुच लाय पूतना, गई परम पद पाय।
'अब मैया को कहा दऊँ' यह, निशिदिन सोचत माय।
हौं ऋणियाँ युग युग लौं तेरो, आऊँ का मुँह लाय।
लोकहुँ रीति 'कृपालु' ऋणी जो, सो परदेस सिधाय॥

55

ऊधो!, यह कहियो संदेश।
COPYRIGHT
उन पठयो संदेश जोग को, इन प्रथमहिं तेहि भेष।
RADHA GOVIND SAMITI
खाति न पियति सबै ब्रजबनितनि, नहिं सोवति लवलेश।
रहति बिसूरति मौन धारि नित, तनु श्रृंगार न शेष।
जपति रहति नित नाम, तपति नित, तनु विरहाग ब्रजेश।
जरि 'कृपालु' तनु छार भयो अब, सकुचत मनहिं महेश॥

56

ऊधो!, यह रहस्य की बात।
अति अड़बंगी रीति प्रीति की, तुम नहिं समुझि सकात।
तुम जानत हम मधुर मिलन हित, तलफत नित दिन–रात।
पै मोहिं, जित देखौं तित दीखत, सुंदर श्यामल गात।
गोपी श्याम–वियोग मान सोइ, जाकी मति भरमात।
हम 'कृपालु' दोउ एक हुते, हैं, रहिहैं एकहिं तात॥

57

ऊधो!, यह वेदांत विचार।
जीव, ब्रह्म, माया अनादि ये, तीन तत्व उर धार।
माया–जीव, शक्ति हैं जाकी, सोइ ब्रह्म करतार।
जीव शक्ति आधीन ब्रह्म के, इमि श्रुति कहति पुकार।
हैं दोउ एक शरीर शरीरी, यह अद्वैत निहार।
अणु 'कृपालु' है जीव, ब्रह्म विभु, जानु द्वैत को सार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

58

ऊधो!, इहै ज्ञान को सार।
ब्रह्मलोक पर्यंत भोग अरु, तजि दे मुक्तिहुँ चार।

है निष्काम तैलधारावत, भजि ले नंदकुमार।
ज्यों नृप ज्ञान मात्र ते पाव न, पुरस्कार उपहार।
अरु ज्यों व्यंजन ज्ञानमात्र ते, तृप्ति न होति विचार।
तिमि 'कृपालु' कोउ ज्ञानमात्र ते, रस न पाव संसार॥

59

ऊधो!, वे सब जानन हार।
हौं उतनो जानति नहिं जितनो, जानत नंदकुमार।
हम जानति वे अंतर्यामी, सगुण ब्रह्म साकार।
करन विश्व कल्याण नंद घर, प्रकट्यो लै अवतार।
उनके चरित विचित्र न जानत, विधि हरि हर अनुहार।
हम 'कृपालु' व्यवधान करें किमि, उन आचरन मझार॥

60

ऊधो सरस प्रेम रस पाये।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
ज्ञान सँदेशा दे आये अरु, प्रेम सँदेशा लाये।
ज्ञान–योग सब दै आये अरु, प्रेम रोग लै आये।
निर्गुण ब्रह्म भूलि आये तहँ, सगुण ब्रह्म मन भाये।
गये बनावन चेला जिन कहँ, तिन कहँ गुरू बनाये।
हँसी, 'कृपालु' करन गये प्रेमिन, ज्ञानिन हँसी कराये॥

61

ऊधो !, सुनु चारिहुँ श्रुति सार।
'तत्त्वमसीति' कहत जो वाको, करु गंभीर विचार।
'तस्य त्वं' यह है समास तहँ, 'उसका तू' उर धार।
ब्रह्मज्ञान जानिहूँ, ज्ञानी, रचि न सकत संसार।
सूत्र 'जगद्व्यापारवर्जमिति', इहै भाव विस्तार।
है 'कृपालु' आनंद भोग में, समता दोउ इकसार॥

62

ऊधो !, सुनु सूधो सो ज्ञान।
तुम्हरो ज्ञान, योग साधन सब, सिद्धि प्रेम, जिय जान।
नित्य–युक्त कहँ योग सिखावत, यह तुम्हरो अज्ञान।
तुम्हरो योग रोग हम सब कहँ, भोग प्रेम रस पान।
योग योग हैं सखा तुम्हारे, जिन कर कुबरिहिं ध्यान।
हम 'कृपालु' किमि जान ज्ञान कहँ, जिनके आँखि न कान॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

63

ऊधो !, हम अबला ब्रजनार।
जाइ कह्यो उन नँदनंदन सों, जो लबरन सरदार।

काहू को बल काहुहिं हम कहँ, इक बल नंदकुमार।
काहू के सुत, पति, तिय, भगिनी, नाते जगत हजार।
हमरे जनम जनम को एकहिं, हैं ब्रजराज–दुलार।
वे 'कृपालु' मोहि तजें भजें या, करत न याय विचार॥

64

ऊधो!, हम जानति सब बात।
वे मेरे, मैं उनकी सनातन, तुम नहिं समुझि सकात।
जल अरु वीचि भिन्न सोइ भाखत, जाकी मति भरमात।
विरह अगिनि विरहिनि–मन कंचन, दुति दूनी दमकात।
तुम भोरे ज्ञानी अति कोरे, बीचहिं मारे जात।
अटपट रीति 'कृपालु' प्रीति की, जहँ विधि बुधि बौरात॥

65

ऊधो!, हम पूछति इक बात।
तुम तो कहत जगत मिथ्या यह, सुनि अचरज दरसात।
व्यापक ब्रह्म मान, पुनि जीवहुँ, ब्रह्महिं मानत जात।
पुनि है मिथ्या तत्व कौन जो, तुम कहँ जगत लखात?।
मिथ्याभान ज्ञान महँ कैसे?, प्रत्युत्तर दो तात।
भये 'कृपालु' निरुत्तर ऊधो, मन ही मन खिसियात॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

66

ऊधो!, हम भोरी ब्रजनार।
तन मन, प्रान सबै सँग लै गयो, ठगि ठाकुर ठगहार।
'अइहैं प्राणनाथ' येहि आशा, प्राणहीन तनु धार।
गिरा अर्थ जिमि विलग न रहि सक, कोउ कर यतन हजार।
इमि जिय आन, न मान वियोगिनि, रोम रोम रिझवार।
तुम 'कृपालु' ऊधो! का जानो, माधो जाननिहार॥

67

ऊधो!, हम मतिमंद गमार।
जाय कह्यो उन पिय लंपट सों, जिन किय कुबरिहिं नार।
हम नहिं जान नाम निगमागम, ज्ञानाज्ञान विचार।
जो मो कहँ रह जोग सिखावन, प्रथम कियो क्यों प्यार?।
अब मन बुधि हरि जोग सिखावत, धनि–धनि हरि बलिहार।
बिनु मन बुद्धि 'कृपालु' जान जो, सो समरथ भरतार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

68

ऊधो!, हमरे आँखि न कान।
जाइ कह्यो उन मनमोहन सों, जो कुब्जा के प्रान।

जाके आँखि होति जग महँ सो, चलत देखि जिय जान।
पै हमरे तो आँखि एक बस, सुंदर श्याम–सुजान।
जाके कान होत जग महँ सो, सुनि समुझत कछु ज्ञान।
पै 'कृपालु' हमरे कानन तो, इक पिय–मुरली–तान॥

69

ऊधो!, हम सूधी ब्रज–बाम।
तुम्हरे सखा श्यामसुंदर कहँ, टेढ़ो ही सब काम।
मुकुट, ग्रीव, कटि, पद टेढ़ो करि, ठड़े होत घनश्याम।
टेढ़ो नैन, मैन मदमाते, टेढ़े सैन ललाम।
टेढ़ी प्रीति, रीतिहू टेढ़ी, टेढ़ी गति अभिराम।
ताही ते 'कृपालु' अति टेढ़ी, भाई कुब्जा बाम॥

70

ऊधो!, हरि सों कहियो जाय।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
मग जोहत जिमि तृषित चातकिन, घन–श्यामहिं दृग लाय।
तिमि प्रेमामृत–तृषित सखिन नित, घनश्यामहिं अकुलाय।
पै जो उनहिं मधुपुरिहिं भावे, जनि पावें दुख आय।
हम सब उनहिं सुखी देखन चह, तिन सुख सुखी सदाय।
इमि 'कृपालु' कहि सखिन मौन भईं, ऊधो दृग बरसाय॥

71

ऊधो!, हैं माधो करतार।
वे जो करहिं उनहिं सब छाजत, हैं समरथ भरतार।
श्रीपति कहँ श्रीयुत दिय शेषहिं, शय्या सिंधु मझार।
शिव शंकर को दिय बाघंबर, जो दे मुक्तिहुँ चार।
मातु यशोमति तृण सम त्यागी, हृदय पूतना धार।
उनकी गति 'कृपालु' वे जानें, कछु जानति ब्रजनार॥

72

ऊधो!, हैं माधो ठगहार।
तुम कहँ पठयो ज्ञान देन कहँ, यह श्लेषालंकार।
याको भाव इहै दै ज्ञानहिं, लेहु प्रेम उपहार।
परम विनोदी सखा तुम्हारे, सदा वक्र गति धार।
तुमहिं बिचारे भोरे भारे, उन कहँ मिल्यो गमार।
तदपि 'कृपालु' न टोटो ऊधो!, माधो के व्यापार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

73

ऊधो!, ह्वै गये प्रेम अधीर।
बूड़्यो ज्ञान प्रेम-अंबुधि महँ, धरत न कैसेहुँ धीर।

धरि धरि लतन तरुन भरि भेंटत, झरझर बरसत नीर।
हा प्राणेश्वर! प्राणनाथ कहि, विलपत कुंज कुटीर।
ग्रह गृहीत जनु नाचत गावत, सुधि बुधि नाहिं शरीर।
जयतु 'कृपालु' प्रेम गोपीजन, जिन ज्ञानिहुँ दइ पीर॥

74

ओझाई करि ओझा गये हार।
ओझाराम! समुझ तव थोरी, अति मति-मंद गमार।
लगत जाहि नँदपूत झरत नहिं, भूत सकत तुम झार।
जानत नहिं कछु बात प्रीति की, लक्षण दोउ इकसार।
स्तंभ, स्वेद, रोमांच, कंप दोउ, दोउ मदमत्त अपार।
रुदत, हँसत, नाचत, गावत दोउ, दोउ सुधि-देह बिसार।
पै 'कृपालु' इक लेत प्राण, इक, देत प्राण बलिहार॥

COPYRIGHT

75

RADHA GOVIND SAMITI

कबहुँ जनि, कारेन कोउ पतियाय।
त्रेता भये राम सखि कारे, जेहि भगवान बताय।
बालिहिं बध्यो व्याध जनु छुपि के, वालमीकि अस गाय।
सती शिरोमणि सीतहिं त्याग्यो, विपिन अकेली हाय।

कहत पुरान भये इक वामन, सोउ भगवान कहाय।
तन, मन, प्रान दान दीनेहुँ बलि, बाँधि पताल पठाय।
इक कारे मुरली वारे जेहि, श्रुति भगवान सुनाय।
तन मन प्रान लूटि हम सब कहँ, योग विराग सिखाय।
इन 'कृपालु' कारे भगवानहिं, मोहिं भगवान बचाय॥

76

करहु जनि, कारेन की कछु बात।
तन मन, प्रान समर्पन करि के, जोर्‌यों हरि सों नात।
सो ठुकराय, गये तजि मथुरा, हम तलफति दिनरात।
कंस मारि राजा बनि बैठे, हम सब सों किय घात।
हम वरदान माँग विधि सों मोहिं, करियो कूबरि गात।
कह 'कृपालु' कारेन की बातन, सपनेहुँ तजि न सकात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

77

करी का, ना जाने वाने।
नहिं माने अनजाने नैनन, नैनन उरझाने।
अब सोइ मन–मोहिनि सोहिनि छवि, लखन हठन ठाने।
कहा कहूँ वा चितवनि महँ का, जादू ना जाने।

बरबस लियो सखी! सरबस उन, नैनन अलसाने।
अब 'कृपालु' का होइहैं आगे, सुनत सखिन ताने॥

78

कहत हरि, सुनु सब ब्रज बनितान।
हम जानत हम ब्रज-गोपिन को, प्राननहूँ को प्रान।
हमरोहु प्रानन-प्रान तुमहिं सब, यह तुमहूँ भल जान।
हौं लीनो अवतार जान तुम, करन विश्व-कल्यान।
प्रियतम की रुचि महँ रुचि राखे, सोई 'प्रेम' बखान।
है 'कृपालु' असि-धार धावनो, करनो प्रेम समान॥

79

कहा सखि! कबहुँ न अइहैं श्याम।
COPYRIGHT
बनिहैं कहा निठुर पिय एतिक, सरल सुखद सुखधाम।
RADHA GOVIND SAMITI
कहा सुरति रति-रसहूँ, की सखि!, बिसरैहैं वसुयाम।
कहा भूलि जैहैं प्रिय मनसुख, धनसुख, अरु श्रीदाम।
कहा भुलैहैं नंद-यशोमति, अस परतीति न भाम!।
कहा 'कृपालु' सुरति बिसरैहैं, प्रानन प्रिय ब्रजधाम॥

80

कहो पिय!, किन तोहिं रसिक बनायो।
कब वराह बनि रूप–राशि–बल, मोहनमदन कहायो।
धरि तनु मीन वारि बिच बसि कब, गोपिन चीर चुरायो।
ललित त्रिभंग रूप धरि कच्छप, कब वर वेनु बजायो।
राघवेन्द्र, वामन बनि कब तुम, सखियन रास रचायो।
कब नृसिंह बनि रुद्ररूप धरि, प्रणय–मान–रस पायो।
लहि 'कृपालु' राधे–बल कछु रस, रसिकन नाम गिनायो॥

81

कान्ह की बात रही अब कान।
वे दिन जब नित नव–रस बरसत, ह्वै गये सपन समान।
वे बातें जनु भईं कहानी, सदा ऋणी निज जान।
वे सब दिव्य विलास–रास भये, इंद्रजाल उनमान।
वे यमुना–तट वंशीवट अरु, वृंदावन भये आन।
वे 'कृपालु' गो, गोप, ग्वालिनी, प्रियतम बिनु पियरान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

82

कान्ह बिनु, कैसे राखूँ प्रान।
जेहि आँगन नित लालन खेलत, रह अब भयेउ मसान।

वह छवि पल छिन कबहुँ न भूलति, हिय हूलति मुसकान।
कैसे बिसराऊँ भोरे मुख, की तुतरिन बतियान।
वह मैया! मैया! की धुनि जनु, अबहूँ आवति कान।
उठति करेजे हूक सुरति करि, लरिकैयन की बान।
अब 'कृपालु' यशुमति के वे दिन, ह्वै गये सपन समान॥

83

किये इन नैनन बंटाढार।
ये निगुरे अस बुरे करन गये, द्वै नैनन कहँ चार।
भये न नैनहुँ चार गये इत, द्वै लै नंदकुमार।
अब इन नैनन नीर बहावत, जब बाजी गइ हार।
सुनु सजनी! जो लै गयो, लै गयौ, दै गयो पीर अपार।
जब 'कृपालु' सब लूटि लै गयो, तब जागे का सार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

84

किशोरी पद किंकर श्याम सुजान।
नवल–निकुंज–मंजु बिच नित ही, चापत चरनन कान्ह।
कबहुँक चँवर ढुरावत कबहुँक, खड़ो लिये पिकदान।
बरसाने की गलियन बिच नित, करत लली–गुनगान।

माँगत कृपा किशोरी जू की, करि करि सुयश बखान।
दृग अँसुवन सों चरण पखारत, जब राधे कर मान।
हा हा! खात सखिन सों याचत, राधे दर्शन दान।
गहवर गलिन रटत नित 'राधे!', बिँधे, प्रिया–दृग–बान।
बड़भागी 'कृपालु' सो पिवु जो, राधे हाथ बिकान॥

85

कुँवरि!, तू किते गई डरपाय।
रहि रहि कंप, पुलक तनु सिगरे, स्वेद–बिंदु दरसाय।
सोवत कबहुँक उचकि चौंकि उठि, भाजति इत–उत धाय।
कबहुँक हँसत ठठाइ, कबहुँ कहि, 'हाय!', दृगन झरि लाय।
कबहुँक कछु बतराति आपुहीं, कबहुँक मौन लखाय।
कबहुँक दृग आनँद जल बरसत, कबहुँक कुपित जनाय।
कबहुँक तांडव नृत्य कबहुँ पुनि, अति सलज्ज बनि जाय।
कबहुँक रहति चेतना कबहुँक, तोहिं मूर्छा आय।
ललिता यों 'कृपालु' उठि बोलीं, लागी बुरी बलाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

86

कौन यह, विरह बनायो हाय।
जेहि लगि विरहिनि हाय! हाय! करि, तलफति रहति सदाय।

जो यह विरह बनावन रह तो, काहे मिलन बनाय।
जेतिक मिलन हँसाय हाय! सखि!, तेतिक विरह रुवाय।
पुनि जो विरह बनाय वाय कत, मधुर–वेदना माय।
कह 'कृपालु' पुनि विरह–वेदना, छिन–छिन बाढ़ति जाय॥

87

क्यों पिय!, इतनो इतराय रे।
तुम्हरे दरस हेतु दृग तरसत, निशि दिन जल बरसाय रे।
जो बेपीर! पीर दइ तो क्यों, औषधि नाहिं बताय रे।
एक बार दिखराउ कमल मुख, काहे को तरसाय रे।
तितनोइ विरह सताय हाय मोहिं, जितनोइ तू मुसकाय रे।
जो 'कृपालु' नहिं आय सके तो, मोहीं काहिं बुलाय रे॥

88

क्यों बात बनावति नागरी।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
यह विरहाग लाग उर जाके, रैन रैन भर जाग री।
सुधि बुधि भूलि जात तनु सिगरी, जाति लाज सब भाग री।
नैनन नीर–फुहारे छूटत, तलफति नित विरहाग री।
बावरि ह्वै के नाचति गावति, प्रेम–सुधा–रस पाग री।
जाके लगत 'कृपालु' आग री, सोइ जानति गुन आगरी॥

89

क्रूर!, तू कत अक्रूर कहाय।
कुलिश करोर कठोर तोर हिय, कहु केहि धातु बनाय।
धनि धनि अवनि जननि उन जिन तोहिं, जाय माय पद पाय।
सखियन गति अँखियनहूँ देखत, हा! कत नहिं पतियाय।
लै ले प्राण प्राणप्रिय दै दे, प्राण हाय! अब जाय।
कह 'कृपालु' बहुब्रीहि समासहिं, क्रूर न जासों पाय॥

90

क्रूर वह विधि या यह अक्रूर।
इक सखि कह प्रत्यक्षहिं दीखत, यह अक्रूरहिं क्रूर।
येहि पुनि–पुनि कर जोरि निहोरति, भरि दृग अँसुवन–पूर।
पै टुक हम ढिग लखत न बोलत, चहत सबै किय सूर।
दूजी कह सखि विधि–अधीन सब, सोइ अरि मम सिंदूर।
कह 'कृपालु' जेहि वश विधि सोइ तव, प्राण–सजीवन–मूर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

91

गये कित, गोधन तजि गोपाल।
को गोपाल बिना गो–पालहि, लखु उन गोधन हाल।

रहीं रँभाय रैन–दिन तुम बिनु, कहति आव नँदलाल।
तृन नहिं चर, नहिं पिय यमुना जल, तलफत रह सब काल।
निशि–दिन नैनन नीर बहावति, कृश–तनु विरह बेहाल।
कह 'कृपालु' जस गोधन गति तस, बछरन गति भइ लाल॥

92

गये कित, गोपन तजि गोपाल।
अति उदास नहिं भूख–प्यास तिन, पोवत अँसुवन–माल।
हाय! कन्हैया! कहि–कहि पुनि–पुनि, गिरत धरणि बेहाल।
उर लगाय इक बार जाहु पुनि, प्रान जात ततकाल।
बेर लगैहौ तो पछितैहौ, जियत न पैहौ ग्वाल।
तुम 'कृपालु' मम प्रान प्रान बिनु, तनु न रहे नँदलाल॥

93

गये कित, प्रियतम नंदकुमार।
तुम तो कहत रहे हम ऋणियाँ, तुम मम साहूकार।
देवन आयुहुँ महँ नहिं करि सक, तुम्हरो प्रत्युपकार।
कहत रहे तुम 'प्रानन प्यारी, हैं सिगरी ब्रजनार'।
पुनि कत भूलि गये ब्रजनारिन, तुम समरथ भरतार।
हैं 'कृपालु' हरि अवसरवादी, लबरन को सरदार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

94

गये हम, इन नैनन ते हार।
प्रथम न माने, अति मनमाने, अरुझाने दृग चार।
गये हार जब रोदन ठाने, मो गर फाँसी डार।
जो कछु करयो, भर्‌यो सो अबहूँ, सोचत नाहिं गमार।
लंपट भ्रमर सरस-रस-लोभी, विहरत कुसुम अपार।
इमि जिय जानि ध्यान तजि उनको, सोइय पाँव पसार।
किमि 'कृपालु' सोइय जिन नैनन, करकत नंदकुमार॥

95

गयो लै, प्रान प्रान को प्रान।
अब बिनु प्रान राख तनु कैसे, सिगरी ब्रज बनितान।
को काको समुझाय कहा जब, काउ न काउहिं भान।
कोउ ठाढ़ी जनु चित्रलिखी सी, नहिं पिय-ध्यानहुँ ध्यान।
कोउ बैठी धरि चिबुक पाणि बस, पोय माल अँसुवान।
कोउ बावरि ह्वै इत-उत भाजति, कहि हा! श्याम-सुजान।
कोउ उर धरि कर हाय! हाय! कर, कोउ लपटाति लतान।
कोउ 'कृपालु' मुर्छित छिति पर गिरि, को कह दुख सखियान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

96

गयो सखि!, चतुरानन सठियाय।
चतुरानन के आठ नयन पै, परत न नेकु लखाय।
जग देखन कहँ नैन एक ही, मोहिं पर्याप्त जनाय।
पै चाहत रह हरि देखन कहँ, अगनित नैन बनाय।
पुनि नैनन महँ पलक बनायो, गइ विधि बुधि बौराय।
धनि 'कृपालु' त्रिभुवन सो सुरपति, जो सहस्त्र दृग पाय॥

97

चलन चह, तनु तजि मथुरा प्रान।
कछु सखि रहीं ठगी सी ठाढ़ी, देखन निज अँखियान।
कछु सखि रहीं लिपटि रथ, कछु सखि, अश्वन-पग लिपटान।
कछु सखि रहीं सोय रथ पथ महँ, कहि 'हा श्याम-सुजान'।
COPYRIGHT
कछु सखि 'रे अक्रूर क्रूर!' कहि, गिरीं धरणि नहिं भान।
RADHA GOVIND SAMITI
कह 'कृपालु' जो लखि सक सो दुख, सो जड़ मोहिं समान॥

98

चल्यो कित, लै प्रानन अक्रूर।
तू नहिं जानत ब्रज बनितनि को, सोइ सुहाग-सिंदूर।

अगनित ब्रज–बनितनि तनु हत्या, करन चहत कत क्रूर।
तनु बिनु प्रान रहैं कहु कैसे, सो मम जीवन–मूर।
जासु संग नित–प्रति नव–नव रस, बरसत रह भरपूर।
ब्रजगोपिन 'कृपालु' किमि जीवहिं, भये प्राण–धन दूर॥

99

छिनहिं छिन नैनन नीर भरे।
मनमाने इन नैनन, उनके, नैनन जाय लरे।
इन नैनन बानन उन नैनन, बानन प्रान हरे।
इन नैनन रोवत उन नैनन, मृदु मुसकात खरे।
इन नैनन उन नैनन झगरत, हम बिनु बात मरे।
सुनी 'कृपालु' न पाप और कर, भोगन और परे॥

100

छीनि लइ, इन नैनन मन चैन।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
जब ते लखी श्याम सुंदर छवि, पुनि तिन नैनन–सैन।
तब ते तन–मन–धन–जन भूले, अस जानति रहि मैं न।
छिन बैठति छिन उठति भजति छिन, नैनन नींद न रैन।
पल–पल चहति सुरति बिसरावन, पै पलहूँ बिसरै न।
अब 'कृपालु' पिय सखि! कब मिलिहैं, दुख मेटन सुख दैन॥

101

छोरि सखि! लै गयो मम सिंदूर।
रथ बैठारि चल्यो मम देखत, हाय! क्रूर अक्रूर।
नाम धर्‌यो अक्रूर कौन येहि, काम इतै जेहि क्रूर।
सो नहिं जान कान्ह ब्रजवासिन, प्रान-सजीवनि-मूर।
कलप समान लगत रह पिय भये, पलक ओटहूँ दूर।
अब 'कृपालु' गये दूर बूड़िहैं, उर ब्रज नैनन पूर॥

102

जियत न मरत न जिय तन भात।
लखि चित घन घन-श्यामहिं चितघन,
घनश्यामहिं अकुलात।
उनहिं लखात कलप, पल कल मोहिं,
कल पल कलप लखात।
उनहिं भात मुख-नलिन अलिन, मोहिं,
अलिन नलिन-मुख खात।
लखत पंख केकिन के, किनके,
किन के नहिं बिलखात।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चितवत उत इतरात 'कृपालुहिं',
चितवत उत इत रात॥

103

तजन को, जाय न सहज सुभाय।
जासों जाय माय देवकि तजि, यशुमति माय बनाय।
बंदीगृह तजि पितु वसुदेवहिं, पितु नँदराय बताय।
मथुरा तजि आयो गोकुल पुनि, नंदगाँव मन–भाय।
पुनि तजि नंदगाम गये मथुरा, अब द्वारिका सुहाय।
कह 'कृपालु' तबहूँ सखि! तू कत, अस प्रियतम पतियाय॥

104

तजी क्यों, प्रियतम ब्रज बनितान।
एक सखी अस कह दूजी कह, 'यह सखि! हौं नहिं मान'।
पुनि सो कह 'सो आये क्यों नहिं, दूजी कह' हम जान।
दै हरि विरह चहत हम विरहिनि, परखन श्याम सुजान'।
पुनि सो कह, सखि! येहि परखन महँ, रह कहु कैसे प्रान।
कह 'कृपालु' अमरत्व दान कर, सोई प्रेम बखान॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

105

दई! मोहिं, दई पीर बेपीर।
नागरि भरन गई रहि गागरि, तहँ नागर रह वीर!।
वाने ना जाने का कीनो, मारि नैन उर तीर।
हौं ज्यों-त्यों आई घर लै सँग, मधुर वेदना पीर।
अब सो पीर दुरावति पै उर, धरत न कैसेहुँ धीर।
दे 'कृपालु' बेपीर पीर यह, अचरज देखु अहीर॥

106

दृग–पट मुकुट लटक पे अटकि गयो।
जिन विषयन सों संग सदा सों,
तिन सों झट मुख मोरि मटकि गयो।
लोक–लाज बस बरबस हटकत,
भाजि सलोनी लटनि लटकि गयो।
पुनि कैसेहुँ हठ करि रोकत, द्रुत,
भृकुटि–बंक बिनु शंक सटकि गयो।
पुनि ज्यों बरज्यों दृग दृग मिलि यों,
लगि टकटकि इकटक जनु टकि गयो।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

लखि 'कृपालु' दृग चारि हारि अब,
निज मन–बुधि पिय पगनि पटकि गयो ॥

107

देखु सखि!, आई ऋतु बरसात।
याको नित्य मिलन घन श्यामहिं, याही सों इतरात।
घन गर्जन मिस करति मनहुँ यह, अट्टहास मदमात।
दामिनि दमकनि मिस जनु छिन–छिन, पुनि–पुनि हिय हुलसात।
जल बरसन मिस दृग आनँद–जल, बरसावति दिन–रात।
दादुर धुनि मिस जनु 'कृपालु' गुन, गावति श्यामल–गात ॥

108

धन्य चोर सिरमोर, मोर प्रिय,
पंख मोर प्रिय शशिकुल–कारो।
कारो तम, कारो पखवारो,
कारो घन, कारो तन वारो।
जाही छिन छलिया छिति आयो,
निज कारी माया विस्तारो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ताते तजि बंदीगृह कारी,
कालिंदिहुँ ते पार सिधारो।
कर करतूत धूत–मति यशुमति,
बनि सपूत पुनि लेत सहारो।
नंद–सदन निधि रतन सुनत पै,
चोरत निज स्वभाव ते हारो।
लँगर नवनि, दधि, अंबर हरि अब,
मोहरि मो हरि मोह रि प्यारो।
हा! मनमोहन के मन मोह न,
अब मन मो हन काह विचारो।
जे बरजोर चोर चूड़ामणि,
दृश्य पदारथ चोरन हारो।
पै यह अदृश–अमोघ–ओघ–अघ,
नामहिं लेत भसम करि डारो।
चाहत भसम करन मो विरहिनि,
इहै हेरि विरहानल जारो।
यह 'कृपालु' को अति भय लागत,
जरि न जाय हिय रूप तिहारो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

109

धीर अब, कैसेहुँ नाहिं बँधात।
कान्हहिं का नहिं कानहिं ? कान्हहिं, कानन हौं बिलखात।
तू निर्मोही! मोही मोही, मो ही सों ही घात।
प्रान न प्यारे प्राननप्यारे, प्रानन प्यारे भात।
नैन निहारे नैननि हारे, नैननिहारे गात।
पलकनि पलक 'कृपालु' पलक अब, लगत न नेकहुँ रात॥

110

न जावो, मथुरा! प्राणाधार।
जानि-जानि अनजान बनहु जनि, प्रियतम नंदकुमार।
गोपिन गोपन गोधन के इक, तुमहिं प्राण साकार।
तुमहिं बताओ तुम बिनु पुनि कत, रहे प्रान तनुधार।
उर परतीति न आवति जो कह, अइहौं दिन गये चार।
कह 'कृपालु' पुनि कंस नृशंसहुँ, उर डर बारंबार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

111

न लेजा रे, मम प्रानन-प्रान।
तू न जान अक्रूर क्रूर यह, कान्ह प्रान-बनितान।

उन बिनु प्रान राख पुनि कैसे, उनके प्रान सखान।
तजि दैहैं निज प्रान कान्ह बिनु, बछरन अरु गैयान।
एतिक गोपिन, गोपन, गोधन, दै दे जीवन–दान।
कह 'कृपालु' अक्रूर दोष नहिं, हरि इच्छा बलवान॥

112

नहिं आये प्रियतम हाय! रे।
परसों आवन कहि गये पिय दिय, बरसों हाय बिताय रे।
निशि दिन नैनन नीर बहावत, तबहुँ न हाय! सुखाय रे।
विरहागिनि हौं जरी जात हौं, कोऊ, हाय! बचाय रे।
पापि पपिहरा पिवु–पिवु कहि कहि, मो कहँ और जराय रे।
बिनु 'कृपालु' हरि नहिं कोउ अपनो, मो कहँ हाय! लखाय रे॥

113

निठुर मोहिं, दै गयो विरह अपार।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
लै सरवस, बरबस करि बस हरि, बस मधुपुरी मझार।
वयस–किशोरी रति–रस–बोरी, विकल सकल ब्रजनार।
धन्य रीत विपरीत प्रीत की, धन्य मीत उपहार।
कुबरिहिं भोगिनि हमहिं वियोगिनि, योगिनि–योग विचार।
लखि 'कृपालु' व्यवहार प्यार को, बार बार बलिहार॥

114

पथिक तुम, इतनो कहियो जाय।
अब न कबहुँ कछु कहहुं लाल सों, एक बार आ जाय।
ऊखल माहिं न कबहुँ बाँधिहौं, कितै उरहनो आय।
माखन–चोरी ते न रोकिहौं, करे जोइ मनभाय।
जो कोउ ब्रज में कान्हहिं छेड़े, वाको दऊँ बँधाय।
मोको माय न माने तबहूँ, नातो माने धाय।
इमि 'कृपालु' कहि यशुमति विलपति, दृग अँसुवन झरि लाय॥

115

पपिहरा, पापी मोहिं सताय।
हौं तो आपुहिं जरी विरह–दव, तू जनि मोहिं जराय।
कल न परत मोहिं कैसेहुँ, इक पल, कलप समान बिताय।
कहा बैर मोते अधरातिहिं, पी पी शब्द सुनाय।
तू तो जानत सहत विरह–दुख, पुनि क्यों मोहिं तड़पाय।
दै 'कृपालु' अँगुरी रहु कानन, खल मन कछु न बसाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

116

पिय आवन कहि गये, आये ना।
नहिं आये सो बात कछू नहिं, मोहूँ काहिं बुलाये ना।

नाहिं बुलाये बात नहीं कछु, कछु संदेश पठाये ना।
ऐसे श्याम भये निर्मोही, नैनन तपन बुझाये ना।
अस जनतिउँ तो सब सों कहतिउँ, कोउ इन प्रीति लगाये ना।
अब 'कृपालु' पिय! आइय वेगिहिं, कछुक तोर घटि जाये ना॥

117

पिय बिनु, कैसेहुँ जिय नहिं चैन।
दरस दिवाने अति मनमाने, ठाने हठ दोउ नैन।
दृग बरसावत दिवस बितावत, तारे गिन गिन रैन।
हिय सों निकसति हूक छिनहिं छिन, मुख सों पिवु पिवु बैन।
कहँ लौं प्रीति दुराइय आली! हाथन चंद दुरै न।
हौं 'कृपालु' तोहिं प्रथमहिं बरज्यों, बचियो नैनन-सैन॥

118

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पिय बिनु, मो कहँ कछु न सुहाय।
नैन निगोरे, नातहिं जोरे, इन्द्रिन लिये मिलाय।
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गँधहिं, इंद्रिन पिय मन भाय।
लखि इंद्रिन रस-सागर नागर, मनहूँ मिलि गयो जाय।
इंद्रिन, मन बौरात देखि, बुधि, आपु गई बौराय।

प्रान पयान करन चह जब ही, बरजत सब मिलि धाय।
इक 'कृपालु' को संग दियो बस, हाय! हाय! बस हाय!॥

119

पिय बिनु, प्यारी गइ बौराय।
ऋतु बसंत कहँ कंत जानि कह, 'हँसि हँसि प्रियतम आय'।
तरु तमाल पर, अति रसाल जो, कोकिल कूक सुनाय।
तेहि कह, 'देखु आम्र तरु बैठो, मोहन मोहिं बुलाय'।
झलकत आम्रबौर पकरति कहि, 'पीतांबर फहराय'।
ता पर लखि अलि अवलि कहति, 'लखु, लट कारी लहराय'।
पल्लव लाल 'कृपालु' लाल पग, लाली लखि लपटाय॥

120

पिरोवति राधा अँसुवन हार।
रटति चातकी सरिस निरंतर, पिवु! पिवु प्राणाधार।
भूषन, असन, बसन, नहिं भावत, कृश–तनु विरह अपार।
जड़ जंगम सब सों नित पूछति, 'तुम देखे रिझवार?'।
कबहुँक लता, विटप भरि भेंटत, करि करि सुरति विहार।
होति 'कृपालु' छिनहिं छिन मुर्छित, सखिन करति उपचार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

121

पुनि शरत-पूर्णिमा आ गई।
कौन प्रीत की रीत मीत की, बीत अरी वरषा गई।
नहिं आये नहिं हमहिं बुलाये, अस कुबरी मन भा गई।
जो किय पिय! अपमान सदा तव, सो फल हम भल पा गई।
दे दो क्षमादान अब हम कहँ, बानि क्षमा की का गई।
कह 'कृपालु' यह शरत-रास सुधि, औरहुँ आग लगा गई॥

122

प्राण हित, पावस-ग्रीषम धायो।
ग्रीषम वरषा होड़ परी अब, प्रलय काल चलि आयो।
इत तो अति प्रदीप्त-विरहानल, सब तन आग लगायो।
उत दोउ नैन-बलाहक जल लै, निशि-दिन ही बरसायो।
प्रथम नाथ! ज्यों पिये दवानल, दुखियन प्राण बचायो।
पिउ 'कृपालु' त्यों पिउ विरहानल, प्राण कंठ चलि आयो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

123

बताओ सखि!, कैसे धरूँ मैं धीर।
जो रातें पल सम मधु बातें, करत बीत गइँ वीर।

वे अब पल पल कटन न मानो, द्रुपट सुता की चीर।
जिन अँखियन जल नेकहुँ आवत, पिय रह होत अधीर।
तिन अँखियन सों सदा एकरस, बहत रहत अब नीर।
जिनते होत पलकहूँ न्यारे, उठत रही उर पीर।
सुनति 'कृपालु' कहानी उनकी, 'थे कोउ श्याम शरीर'॥

124

बलि जाउँ कपट चटसार की।
जहँ राजा भये छलिन–शिरोमणि, प्रजा कपट आगार की।
जहाँ बिकति कुल कानि आनि सब, अति भोरी ब्रजनार की।
जहाँ लूटि वैराग सिखावत, धनि सो निलज लबार की।
जहँ तन, मन अरु प्रान हरन करि, अरपत पीर अपार की।
जहँ 'कृपालु' अस होति ठगोरी, बात बनावत प्यार की॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

125

बार इक, आओ प्राणाधार।
अब तुम को कोउ ग्वाल न कहिहैं, कहिहैं राजकुमार।
राधा–कृष्ण नाम तजि कहिहैं, कुब्जा–कृष्ण पुकार।
'वासुदेव' कहि टेरिहैं अब, नहिँ, कहिहैं 'नंद कुमार'।

ब्रजवासी सब 'महाराज', कहि, करहिं पुष्प–बौछार।
चढ़ि 'कृपालु' सिहांसन आओ, लैं हम प्रजा निहार॥

126

वीर! हौं, धरौं कौन विधि धीर।
जिन सँग छिन–छिन रही रैन–दिन, विहरत प्रेम–अधीर।
तिनके परसन की का कहिये, दुर्लभ दरसन वीर!।
भई चूक वा दिन जा दिन सखि!, लख्यो भ्रात बलवीर।
हौं सपनेहुँ नहिं सोचि सकी अस, ह्वैहैं पिय बेपीर।
कह 'कृपालु' यह नहिं अचरज सखि, जाति प्रभाव अहीर॥

127

बेदरदी! क्यों इतनो इतरात।
टुक हँसि हेरु ओर मम निर्मम!, कहा तोर घटि जात।
दृग सहाय घर पाय हाय! हिय, अब उनहिंन सों घात।
सरबस लूटि, लगाय आग घर, अबहूँ नाहिं अघात।
प्राण कंठगत कछु पल परखत, देखि दृगन बरसात।
क्यों 'कृपालु' पिय! क्रूर कहावत, बड़ अपयश लघु बात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

128

बैरी बसंत, सखी! पुनि आयो।
अंतक प्रानन अंत करन चह, निगुरिहिं कुबरिहिं कंत लुभायो।
पल्लव लाल रसाल साल उर, सरसों फूलि झूलि इठलायो।
कुसुम–कदंबनि भौंरनि अंबनि, बौरन लखि सखि! मन बौरायो।
शीतल–मंद–सुगंध पवन जनु, विरहिनि विरह अगिनि धधकायो।
ताहू पै 'कृपालु' पुनि कोकिल, कूकि–कूकि मोहिं जरिहिं जरायो॥

129

भये द्वै दिन के, कै ह्वै हाय।
वा कुब्जा ने ना जाने का, बूटी वाय खवाय।
आय न सो बलभाय हाय अरु, पातिहुँ नाहिं पठाय।
सहि न जाय यह विरह दुसह–दुख, प्रानहुँ तजि नहिं जाय।
मन कह तन ते चल मथुरा पै, बुधि कह प्रेम नसाय।
कह 'कृपालु' मन–बुधि धरि हरि पद, तनु ते कर्म सुहाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

130

भयो सखि!, अब सो सुख सपनो।
हरि अक्रूर क्रूर हरि लै गयो, अब जग को अपनो।

कहँ लौ करिय सहाय हाय! अब, श्याम नाम जपनो।
अब तो विरह दवानल महँ नित, है हम कहँ तपनो।
अब तनु राखि कहा करनो सखि! विरह विथा खपनो।
कह 'कृपालु' यह विरह जानु सखि! खरो प्रेम–नपनो॥

131

भ्रमर! तू, जनि गुन–गुन गुंजार।
मधुर–बैन मन कपट–कतरनी, लोटत चरन मझार।
एक सुमन तजि अपर सुमन सों, छिन छिन करत विहार।
जा हरजाई सौतन गुन–गन, गाइ करिय मनुहार।
जस राजा तस प्रजा मधुपुरी, सबै कपट व्यवहार।
अब न लागिहैं राउरि माया, कीजै यतन हजार।
अंध 'कृपालु' विचारि धरत पग, लगे ठेह इक बार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

132

भ्रमर! तू, वृथा करत मनुहार।
जानि गई हौं भली–भाँति तोहिं, मिठबोलनो लबार।
कपटपुरी बनि गई मधुपुरी, बसत सबै ठगहार।
मृषा वदत सब वेद ब्रह्म को, करुणा को भंडार।

प्रेमनगर को लूटि बनायो, कपटिन को चटसार।
अब 'कृपालु' लै जाहु और कहुँ, खोलहु कपट बजार॥

133

मन भावन सावन आय रे।
घनन घनन घन गरजि तरजि सखि! मोहिं विरहिनि डरपाय रे।
चम चम चम चम चमकि चमकि जनु, चपला मोहिं चिढ़ाय रे।
पिउ पिउ कहि पापी पपिहा सखि! जनु मोहिं जरिहिं जराय रे।
कोकिल कूकि कूकि कलकंठहिं, जनु कटु वचन सुनाय रे।
नाचि नाचि चहुँ ओर मोर गन, जनु तनु सुधि बिसराय रे।
जो 'कृपालु' पिय आय जायँ तो, जाँय सबै खिसियाय रे॥

134

माधव!, अब न, तुमहिं पतियाउँ।
हँसी कराय कहा तुम पायेहु, पठइ मोहिं अस गाउँ।
अब जो पठवहु कबहुँ कतहुँ तो, हौं न भूलिहूँ जाउँ।
उनके रोम रोम मनमोहन, नाहिं ज्ञान को ठाउँ।
अपनेहिं सखहिं हराय धरायेहु, आपुहिं आपन नाउँ।
तुम 'कृपालु' काहुहिं नहिं छोड़त, केतिक नाउँ गिनाउँ॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

135

माधो! गये देन भल ज्ञान।
खोयो ज्ञान न सोच, सोच यह, निज सुधि बुधिहुँ भुलान।
गयो ज्ञान अज्ञान दोउ मम, ह्वै गयो बस कल्यान।
सरबस लै बरबस मोहिं दीनी, विरह वेदना दान।
हिय बिच हाय! हूक सी हूलति, निकसत चह जनु प्रान।
अब 'कृपालु' आगे का करिहौ, दो बताय भगवान॥

136

माधो! जाउँ तुमहिं बलिहार।
पठयो जहँ उपदेसन तहँ सब, नित्य सिद्ध ब्रजनार।
ब्रजवासिनि गोलोक निवासिनि, प्रकटीं लै अवतार।
ब्रजनारिनि की विरह अगिनि परि, ज्ञान भयो जरि छार।
तुम मोते सब भेद दुरायो, धन्य सखा व्यवहार।
याही धर्म 'कृपालु' सखा को, जो किय नंदकुमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

137

माधो! तुम पूरे ठगहार।
ठग्यो मोहिं नहिं मरम बतायो, स्वयं सिद्ध ब्रजनार।

शुष्क पत्र जिमि ज्ञान बह्यो मम, प्रेम नदी मझधार।
बन्यो वियोगी रस बस बरबस, जोग सिखावन हार।
प्रेम वियोगिनि हैं नित योगिनि, अब समझ्यो यह सार।
अस ठगहार 'कृपालु' मिलहिं जेहि, हौं तापर बलिहार॥

138

माधो! तुम मोहिं भले पठाये।
ब्रज बनितनि के बनन गये गुरु, चेला बनि हम आये।
ज्ञान देन पठयो सो ज्ञानहुँ, प्रेम पयोधि बहाये।
नाम रूप मिथ्या कहि आपुहिं, नाम रूप गुन गाये।
गये ज्ञान नीरस लै, पी रस, प्रेम सुधा बौराये।
पै 'कृपालु' तुम ज्ञान योग को, बड़ उपहास कराये॥

139

माधो! धन्य धन्य ब्रजनार।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
जिनके रोम रोम उरझानो, सगुण ब्रह्म साकार।
सात्विक भाव आठहूँ इनके, प्रकटत नित इकसार।
सहज समाधि सदा इन सब की, गयों देखि बलिहार।
इनहिं चेतनाचेतन सब जग, दीखत नंदकुमार।
कब 'कृपालु' हम लता विटप बनि, चरणधूरि सिर धार॥

140

माधो! पुरवहु मम अभिलास।
राधा–सहचरि–चरण–रेणु उड़ि, कबहुँ परै तनु आस।
वृंदावन की लता पता बनि, कब पैहौं तहँ वास।
धनि बनचरिन, संग जिन विहरत, तजि वैकुण्ठ विलास।
जेहि रस कहँ चारिहुँ श्रुति खोजत, सो रस गोपिन पास।
सोऽहं, 'वह हम' से 'कृपालु' भये, दासोऽहं, 'हम दास'॥

141

माधो! भल पठयो संदेश।
दुर्‌यो ज्ञान तिमि लखि सखियन को, दिव्य प्रेम सविशेष।
जिमि ह्वै जात चंद्र छूमंतर, प्रकटत भोर दिनेश।
बरबस भयो विभोर प्रेमबस, सुधि न रही लवलेश।
भरि भरि अंक लतन भेंटत रह, कहि कहि 'हा प्राणेश!'।
को 'कृपालु' हरि! समुझि सकै तव, लीला नटवर भेष॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

142

माधो! मानि लई हम हार।
जो जनतेउँ प्रथमहिं नहिं जातेउँ, ज्ञान देन ब्रजनार।

तुम मोहिं जानि जानि तहँ पठयेहु, धन्य छलिन सरदार।
भयो ज्ञान बदनाम इतै उत, मिली उपाधि 'लबार'।
दीन ज्ञान कहँ भार डार अब, जान प्रेम ही सार।
अब 'कृपालु' बरबस इन नैनन, बहत प्रेम जलधार॥

143

माधो! मोहिं पठयो वोहि देस।
जहँ बैकुण्ठ नाथ अर्धांगिनि, कमलाहूँ न प्रवेश।
जहँ नहिं त्रिगुणमई माया को, हो निवेश लवलेश।
जहँ नित फिरैं धरे गोपी तनु, भोलेनाथ महेश।
जहँ नित गोपी–पद–रज याचत, विधिहुँ भिखारिहिं भेष।
जहँ 'कृपालु' ठाढ़े बनि तरुवर, सनकादिक योगेश॥

COPYRIGHT

144

RADHA GOVIND SAMITI

माधो! मोहिं लूटीं ब्रजनार।
पोथी पत्रा छोरि छारि मम, दियो बनाय लबार।
लै निरुपाधि समाधि बहायो, प्रेम पयोधि मझार।
निर्गुन ध्यान भुलाय, दियो मोहिं, ध्यान सगुन साकार।

छोरि जोग मोहिं भोग सिखायो, तुम सँग नंदकुमार।
जब 'कृपालु' लिय लूटि सबै तब, कस न बहे जलधार॥

145

माधो! हम मानत आभार।
रहिहौं ऋणी तिहारो युग युग, जो किय मम उपकार।
साँचो सखा श्यामसुंदर तुम, तीनिहुँ लोक मझार।
अब लौं हौं नहिं जानत रह यह, तुमहिं ब्रह्म करतार।
गोपिन ज्ञान देन मिस मो कहँ, दियो प्रेम उपहार।
हार 'कृपालु' जीत भइ मोरी, ज्ञानिन! करहु विचार॥

146

मुझ विरहिनि को विरह सतावे।
विपति हमारी सुनु री सहेली!, पिय बिनु छिनहूँ चैन न आवे।
ज्यों जलहीन मीन तन तलफे, त्यों पिय बिनु पल कलप बिहावे।
प्रियतम प्राणनाथ मग जोहत, निशि–दिन नैनहुँ नीर बहावे।
कोउ तो हाय! दया करि सजनी!, सुंदर–श्याम सों आनि मिलावे।
आवें न आवें अरि! पिय सों कोउ, मुझ विरहिनि की विथा सुनावे।
लोक रीति समुझावु 'कृपालुहिं', अंतहुँ कंत तो कंठ लगावे॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

147

मैं कैसी करूँ, मोहिं कछू ना भाये।
पिय आवन, मनभावन, पावन, दृग सावन–ऋतु लाये।
रहि रहि हूक उठति हिय सजनी! प्राण कंठ चलि आये।
उचकि, चौंकि, चकि, जकि सब यामिनि, भामिनि जागि बिताये।
ऋतु–बसंत, शुक, पिक, केकी धुनि, उलटो मोहिं तड़पाये।
कब 'कृपालु' मोहिं रसिक शिरोमणि, कर गहि कंठ लगाये॥

148

मो सम कौन अभागिनि मात ?।
जो प्राणाधिक श्याम–राम तजि, प्रान न तनु ते जात।
राम लखन तजि तज्यो प्रान जो, धनि सो दशरथ तात।
ऊखल–बंधन सरिस क्रूरता, करत रही दिन–रात।
कपट प्रेम लखि तज्यो लाल जो, नहिं अचरज की बात।
इमि 'कृपालु' यशुमति अधीर ह्वै, मन ही मन पछतात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

149

यह मौन काल ली, का लली ?।
अति उदास नहिं भूख प्यास कछु, योगिनि की गति का चली ?।

चितवनि, हँसनि, गवनि सब भूली, कोउ छलिया तोहिं का छली ?।
झर झर झर दृग झर जनु निर्झर, विरहागिनि महँ का जली ?।
यह काली करतूति लगति मोहिं, जाके काली कामली।
मोहिं 'कृपालु' क्यों नाहिं बतावति, हमहुँ सगी नहिं का अली॥

150

रहत इन, नैनन नित बरसात।
दै गये पिय विरहानल जब ते, यह बरसात न जात।
सब पूछत तुम्हरे सुत–वित–पति, कत रोवति दिन–रात।
तुमहि कहौ हौं कहौं कहा सखि! जार–प्रीति की बात।
जो नहिं दृग–अँसुवन बरसावति, विरह जरावत गात।
कह 'कृपालु' बढ़ि जात प्रेम जब, कोउ न छुपाय सकात॥

151

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

रही सखि!, बात तोर या मोर।
वा दिन कहति रही अति कोमल, प्रियतम नंदकिशोर।
मथुरा जाय लुभाय कूबरिहिं, सुधि बिसरायेउ तोर।
अब कहु प्रियतम अति कोमल या, कर्कश कुलिश करोर।
सखि कह 'होत न जो पिय कोमल, नेकहुँ होत कठोर।

तो सोचहु जिय कत कुबरिहुँ तिय, लेति पिया चित चोर।
सखि 'कृपालु' कह हारि गई हौं, बात तोर बरजोर॥

152

रैन–दिन तलफि रहे दोउ नैन।
दृग बरसावति दिवस बितावति, तारे गिन गिन रैन।
कोटि यतन करि–करि हौं हारी, नेकु न आवत चैन।
हार सिँगार भार सम लागत, विष सम सखियन–बैन।
काहू सों कछु कहत बनै नहिं, कहे बिनाहुँ सरै न।
करत 'कृपालु' विचार हारि गये, हाथन चंद दुरै न॥

153

रैन–दिन, नैनन चैन परै न।
जब ते मार्‌यो नैन–सैन पिय, पैन किंतु सुखदैन।
तब ते भूख प्यास नहिं लागति, लागति नींद न रैन।
मन ही मन पिय गुन–गन गावति, नहिं भावति सखि बैन।
कबहुँ इतै आनंद कि मैं ना, कबहुँ न इक छिन चैन।
पियत 'कृपालु' प्रेमविष–अमृत, पै टुक प्यास बुझै न॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

154

रैन–दिन नैनन नीर ढरे।
जब ते लखी मंजु सो झाँकी, कुंज लतान तरे।
भनत बनै न नैन चितवनि अति, रतिरस रंग भरे।
ललित त्रिभंग अनंग विमोहन, मृदु मुसकात खरे।
लखतहिं सखी! हाय किरिकिरि सों, नैनन आन परे।
अब 'कृपालु' कैसेहुँ नहिं निकसत, ऐसे आन अरे॥

155

रैन–दिन विरहिनि तलफत जात।
दई!! दई!! दइ!! हाय! हाय! कहि, पुनि पुनि अति अकुलात।
कुंज–पुंज टेरत हेरत हरि, सुंदर श्यामल गात।
तारे गिन गिन छिन छिन बितवति, कालनिशा–सम रात।
ग्रह गृहीत जिमि नाचति, गावति, हँसति रुदति बतरात।
बैरी विरह 'कृपालु' लगायो, प्राण लेन की घात॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

156

लखी पिय, जा दिन मृदु मुसकाय।
ता दिन ते सखि रोम–रोम महँ, गइ सोइ सुरति समाय।

जित देखुँ तित सोइ छवि दीखत, सब कह गइ बौराय।
विरह–अगिनि छीजत तन छिन–छिन, निशि–दिन दृग बरसाय।
प्रिय–जन करत विविध–विधि औषधि, कहा काहि समुझाय।
कह 'कृपालु' इक बार हाय! पुनि, कोइ सोइ छवि दिखराय॥

157

लखी सखि! जब ते सुंदर–श्याम।
तब ते दृगन सदा सावन जनु, बरसत रह अविराम।
मन हरि लै गयो, दै गयो हरि उर, विरहागिनि वसुयाम।
एक बात समुझाय सखी! मोहिं, मन–बुधि–भइ बेकाम।
उरझाने नैनन पुनि चोरी, मन की कत भइ राम!।
सखि कह 'सुन उरझनि सुरझावन, आयो मन तेहि ठाम।
को 'कृपालु' सुरझावन की कह, बिको आपु बिनु दाम'॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

158

लखो जनि!, कान्ह की मुसकान।
जो चाहो भूतल पर अपनी, लोक आन अरु बान।
लखतहिं विधि–मरजाद वेद की, छूटि जाति कुल–कान।
तर्क–वितर्क, कुतर्क आदि को, रहत न उर अभिमान।

'हौं बड़, हौं बड़' बड़बड़ात जो, उड़त कपूर समान।
'हौं अपराधी कुटिल नीच' इमि, कहि ढरिहौ अँसुवान।
बिगरिय आपु बिगारिय औरहुँ, यह व्यापार न आन।
हम 'कृपालु' जन्मांध भले अति, पंडित चतुर सुजान॥

159

लगी री मोहिं, श्याम–दृगन की चोट।
पलक न हाय! पलक–दृग लागत, भये पलक ते ओट।
व्याकुल बिनु अपराध प्रान भये, कीन दृगन ने खोट।
मिल्यो जाय अब मनहुँ दृगन सों, तोरि कानि–कुल–कोट।
अब हौं विलपति प्रति कुंजन, उर, धरे विरह की पोट।
तितनोइ खोट 'कृपालु' नंद को, ढोटा, जितनोइ छोट॥

160

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लाग उर, हाय विरह की आग।
वस्तु जराय बुझत पुनि आपुहिं, जग दावागिनि लाग।
सुलगत रहत रैन–दिन पै उर, लाग आग अनुराग।
दिन दृग झर निर्झर जनु झर–झर, रैन बितावति जाग।
नहिं भावत कछु साज–बाज सखि, लोक–लाज गइ भाग।
कह 'कृपालु' यह विरह आग नहिं, परमहंसहूँ भाग॥

161

लाल को, जाल भली मैं जानी।
सुनु सखि! तोहिं बताऊँ उनकी, सिगरी कपट कहानी।
तजि पितु मातु बंदिगृह छल बस, बन्यो पूत नँदरानी।
मोर पंख सिर भेद जनावत, 'अहि अहार, मधुवानी'।
गुंजमाल, वनमाल रूप–छल, महँगी कौड़ी कानी।
तन घन बिच पट पीत न थिर रह, दामिनि गुन उनमानी।
विपुल छिद्र, छूछो हिय मुरली, जेहि सुनि हम बौरानी।
किमि 'कृपालु' इमि प्रकट बखानत, निगम नेति जेहि मानी॥

162

वियोगिनि, अँसुवन हार पिरोय।
COPYRIGHT
करि करि सुरति श्यामसुंदर की, विरहिनि छिन–छिन रोय।
RADHA GOVIND SAMITI
गहवर–वन, वृंदावन, निधिवन, निरखि दुसह दुख होय।
सेवा–कुंज सरस रति–रस की, सुरति बिसूरति सोय।
घर–आँगन प्रिय–परिजन भूषन, वसन न भावत कोय।
धनि 'कृपालु' तिय तदपि कहति पिय, करिय भाय जो तोय॥

163

विरह दुख, कहि न जाय सहि जाय।
जाको भयो वियोग रोग नहिं, सो किमि समुझि सकाय।
जेहि कहु बात बनाय सोइ, इमि, उलटी होय हँसाय।
बिनुहि बताये रहि न जाय पुनि, छिन-छिन विरह सताय।
रोम-रोम रमि रह्यो श्याम इमि, जिमि तिल तैल समाय।
पुनि 'कृपालु' जो चह भुलाय तो, अधिक अधिक सुधि आय॥

164

श्याम! अब बेगि बचावो जी।
विरह-दुशासन प्रान हरन चह, वसन बढ़ाओ जी।
विरह-ज्वाल सों जरी जात हौं, धाइ बुझावो जी।
कहा करूँ कित जाउँ हाय! मैं, तुमहिं बताओ जी।
अब तो प्राण चलन चह प्रियतम, धीर बँधाओ जी।
जो 'कृपालु' पिय किय अबेर तो, जियत न पावो जी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

165

श्याम कत, एतिक भये कठोर।
रहीं सदा वृषभानुदुलारी, प्रानन-प्यारी तोर।

उन दर्शन बिन लगत रह्यो तोहिं, इक पल कलप करोर।
कहत रहे उन चरन-धूरि कहँ, प्राण-सजीवनि मोर।
रहे मनावत मानिनि लखि उन, सजल नैन कर जोर।
अब 'कृपालु' ह्वै गयो कहा तोय, प्रियतम नंद किशोर॥

166

श्याम बिनु, भई श्याम हौं वीर।
तनु झुलसत परि विरह-दवानल, धरत न उर अब धीर।
इत हौं विरहिनि जरी जात उत, दृग बरसावत नीर।
याते जरत न बुझत, रहत नित, सुलगत गौर शरीर।
रसिक-शिरोमणि बिनु सखि! को यह, जानि सके उर पीर।
तनुहिं 'कृपालु' श्याम नहिं मनहूँ, श्याम देखु उर चीर॥

167

श्याम! हौं योगिनि भेष बनैहौं।
लोक, वेद, कुल-कानि-आनि तजि, त्रिकुटी ध्यान लगैहौं।
जटाजूट निज शीश बँधैहौं, अंग विभूति लगैहौं।
कंथा पहिरि पाणि लै खप्पर, अनशन देह सुखैहौं।
धरि अवधूत स्वाँग जनु शंकर, घर घर अलख जगैहौं।
जो 'कृपालु' पिय तबहुँ न पैहौं, विरहागिनि जरि जैहौं॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

168

श्रीराधे! तोरे कौन बलाय लगी।
चिबुक पानि धरि रहति बिसूरति, जनु पिय-प्रेम पगी।
सतराने, अलसाने नैना, जनु कहुँ रैन जगी।
छिन आँगन छिन बाहर भाजति, छिन जनु रहति ठगी।
प्रकटत सात्विक-भाव प्रेम-नदि, जनु अंबुधि उमगी।
कत 'कृपालु' यह भेद दुरावति, हौं तो तोरि सगी॥

169

सखन इक, पाती लिखी बनाय।
प्राण-सखे! यह कौन रीति तव? पातिहुँ नाहिं पठाय।
केहि अपराध कन्हैया! हम कहँ, दिये हाय! बिसराय।
तुम तो सखा-सनातन हम कहँ, कहत रहे उर लाय।
बिनु तुम असन वसन भूषन अरु, गोचारन न सुहाय।
मन कह पकरि कान लै आवूँ, बुधि कह मथुरा राय।
कह 'कृपालु' हौं चह नहिं पाती, जात प्रान अब आय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

170

सखिन तनु, बिनु प्रियतम पियरान।
'हा मम प्राणनाथ'! कहि टेरति, हेरति कुंज-लतान।

कित गये हाय! प्राण–जीवनधन, तजि सब ब्रज–बनितान।
खाति न पियति न सोवति रोवति, छिन–छिन भरि अँसुवान।
मुरछित गिरत छिनहिं–छिन कहि 'हा!, प्रानन प्यारे कान्ह'।
कह 'कृपालु' रह नित हरि उर महँ, तदपि नैन नहिं मान॥

171

सखि, पुनि वरषा ऋतु आ गई।
गइ ग्रीषम नहिं लइ सुधि प्रीतम, उन मन मथुरा भा गई।
गगन सघन घन घननन गर्जनि, मोहिं विरहिनि डरपा गई।
पल–पल चपल चंचला चमकनि, पुनि–पुनि मोहिं तड़पा गई।
कूकनि पिकनि, मयूरनि कुहुकनि, लोन जरे भुरका गई।
कह 'कृपालु' विरहिनि ऋतु बरषा, दृग–अँसुवन बरसा गई॥

172

सखी! इन, अँखियन कछु न लखाय।
जित देखूँ तित साँवरि सूरति, दीखति अति मन–भाय।
कबहुँ मिलन–सुख, कबहुँ विरह–दुख, अँखियन नीर बहाय।
जल बरसावत हारि गई पै, नेकु न तपन बुझाय।
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ आदि सखि!, सपनेहुँ नाहिं सुहाय।
कह 'कृपालु' लहि पारस–मणि सखि, कत गुंजन भटकाय॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

173

सखी इन, अँखियन को समुझाय।
जब ते टुक झाँकी वा झाँकी, बाँकी छवि बलभाय।
तब ते वारी अति मतवारी, वारी-वारी जाय।
झुकि झुकि परत, झरत दृग झर-झर, सुरति बिसूरत हाय।
मतवारी अँखियन लखि सखियन, पूछति 'का ? री पाय'।
कह 'कृपालु' पायेहु पारस पै, तन-मन-प्रान गमाय॥

174

सखी! इन कानन का न करी।
प्रथम मुरलिधर मुरलि तान ते, कानन कान भरी।
पुनि कानन ने कान भरे इन, नैनन घरी घरी।
तब इन नैनन हरि नैनन ते, इक दिन जाय लरी।
COPYRIGHT
गयो हार अब इन नैनन, उन, नैनन बान परी।
RADHA GOVIND SAMITI
लगतहिं बान 'कृपालु' अवनि गिरि, सुधि भूली सिगरी॥

175

सखी! इन नैनन कहा करूँ ?।
इन नैनन की लरिकैयन के, कारण आह भरूँ।

इन निगुरिन उर आग लगाई, हौं दिन रैन जरूँ।
इन ने तो निज नात जोरि लइ, हौं भल भार परूँ।
कछु तो मोहिं समुझाउ श्याम बिनु, केहि विधि धीर धरूँ।
अब 'कृपालु' अस दशा भई मम, ना जीऊँ न मरूँ॥

176

सखी कोउ, कोउ उपाय बतराय।
जाते सुरति श्यामसुंदर की, भूलेहुँ कबहुँ न आय।
जब ते गये भूलि गये तब ते, इक पातिहुँ न पठाय।
अब पिय बिनु अस हूक उठति हिय, मनहुँ प्राण अब जाय।
जितनोइ चह बिसराय आय सखि! तितनोइ सुधि पिय, हाय।
याय 'कृपालु' उपाय न कछु सखि!, यह निरुपाय बलाय॥

177

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सखी! कोउ, देउ वैद बुलवाय।
हिय बिच शोथ होत जनु हमरे, रहि रहि हाय! पिराय।
हिरदय गति नित बढ़त जात कोउ, हिय जनु सुई चुभाय।
सिगरो तन मम तपत विषम ज्वर, रैन नींद नहिं आय।
छिन-छिन बाढ़त सब रुज लखि सखि!, दृग पावस ऋतु लाय।

एक व्याधि-बस नर मर आली! हमरे अमित बलाय।
कत 'कृपालु' अकुलाति अबहिं का, आगे परी लखाय॥

178

सखी! तोय, योग, वियोग कि दोय?।
खान-पान कछु नेकु न भावत, सिगरी रैन न सोय।
सजन सनेही सकल जगत के, अरि सम दीखत तोय।
नासा-अग्र-भाग अवलोकत, सुधि बुधि दीनी खोय।
मौन धारि बैठी जनु जग महँ, जड़ चेतन नहिं कोय।
योगिनि और वियोगिनि दोउन, के ये लच्छन होय।
तू 'कृपालु' सखि! इनमें को है? साँचु बता दे मोय॥

179

सखी! तोय, काउ की दीठि लगी।
अरुणारे अति नैन तिहारे, जनु कहुँ रैन जगी।
लोक वेद कुल कानि न मानति, नैनन लाज भगी।
कबहुँक रीझति खीझति कबहुँक, जनु कोउ ठगन ठगी।
कबहुँक अट्टहास करि आपुहिं, प्रेमसिंधु उमगी।
हौं 'कृपालु' अब जानि गई तू, मोहन-प्रेम पगी॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

180

सखी! पिय, अतिशय सरल सुभाय।
अति कोमल-चित कंत, संत कह, तू कठोर कह हाय!।
पिय निर्दोष रोष जनि करु सखि! बात और ही आय।
ना जाने वा कुब्जा ने का, जादू-मंत्र चलाय।
मेरी मानि चलहु सब मथुरा, कुब्जहिं भेष बनाय।
तब 'कृपालु' हरि उर लगाय अरु, कुब्जा रह खिसियाय॥

181

सखी! मैं, भई अंध अनुहार।
ज्यों अँधरेहिं नेकहुँ नहिं दीखत, सिगरो जग अँधियार।
त्यों मो कहँ सिगरो जग भासत, कारोइ नंदकुमार।
कासों केहि विधि कहा कहौं अब, को उर जाननिहार।
मो कहँ सब कह 'बावरि आई', बावरो सब संसार।
रहत 'कृपालु' प्रीति नहिं छानी, कीजै यतन हजार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

182

सखी! मैं, सुनी कालि इक बात।
सखिन जूह जुरि-जुरि कालिन्दी, पुलिन रहीं बतरात।

एक सखी कह 'प्रान तजहु अब, मिलहिं न पिय किय घात'।
अपर सखी कह 'जब पिय सुनिहैं, तजि दैहैं निज गात'।
एक सखी पुनि यौं उठि बोली, 'प्रान रहे केहि भाँत'।
अपर सखी कह 'कोटि कल्प लौं, परखहु पद–जलजात'।
कह 'कृपालु' ग्रीषम ऋतु बीते, आवति पुनि बरसात॥

183

सखी! मोहिं, चन्द्रकिरन तड़पाय।
शशि अकाश बस, वास भूमि मम, तासों कछु न बसाय।
हरि अवतरि, खल बधत, तजत पै, सुत मानस मनभाय।
कहु चकोर ते करि अगस्त्य गुरु, इन किरनन पी जाय।
राहु–केतु जुरवाय जरा कहि, पुनि सो खाय पचाय।
यह 'कृपालु' खल–रीति पुरातन, जरे लोन भुरकाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

184

सखी! मोय, भयो विधाता बाम।
परसों कहि बरसों तरसाये, नहिं आये घनश्याम।
कोसति रहीं विधातहिं हम सब, पलकन हित नित बाम।
सोइ रिसियाय हाय! जनु दीनो, विरह हमहिं वसुयाम।

जो यह साँचु, क्षमा माँगत हम, परत विधातहिं पाम।
माँगत भीख 'कृपालु' इहै विधि, विधि पद रज ब्रज धाम॥

185

सखी! मोहिं, होत न अस विश्वास।
जिन राधे–रानी सँग निशि–दिन, कीनो रास–विलास।
तिनहुँ सुरति बिसराय दियो पिय, जाय कूबरिहिं पास।
जिन श्रीदामादिक सँग किय नित, विविध हास–परिहास।
जिन बछरन सँग पियो सुरभि–थन, निज कर दिय गो ग्रास।
तिन 'कृपालु' हरि बिसरि सकत कत, पाय मधुपुरी वास॥

186

सखी! यह, बड़ अचरज मोहिं आवत।
रसिकन पिया–मिलनहूँ सो अति, मधुर वियोग बतावत।
मोरे मत यह दंत–कथा सब, जरे लोन भुरकावत।
विरहानल सों दावानलहूँ, अति लघु अनल जनावत।
न तु कत मृत पिय देखि समुद तिय, आपुन देह जरावत।
यह 'कृपालु' कछु अकथ कहानी, अनुभव–गम्य लखावत॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

187

सखी! ये, अँखियाँ गईं पथराय।
पल–पल परखत हारि गई हौं, तबहुँ न प्रियतम आय।
निशिदिन नैनन नीर बहावत, दृग जल गयेउ सुखाय।
जग–सुख छीनि लई उन ता दिन, जा दिन नैन मिलाय।
अब तो आपुन सुधिहुँ भूलि गइ, कहा करूं सखि, हाय!।
जनि 'कृपालु' बहकाउ रोम प्रति, प्रियतम रहेउ समाय॥

188

सखी! ये, कानन बहुत बुरे।
जब ते सुनी तान नँदनंदन, उनहिंन ओर ढुरे।
हौं समुझावत हारि गई पै, नहिं मानत निगुरे।
मुरलिहिं तान सुनाय श्याम तो, कुंजनि माहिं दुरे।
इत हौं ठाढ़ी रही मूँदि दृग, कानन मुख न मुरे।
क्यों 'कृपालु' कछु दोष देति, इन कारन नात जुरे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

189

सखी! ये, कारे सब ठगहार।
इत चातक अनन्य–रति, घन उत, चपला संग विहार।

पिक निज सुत कागा घर राख्यो, कपट-भेद उर धार।
भ्रमर भ्रमत रस लेत रैन-दिन, विकसित कुसुम अपार।
हम गोपिन को कियो वियोगिनि, दियो कूबरिहिं प्यार।
अब 'कृपालु' पुनि पछिताने का?, जब बाजी गइ हार॥

190

सखी! ये, दृग न दृगन सुख पाये।
निरखत ही छवि नव नीरद तनु, आनँद जल भरि आये।
पुनि बिछुरत ही श्याम सुरति करि, दृग अँसुवन झरि लाये।
दुहूँ भाँति तिय लखि न सकति पिय, बिनु देखे घबराये।
विधि बुधि गइ सठियाय हाय! जो अँखियन पलक बनाये।
करि 'कृपालु' पिय दृग पट, पलकनि, क्यों न कपाट लगाये॥

191

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सखी! शशि, किरन अगिनि तनु लायो।
नाम सुधाकर, काम दिवाकर, किन गुरु तोहिं सिखायो?।
उदधि-निहित बड़वानल सों या, हालाहल सों पायो।
गिरि मंदर गिरि चूर चूर तोहिं, कियो नाहिं बचि आयो।
पियत पयोनिधि ऋषि अगस्त्य कस, तोहिं न उदर पचायो।
किमि 'कृपालु' बड़वानल सम शशि, उदधि न उदर दुरायो॥

192

सखी! सुनु, अस मम उर परतीति।
अइहैं अवशि श्यामसुंदर पुनि, जानि प्रीति की रीति।
कैसे बिसरैहैं मनमोहन, इन ब्रजवासिन–प्रीति।
जिन सँग विहरत रात पलक महँ, जाति रही सखि बीति।
तिन बिसराय हाय! सखि! कैसे, करिहैं अस अनरीति।
कह 'कृपालु' कोउ निठुर कहै जनि, इहै एक रह भीति॥

193

सखी! सुनु, समय होत बलवान।
एक दिना हरि हमहिं मनावत, हौं बैठति करि मान।
आजु मनावत प्राण जात पै, कान्ह करत नहिं कान।
एक दिना हरि मोहिं बिन पल छिन, रहि न सकत थल आन।
आजु विकल हम पल पल तलफति, तजत न कुब्जा–ध्यान।
एक दिना हरि हते खिलौना, सुनति छाछ दै तान।
आजु 'कृपालु' भये हरि दूभर, गूलर फूल समान॥

194

सखी! हम, इन पाँचन ते हारे।
लोचन लखन कमल–लोचन चह, निशि दिन बहत पनारे।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

रसना श्याम–नाम–रस–चाखन, हित नित पियहिं पुकारे।
दिव्य सुगन्ध हेतु जनु नासा, दीरघ श्वास निकारे।
सुधा–मधुर–मधु पिय मुख वानी, सुनन श्रवन हठ धारे।
रोम रोम चह परस पिया को, स्वेद कंप विस्तारे।
अब 'कृपालु' की कौन सुने जब, पंच एक मत वारे॥

195

सताये, शशि सिगरी निशि हाय।
रत्नाकर–कुल–कानि आनि तजि, शिव–सिर थितिहिं लजाय।
विरहिनि–वध–कुकलंक अंक धरि, निशि मयंक मुसकाय।
करत कुमुदिनी तप जल बिच जो, तेहि शठ दूरि बसाय।
कोटि–हलाहल गरल उग्रतर, शशि विष मोहिं जनाय।
ताही सों 'कृपालु' डरि शंकर, शशि निज शीश चढ़ाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

196

सवतिया निँदिया मोहिं सताये।
जब ते लखी सपनवाँ मनवाँ, नेकु चैन न आये।
सोवन चहति यतन करि, पुनि पुनि, विरहा आय जगाये।
बिनु निँदिया नहिं होय सपनवाँ, तेहि बिनु कित पिय पाये।

बौरानी–सी फिरति चहूँ दिशि, पिया–मिलन मनभाये।
कस 'कृपालु' कोउ दोष देउ जब, निज मन भये पराये॥

197

सहि जाय विरह नहिं हाय रे।
गगन सघन घन घेरि घेरि जनु, तनु घनश्याम बताय रे।
दामिनि दमकि दमकि जनु घन महँ, पीतांबर दरसाय रे।
कोकिल कूकि कूकि मधु–बैनन, जनु पिय बैन सुनाय रे।
पपिहा पीवु, पीवु कहि जनु सखि!, कहत आय पिय, आय रे।
हाय डरति सखि! कहुँ 'कृपालु' अब, प्रान निकसि नहिं जाय रे॥

198

सुनी इन, कानन जब ते तान।
COPYRIGHT
तब ते बिसरि गई सुधि सिगरी, कान करैं सखि! का न ?।
RADHA GOVIND SAMITI
अब सो तान सुरीली मुरलिहिं, छुटत न कैसेहुँ ध्यान।
अब सो ध्यान जरावत हमरो, सिगरो तन, मन, प्रान।
अब सो प्रान पयान करन चह, रह्यो न कछु मोहिं भान।
अब 'कृपालु' सोइ भान रहत इक, सुनहुँ तान नहिं आन॥

199

सुनी सखि! जा दिन ते मृदु बैन।
ता दिन ते एकहुँ छिन कहँ सखि, परत न कैसेहुँ चैन।
वह 'प्यारी प्यारी' की धुनि सखि! दुख मेटन सुख-दैन।
सोइ मनभावनि धुनि इन कानन, सुनन चहत दिन-रैन।
हौं सब विधि समुझाय थकी पै, कैसेहुँ ये समुझै न।
जब 'कृपालु' अस गति बैनन सुनि, तब का गति लखि नैन॥

200

सुनी सखि!, जा दिन ते पिय बैन।
ता दिन ते सखि! एकहुँ पल कहँ, परत न सपनेहुँ चैन।
सब दिन अँसुवन-माल पिरोवति, रोवति सिगरी रैन।
तू प्रानन-प्यारी, यह धुनि सखि!, इक पलहूँ बिसरै न।
भूलि सकत इन नैनन पुनि कत, उन नैनन को सैन।
बैन 'कृपालु' सुनन चह श्रवनन, सैन लखन चह नैन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

201

सुनी सखि, है कोउ इक भगवान।
वाही सों रोवहु अब इमि कहि, दे दो इक वरदान।

जब सो कह 'वर माँगहु, तब कह, है इक ब्रज को कान्ह।
उनहिंन प्रीति करी पै अब उन, तजि दिय हम बनितान।
अब उन बिन हम सब कहँ लागत, इक पल कलप समान।
अस कछु दो वरदान भूलिहूँ, आय न कान्हहिं ध्यान।
सखि कह 'पै सखि! सुनी कान्ह सोइ, है भगवान न आन'।
जेहि उर ध्यावन चह योगीजन, साधि समाधि महान।
तेहि 'कृपालु' चह बिसरावन सखि!, लखहु प्रेम–सखियान॥

202

सुरति नहिं, बिसरति सुंदर–श्याम।
जब ते लखी श्यामसुंदर छवि, सुंदरताहुँ ललाम।
तब ते हौं बिनु मोल बिकी सो, मोल लियो बिनु दाम।
लखतहिं बनत चपल चितवनि छवि, मृदु–मुसकनि अभिराम।
बसी रहत नैनन मन महँ सोइ, पल–छिन आठों याम।
कह 'कृपालु' हौं ही नहिं बावरि, बावरि सब ब्रज–बाम॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

203

हमारो, जीवन–धन–घनश्याम।
भली–बुरी जैसी हूँ पी की, कहा और सों काम।

सुरति साँवरिहिं कबहुँ न बिसरति, पल छिन आठों याम।
भुक्ति, मुक्ति तजि दुहुँन पिशाचिनि, गावति पिय–गुन–ग्राम।
करम कीच अरु योग–रोग तजि, लियो प्रेम बिनु दाम।
अस 'कृपालु' रस तजि ज्ञानिन को, भयो विधाता बाम॥

204

हमारो सहज सनेही श्याम।
दृग अँसुवन सों पोय हार नित, पहिरावति उर धाम।
ललित–त्रिभंग अनंग–विमोहन, सुमिरति आठों याम।
रसना सों निशि–वासर छिन–छिन, गावति हरि गुन–ग्राम।
श्रवन सुनत नित प्रियतम–चर्चा, सुधा–मधुर–मधु–नाम।
हम 'कृपालु' उनके, वे मेरे, कहा जगत सों काम॥

205

हमें बस, एक श्याम सों काम।
तुम ऊधो! कहियो माधो सों, तुम हो आत्माराम।
हमहूँ तुमते कम नहिं नेकहुँ, जित देखूँ तित श्याम।
हम प्रेमिनि, नहिं कामिनि मोहन, कामिनि कुब्जा बाम।
नित्य विहार करत हम तुम सँग, कुंजनि आठों याम।
धनि 'कृपालु' गोपीजन त्रिभुवन, धन्य प्रेम निष्काम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

206

हाय दई, यह कैसी भई री।
केहि विधि कासों कहूँ आपनी, जार प्रेम की बात नई री।
देखन को छोटा अति खोटा, नँद–ढोटाहिं ठगाय गई री।
भई लटू मैं भटू पटू ह्वै, नेकु हँसनि मन बेच दई री।
पलक शब्द विपरीत भयो अब, विष–बेलरि उर माहिं बई री।
सिगरो जग सूनो सो दीखत, विरह घटा नैनन उनई री।
यह 'कृपालु' पिय–प्रेम विषामृत, परम चतुर दै शीश लई री॥

207

हाय पिय, देइहैं अस बिसराय।
अस विश्वास रह्यो नहिं सपनेहुँ, लखि पिय सरल सुभाय।
जो हम ब्रजगोपिन बिनु इक छिन, रहि न सकत रह हाय।
सो अब इतनो कठिन भयो कत, जो पातिहुँ न पठाय।
जो यशुमति पय–पान करायो, दुलरायो नँदराय।
श्याम 'कृपालु' तिनहुँ तजि देइहैं, को अस सोचि सकाय॥

208

हाय मोरा, पिया बिनु जिया घबराये।
बरसों बीत गये गये घर सों, परसों कितक विहाये।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

कहँ लौं मन समुझाउँ सखी अब, मनहूँ भये पराये।
सुधा समान बैन सखियन के, विष सम मोहिं जनाये।
छिन आँगन छिन बाहर भाजति, कितहूँ चैन न आये।
कबहूँ तो 'कृपालु' पिय हियहूँ, 'हाय!' लगेगी जाये॥

209

हाय! मोहिं पल छिन विरह सतावत।
जब विरहा लै अगिनि–बान मोहिं, रोम–रोम तकि मारि जरावत।
तब हौं विरहिणिवरुण–अस्त्र लै, भरिलोचन–जलताहि बुझावत।
पुनि विरहा रिसियाय हाय जब, वारिद–वृंद बान लै धावत।
तब दीरघ–निःश्वास पवन सों, बेगि धाय हौं मारि भजावत।
पुनि विरहा ऋतुराज–साज लै, त्रिविध–समीरन बान चलावत।
तब हौं निज उर धारि मृणालन, नागबान लै प्रान बचावत।
COPYRIGHT
इमि रन करत भूमि–तनु मधि नित, प्रान धरोहर जान न पावत।
RADHA GOVIND SAMITI
अब 'कृपालु' पिय वेगि बचाइय, नहिं तो विरह कलंक लगावत॥

210

हाय! मोहिं, पिय बिनु कछु न सुहाय।
मंद मंद मुसकान कान्ह की, रोम रोम रहि छाय।

बनत न भनत अनत इन बातन, जात न नात दुराय।
खोई खोई सी मोहिं लखि सखि, पूछति मृदु मुसकाय।
इत हौं लाजन मरी जात, उत, विरहा गाज गिराय।
अब 'कृपालु' पिय! कल कहँ जिय कहँ, जब हिय गयो हिराय॥

211

हाय यह, कैसी लागि बलाय।
ब्रज मंडल कन–कन महँ छिन–छिन, श्यामहिं श्याम लखाय।
सोइ रति रस–बतियन दिन रतियन, कानन माहिं सुनाय।
सोइ पिय परस सरस रस रह तनु, रोम रोम महँ छाय।
सोइ रस रसनहुँ, गंध नासिकहुँ, विवस दिवस–निशि पाय।
कह 'कृपालु' तन–मन–प्रानन सोइ, रह घनश्याम समाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

212

हाय! सखि, कैसे ह्वै गये श्याम।
जो आधे–पलहूँ नहिं रहि सक, बिनु राधे इक ठाम।
सो ऐसे बेपीर भये कस, वीर! तज्यो ब्रजबाम।
तजि देइहैं पिय प्रीति–रीति अस, होति प्रतीति न नाम।

हौं भल जान न मान सखी यह, चैन कान्ह उर धाम।
होत 'कृपालु' कबहुँ उर संशय, हरि हैं आत्माराम॥

213

हाय! हिय, कैसो तव अक्रूर!।
ब्रज बनितान प्रान–जीवन धन, जनि ले जा रे क्रूर।
पुनि–पुनि हा हा खाउँ जाउँ बलि, सिर धरि तव पग–धूर।
मांगूँ भीख पायँ परि दै दे, मम सुहाग–सिंदूर।
सहि नहिं सकत विरह दुख पिय भये, पलक ओटहूँ दूर।
रखु 'कृपालु' निज नाम–लाज तू, बूड़िय ब्रज दुख–पूर॥

214

हो रसिया! कस सुरति बिसारी।
लोक, वेद, कुल कानि आनि सब, तजि आई पिय शरण तिहारी।
मग जोहत अँखियाँ पथराईं, हारी हेरि बिपिन बनवारी।
तारे गिनत जात सब यामिनि, पलक एक युग सम लग भारी।
निर्मोही! कस मोहिं मोहि अब, तड़पावत बेपीर मुरारी।
जियन न देत, लेत नहि प्रानहुँ, दुहूँ भाँति अति विपति हमारी।
अब 'कृपालु' मो कहँ तजि माधव, कूबरि वरि निज करि उर धारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

रसिया-माधुरी

1

अटको दृग, लखि नटखट पट को।
कारी अनियारी घुँघरारी, को बरनै अटपट लट को।
हाटक मुकुट करत जनु त्राटक, तापर मोर-मुकुट अटको।
झलमल भल चल चंचल कुंडल, चपल दृगंचल को लटको।
लखि मन-भावन हावन-भावन, को मन भाव न नटखट को।
कह 'कृपालु' लखि रति-रस-रंगनि, मनहुँ अनंगनि अटकि टको॥

2

आजु निकुंज-मंजु बिच पिउ को, प्यारी निज कर करति सिँगार।
'राखेहु श्याम! सदा रुचि मोरी।
आजु चाह उपजी उर थोरी।
तुमहिं बनाऊँ नवल-किशोरी।
COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI
'जस तव रुचि तस करिय किशोरी, हौं रुचि-दास तिहार।
मेलि फुलेल सुघर वर-बेनी।
सुमन-अलंकृत अति सुख-देनी।
जनु अलि अवलिन अमित निसेनी।
शीश-फूल जनु रवि सुहाग को, प्रकट्यो है तनु धार।

मोतिन–माँग रची मनभाई।
मृग–मद तिलक भाल छबि छाई।
मध्य बिंदु–कुमकुम सरसाई।
श्रवनन तरल–तरोना झलकत, भौं लजवत धनु–मार।
चंचल–नैन सहज कजरारे।
तामे अंजन–रुचिर सँवारे।
बेसर–सुघर नासिका धारे।
लाल–अधर–लाली लखि लाली, उर आनंद अपार।
जरिन–किनार नील–पट–सारी।
उर–अँगिया कुसुम्भि–रँगवारी।
दै अंचल मुख हँसति निहारी।
दुलरी–कुंदन, लरी–मोतियन, विविध–मणिन उर–हार।
मणिमय–वलय–चुरी कर सोहै।
रतन–खँचित पहुँची मन मोहै।
प्राणि–अरुणिमा मेहँदी को है।
नगन–जटित कर अँगुरिन मुँदरिन, चंद्र–लजावनि–हार।
नाभि–सरोवर त्रिवलिन–धारा।
कटि–तनु जघन विशाल सुढारा।
किंकिनि–धुनि सुनि मुनि–मन–हारा।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

गज–मद–मत्त लजत गति लखि लखि, मृदु पायल झनकार।
रँग–भीने जावक पग सोहत।
नख–दुति कोटि–चंद्र मन मोहत।
नहिं अघाति प्यारी छवि जोहत।
लखि 'कृपालु' शृंगार धाय दिय, भाल दिठौना डार॥

3

आयो ब्रज, रस बेचन–वारो।
जो रस निगमागमहुँ अगम सोइ, देत वनचरिन कहँ कारो।
जा ब्रज–रस हित शुक सनकादिक, लतन पतन तन करि डारो।
सो रस अस जेहि लगि शिव–शंकर, नर ते नारी तनु धारो।
सो रस पियत सोइ जो वाको, निज तन मन प्रानन हारो।
सो रस अस 'कृपालु' छिन छिन बढ़, रस बैकुंठ लगत खारो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4

ऐसो प्रेम बढ्यो ब्रजवासिन, जामें ब्रह्म रह्यो भरमाय।
विप्रन विधिवत यज्ञ करावत।
वैदिक–मंत्रन ब्रह्म बुलावत।
तहँ न जाय टुक भोग लगावत।

पै उन पनिहारिनि निदरतहूँ, चोरि–चोरि दधि खाय।
देववृन्द विरदावलि गावत।
अगनित गुनगन गाइ सुनावत।
सो सुनि सपनेहुँ नहिं मन भावत।
पै उन ब्रजनारिन गारिन सुनि, लोट–पोट ह्वै जाय।
योगी परमात्महिं नित ध्यावत।
ज्ञानी ब्रह्म ध्यान हरषावत।
तिन इन बात करन नहिं भावत।
पै उन ब्रज–बनितनि बछरन ते, बात करत तुतराय।
शुक सनकादिक ध्यान लगावत।
ध्यान लगाय समाधि बुलावत।
तहँ जावन महँ मनहुँ लजावत।
पै 'कृपालु' उन श्यामा जू को, जाय पलोटत पाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

5

छवि निधि रस निधि प्रेम–सुधा–निधि, राधे श्रीवृषभानु दुलार।
ह्लादिनि–शक्ति परम सुख खानी।
ताको सारहिं प्रेम बखानी।
प्रेम–सार राधा ठकुरानी।

महाभाव रूपिणि जु नवेली, अलबेली सरकार।
मणिमय कनक–मुकुट सिर सोहै।
चारु–चंद्रिका छवि मन मोहै।
तापर लर वर मुक्तन को है।

कारी, अनियारी, घुँघरारी, वेणी कुसुम–सँवार।
श्रुति–ताटंक मकर–मन–हारी।
लजत काम–धनु लखि भौं–प्यारी।
सुधा–गरल–मधुमय दृग वारी।

खंजन–मृग–चकोर–मद–गंजन, अंजन मन–रिझवार।
झलमलात मुक्ताहल नासा।
वदन–विकास मंजु–मधु–हासा।
वदन–सदन विधु–रदनन वासा।

कर चूरी–करपत्र, मूँदरिन, अँगुरिन सुघर सँवार।
COPYRIGHT
कंचुकि उर विलसति नव रंगी।
RADHA GOVIND SAMITI
हार–मणिन–मोतिन बहुरंगी।
त्रिवलि–नाभि–सर कटि–तन्वंगी।

पृथु–नितम्ब, परिधान–नीलपट, चूनरि जरिन–किनार।
रतन–जटित पग–पायल सोहिनि।

चाल मरालन को मन मोहिनि।
लखि लाजत शत–रति–पति–रोहिनि।
आयो देखि 'कृपालु' दीन को, आदर येहि दरबार।

6

जारे जारे, जार जा, हरजाई।
लखु वनमाल लाल कुमकुम तोहिं, चन्द्रावलि अलि बिलमाई।
तू छलिया छल जानि लई भल, लाज न इत आवत आई।
काहू को तू हृदय लगावत, काहू बातन भरमाई।
मो कहँ शंक भई वाई दिन, जा दिन वा हँसि बतराई।
कह 'कृपालु' यह सकल जीव कहँ, एक परमपति हरि–राई॥

7

देखो देखो री, ग्वाल–बालन यारी।
इन ग्वालन मुख छोरि–छोरि हरि, खात कौर कहि बलिहारी।
रिझवत खेल जिताय सखन को, घोड़ा बनि बनि बनवारी।
कबहुँक देत रिसाय सखन कहँ, पुनि तिन सुनत मधुर गारी।
नख धार्यो गोवर्धन–गिरि जब, सखन कह्यो हम गिरिधारी।
सो 'कृपालु' छवि अनुपम जब कह, द्वै तातरु द्वै महतारी॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

8

धनि–धनि तिन ब्रज–गोप–वधूटिन,
जिनको चाकर ब्रह्म सदाय।
कोऊ मिस उरहन घर आवे।
कोऊ मग महँ दरसन पावे।
काउहिं जानि जानि तड़पावे।
सुनि वाकी गारी 'दारी के', पुनि–पुनि बलि–बलि जाय।
नित पनघट पै जात कन्हाई।
सबै सखिन घट देत उठाई।
जो कोउ सखि इकली ही आई।
वा नागरि गागरि उठाय पुनि, नागर घर पहुँचाय।
कोउ माखन निज हाथ खवावे।
कोउ लजाय तब हाथन खावे
कोउ बरजै पै मन–मन भावे।
वा माखन उर–अन्तर्यामी, लूटि–लूटि के खाय।
कोउ हँसि–हँसि आपुहिं बतरावे।
कोउ लजाय तेहि आपु बुलावे।
कोउ घर ते नहिं निकरन पावे।
वा घर जाय 'कृपालु' छेड़ि तेहि, चौर जार पद पाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

9

धन-धन रसिकन-धन गोवर्धन, जाने ब्रह्म लियो बिरमाय।
जेहि आश्रित असंख्य विधि, हरि, हर।
सोऊ आश्रय लिय येहि गिरिवर।
जेहि पूजति जलजा नित निज कर।
सोऊ ब्रह्म संग ब्रज-परिकर, गिरिवर पूज्यो जाय।
श्रुति-आराध्य ब्रह्म-बनवारी।
ब्रह्माराध्या भानुदुलारी।
प्राण एक, पै द्वै तनु धारी।
बिहरत मंजु-निकुंज-पुंज नित, लखि कमला ललचाय।
कोउ कर जोग, जुगुत वनवासी।
कोउ मुक्ति-हित सेवत कासी।
लखि दोउन मोहिं आवति हाँसी।
मूर्तिमान नगराज नाग तजि, बाँबी हित भरमाय।
जहाँ वेद नित देत बुहारी।
फिरत शंभु गोपी-तनुधारी।
रज याचत विधि बने भिखारी।
जहँ बनि दासी करति खवासी, मुक्ति, मुक्ति-हित आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मरकत–मणिमय परम–प्रकासी।
लजवत अमित–इंदु छवि–रासी।
लखि सिहात बैकुंठ–विलासी।
ब्रज–मंडल–मंडन जन–रंजन, खंडन–मद सुरराय।
पुंज–निकुंजनि–मंजुलताई।
लखि विधि–विधिताहू सकुचाई।
मध्य मानसी–गंग सुहाई।
राधा–कुंड आदि की महिमा, वरणत वाणि लजाय।
जो रस निगम 'अगम' कहि गायो।
सो गोवर्धन–गलिन बहायो।
रसिक–कृपा बिनु कोउ न पायो।
हम 'कृपालु' गिरिराज–भरोसे, निर्भय रहत सदाय॥

COPYRIGHT
10
RADHA GOVIND SAMITI

धन–धन रसिकन–धन वृन्दावन, जाकी महिमा वरनि न जाय।
निर्गुण, सगुण–ब्रह्म ते न्यारो।
कोटि ब्रह्म–सुख जापै वारो।
जहँ विहरत नित प्यारी–प्यारो।

लखि सुख, तजि बैकुंठ विष्णु गये, क्षीर-सिन्धु सकुचाय।
जनकादिक येहि विपिन मझारी।
केकी, कीर, कोक तनु धारी।
फिरत समाधि-उपाधि बिसारी।
नव-निकुंज सुख-पुंज मंजु बिच, पिय नवरस हुलसाय।
वृन्दावन रसिकन-रजधानी।
जहँ राधारानी ठकुरानी।
पाँचहुँ मुक्ति भरति जहँ पानी।
कर मींजति ठाढ़ी कमला सी, मन ही मन पछिताय।
माया-मुक्त सिद्ध-सन्यासी।
जहँ बनि बेलि, विटप सुखरासी।
लै वरदान एक अभिलासी।
राधा-सहचरि-चरण-रेणु उड़ि, कबहुँ परै तनु आय।
संतत शरद-वसंत-विलासी।
विकसित नित नव-कुसुम-सुवासी।
गुंजत भृंग मंजु-मधु-भाषी।
महा-प्रलयहूँ लय नहिं जाको, जहँ बिधि-बुधि भरमाय।
मणिमय-दिव्य-भूमि-वर-बाँकी।
ललित-लता-कुंजन की झाँकी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

लाजत लखि 'नन्दन' छवि जाकी।
ताल-तमाल-रसाल-साल जहँ 'राधे राधे' गाय।
जो रस 'वेद' बिन्दु नहिं पायो।
सो मिलि-अलिन गलिन बरसायो।
सोइ जान्यो जेहि रसिक जनायो।
माया, काल न व्यापे जामे, मो 'कृपालु' मन भाय॥

11

बलिहारी है तिहारी बनवारी।
चह सनकादिन साधि समाधिन, झाँकन टुक झाँकी प्यारी।
पै तहँ जात लजात, जात पुनि, जोरन पनिहारिनि यारी।
इन्द्राणी, रुद्राणी, वाणी, ब्रह्माणी, रति मतवारी।
पै धनि-धनि मनमोहन तोहिं जो, मनभावति कुबरिहिं नारी।
सुनि 'कृपालु' ब्रजनारिन गारिन, 'बलिहारी' कह बलिहारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

12

ब्रजरस बरसि रह्यो ब्रज बीथिन, ज्ञानी बिनु जाने भरमाय।
जेहि खोजत ज्ञानी जन लाखन।
चारिहुँ वेदन की प्रतिशाखन।
हारि 'अलख' इमि लागे भाखन।

वृन्दा विपिन सखिन अंचल पट, लिपट रह्यो सोइ धाय।
जेहि शंकर उर–अंतर ध्यावत।
जाको भेद वेद नहिं पावत।
निर्विकल्प, निर्लेप, बतावत।
सोइ निकुंज बिच भानुलली के, चरण पलोटत जाय।
जेहि माया–वस विश्व चराचर।
ब्रह्मअण्ड–नायक विधि, हरि, हर।
नाचत ज्यों नट परवश बानर।
तेहि दै छाछ नेकु सी छोरिन, कोटिन नाच नचाय।
जाकी भृकुटि–विलास प्रलयकर।
जाके डर काँपत डर, थर थर।
नामहि जाको भव–बंधन–हर।
ताको ऊखल बाँधि यशोदा, लै साँटी डरपाय।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
जेहि लगि जपी तपी, भरमावत।
योगी योग अगिनि जरि जावत।
निज बल कृपा–कोर नहिं पावत।
सो 'कृपालु' निज माय गोद हित, पर्यो धरणि बिलखाय॥

13

मोरी तोरी लर, ओरी गोरी! नँद को री।
कालिन्दी तट कालि गई रहि, सँग रहिं आलि! अलिन मोरी।
आय कह्यो लखि मो तन ओरी, 'को री! मोरी लर चोरी'।
हौं भोरी पहिरी लर को री, कह 'यह लर तो नहिं तोरी'।
लर कर पकरि लँगर देखन मिस, मार्‌यो नैन सैन को री।
पुनि कह कान 'मोहिं गर-लरकरु, चह लर बनि गर लाग्यो री'।
भई विभोर यदपि यह सुनि पै, कही 'लाज अँचई-घोरी'।
यह 'कृपालु' सुनि झट लर तोरी, चट भाज्योकहि 'भल जोरी'॥

14

या ब्रज की, रीति निराली है।
COPYRIGHT
ऐसो लाल यशोदा जायो, जो सब भाँति कुचाली है।
RADHA GOVIND SAMITI
वेद-पुरान प्रमान मान जग, ह्याँ की उलटी चाली है।
श्रुति-आराध्य ब्रह्महूँ पावत, ब्रज बालनि की गाली है।
सुरपति हूँ को करत निरादर, हँसत ग्वाल दै ताली है।
कह 'कृपालु' इन ब्रजवासिन-धन, एक लाल अरु लाली है॥

15

रसिकन की, गति रसिकन जाने।
ज्यों कामिनि आलिंगन सुख कहँ, शिशु नहिं सपनेहुँ पहिचाने।
गोपिन काम श्यामसुन्दर सों, सो निष्काम रसिक माने।
दुर्वासा दूबहिं खाये पै, खाय गये सिगरे खाने।
आत्माराम कहाय श्याम पै, नित्य रास गोपिन ठाने।
कह 'कृपालु' यह दिव्य विषय किमि, जाने विषयन–रस–साने॥

16

लखि रस–बरसानो बरसानो, कोटिन ब्रह्मानंद लजाय।
महाभावरूपिणि श्री राधे।
प्रेम–सुधा–निधि, रूप–अगाधे।
पूरण–ब्रह्म जाहि आराधे।
श्रीवृषभानुभूप घर प्रकटीं, प्रेम–दान हित आय।
जेहि, 'अज अलख' निगम नित गायो।
सो ब्रज, नंद–गोप घर जायो।
जेहि विधि, हरि हर खोजि न पायो।
सोऊ ब्रह्म, स्वामिनिहिं खोजत, गहवर गलियन माय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पीरी–पोखर, प्रेम–सरोवर।
लता–कुंज–गहवर, भानूखर।
मालिनि, योगिनि रूप विविध धर।
ब्रह्म रिझावत, निज स्वामिनि को, उर आनँद न समाय।
'हा हा' खात, निहोरत सखियन।
नेकु दिखाउ ललिहिं इन अँखियन।
मधु पिलावु छवि दृग मधु–मखियन।
ललितहिं चरण पलोटत लखि लखि, लाल नैन ललचाय।
राधा–रंग महल के माहीं।
रज झारत निज मुकुट सदा हीं।
कृपा मनावतहूँ डरपाहीं।
नित 'कृपालु' मानिनिहिं मनावत, ब्रह्म दृगन झरि लाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

17

वारी–वारी छवि छैल–बिहारी की।
कहा कहूँ सखि! अहा शीश पर, मुकुट–लटक छबि प्यारी की।
उपमा कौन मौन नहिं लखि सखि! लट–लटकनि अनियारी की।
लखतहिं बनत नील–गालन पर, कुंडल–छवि छविधारी की।

भनत बनै न नैन चितवति छवि, मारि जियावन–हारी की।
मुरि–मुरि मधुर–मधुर मुसकनि छवि, का कहिये बनवारी की।
उर पट–पीत हार गर गुंजन, काछनि–छवि छवि न्यारी की।
धनि कंकन किंकिनि नूपुर छवि, धनि–धनि धुनि झनकारी की।
नारी कौन न वारी लखि सखि! लटपट चाल अनारी की।
कह 'कृपालु' पुनि बिनुहिं कहे भल, छवि मुरलिहिं मनहारी की॥

18

वारी–वारी छवि, मोर–मुकुट–वारी।
चितवनि अति मतवारी प्यारी, पुनि घुँघरारी लट कारी।
मृदु–मुसकान प्रान–जीवन–धन, पुनि कुंडल हलकनि न्यारी।
फहर–फहर फहरान पीत–पट, पुनि कौस्तुभ–मणि माला री।
ललित–त्रिभंगी गति अड़बंगी, पुनि मुरली–धुनि अति प्यारी।
पुनि 'कृपालु' सुनि रति–रस–बतियन, त्रिभुवन कौन न बलिहारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

19

वारी–वारी छवि, वारी नथवारी की।
लखि शृंगार लजत शृंगारहुँ, छवि–छवि छवि अस प्यारी की।

मणिन–अलंकृत कनक मुकुट पर, लर–मुक्तन मनहारी की।
घूँघर–वारी अति अनियारी, छवि प्यारी लट कारी की।
अम्बर नील गौर–तनु छवि जनु, घन दामिनि अनुहारी की।
झुकि झूमति नासा नथ–बेसर, मुख चूमनि छवि न्यारी की।
कर मेहँदी, पग रची मिहावरि, सिर सेंदुर अरुणारी की।
कनकन कंकन किंकिनि नूपुर, धुनि चूरिन झनकारी की।
छिनहिं मान, मुसकान छिनहिं पुनि, छवि बरसाने–वारी की।
कह 'कृपालु' इक चितवनि महँ गति, लखत बनत बनवारी की॥

20

वारी–वारी जाऊँ वारी बनवारी पै।
मोर–मुकुट की अटकनि, मटकनि, लटकनि लट अनियारी पै।
नील–कपोलनि, अरु अनमोलनि, मृदु बोलनि अति प्यारी पै।
चपल–दृगंचल–चितवनि पै अरु, जिन चितवति उन नारी पै।
कनक–लकुटि की तनक झुकनि अरु, मुरि मुसकनि छवि न्यारी पै।
कर कंकन, कटि किंकिनि धुनि, अरु, नूपुर धुनि झनकारी पै।
मुरलि बजावनि अरु 'कृपालु' गति, हंस–लजावनि–हारी पै॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

21

वृन्दावन, रसिकन रजधानी।
जा रजधानी की ठकुरानी, महरानी राधा–रानी।
जा रजधानी पनिहारिनि बनि, चारिहुँ मुक्ति भरति पानी।
जा रजधानी रज अज याचत, प्रान–सजीवनि सम जानी।
जा रजधानी बिच नहिं पावत, टुक प्रवेश कमला वानी।
कह'कृपालु' जेहि महिमा कछु–कछु, लालिहिं कृपा लाल जानी॥

22

सरस–सुरति–रस सरस सो रति रस, बरसत वृन्दा विपिन मझार।
मनिमय–धरनि तरनि–तनया–तट।
सुखद–शरद–निशि–शशि वंशी–वट।
गहि रस–रीति प्रीति अति अटपट।
रिझवत निज–आराध्य राधिकहिं, परम–रसिक–रिझवार।
लखि उत्फुल्ल–मल्लिका–शोभा।
पूरण–काम श्याम मन लोभा।
उपजी रास–वासना–गोभा।
साजि साज–ऋतुराज आज तहँ, आयो जूझन मार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

राम–कृपा दण्डक–वन–वासिन।
ह्लादिनि–शक्ति जानकी–दासिन।
वेद–ऋचान रास–अभिलाषिन।
अपर सखिन गोलोक–निवासिनि, बनि आईं ब्रजनार।
मधुर–मुरलि–धुनि सुनि अभिरामिनि।
उठि धाईं सिगरी ब्रजभामिनि।
श्याम–गौर बिच जनु घन–दामिनि।
प्रति–गोपिन–सँग श्याम सुशोभित, लिये अमित–तनु धार।
गावत विविध–राग लै तानन।
'स रे ग म प ध नी', सुरन संधानन।
देव वधूटिन लखति विमानन।
बाजत झाँझ, मृदंग, चंग, ढप, सबै सुरन इकसार।
COPYRIGHT
लटकि–लटकि कटि–तट लचकावति।
RADHA GOVIND SAMITI
पटकि–पटकि झटपट पग धावति।
मटकि–मटकि तट–भृकुटि नचावति।
हस्तक–मस्तक भेद दिखावति, सखियन, यूथ अपार।
प्रेमावेश केश, पट, भूषन।

स्त्रस्त व्यस्त रतिरस–पीयूषन।
दिव्य–विलास करत जित–दूषन।
चरनन–नूपुर, करकंकन, कटि, किंकिनि–धुनि–झनकार।
कोक–कलानि प्रवीन–सुभायन।
रास–विलास–लास मन–भायन।
विविध हास–परिहास–परायन।
खेलत निज–प्रतिबिंब सखिन सँग, लघु बालक अनुहार।
खग, मृगादि, जंगम गति भूले।
जड़हुँ भये चेतन चित–फूले।
झूलत सबै प्रेम–रस–झूले।
ह्वै रस–बस बरबस शशि मोह्यो, मारहु मानी हार।
धनि निकुंज, धनि श्री वृंदावन।
धनि–धनि रसिक रवनि गोपी जन।
धनि रासेश्वरि स्वामिनि–मोहन।
धनि 'कृपालु' गोपी दासिन जिन, निरखत रास विहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रकीर्ण-माधुरी

1

अपनापन रखना, मेरे घनश्याम।
घड़ी-घड़ी पल-पल नाम तिहारो,
रटे मेरी रसना मेरे घनश्याम।
लली-लाल दोउ दै गरबाहीं,
हमारे हिये बसना, मेरे घनश्याम।
भाव-हिंडोरे डारि हिये में,
झुलावूँ नित झुलना, मेरे घनश्याम।
दै उपहार हार अँसुवन को,
बना लूँ तुझे अपना, मेरे घनश्याम।
कैसेहुँ करि 'कृपालु' प्रभु अपनो,
पुरवो मम सपना, मेरे घनश्याम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

2

अलबेलो हमारो यार, प्रेम के बंधन में।
नहिं जात समाधिन जोगिन जेइ,
नाचत ता थेइ, ता थेइ-थेइ तेइ,

ब्रजनारिन कि तारिन कि तार, प्रेम के बंधन में।
नित खोजत वेद ऋचान जेई,
बनि यशुमति के सुत कान्ह तेई,
बँधे ऊखल में लेहु निहार, प्रेम के बंधन में।
ब्रह्माण्ड अनन्तहिं पाल जेई,
छोरत मुख कौरहिं ग्वाल तेई,
बने घोड़ा गँवारन ग्वार, प्रेम के बंधन में।
अग जग सब जग संहारक जेइ,
डरपत यशुमति की साँटिन तेइ,
धनि लीला 'कृपालु' सरकार, प्रेम के बंधन में॥

3

ओरे तोरे मन कपट खटाई री, जा जारे जारे हरजाई।
मोते कह, तुम मम प्रान–प्रान, बिनु प्रान न रहि सक कान्ह मान,
इमि बातन मोहिं, भुराई री, जा जारे जारे हरजाई।
टुक दर्पन लै लखु दृगन लाल, भल लाग मिहावरि भाल लाल,
काउ लइ चरनन शरनाई री, जा जारे जारे हरजाई।
कह कान्ह 'सुनहु मानिनि मोरी, जाग्यो सब रैन सुरति तोरी,

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

सोइ नैनन आई अरुणाई री,' जा जारे जारे हरजाई।
'तव प्रणय–हेतु पूज्यो गिरिवर, रोयो सिर धरि गिरिवर पग पर,
सोइ भाल 'कृपालु' ललाई री,' जा जारे जारे हरजाई॥

4

करन लागे मोहन अब चोरी।
परम स्वतंत्र न डर काहू सों, सब सों बरजोरी।
मास–पिंड नहिं लोग कह, गुण विहीन इन देह।
कूट कूट कर कूट बुधि, भरी मरम सखि! एह।
धूत करतूतहिं सुनु गोरी।।
सोती थी मैं एक दिन, करके बन्द किवार।
ना जाने कित सों धँस्यो, भोरेहिं नन्दकुमार।
जगाई मोको झकझोरी।।
उठी तमकि बोली 'अरे!, रैनिहुँ नींद न तोय'।
अरी! तोय टेरति सखी, खरी पौरिया कोय'।
गई मैं देखन को दोरी।।
हेला देत उतै थकी, लखी न कोऊ द्वार।
लखी इतै नवनीत हरि, खात दुहुँन कर डार।
देखि मोहिं मटुकीहूँ फोरी।।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

दौरि पकरि कर लै चली, यशुमति ढिंग रिस लाग।
टेरि कही लखु लाल के, गुन माखन मुख दाग।
न मानति तू कबहूँ भोरी॥
अरी वीर! पुनि का कहूँ, सो जादूगर राय।
मम 'कृपालु' पति-रूप धर, मैं अति गई लजाय।
भजी मैं हँसी भई मोरी॥

5

छुवो जनि प्यारे!, मोहिं डर लागे।
हौंहूँ अहौं कुँवारि, तुमहुँ तो, हौ पुनि क्वाँरे।
बात फैलि जैहैं दिन द्वै में, मुरलीवारे।
गगन चन्द्र कहुँ छुपि न सके इमि, हाथ पसारे।
प्यार करहु दूरहिं ते, नहिं तो, लगि हैं नारे।
लोक वेद बाधक 'कृपालु' इन, मुँह न लगा रे॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

6

तू भाये, तेरी प्रीति न भाये पिय।
अंग-अंग छवि कोटि अनंगनि,
लोचन पुनि-पुनि लखि न अघाये पिय।

चितवनि मधुर–मधुर मृदु मुसकनि,
कोटिन प्रान वारि सुख पाये पिय।
मत्त–गजेन्द्र गवनि का कहनो,
लखतहिं बनत, न बनत बताये पिय।
भूलत प्रान अपान तान सुनि,
मुरलि अधर–धर जबहिं बजाये पिय।
पै 'कृपालु' मग जब कहि 'प्यारी',
उर लगाय यह, समुझि न आये पिय॥

7

तू भोरी भारी वारी–वारी जाय री, वारी बनवारी पै।
नहिं जानति तू अलि! या छलिया,
बस आग लगावन जान पिया,
नहिं जानत वाय बुझाय री, वारी बनवारी पै।
जो मैया–बापन नाहिं भयो,
तजि बंदीगृह तिन भाजि गयो,
तू कैसे वाय पतियाय री, वारी बनवारी पै।
वाको छल–कपट निधान जान,
सब सोइ कह 'अर्पित तोहिं प्रान',

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

भये पलक ओट बिसराय री, वारी बनवारी पै।
सखि कह 'यह हौंहूँ नीक जान,
यह मन सखि! तबहूँ नाहिं मान,
हौं हारी याय समुझाय री', वारी बनवारी पै।
यह अचरज देखु सखी कैसो,
अवगुन लखिहूँ मन रम ऐसो,
कह चिन्मय 'कृपालु' बलभाय री, वारी बनवारी पै॥

8

नथवारी तिहारी बलिहार, प्यारी छवि का कहनो।
बहुरंगी–मुकुट–मणिन झाँकी,
तापर लर–मोतिन छवि बाँकी,
गुँथि वेणी फुलन शृंगार, प्यारी छवि का कहनो।
मनहरन दुहुँन श्रुति करनफूल,
नासा नथ–बेसर झुकी झूल,
लर–मोतिन की अजब बहार, प्यारी छवि का कहनो।
अँखियाँ मधु–विष–पीयूष घुरी,
मृदु हँसनि दशन–दुति जनु बिजुरी,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गर मोतिन मणिन को हार, प्यारी छवि का कहनो।
मणि–कंकन कर करपत्र चुरी,
मुँदरिन मनि दुति दामिनि जनु री,
रची मेहँदी सुघर अरुणार, प्यारी छवि का कहनो।
गोरे तनु सोहैं नील–वसन,
कटि कनक–किंकिनिन धुनि छननन,
भल पायल की धुनि झनकार, प्यारी छवि का कहनो।
छवि अरुण–मिहावरि अति प्यारी,
पग अँगुरिन बिछुवनि छवि न्यारी,
अलबेली 'कृपालु' सरकार, प्यारी छवि का कहनो॥

9

नन्ददुलारे, राधा जू के प्यारे, प्राण हमारे,
जाऊँ तिहारी बलिहार।
सुन्दरताहूँ जासु लजाई,
ललित त्रिभंगी छवि मो मन भाई।
नैन रतनारे, मैन मदमारे, सैन मनहारे,
छविनिधि नन्दकुमार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तरु–तमाल श्यामल–तनु धारी,
राधा – मानस – हंस – मुरारी।
कारे कारे, अति अनियारे, कच घुँघरारे,
जनु अलि–पंक्ति अपार।
मोर मुकुट सिर पेच विराजै,
मृगमद–तिलक भाल छवि छाजै।
गुंजमाल धारे, पीतपट वारे, पग अरुणारे,
मृदु नूपुर झनकार।
बेसर सुघर नासिका सोहै,
लाल अधर लाली मन मोहै।
ओ वंशीवारे, जन रखवारे, काहे बिसारे,
ओर 'कृपालु' निहार॥

COPYRIGHT

10

RADHA GOVIND SAMITI

नन्दलाल प्यारे, यशुदा–दुलारे, नैनों के तारे,
करूँ तिहारी मनुहार।
प्रेम–पिपासा लेकर आई,
सुघर सलोनी छवि मन में समाई।

ना तप जानूँ, ना जप जानूँ, ना पहिचानूँ,
केवल आस तिहार।
आशा का बंधन टूट न जाये,
लगन मिलन की छूट न जाये।
ओ गिरधारी! ओ बनवारी! कृष्णमुरारी!
सुनि लेउ दीन पुकार।
तुम बिनु पल छिन कल न परत है,
विकल नैन दिन रैन झरत है।
श्याम–सलोना, करि गयो टोना, दै गयो रोना,
बाजी गई मैं हार।
कैसे तुम बिनु हाय! रहूँ मैं,
कैसे विरह बलाय सहूँ मैं।
श्याम बेदरदी, कैसी कर दी, ऐसी कदर की,
जाये 'कृपालु' बलिहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

11

ना री जाने कछु रीति रसवारी री, अनारी वारी बनवारी।
रह लठ्ठ – गँवारन संग–संग,
याते सबरोइ अड़बंग ढंग।

का री जाने रसिकन गति न्यारी री, अनारी वारी बनवारी।
पनघट घूँघट पट टारि भजै,
सिर चुनरी उतारि न नेकु लजै,
लावत उर मग कहि 'प्यारी' री, अनारी वारी बनवारी।
गुरुजन सन्मुखहूँ सैन मार,
निधरक कह 'करु टुक मोहिं प्यार',
'बलिहारी' कह सुनि–सुनि गारी री, अनारी वारी बनवारी।
सखि एक अचंभो आय मोय,
तबहूँ सखियन मन–भाय सोय,
शिव फिरत 'कृपालु' बनि नारी री, अनारी वारी बनवारी॥

12

निर्मोहिया सों नेहा लगाय, हाय! मैं लुटि गई री।
COPYRIGHT
इक दिन अलि इकली जाति रही,
RADHA GOVIND SAMITI
बेचन बरसाने गाम दही,
मग निपट लकुटि लिये आय, हाय! मैं लुटि गई री।
बोल्यो 'अलि लखु यह कुंज–गली,
हौं हूँ इकलो तू हूँ इकली,

मिलि इक–इक द्वै ह्वै जाय', हाय मैं लुटि गई री।
हौं डाँटि कही 'लंपट चल हट,
आवत पति पाछेहिं लै लठ झट,
दउँ हेला अबहिं फल पाय', हाय! मैं लुटि गई री।
बोल्यो 'अब तोहिं अपनी कर ली,
पिटवाय चहै अपनाय अली!,
सुख दैहों तोहिं लठ खाय', हाय! मैं लुटि गई री।
यह सुनि गइ तन–मन–प्रान हार,
हौं तेहि निहार सो मोहिं निहार,
गिरी भू पै 'कृपालु' कहि 'हाय', हाय! मैं लुटि गई री॥

13

बलभ्रात सतावै दिन रात री, मात! री सुनु बात री।
फोरत घट नटखट पनघट पै,
तोरत लर, चोरत पट तट पै,
मटकावत भौं न लजात री, मात! री सुनु बात री।
कर दृग–सैनन रस–रंग–सने,
अड़बंग ढंग मुख बैन भने,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कछु बोलूँ तो मृदु मुसकात री, मात! री सुनु बात री।
हरि कह झूठेहिं ये धरति नाम,
सूधो है केतिक तेरो श्याम,
सब चाहति मोहिं पिय नात री, मात! री सुनु बात री।
भोरी मैया सुनि मानि गई,
ब्रज–बालनि डाँटि भजाय दई,
लिय लाय 'कृपालु' उर मात री, मात! री सुनु बात री॥

14

वैदवा अनारी, नारी धर भरमावे रे।
जाइ कहो वैदवा सों, कछु दिन पढ़ि आवे,
रोग पहिचाने बिनु, औषधि बतावे रे।
झूठी–मूठी बूटी दै के, घूँटी सों पिलावे मोहिं,
अनुदिन छिन छिन दरद बढ़ावे रे।
एरी सखी! कैसी करूँ कहाँ चली जावूँ हाय!
जिऊँ कैसे? मरूँ कैसे? विरह सतावे रे।
जान्यो री 'कृपालु' तेरो रोग है वियोग को री,
वैदवा है गोकुला में कान्ह जो कहावे रे॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

15

भजु राधे गोविन्द घनश्याम रे, भजु मन श्री राधे॥
दोउ रूप-सुधा-निधि लाल-लली,
विहरें नित मंजुल कुंज-गली।
लखि लाजें कोटि-शत काम रे, भजु मन श्री राधे।
दोउ रसिक शिरोमणि प्रेमधनी,
जनु रूप-सिँगार की जोरी बनी।
रसधार बहायो ब्रजधाम रे, भजु मन श्री राधे।
सनकादिक भेद न पाय सके,
कहि 'नेति' जु वेदहुँ गाय थके।
तेहि गोपी नचावें बिनु दाम रे, भजु मन श्री राधे।
जेहि ध्यानी सुरंध्रनि ध्यान धरें,
जेहि ज्ञानी निरंजन मानि लरें।
तेहि अंजन बनायो ब्रजबाम रे, भजु मन श्री राधे।
दोउ चन्द्रचकोर दोऊ हैं बने,
बिनु बैनन नैनन बात भने।
धनि जोरी 'कृपालु' अभिराम रे, भजु मन श्री राधे॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

16

भये मोहन सों नैना चार, अरी सुनु ओ सजनी।
हौं जाति रही यमुना तट पै,
चट आय अचानक पनघट पै।
नैन बानन सों किय हरि वार, अरी सुनु ओ सजनी।
हौं घायल गिरी धरणि लखि त्यों,
उर बाण बिंधी हिरणी सखि! ज्यों।
कहि 'हाय पिय! नन्दकुमार', अरी सुनु ओ सजनी।
मोहिं मुर्छित लखि सखि! सो छलिया,
बेदर्दी मृदु मुसकाय पिया।
तान छेड़ी मुरलि रिझवार, अरी सुनु ओ सजनी।
सुनि तान गई मुरछा तन की,
परस्यो तन जान कान्ह मन की।
को बरने 'कृपालु' सुख यार, अरी सुनु ओ सजनी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

17

मोहिं लीनो मोल बिनु दाम री, कामरी-वारे ने।
दधि-बेचन इक दिन जात रही,
नटखट ने अटपट बात कही।

‘टुक सुन तो सों कछु काम री,’ कामरी–वारे ने।
हौं बोलीं ‘काम बता अपनो’
बोल्यो ‘निशि देख्यों इक सपनो।
तू मेरी मैं तेरो ब्रज–बाम री’, कामरी वारे ने।
बोली ‘नटखट लंपट चलु हट’,
‘तू भी कछु कम नहिं’ कह लंपट।
‘दे गारी पियहिं लै नाम री,’ कामरी–वारे ने।
हौं बोली ‘सुन ले कान खोल,
तू सब हीं ऐसेहिं कहत डोल।
तेरी बात न दाम छदाम री’, कामरी–वारे ने।
बोल्यो ‘तू तो ह्वै गइ मोरी,
मोहिं मान न निज इच्छा तोरी’।
सुनि वारी ‘कृपालु’ हौं भाम री, कामरी–वारे ने॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

18

लिय फाँसी गले महँ डार, अब का सोच करे।
हौं प्रथमहिं तोहिं बरज्यों आली,
बचियो छल छलिया वनमाली।

नहिं मानी करन गई प्यार, अब का सोच करे।
तू घर की रही न घाट कि त्यों,
चूल्हे की हाँडी काठ कि ज्यों।
जो होनी थी हो गई यार, अब का सोच करे।
अब तो है संगिनि एक तेरी,
बस हाय-हाय दिखराय एरी।
हरि कै गयो बंटाढार, अब का सोच करे।
जब ओखलि में सखि! सिर धरना,
तो चोट ते काहे को डरना।
येहि यारी 'कृपालु' बलिहार, अब का सोच करे॥

19

श्यामसुन्दर सों करिके प्यार, रही नहिं कतहूँ की।
COPYRIGHT
इक दिन की बात कहूँ सजनी,
RADHA GOVIND SAMITI
कुछ शेष रही जब ही रजनी।
नटखट, खटकाय किवार, रही नहिं कतहूँ की।
बोली 'खटकाय कपाट कौन?'
कह कान्ह 'आय मेहमान भौन।

तेरे मैके को कोऊ पुकार', रही नहिं कतहूँ की।
हौं झाँक्यों बाहर खोलि द्वार,
तब कह 'तेहि निज घर दिय बिठार'।
चली साँची मानि तेहि द्वार, रही नहिं कतहूँ की।
मग कहि 'प्यारी' गर बाँह डार,
बरबस सरबस गइ हमहुँ हार।
कहूँ कासों 'कृपालु' पिय जार, रही नहिं कतहूँ की॥

20

श्यामसुन्दर हमारो यार, लखन को जिया ललके।
जिनके सिर मोर मुकुट राजै,
गोरोचन तिलक भाल भ्राजै,
लटकारी, घनी, घुँघरार, लखन को जिया ललके।
जिनके कानन कुण्डल हलकै,
नैनन बिच प्रेम–सुधा छलकै,
नाक बेसर सुघर, छबिदार, लखन को जिया ललके।
जिनकी चंचल चितवनि बाँकी,
मुरि मुरि मृदु मुसकनि की झाँकी,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वनमाला गले रिझवार, लखन को जिया ललके।
जिनके उर पीताम्बर फहरै,
कटि किंकिनि की धुनि चित्त हरै,
भल कछनी कछी अरुणार, लखन को जिया ललके।
जिनके चरनन नूपुर बाजै,
झुकि झूमि गवनि गति गज लाजै,
तान मुरली 'कृपालु' बलिहार, लखन को जिया ललके॥

21

श्री राधे हमारी सरकार, फिकिर मोहिं काहे की।
हित अधम उधारन देह धरें,
बिनु कारन दीनन नेह करें,
जब ऐसी दया दरबार, फिकिर मोहिं काहे की।
टुक निज–जन क्रन्दन सुनि पावें,
तजि श्यामहुँ निज जन पहँ धावें,
जब ऐसी सरल सुकुमार, फिकिर मोहिं काहे की।
भृकुटी नित तकत ब्रह्म जाकी,
ताकी शरणाई डर काकी,

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

जब ऐसी हमारी रखवार, फिकिर मोहिं काहे की।
जो आरत 'मम स्वामिनि!' भाखै,
तेहि पुतरिन सम आँखिन राखै,
जब ऐसी 'कृपालु' रिझवार, फिकिर मोहिं काहे की॥

22

सरस किशोरी, वयस कि थोरी, रति रस बोरी,
कीजै कृपा की कोर।
साधन–हीन, दीन मैं राधे,
तुम करुणामइ प्रेम–अगाधे,
काके द्वारे, जाय पुकारे, कौन निहारे,
दीन दुखी की ओर।
करत अघन नहिं नेकु अघाऊँ,
भरत उदर ज्यों शूकर धावूँ,
करि बरजोरी, लखि निज ओरी, तुम बिनु मोरी,
कौन सुधारे दोर।
भलो बुरो जैसो हूँ तिहारो,
तुम बिनु कोउ न हितू हमारो,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भानुदुलारी, सुधि लो हमारी, शरण तिहारी,
हौं पतितन सिरमोर।
गोपी–प्रेम की भिक्षा दीजै,
कैसेहुँ मोहिं अपनी करि लीजै,
तव गुन गावत, दिवस बितावत, दृग झरि लावत,
ह्वैहौं प्रेम – विभोर।
पाय तिहारो प्रेम किशोरी!,
छके प्रेमरस ब्रज की खोरी,
गति गजगामिनि, छवि अभिरामिनि, लखि निज स्वामिनि,
बने 'कृपालु' चकोर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

विशेषः-
कृपालु जी महाराज के साहित्य पर अनेक विश्वविद्यालयों में पी.एच.डी. हेतु शोध कार्य चल रहा है। प्रेम रस मदिरा पर निम्नलिखित शोध प्रबन्ध पी.एच.डी. की डिग्री हेतु लिखे जा चुके हैं।

1. कृपालु दास और उनका काव्य

निर्देशक
डा० महावीर सरन जैन
जबलपुर विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्य प्रदेश
1978

शोधकर्ता
विष्णु प्रसाद नेमा

2. कृष्ण काव्य के परिप्रेक्ष्य में श्री कृपालुदास जी के काव्य साहित्य का अनुशीलन

निर्देशक
डा० हरभजनसिंह हंसपाल
नागपुर विद्यापीठ
नागपुर, महाराष्ट्र
अक्टूबर 1995

शोधकर्त्री
कु० पुष्पलता शुक्ला

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

3. जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज के साहित्य में संगीत, एक विवेचनात्मक अध्ययन

निर्देशिका
डा० श्रीमती आशा पाण्डेय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा
फरवरी 2004

शोधकर्त्री
कु० ऋतु रानी राठौर

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

‘प्रेम–रस–मदिरा’

ग्रन्थ पर भारत के प्रख्यात कवियों तथा विद्वानों द्वारा प्रेषित कतिपय सम्मतियाँ –

(डा. राम कुमार वर्मा, प्रयाग विश्वविद्यालय)

जीवन–सागर की तरंगों में बहता हुआ मानव सुख–दुःख के थपेड़े खाता हुआ, एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है, जब उसे अपने से महान् एक शक्ति का बोध होता है। फूलों की मुसकान, सरिता का कल–कल प्रवाह, ऊषा की राग–रंजित शोभा, सागर की विशालता, सभी में उसे उस परम–शक्ति की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। किन्तु वह उसे अपने और भी निकट देखना चाहता है, उसकी इच्छा की पूर्ति उस परम–शक्ति के साकार रूप की उपासना द्वारा होती है। वह अपना तादात्म्य भगवान् राम के सेवकों के साथ करना चाहता है, वह वृन्दावन–बिहारी घनश्याम के साथ गोप– गोपी के रूप में गोलोक–वास करने की कामना करता है जहाँ रसावतार कृष्ण की चिरन्तन रासलीला होती है। उसे उस भूमि की रज के कण–कण में राधा–श्याम की उपस्थिति अनुभव होती है, और वह प्रेम–विभोर होकर उनकी लीला का गान करने लगता है। उन्हें वह

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अपने से अलग नहीं समझता, अपना सखा समझता है, जो अकारण ही उस पर कृपा करते हैं; आवश्यकता केवल इस बात की है कि वह वासना–रहित अपने आप को समर्पित कर दे। श्रीकृष्ण और स्वामिनी राधा की कृपा से उसके सभी कष्ट भयानक स्वप्न की तरह समाप्त हो जावेंगे और लोकोत्तर–आनन्द की प्राप्ति होगी।

संत कृपालुदास आज के इस वैज्ञानिक–युग की विभीषिकाओं के बीच भी प्रेम–साधना करते हुए अपने स्वर सूर, मीरा, रसखान की स्वर–लहरी के साथ, मिलाते हैं। उनकी वाणी में सूर का माधुर्य, मीरा की आत्म–वेदना, रसखान की सरलता और सरसता है। प्रेम–रस की मदिरा से ओत–प्रोत उनके पद स्वामिनी श्रीराधा और श्रीकृष्ण के मद से हमें पूर्ण कर देते हैं।

'**प्रेम–रस–मदिरा**' के तेरह कलश अपनी–अपनी विशेष मादकता लिए हुए हैं; चौदहवें कलश में शेष मदिरा है। उस मदिरा में माधुर्य है, बेसुध कर देने की क्षमता है, जिसके पान के अनन्तर केवल एक ही भावना रह जाती है, वह है युगल का प्रेम। हमारी सभी कामनायें समाप्त हो जाती हैं, और हम श्रीराधा और श्रीकृष्ण के अनुराग सागर में डूब जाते हैं।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वप्रथम इसमें 'रसिया–माधुरी' की छवि है। श्री कृपालुदास जी के लिए ब्रज और बरसाने का आनन्द कोटि–ब्रह्मानन्द से भी अधिक

है। वहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने लीला की थी और आज भी वह धाम उनसे पूर्ण है। रसिक-वर मुरलीधर के प्रेम की प्राप्ति के समान किसी वस्तु की इच्छा की जाय। वृन्दावन की वह भूमि धन्य है, जहाँ नित्य जीवन-मुक्त सनकादिक परमहंस भी शुक, मयूर, चक्रवाक आदि पक्षियों के रूप में रहते हैं, जहाँ शरद् और वसन्त का नित्य-विलास है, वह रसिकों की राजधानी है जिसकी महारानी स्वामिनी राधिका जी हैं। जिस रस की एक बूँद भी वेदों को प्राप्त न हो सकी, उसे श्रीराधा और श्रीकृष्ण ने मिलकर ब्रज की गलियों में प्रवाहित किया।

श्रीराधा और श्रीकृष्ण के प्रेम की प्राप्ति के लिए किसी दुष्कर साधना की आवश्यकता नहीं है। प्रेमतत्त्व का सार श्रीराधे का नाम पुकारने से ही उनका सहज-प्रेम प्राप्त हो सकता है। श्यामसुन्दर भी उनके चरणों को बार-बार अपने हृदय और नेत्र से लगाकर आत्म-विभोर हो जाते हैं। सांसारिक विषय वासना से अपना मन हटाकर श्री राधाकृष्ण के प्रेम में लाने से मानव के समस्त कष्टों का अन्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त न किसी जप-तप की आवश्यकता है, न योगयाग की।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

जीव का कलुष उसकी मनोव्यथा का कारण बनता है। अपनी दीनता की उसे अनुभूति होती है, आराध्य की महानता देखकर वह आर्त-

वाणी में उन्हें पुकारकर उनसे सहायता की याचना करता है और उसे प्राप्त भी करता है।

भक्त को श्रीराधा–कृष्ण की सभी लीलाएँ समान रूप से प्रिय हैं। उनके रास में तो उसे लोकोत्तरानन्द की प्राप्ति होती ही है, बाल–लीला के गान से भी उसका अनुरागी–चित्त सन्तोष की प्राप्ति करता है और श्याम–रस में स्नात होकर निरन्तर उज्ज्वल होता जाता है। मान–लीला, महासखी (ललिता), गान आदि में भी उसे ब्रह्मानन्द–सा ही रस मिलता है; किन्तु विरह में उसकी समस्त वेदना शब्दों के माध्यम से साकार हो उठती है, श्री राधाकृष्ण के वियोग में उसके समस्त सुखों का अन्त हो जाता है। उसे जो–जो वस्तुएँ आनंद देती थीं, प्रिय के अभाव में वे ही उसकी वेदना को और भी अधिक तीव्र करती हैं। प्रेम–रस–मदिरा में सबसे अधिक पद 'विरह–माधुरी' के निरूपण में ही हुए हैं।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

आज के इस युग में प्रेम–रस–मदिरा का महत्व अत्यधिक है। विज्ञान नित्य अपने क्षेत्र का विस्तार करता जा रहा है और उसकी प्रवृत्ति निर्माण की अपेक्षा संहार की ओर अधिक है। उसके विकास ने हमारी भावनाओं के क्षेत्र पर काफी प्रभाव डाला है, साथ ही उसने भौतिकवाद और बुद्धिवाद को ही आश्रय दिया है। ऐसे समय में हमारी संवेदना और मानवीय गुणों के विकास के लिए यह आवश्यक

है कि हमारे हृदय में दैवी प्रवृत्तियों का संचरण हो, जिससे युग की विभीषिका का हम सरलता से सामना कर सकते हैं।

संत कृपालुदास की प्रस्तुत कृति सूर, मीरा, नन्ददास, रसखान, भारतेन्दु आदि समर्थ कवियों की कला कृतियों की परम्परा का एक नवीन पुष्प है, जिसका हास–विलास लोकोत्तर–भावों की सफल अभिव्यक्ति से ओत–प्रोत है। उनके पदों की कोमल पदावली संगीतात्मक है, उसमें अनुभूति की तीव्रता है और उसकी कुशल अभिव्यक्ति भी है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रस्तुत ग्रन्थ का एक विशेष स्थान होगा, क्योंकि इस काल में इस प्रकार की अन्य कोई सफल रचना नहीं हुई है। मेरा विश्वास है कि प्रेम–रस–मदिरा श्रीराधाकृष्ण के अनुरागियों के अन्तर का, आत्मपरिष्कार कर, प्रत्येक भक्त की जिह्वा पर उतर आवेगी।

युगल–लीला की एक सुन्दर झाँकी देखिये –

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बलि जाऊँ निकुंज बिहार की।
नागरि श्री वृषभानुकुँवरि अरु, नागर नन्दकुमार की।
जनु धरि रूप अनूप प्रगट भई, मूरति छवि सिंगार की।
करत केलि भुजमेलि विविध विधि, बरसावत रस धार की।

संग नवेलिन, अति अलबेलिन, हेलिन जूथ अपार की।
पियत 'कृपालु' रसिक निशिवासर, सुधा प्रेम–रस–सार की।

साकेत
20.9.1955

रामकुमार वर्मा,
एम.ए., पी.एच.डी.
रीडर, हिन्दी डिपार्टमेन्ट,
प्रयाग विश्वविद्यालय।

(डाक्टर रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय)

पुस्तक मुझे कृपापूर्वक प्राप्त हुई और मैंने उसे आद्योपान्त बड़े चाव–भाव से पढ़ा। प्रत्येक पद से महात्मा का महत्व झलक रहा है। सारे पदों, शब्दों में प्रेमात्मक भक्ति की पावन धारा बह रही है। क्यों न हो महात्माओं की ही पुनीत रचनाएँ इस प्रकार की पदावलियाँ व्यक्त करने में सक्षम होती हैं। यों तो प्रायः सामान्य कवि प्रेम और भक्ति पर लिखा ही करते हैं; किन्तु इस प्रकार लिखना कि उससे भक्ति–प्रेमरस संचरित हो, केवल उन्हीं पवित्रात्माओं और भावानुभूत सहृदयों का काम है जिनमें वस्तुतः प्रेम और भक्ति का सत्य स्वरूप प्रकाशित होता है। प्रेम और भक्ति पर लिखा तो प्रायः जाता है और बहुत लिखा जाता है, किन्तु उसमें सत्यता और शुद्धता का यथेष्टांश

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

प्राय: बहुत ही कम रहता है। मुझे हर्ष है कि यह रचना हिन्दी-साहित्य-सेवियों को श्री कृपालुदास जी की कृपा से प्राप्त हुई है। इधर की ओर तो महात्माओं की दिव्य रचनायें प्राप्त नहीं हो रही हैं, कदाचित् महात्मा लोग रचना कार्य से विरक्त हो रहे हैं - अथवा रचना कार्य करते हैं किन्तु प्रकाश में उसे नहीं लाते।

अतीवोत्साह और प्रसन्नता की बात है कि आपने इस अमूल्य रचना को प्रकाशित कर मार्ग खोलने का सत्कार्य, जो साधुजनों के लिए स्वभावजन्य है, किया है।

सारी रचना ब्रजभाषा में है। भाषा अपने स्वाभाविक माधुर्य, मार्दव और मांजुल्य के साथ और भी अधिक मधुर हो रही है उसमें स्वाभाविकता, सरसता, सरलता और सुबोधता है। ब्रजभाषा का रूप इसमें निखरा हुआ और साहित्योचित है। पर्याप्त रूप में वह परिमार्जित है। व्यंजकता अपनी रंजकता के साथ पूर्ण रूप में है।

COPYRIGHT

भावानुभूति की सर्वत्र अभिव्यक्ति बड़े ही मार्मिक और स्वाभाविक ढंग से हुई है। कथन का भाव-प्रकाशन में यथार्थता, अकृत्रिमता और स्पष्टता है; काव्य की भी कला है और हृदयाभिव्यक्ति भी है।

RADHA GOVIND SAMITI

कहीं-कहीं भाषा कुछ अन्य प्रान्तीय बोलियों से भी प्रभावित-सी है-किन्तु विशुद्धता यथेष्ट रूप में है।

कृष्ण–काव्य–परम्परा का निर्वाह करते हुए दैन्य, धाम जैसे कुछ भाव और भी लिये गये हैं। यहाँ इतना ही कहना अलम् है कि रचना रचना के लिये नहीं, प्रेम और भक्ति के सभी प्रमुख भाव भुक्तभोगी के से रक्खे गये हैं। यहाँ आलोचना का स्थानावसर नहीं, केवल कहना यह है कि रचनाएँ सभी रमणीय हैं–रसिक जन इनका रसास्वादन करके ही देख सकेंगे–हम तो केवल उनका ध्यानाकर्षण मात्र कर रहे हैं।

(श्री सुमित्रानन्दनजी पंत, डायरेक्टर, आल इण्डिया रेडियो, हिन्दी प्रोग्राम)

श्री महात्मा कृपालुदास जी की '**प्रेम–रस–मदिरा**' पान करने का अवसर मिला। श्री राधाकृष्ण की मधुर भक्ति से प्लावित इन सरस पदों में परम भक्त श्री कृपालुदास जी ने मानव हृदय की पवित्रतम भावना को वाणी देकर रसिक भक्तजनों का बड़ा उपकार किया है। कृपालुदास जी की स्वान्तः सुखाय वाणी में माधुर्य का सहज प्रवाह है। उनका प्रत्येक छन्द रस के समुद्र की भाँति भक्ति की तन्मयता से तरंगित है। भगवत्प्राप्ति के उपायों में जप–तप आदि के कठिन नियमों से मुक्त श्री राधाकृष्ण के चरणों के प्रति सहज प्रीति ही सब में सुलभ, सरस तथा श्रेष्ठ उपाय है। उसी पथ की ओर प्रेरित करने की शक्ति श्री कृपालुदास जी के इन अनमोल गीतों में है जिन्हें

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

पढ़कर हृदय स्वतः ही आनन्द, प्रेम, मधुरिमा के दिव्य रस में निमज्जित हो उठता है। श्री राधा-कृष्ण की मधुर लीला का अनेक रूपों से इन सुललित पदों में वर्णन कर भक्त प्रवर कवि ने जैसे अमूर्त ब्रह्मानन्द को मूर्तिमान कर दिया है। आशा है भक्तगण **'प्रेम-रस-मदिरा'** की दिव्य चेतना का पान कर अपना जीवन सफल बनायेंगे।

(डा. ब्रजेश्वर वर्मा, एम. ए., डी.फिल, हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

श्री कृपालुदास जी की पुस्तक **'प्रेम-रस-मदिरा'** में उस वातावरण की पुनरावृत्ति मिलती है जो सोलहवीं शताब्दी में सूरदास, हरिवंश और हरिदास जैसे भक्तों ने निर्मित किया था। **'प्रेम-रस-मदिरा'** की अनेक पंक्तियाँ ज्यों की त्यों जैसे सूरदास और हरिवंश के पदों से ली गई है। ऐसा नहीं है लेखक ने इन्हें वहाँ से उठा लिया हो, वरन् कारण यह है कि लेखक भक्त कवियों की रचनाओं और उनके भक्तिभाव में इतना लीन हो गया है कि उसकी समस्त मानसिक प्रक्रिया और उसका परिणाम, उसकी पद-रचना उन्हीं का अनुसरण करती है। वर्तमान युग के अनुकूल विद्वान् भक्त कवि ने कृष्ण-भक्ति के समन्वयात्मक रूप को ग्रहण किया है। राधा-कृष्ण-भक्ति का प्रचारक होते हुए भी उसमें साम्प्रदायिक कट्टरता नहीं मिलती।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति धर्म में ज्ञान और कर्म की भी स्वीकृति है, जो युग के अनुकूल है। '**प्रेम–रस–मदिरा**' भक्तों को प्रेमोन्मत्त बनाकर ब्रह्मानन्द देने में समर्थ हो सकेगी, ऐसी मैं कल्पना कर सकता हूँ।

(श्री हृदयनारायण पाँडे, 'हृदयेश' साहित्य अलंकार, सभापति आचार्य श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी परिषद् - कानपुर)

मैंने संत श्री कृपालुदास जी कृत '**प्रेम–रस–मदिरा**' गीत संग्रह का अवलोकन किया, प्रेमरस से भीगे सराबोर हृदय की मधुर मदिर झनकारें इसमें प्रतिध्वनित हो रही हैं। सरल भाषा, मधुर भाव और गेय–पदावली की त्रिवेणी में मैंने अवगाहन किया; मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ, विशेषत:–

'श्याम तोरी मुरली ने जुलुम करी', 'सखी तोहे काउ की डीठ लगी', 'श्री राधे तोहे कौन बलाय लगी', 'सखी हम इन पाँचन ते हारे', 'कुँवरि तू कितै गई डरपाय', 'प्राण हित पावस–ग्रीषम धायो', 'धीर अब कैसेहु नाहि बँधात', और 'सखी ये कारे सब ठगहार' शीर्षक पद बहुत पसन्द आये। श्री राधा–कृष्ण के चरण–कमलानुरागियों से इसे पान करने की अनुशंसा करता हूँ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(डा. रामप्रसाद त्रिपाठी, एम.ए., डी.एस-सी. (लन्दन) वाइस चान्सलर, सागर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश)

'**प्रेम-रस-मदिरा**' नामक पुस्तक प्राप्त हुई, पढ़ी। बड़ा आनन्द हुआ। जिस तन्मयता से आपने उसे लिखा है, लगा कि आपने भक्ति तत्व को समझ लिया है और सचमुच आप प्रेम-रस में अवगाहन करने वाले भक्त जीव हैं। आशा है कि पुस्तक को हिन्दी-साहित्य-प्रेमियों से, विशेष, भक्ति-काव्य के मर्मज्ञों से उचित सम्मान प्राप्त होगा। आपकी कविता में जान है, और वह सूर, नन्ददास आदि भक्त कवियों की परम्परा की रक्षा करती है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI